श्रीमद्भगवद्गीता

(संधिविच्छेद और शब्दानुवाद सहित)

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रधान विषयों की अनुक्रमणिका

अर्जुनविषादयोग–नामक 1ला अ०।।	**श्लोक**	**विषय**
	1-11	दोनों सेनाओं के प्रधान–2 शूरवीरों की गणना और सामर्थ्य का कथन।
	12-19	दोनों सेनाओं की शंख–ध्वनि का कथन।
	20-27	अर्जुन द्वारा सेना–निरीक्षण का प्रसंग।
	28-47	मोह से व्याप्त हुए अर्जुन के कायरता, स्नेह और शोकयुक्त वचन।
सांख्ययोग–नामक 2रा अ०।।	1-10	अर्जुन की कायरता के विषय में श्रीकृष्णार्जुन–संवाद।
	11-30	सांख्ययोग का विषय।
	31-38	क्षात्रधर्म के अनुसार युद्ध करने की आवश्यकता का निरूपण।
	39-53	कर्मयोग का विषय।
	54-72	स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण और उसकी महिमा।
कर्मयोग–नामक 3रा अ०।।	1-8	ज्ञानयोग और कर्मयोग के अनुसार अनासक्त भाव से नियत कर्म करने की श्रेष्ठता का निरूपण।
	9-16	यज्ञादि कर्मों की आवश्यकता का निरूपण।
	17-24	ज्ञानवान् और भगवान् के लिए भी लोकसंग्रहार्थ कर्मों की आवश्यकता।
	25-35	अज्ञानी और ज्ञानवान् के लक्षण तथा राग–द्वेष से रहित होकर कर्म करने के लिए प्रेरणा।
	36-43	काम के निरोध का विषय।
ज्ञानकर्मसंन्यासयोग–नामक 4था अ०।।	1-18	सगुण भगवान् का प्रभाव और कर्मयोग का विषय।
	19-23	योगी महात्मा पुरुषों के आचरण और उनकी महिमा।
	24-32	फलसहित पृथक्–पृथक् यज्ञों का कथन।
	33-42	ज्ञान की महिमा।
कर्मसंन्यासयोग–नामक 5वाँ अ०।।	1-6	सांख्ययोग और कर्मयोग का निर्णय।
	7-12	सांख्ययोगी और कर्मयोगी के लक्षण और उनकी महिमा।
	13-26	ज्ञानयोग का विषय।
	27-29	भक्तिसहित ध्यानयोग का वर्णन।

आत्मसंयमयोग–नामक 6ठा अ०।।	1-4 कर्मयोग का विषय और योगारूढ़ पुरुष के लक्षण। 5-10 आत्म–उद्धार के लिए प्रेरणा और भगवत्प्राप्त पुरुष के लक्षण। 11-32 विस्तार से ध्यानयोग का विषय। 33-36 मन के निग्रह का विषय। 37-47 योगभ्रष्ट पुरुष की गति का विषय और ध्यानयोगी की महिमा।
ज्ञानविज्ञानयोग–नामक 7वाँ अ०।।	1-7 विज्ञानसहित ज्ञान का विषय। 8-12 सम्पूर्ण पदार्थों में कारणरूप से भगवान् की व्यापकता का कथन। 13-19 आसुरी स्वभाव वालों की निन्दा और भगवद्भक्तों की प्रशंसा। 20-23 अन्य देवताओं की उपासना का विषय। 24-30 भगवान् के प्रभाव और स्वरूप को न जानने वालों की निन्दा और जानने वालों की महिमा।
अक्षरब्रह्मयोग–नामक 8वाँ अ०।।	1-7 ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादि के विषय में अर्जुन के 7 प्रश्न और उनका उत्तर। 8-22 भक्तियोग का विषय। 23-28 शुक्ल और कृष्णमार्ग का विषय।
राजविद्याराजगुह्ययोग–नामक 9वाँ अ०।।	1-6 प्रभावसहित ज्ञान का विषय। 7-10 जगत् की उत्पत्ति का विषय। 11-15 भगवान् का तिरस्कार करने वाले आसुरी प्रकृति वालों की निन्दा और दैवी प्रकृति वालों के भगवद्भजन का प्रकार। 16-19 सर्वात्मरूप से प्रभावसहित भगवान् के स्वरूप का वर्णन। 20-25 सकाम और निष्काम उपासना का फल। 26-34 निष्काम भगवद्भक्ति की महिमा।
विभूतियोग–नामक 10वाँ अ०।।	1-7 भगवान् की विभूति और योगशक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल। 8-11 फल और प्रभावसहित भक्तियोग का कथन। 12-18 अर्जुन द्वारा भगवान् की स्तुति तथा विभूति और योगशक्ति को कहने के लिए प्रार्थना। 19-42 भगवान् द्वारा अपनी विभूतियों का और योगशक्ति का कथन।
विश्वरूपदर्शनयोग–नामक 11वाँ अ०।।	1-4 विश्वरूप के दर्शन–हेतु अर्जुन की प्रार्थना। 5-8 भगवान् द्वारा अपने विश्वरूप का वर्णन। 9-14 संजय द्वारा धृतराष्ट्र के प्रति विश्वरूप का वर्णन। 15-31 अर्जुन द्वारा भगवान् के विश्वरूप का देखा जाना और उनकी स्तुति करना। 32-34 भगवान् द्वारा अपने प्रभाव का वर्णन और अर्जुन को युद्ध के

	लिए उत्साहित करना। 35-46 भयभीत हुए अर्जुन द्वारा भगवान् की स्तुति और चतुर्भुजरूप का दर्शन कराने के लिए प्रार्थना। 47-50 भगवान् द्वारा अपने विश्वरूप के दर्शन की महिमा का कथन तथा चतुर्भुज और सौम्यरूप का दिखाया जाना। 51-55 बिना अनन्यभक्ति के चतुर्भुजरूप के दर्शन की दुर्लभता का और फलसहित अनन्यभक्ति का कथन।
भक्तियोग–नामक 12वाँ अ०।।	1-12 साकार और निराकार के उपासकों की उत्तमता का निर्णय और भगवत्प्राप्ति के उपाय का विषय। 13-20 भगवत्–प्राप्त पुरुषों के लक्षण।
क्षेत्र–क्षेत्रज्ञविभागयोग–नामक 13वाँ अ०।।	1-18 ज्ञानसहित क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ का विषय। 19-34 ज्ञानसहित प्रकृति–पुरुष का विषय।
गुणत्रयविभागयोग–नामक 14वाँ अ०।।	1-4 ज्ञान की महिमा और प्रकृति–पुरुष से जगत् की उत्पत्ति। 5-18 सत्, रज, तम–तीनों गुणों का विषय। 19-27 भगवत्प्राप्ति का उपाय और गुणातीत पुरुष के लक्षण।
पुरुषोत्तमयोग–नामक 15वाँ अ०।।	1-6 संसारवृक्ष का कथन और भगवत्प्राप्ति का उपाय। 7-11 जीवात्मा का विषय। 12-15 प्रभावसहित परमेश्वर के स्वरूप का विषय। 16-20 क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम का विषय।
दैवासुरसम्पद्विभागयोग–नामक 16वाँ अ०।।	1-5 फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदा का कथन। 6-20 आसुरी सम्पदा वालों के लक्षण और उनकी अधोगति का कथन। 21-24 शास्त्रविपरीत आचरणों को त्यागने और शास्त्रानुकूल आचरणों के लिए प्रेरणा।
श्रद्धात्रयविभागयोग–नामक 17वाँ अ०।।	1-6 श्रद्धा का और शास्त्रविपरीत घोर तप करने वालों का विषय। 7-22 आहार, यज्ञ, तप और दान के पृथक्–पृथक् भेद। 23-28 ॐ तत्सत् के प्रयोग की व्याख्या।
मोक्षसंन्यासयोग–नामक 18वाँ अ०।।	1-12 त्याग का विषय। 13-18 कर्मों के होने में सांख्यसिद्धान्त का कथन। 19-40 तीनों गुणों के अनुसार ज्ञान,कर्म,कर्ता,बुद्धि,धृति और सुख के पृथक्–2भेद। 41-48 फलसहित वर्णधर्म का विषय। 49-55 ज्ञाननिष्ठा का विषय। 56-66 भक्तिसहित कर्मयोग का विषय। 67-78 श्रीगीताजी का माहात्म्य।

अध्याय–1

धृतराष्ट्र उवाचः– धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ 1/1

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाः च एव किम् अकुर्वत संजय।।

धृतराष्ट्र उवाच (धृत+राष्ट्र–जिसने दूसरों की राज्य सम्पत्ति को अन्यायपूर्वक धारण कर लिया है, ऐसे धन के मद में अंधे हुए पूंजीवादी धृतराष्ट्र ने कहा)–**संजय** (हे संजय! {सं+जय}) **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे** {इस कलियुगी संसार के अनेक प्रकार के हिन्दू–मुस्लिमादि} (धर्मों के युद्धक्षेत्र) {और उनके आधार पर आडम्बरित} (कर्मकाण्डों के कर्मक्षेत्र में) **समवेता** (एकत्रित हुए) {और} **युयुत्सवः** (धर्मयुद्ध के लिए उत्कंठित) **मामकाः पांडवाश्चैव** (मेरे और पाण्डु के पुत्रों {क्रमशः कौरव और पाण्डवों} ने) **किमकुर्वत** (क्या किया?)

सञ्जय उवाचः– दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ 1/2

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम् व्यूढम् दुर्योधनः तदा। आचार्यम् उपसंगम्य राजा वचनम् अब्रवीत्।।

व्यूढं (व्यूहाकार) **पांडवानीकं** (पांडवों की सेना को) **दृष्ट्वा** (देखकर), **तु** (और) **राजा दुर्योधनस्तदा** (तब राजा दुर्योधन) **आचार्यं उपसंगम्य** {पण्डित–विद्वान} (आचार्य द्रोण के पास जाकर) **वचनं अब्रवीत्** {यह} (वचन बोला)।

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ 1/3

पश्य एताम् पाण्डुपुत्राणाम् आचार्य महतीम् चमूम्। व्यूढाम् द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।।

आचार्य (हे आचार्य)! **तव** (अपने) **धीमता** (बुद्धिमान) **शिष्येण** (शिष्य) **द्रुपदपुत्रेण** (द्रुपदपुत्र) {धृष्टद्युम्न} (द्वारा) **व्यूढाम्** (व्यूह रूप में सजाई गई) **पांडुपुत्राणाम्** (पाण्डु–पुत्रों की) **एताम् महतीं** (इस महती) **चमूम्** (सेना को) **पश्य** (देखिए)।

धृतराष्ट्र–धृतं राष्ट्रं येन सः (जिसने चालाकी से गरीबों की धन–सम्पत्ति हड़प ली हो)। **कौरव**–(कुत्सितं रवं यस्य) कौ+रव अर्थात् कौओं की तरह कुत्सित झूठी भाषणबाज़ी रूपी शोरगुल करने वाले (कांग्रेसी), जिन्होंने धर्मयुक्त आचार–विचार, आहार–व्यवहार का फाइव स्टार होटलों में सर्वथा त्याग कर दिया है, जिन्होंने अवतरित परमात्मा को जानने पर भी, मानने से इन्कार कर दिया है।
द्रोणाचार्य–कलियुग–अंतकाल के धुरंधर पण्डित–विद्वान–आचार्य, जिनका उत्पत्ति स्थान है द्रोणः=कलशः। द्रोण+अच् अर्थात् शास्त्रीय ज्ञान रूपी देहभान की मिट्टी से बना बुद्धि का अज्ञान कलश। **पाण्डव**–भगवान को जानने, मानने और आदेशानुसार चलने वाले परमात्मा पंडा/पांडु के थोड़े से पुत्र अर्थात् कलियुग अंत के संगमयुगी भारतीय। (पण्डा बाप के पुत्र) **दुः+योधन**–नीति रहित दुष्ट युद्ध करने वाले कलियुगी राजनीतिक नेताएँ, जो व्यक्तिगत ग्लानि से भरे जहरीले धर्म/भाषा/राज्य/जाति भेदीय ज्ञान बम्ब बरसा कर, निरीह प्रजा का शोषण कराते हैं।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ 1/4

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानः विराटः च द्रुपदः च महारथः।।

अत्र (यहाँ) {इस पाण्डवीय सेना में धृष्टद्युम्न ही नहीं, बल्कि} **युधि** (युद्ध करने में) **भीमार्जुनसमा** (भीम और अर्जुन के समान) **महेष्वासा** (महाधनुर्धारी) **शूरा** (शूरवीर)–**युयुधानो** {सत्य के लिए युद्ध करने वाले} (युयुधान) {सात्यकि} **च विराटः** (और {विष्णु पद के पुरुषार्थी रूप} विराट) **च महारथः** (तथा महारथी) **द्रुपदः** (द्रुपद) {हैं}।

धष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ 1/5

धृष्टकेतुः चेकितानः काशिराजः च वीर्यवान्। पुरुजित् कुन्तिभोजः च शैब्यः च नरपुंगवः।।

धृष्टकेतुः (धृष्टकेतु) **च** (और) **चेकितानः** (चेकितान) **च** (तथा) **वीर्यवान्** (बलवान्) **काशिराजः** (काशिराज), **पुरुजित्** (पुरुजित्), **कुन्तिभोजः** (कुन्तिभोज) **च** (और) **नरपुंगवः** (मनुष्यों में श्रेष्ठ) **शैब्यः** (शैब्य) {हैं}।

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ 1/6

युधामन्युः च विक्रान्त उत्तमौजाः च वीर्यवान्। सौभद्रः द्रौपदेयाः च सर्व एव महारथाः।।

विक्रान्त (विक्रमी) **युधामन्युश्च** (युधामन्यु तथा) **वीर्यवान्** (वीर्यवान) **उत्तमौजाः** (उत्तमौजा), **सौभद्रो** (सुभद्रा का पुत्र {अभिमन्यु}) **द्रौपदेयाश्च** (और द्रौपदी के {पाँचों} पुत्र)–**सर्व** {ये} (सब) **एव** (ही) **महारथाः** (महारथी) {हैं}।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ 1/7

अस्माकम् तु विशिष्टा ये तान् निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थम् तान् ब्रवीमि ते।।

द्विजोत्तम (हे द्विजन्मा ब्राह्मणों में उत्तम)! **तु** (फिर) **अस्माकं** (हमारे) **ये** (जो) **विशिष्टा** (विशिष्ट) {योद्धा हैं}, **तान्** (उन्हें) {भी} **निबोध** {आप} (जान लीजिए)। {वे} **मम** (मेरी) **सैन्यस्य** (सेना के) **नायका** (नायक) {हैं}। **ते** (आपके) **संज्ञार्थं** (परिज्ञानार्थ) **तान्** (उन्हें) **ब्रवीमि** (बताता हूँ)।

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥ 1/8

भवान् भीष्मः च कर्णः च कृपः च समितिंजयः। अश्वत्थामा विकर्णः च सौमदत्तिः तथा एव च।।

भवान् (आप) {स्वयं हैं} **भीष्मश्च** (और भीष्मपितामह) **कर्णश्च** (तथा कर्ण) **च** (और) **समितिंजयः** (संग्रामजयी) **कृपः** (कृपाचार्य) {हैं} **तथैव च** (और उसी तरह) **अश्वत्थामा** (अश्वत्थामा), **विकर्णश्च** (विकर्ण और) **सौमदत्तिः** (सोमदत्त का पुत्र) {भूरिश्रवा है}।

अन्ये च बहवः शूराः मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ 1/9

अन्ये च बहवः शूराः मदर्थं त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।।

अन्ये (और) **च** (भी) **बहवः** (अनेक) **शूरा** (शूर) **मदर्थे** (मेरे लिए) **जीविताः** (अपने जीवन का) **त्यक्त** (त्याग करने वाले) {हैं}। **सर्वे** {वे} (सभी) **नानाशस्त्रप्रहरणाः** (अनेक {ज्ञान} शस्त्रों से प्रहार करने वाले) {हैं} **युद्धविशारदाः** {तथा ज्ञान} (युद्धकला में निपुण) {हैं}।

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥ 1/10

अपर्याप्तम् तत् अस्माकम् बलम् भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तम् तु इदम् एतेषाम् बलम् भीमाभिरक्षितम्।।

भीष्माभिरक्षितम् (भीष्म से रक्षित) **तदस्माकं** (वह हमारी) **बलं** (सेना) **अपर्याप्तं** (अपार है), **त्विदं** (जबकि) **भीमाभिरक्षितं** (भीम द्वारा रक्षित) **एतेषां** (इन {पाण्डुवों} की) **बलं** (सेना) **पर्याप्तं** (सीमित है)।

❖**भीष्मपितामह**–भीष्म का अर्थ–भयंकर, जो सर्प की भाँति भयंकर विषैला शास्त्रीय ज्ञान उगलते हों। पितामह (1/12)–अर्थात् कलियुग अंत के उन भयंकर बाबाओं या साधुओं को भीष्मपितामह कहा जाता है, जो 'परमात्मा सर्वव्यापी' का उल्टा ज्ञान सुनाकर भारत के लोगों की बुद्धि को भटका देते हैं। हद–बेहद के

कांग्रेसी रूपी कौरवों, राजनीतिक नेताओं रूपी दुर्योधनों और पूंजीवादी धृतराष्ट्रों द्वारा परबाबा की तरह उनका बहुत सम्मान किया जाता है।

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥ 1/11

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागम् अवस्थिताः। भीष्मम् एव अभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।।

च (इसलिए) **भवन्तः सर्व एव** (आप सभी लोग) **यथाभागम्** (अपने–2 विभागों के अनुसार) **सर्वेषु** (सब) **अयनेषु** (मोर्चो पर) **अवस्थिताः** (डटे रहकर) **हि** (निःसन्देह) **भीष्ममेवाभिरक्षन्तु** (सब ओर से भीष्म की ही रक्षा करें)।

तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥ 1/12

तस्य संजनयन् हर्षम् कुरुवृद्धः पितामहः। *सिंहनादम् विनद्य उच्चैः शंखम् दध्मौ प्रतापवान्।।

तस्य (उस {दुर्योधन} को) **हर्षं** (हर्ष) **संजनयन्** (उत्पन्न कराते हुए) **कुरुवृद्धः** (कौरवों में वयोवृद्ध) **प्रतापवान्** (प्रतापी) **पितामहः** (पितामह भीष्म ने) **उच्चैः** (जोर से) **विनद्य** (गरजकर) **सिंहनादं** (सिंहनाद) {किया और} **शंखम्** {अपनी "भगवान सर्वव्यापी है" आदि की शास्त्रीय अज्ञानता का मुख रूपी} (शंख) **दध्मौ** (बजाया)।

***सिंहनाद**–संसार रूपी जंगल को गुंजा देने वाले जानवर शेर की भयंकर (अज्ञानता की गूँज)

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ 1/13

ततः शंखाः च भेर्यः च पणवानकगोमुखाः। सहसा एव अभ्यहन्यन्त स शब्दः तुमुलः अभवत्।।

ततः (तब) **शंखाश्च** {अनेक प्रकार के मुखों वाले ज्ञान} (शंख और) **भेर्यश्च** (भेरियाँ तथा) **पणव** (ढोल), **अनक** (नगाड़े) {और} **गोमुखाः** (सिंगी आदि {ज्ञान–अज्ञान के} बाजे) {अर्थात् समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो, टी०वी० चैनल्स आदि मीडिया की आवाज़} **सहसा** (एकाएक) **एव** (ही) **अभ्यहन्यन्त** (होने लगी)। **सः** (उनका) **तुमुलः** (बड़ा भारी) **शब्दः** (शोरगुल) **अभवत्** (होने लगा)।

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥ 1/14

ततः श्वेतैः हयैः युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवः च एव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः।।

ततः (तब) **श्वेतैर्हयैर्युक्ते** (श्वेत {मन रूपी} घोड़ों से युक्त) **महति** (महान) **स्यन्दने** ({शरीर रूपी} रथ में) **स्थितौ** (बैठे हुए) **माधवः** (कामादिक शत्रुओं को खींचने वाले शिव भगवान) **च** (और) **पाण्डवः** ({कल्पान्त में आत्माओं को एकत्रित करने वाले परमपिता पण्डा रूपी पाण्डु के पुत्र} अर्जुन ने) **एव** (भी) **दिव्यौ** {अपने} (दिव्य) **शंखौ** {मुख रूपी} (शंख) **प्रदध्मतुः** (बजाए)।

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ 1/16

पांचजन्यम् हृषीकेशः देवदत्तम् धनंजयः। पौण्ड्रम् दध्मौ महाशंखम् भीमकर्मा वृकोदरः।।
अनंतविजयम् राजा कुन्तीपुत्रः युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवः च सुघोषमणिपुष्पकौ।।

हृषीकेशो (इन्द्रिय रूपी घोड़ों के स्वामी परमपिता शिव ने) **पांचजन्यं** ({पंचविकार रूपी असुरों को मारने के लिए जन्म लेने वाले} पांचजन्य), **धनंजयः** ({ज्ञानधन जयी} अर्जुन ने) **देवदत्तं** {ब्रह्मा रूपी इंद्रदेव द्वारा दिया हुआ} (देवदत्त), **भीमकर्मा** {अनेकानेक राक्षसों, कीचकों, सैकड़ों कौरवों की हत्या जैसे} (भयंकर कर्म करने वाले) **वृकोदरः** ({भेड़िए के समान खदूस बुद्धि रूपी पेट वाले} भीम ने) **पौण्ड्रं** (पौण्ड्र नामक) **महाशंखं**

(महाशंख), **कुन्तीपुत्रो** (कुंती माता के पुत्र) **राजा** (राजा) **युधिष्ठिरः** (युधिष्ठिर ने) **अनन्तविजयं** (अनन्तविजय), **नकुलः** (नकुल) **च** (और) **सहदेवः** (सहदेव ने) **सुघोषा** (सुघोष) {और} **मणिपुष्पकौ** (मणिपुष्पक) {नामक मुख रूपी शंख} **दध्मौ** (बजाए)।

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ 1/17
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥ 1/18

काश्यः च परमेष्वासः शिखंडी च महारथः। धृष्टद्युम्नः विराटः च सात्यकिः च अपराजितः।।
द्रुपदः द्रौपदेयाः च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रः च महाबाहुः शंखान् दध्मुः पृथक् पृथक्।।

परमेष्वासः (बड़ा धनुष धारण करने वाले) **काश्यश्च** (काशिराज {ने} और) **महारथः** (महारथी) **शिखण्डी** (शिखण्डी) {ने} **च** (एवं) **धृष्टद्युम्नो** (धृष्टद्युम्न), **विराटः** (विराट) **च** (एवं) **अपराजितः** (अपराजित) **सात्यकिश्च** (सात्यकि {ने} तथा) **द्रुपदो** (द्रुपद) **द्रौपदेयाश्च** (और द्रौपदी के पुत्रों ने) **सौभद्रश्च** (एवं सुभद्रापुत्र) **महाबाहुः** (महाबाहु) {अभिमन्यु ने}, **पृथिवीपते** (हे राजन्)! **सर्वशः** (चारों ओर) **पृथक्–पृथक्** (अलग–2) {प्रकार के} **शंखान्** {मुख रूपी} (शंख) **दध्मुः** (बजाए)।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ 1/19

स घोषः धार्तराष्ट्राणाम् हृदयानि व्यदारयत्। नभः च पृथिवीम् च एव तुमुलः व्यनुनादयन्।।

स (उस) **घोषो** {ज्ञान} (घोष से) **नभः** (आकाश) **च** (और) **पृथिवीं** (पृथ्वी) **तुमुलो** (जोर से) **व्यनुनादयन्** (गूँजने लगे) **चैव** (और) **धार्तराष्ट्राणां** {पूँजीवादी} (धृतराष्ट्र पुत्रों {कॉंग्रेसी–कौरवों रूपी नेताओं} के) **हृदयानि** (हृदय) **व्यदारयत्** (विदीर्ण हो गए)।

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ 1/20

अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुः उद्यम्य पाण्डवः।।

अथ (तब) **कपिध्वजः** {हनुमान लंगूर की विजय पताका से चिह्नित शरीर रूपी रथ वाले} (कपिध्वज) **पाण्डवः** (पाण्डव–अर्जुन ने) **धार्तराष्ट्रान्** {पूँजीवादी} (धृतराष्ट्र पुत्रों {कौरवीय नेताओं} को) **व्यवस्थितान्** (सज्जित) **दृष्ट्वा** (देखकर), **प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते** ({ज्ञान} शस्त्र चलाने के समय) {अपना} **धनुः** {पुरुषार्थ रूपी} (धनुष) **उद्यम्य** (उठाया)।

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।
अर्जुन उवाचः– सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ 1/21

हृषीकेशम् तदा वाक्यम् इदम् आह महीपते। सेनयोः उभयोः मध्ये रथम् स्थापय मे अच्युत।।

महीपते (हे राजन्)! **तदा अर्जुनोवाच** (उस समय अर्जुन ने) **हृषीकेशं** (पवित्रता के स्वामी एवरप्योर शिव जी से) **वाक्यमिदमाह** (यह वाक्य कहा)– **अच्युत** (हे अमोघ वीर्य)! **मे** (मेरे) **रथं** (रथ को) **सेनयोरुभयोर्मध्ये** (दोनों सेनाओं के मध्य में) **स्थापय** (खड़ा करो),

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ 1/22

यावत् एतान् निरीक्षे अहम् योद्धुकामान् अवस्थितान्। कैः मया सह योद्धव्यम् अस्मिन् रणसमुद्यमे।।

यावत् (जहाँ से) **अहं** (मैं) **योद्धुकामानवस्थितान्** ({ज्ञान} युद्ध के लिए उत्सुकतापूर्वक खड़े हुए) **एतान्** (इन {लोगों} को) **निरीक्षे** (देख सकूँ) {कि} **कैः** (किनके) **सह** (साथ) **मया** (मुझे) **अस्मिन्** (इस) **रणसमुद्यमे** {सत्य–असत्य के} (युद्ध में) **योद्धव्यम्** (लड़ना है)।

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ 1/23

योत्स्यमानान् अवेक्षे अहम् ये एते अत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेः युद्धे प्रियचिकीर्षवः।।

ये (जो) **एते** (ये राजा लोग) **अत्र** (यहाँ) **युद्धे** {सत्य–असत्य के} (युद्ध में) **दुर्बुद्धेः** (दुर्बुद्धि) **धार्तराष्ट्रस्य** (दुर्योधन का) **प्रियचिकीर्षवः** (प्रिय {कल्याण} करने की इच्छा वाले) **समागताः** (एकत्रित हुए हैं), {उन} **योत्स्यमानान्** (योद्धाओं को) **अहम्** (मैं) **अवेक्षे** (देखूँ)।

सञ्जय उवाचः– एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥ 1/24

एवम् उक्तः हृषीकेशः गुडाकेशेन भारत। सेनयोः उभयोः मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्।।

भारत (हे भरतवंशी {पूंजीवादी} धृतराष्ट्र!) **गुडाकेशेन** (निद्रा को जीतने वाले प्रजापिता ब्रह्मा रूपी अर्जुन के) **एवम्** (ऐसा) **उक्तः** (कहने पर) **हृषीकेशः** (इंद्रियों के स्वामी परमपिता शिव ज्योतिर्बिन्दु ने) **उभयोः** (दोनों) **सेनयोः** (सेनाओं के) **मध्ये** (बीच में) **रथोत्तमम्** (श्रेष्ठ {शरीर रूपी} रथ) **स्थापयित्वा** (स्थापित किया)

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ 1/25

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषाम् च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्य एतान् समवेतान् कुरून् इति।।

च (और) **भीष्मद्रोणप्रमुखतः** (भीष्म–द्रोण आदि) **सर्वेषाम्** (सब) **महीक्षिताम्** (राजाओं के सामने) **इति** (इस प्रकार) **उवाच** (कहा)–**पार्थ!** (हे पृथ्वीपति प्रजापिता ब्रह्मा रूपी अर्जुन!) **समवेतान्** (एकत्र हुए) **एतान्** (इन) **कुरून्** ({कांग्रेसी} कौरवों को) **पश्य** (देखो)।

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ 1/26
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।

तत्र अपश्यत् स्थितान् पार्थः पितॄन् अथ पितामहान्।
आचार्यान् मातुलान् भ्रातॄन् पुत्रान् पौत्रान् सखीन् तथा।।
श्वशुरान् सुहृदः च एव सेनयोः उभयोः अपि।

तत्र (वहाँ) {धर्म–कर्म की युद्धभूमि में} **पार्थः** (पृथ्वीपति अर्जुन) **उभयोः** (दोनों) **सेनयोः** (सेनाओं में) **स्थितान्** (खड़े हुए) **पितॄन्** (पितृपक्ष के बड़ों को), **अथ** (उसी तरह) **पितामहान्** (पितामहों रूपी बाबाओं), **आचार्यान्** (विद्वानाचार्यों), **मातुलान्** (मामाओं), **भ्रातॄन्** (भाइयों), **पुत्रान्** (पुत्रों), **पौत्रान्** (पौत्रों) **तथा** (और) **सखीन्** (मित्रों), **श्वशुरान्** (श्वशुरों) **च** (और) **सुहृदः** (सात्यकि आदि सगे–सम्बन्धियों को) **अपि** (भी) **एव** (स्पष्टतः) **अपश्यत्** (देखने लगा)।

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥ 1/27
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।

तान् समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान् बन्धून् अवस्थितान्।।
कृपया परया आविष्टः विषीदन् इदम् अब्रवीत्।

स (वह) **कौन्तेयः** (कुंती माता का पुत्र प्रजापिता ब्रहमार्जुन) **अवस्थितान्** {धर्मयुद्ध हेतु तैयार} (खड़े हुए) **तान्** (उन) **सर्वान्** (सब) **बन्धून्** (सम्बन्धियों को) **समीक्ष्य** (देखकर) **परया** (बड़ी) **कृपया** (करुणा से) **आविष्टः** (भरकर) **विषीदन्** (विषाद करते हुए) **इदम्** (यह) **अब्रवीत्** (बोला)–

अर्जुन उवाचः– दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥ 1/28

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ 1/29

दृष्ट्वा इमम् स्वजनम् कृष्ण युयुत्सुम् समुपस्थितम्।।
सीदन्ति मम गात्राणि मुखम् च परिशुष्यति। वेपथुः च शरीरे मे रोमहर्षः च जायते।।

कृष्ण! (हे वैरी आत्माओं को आकृष्ट करने वाले परमपिता शिव!) **इमम्** (इन) **समुपस्थितम्** (सामने खड़े हुए) **स्वजनं** (सगे–संबंधियों को) **युयुत्सुम्** (युद्ध करने के लिए उत्सुक) **दृष्ट्वा** (देखकर) **मम** (मेरे) **गात्राणि** (अंग) **सीदन्ति** (शिथिल हो रहे हैं) **च** (और) **मुखम्** (मुख) **परिशुष्यति** (अत्यन्त सूख रहा है) **च** (तथा) **मे** (मेरे) **शरीरे** (शरीर में) **वेपथुः** (कम्प) **च** (और) **रोमहर्षः** (रोंगटे) **जायते** (खड़े हो रहे हैं)।

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ 1/30
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।

गांडीवम् स्रंसते हस्तात् त्वक् च एव परिदह्यते।
न च शक्नोमि अवस्थातुम् भ्रमति इव च मे मनः।।
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।

केशव (हे केशव!) **गाण्डीवम्** (गांडीव {नामक पुरुषार्थ रूपी} धनुष) **हस्तात्** {बुद्धि रूपी} (हाथ से) **स्रंसते** (गिरा जाता है) **च** (तथा) **त्वक्** (त्वचा) **एव** (भी) **परिदह्यते** (सब ओर से {मानों} दहक रही है) **च** (और) **अवस्थातुम्** (खड़े रहने में) **च** (भी) **न शक्नोमि** (अशक्त हूँ)। **मे** (मेरा) **मनः** (मन) **भ्रमतीव** (चकरा–सा रहा है) **च** (और) **विपरीतानि** (विपरीत {फलसूचक}) **निमित्तानि** (शकुन) **पश्यामि** {मैं} (देख रहा हूँ)।

न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ 1/31
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।

न च श्रेयः अनुपश्यामि हत्वा स्वजनम् आहवे।। न काङ्क्षे विजयम् कृष्ण न च राज्यम् सुखानि च।

आहवे (धर्मयुद्ध में) **स्वजनम्** (अपने सगे–संबंधियों को) **हत्वा** {हिन्दू–मुस्लिमादि दैहिक धर्मों से} (मारकर) **श्रेयः** (कल्याण) **च** (भी) **न अनुपश्यामि** {मुझे} (नहीं दिखाई देता), {जिससे} **कृष्ण** (हे कामादिक शत्रुओं को आकर्षित करने वाले कालेश्वर!) **न काङ्क्षे विजयम्** {मैं} (विजय नहीं चाहता)। **राज्यम्** (राज्य) **च सुखानि** (और {स्वर्गीय} सुखों को) **च** (भी) **न** (नहीं) {चाहता}।

किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ 1/32
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ 1/33

किम् नः राज्येन गोविन्द किम् भोगैः जीवितेन वा।।
येषाम् अर्थे कांक्षितम् नः राज्यम् भोगाः सुखानि च।
त इमे अवस्थिताः युद्धे प्राणान् त्यक्त्वा धनानि च।।

गोविन्द (हे गोविंद!) **नः** (हमको) **राज्येन** (राज्य से) **किम्** (क्या?) {उसी तरह} **भोगैः** {दिव्य} (भोगों) **वा** (अथवा) **जीवितेन** (जीवन से) {भी} **किम्** (क्या) {लाभ}? {क्योंकि} **येषाम्** (जिनके) **अर्थे** (लिए) **नः** (हमने) **राज्यम्** (राज्य) **कांक्षितम्** (चाहा है), **भोगाः** (भोगों) **च** (और) **सुखानि** (सुखों को) {चाहा है}, **त** (वही) **इमे** (ये) **प्राणान्** (प्राणों) **च** (तथा) **धनानि** (धन को) **त्यक्त्वा** (त्यागकर) **युद्धे** (युद्ध में) **अवस्थिताः** (स्थिर हुए खड़े हैं)।

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ 1/34

आचार्याः पितरः पुत्राः तथा एव च पितामहाः। मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बंधिनः तथा।।

आचार्याः (द्रोणादि आचार्य), **पितरः** (काका), **पितामहाः** (बाबाएँ), **पुत्राः** (पुत्र) **च** (और) **तथा एव** (उसी प्रकार) **मातुलाः** (मामा), **श्वशुराः** (श्वशुर), **पौत्राः** (पौत्र), **श्यालाः** (साले) **तथा** (और) **सम्बंधिनः** (संबंधी) {भी हैं}।

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥ 1/35

एतान् न हन्तुम् इच्छामि घ्नतः अपि मधुसूदन। अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किम् नु महीकृते।।

मधुसूदन (हे मधु नामक काम विकार रूपी दैत्य को मारने वाले कामहन्ता शिव जी)! {मुझपर} **घ्नतः** (वार करते हुए) **अपि** (भी) {मैं} **महीकृते** (पृथ्वी के लिए) **नु** {तो} **किं** (क्या), **त्रैलोक्यराज्यस्य** (त्रिलोकी के राज्य के) **हेतोः** (कारण से) **अपि** (भी) **एतान्** (इन्हें) **हन्तुम्** (मारना) **न इच्छामि** (नहीं चाहता)।

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ 1/36

निहत्य धार्तराष्ट्रान् नः का प्रीतिः स्यात् जनार्दन।
पापम् एव आश्रयेत् अस्मान् हत्वा एतान् आततायिनः।।

जनार्दन (हे मनुष्यों द्वारा पुरुषार्थ–लाभ के लिए प्रार्थनीय परमेश्वर!) **धार्तराष्ट्रान्** {पूंजीवादी} (धृतराष्ट्र के पुत्रों {कौरवों} को) **निहत्य** (मारकर) **नः** (हमें) **का** (क्या) **प्रीतिः** (सुख) **स्यात्** (होगा?) **एतान्** (इन) **आततायिनः** (आततायियों को) **हत्वा** (मारकर) {तो} **अस्मान्** (हमको) **पापम्** (पाप) **एव** (ही) **आश्रयेत्** (लगेगा)।

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ 1/37

तस्मात् न अर्हाः वयम् हन्तुम् धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्।
स्वजनम् हि कथम् हत्वा सुखिनः स्याम माधव।।

तस्मात् (इसलिए) **स्वबान्धवान्** (अपने दैहिक सगे–संबंधियों) **धार्तराष्ट्रान्** {सारी धन–संपत्ति धर बैठने वाले (धृतराष्ट्र–पुत्रों) काँग्रेसी कौरवों (को)} **हन्तुम्** (मारना) **वयम्** (हमें) **न अर्हाः** (योग्य नहीं), **हि** (कारण कि) **स्वजनम्** (स्वजनों को) **हत्वा** (मारकर) **माधव** (हे माधव!), {हम} **सुखिनः** (सुखी) **कथम्** (कैसे) **स्याम** (होंगे)?

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ 1/38

यद्यपि एते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतम् दोषम् मित्रद्रोहे च पातकम्।।

यद्यपि (यद्यपि) **लोमोपहतचेतसः** {राज्य–धनादि के} (लोभ से नष्ट हुए चित्त वाले) **एते** (ये लोग) **कुलक्षयकृतं** (कुल के नाश का) **दोषम्** (दोष) **च** (और) **मित्रद्रोहे** (मित्रों से द्रोह करने में) **पातकं** (पाप) **न पश्यन्ति** (नहीं समझते हैं), {तो भी}

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ 1/39

कथम् न ज्ञेयम् अस्माभिः पापात् अस्मात् निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतम् दोषम् प्रपश्यद्भिः जनार्दन।।

जनार्दन (हे परमेश्वर)! **अस्माभिः** (हम) **अस्मात्** (इस) **पापात्** (पाप से) **निवर्तितुम्** (अलग होने के लिए) **कथं न** (क्यों न) **ज्ञेयम्** (विचार करें); {क्योंकि} **कुलक्षयकृतं** (कुल के नाश से होने वाले) **दोषम्** (पाप को) {हम लोग} **प्रपश्यद्भिः** (देख रहे हैं)।

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ 1/40

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलम् कृत्स्नम् अधर्मः अभिभवति उत।।

कुलक्षये (कुल का नाश होने पर) **सनातनाः** ({परम्परागत} सनातन) **कुलधर्माः** (कुल की धारणाएँ) **प्रणश्यन्ति** (नष्ट हो जाती हैं)। **धर्मे नष्टे** (धर्म नाश होने पर) **अधर्मः** (अधर्म {यानी विधर्म}) **उत** (भी) **कृत्स्नम्** (समस्त) **कुलम्** (कुल को) **अभिभवति** (चारों ओर से दबा लेता है)।

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ॥ 1/41

अधर्माभिभवात् कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।।

कृष्ण (हे विकार रूपी असुरों को खींचने वाले)! **अधर्माभिभवात्** (अधर्म {यानी मुस्लिम–क्रिश्चियनादि विधर्मों} के फैलने से) **कुलस्त्रियः** (कुल की स्त्रियाँ) **प्रदुष्यन्ति** (दूषित हो जाती हैं)। **स्त्रीषु दुष्टासु** (स्त्रियों के दूषित होने पर) **वार्ष्णेय** (हे वृष्णि–ज्ञानियों के वंश में उत्पन्न)! **वर्णसंकरः** (व्यभिचार से उत्पन्न हुई प्रजा) **जायते** (उत्पन्न होती है)।

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ 1/42

संकरः नरकाय एव कुलघ्नानाम् कुलस्य च। पतन्ति पितरः हि एषाम् लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।।

संकरः (वर्ण संकर प्रजा) **कुलस्य** (कुल की) **च** (और) **कुलघ्नानां** (कुलनाशकों की) **नरकाय** (अधोगति के लिए) **एव** (ही) {होती है}, **हि** (जिससे) **एषां** (इनके) **पितरः** (पितृगण) {भी} **लुप्तपिण्डोदकक्रियाः** (श्रद्धा भाव की क्रिया के लुप्त होने से) **पतन्ति** (अधोगति पाते हैं)।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ 1/43

दोषैः एतैः कुलघ्नानाम् वर्णसंकरकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माः च शाश्वताः।।

कुलघ्नानां (कुल का नाश करने वालों के) **एतैः** (इन) **वर्णसंकरकारकैः** (वर्णसंकरकारी) **दोषैः** (दोषों से) **जातिधर्माः** (जाति–धर्म) **च** (और) **शाश्वताः** (स्थायी) **कुलधर्माः** (कुल की धारणाएँ) **उत्साद्यन्ते** (नष्ट हो जाती हैं)।

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ 1/44

उत्सन्नकुलधर्माणाम् मनुष्याणाम् जनार्दन। नरके अनियतम् वासः भवति इति अनुशुश्रुम।।

जनार्दन (हे परमेश्वर)! **उत्सन्नकुलधर्माणां** (नष्ट हुए कुल धर्म वाले) **मनुष्याणां** (मनुष्यों का) **अनियतम्** (अनिश्चित समय तक) **नरके** (नरक में) **वासः** (निवास) **भवति** (होता है), **इति** (ऐसा) **अनुशुश्रुम** {हमने} (सुना है)।

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ 1/45

अहो बत महत् पापम् कर्तुम् व्यवसिता वयम्। यत् राज्यसुखलोभेन हन्तुम् स्वजनम् उद्यताः।।

अहो बत (अरे रे!) **वयं** (हम) **महत्** (भारी) **पापम्** (पाप) **कर्तुम्** (करने के लिए) **व्यवसिताः** (तैयार हो गए हैं), **यत्** (जो) **राज्यसुखलोभेन** (राज्य–सुख के लोभ से) **स्वजनम्** (अपने {ही सगे–संबंधी} जनों को) **हन्तुम्** (मारने के लिए) **उद्यताः** (तैयार हो गए हैं)।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ 1/46

यदि माम् अप्रतीकारम् अशस्त्रम् शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः तत् मे क्षेमतरम् भवेत्।।

यदि (जो) **अप्रतीकारम्** (बदला न लेने वाले) **अशस्त्रम्** (शस्त्र रहित) **माम्** (मुझको), **शस्त्रपाणयः** (हाथ में हथियार लिए हुए) **धार्तराष्ट्राः** (पूंजीपतियों के पुत्र {रूप कांग्रेसी कौरव}) **रणे** {हिन्दू–मुस्लिमादि के धर्म} (युद्ध में) **हन्युः** (मार डालें) {तो} **तत्** (वह) **मे** (मेरे लिए) **क्षेमतरम्** (विशेष कल्याणकारी) **भवेत्** (होगा)।

सञ्जय उवाचः– एवमुक्त्वार्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ 1/47

एवम् उक्त्वा अर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्। विसृज्य सशरम् चापम् शोकसंविग्नमानसः।।

एवमुक्त्वा (ऐसा कहकर), **शोकसंविग्नमानसः** (शोक से व्याकुल हुए चित्त वाला) **अर्जुनः** (अर्जुन) **संख्ये** (रणभूमि में) **सशरम्** {ज्ञान} (बाण सहित) **चापम्** {पुरुषार्थ रूपी} (धनुष को) **विसृज्य** (छोड़कर) **स्थोपस्थ** {शरीर रूपी} (रथ के ऊपर) **उपाविशत्** {हिम्मत हारकर} (बैठ गया)।

अध्याय–2

सञ्जय उवाच :– तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ 2/1

तम् तथा कृपया आविष्टम् अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
विषीदन्तम् इदम् वाक्यम् उवाच मधुसूदनः।।

मधुसूदनः (मधु रूपी काम विकार को मारने वाले) {भगवान ने} **तथा** (इस प्रकार) **कृपया** (करुणा से) **आविष्टम्** (भरे हुए), **अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्** (आँसुओं से भरी हुई व्याकुल आँखों वाले) {और} **विषीदन्तम्** (विषाद करने वाले) **तम्** (उस अर्जुन को) **इदम्** (यह) **वाक्यम्** (वचन) **उवाच** (कहे)।

भगवानुवाच :– कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ 2/2

कुतः त्वा कश्मलम् इदम् विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टम् अस्वर्ग्यम् अकीर्तिकरम् अर्जुन।।

अर्जुन (हे अर्जुन)! **अनार्यजुष्टम्** (अनार्यों द्वारा सेवित), **अस्वर्ग्यम्** (स्वर्ग में न ले जाने वाली) {और} **अकीर्तिकरम्** (अपकीर्तिकारक) **इदम्** (यह) **कश्मलम्** (मलिनता) **विषमे** (असमय में) **त्वा** (तुझे) **कुतः** (कहाँ से) **समुपस्थितम्** (आ गई)?

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥ 2/3

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ न एतत् त्वयि उपपद्यते।
क्षुद्रम् हृदयदौर्बल्यम् त्यक्त्वा उत्तिष्ठ परंतप।।

पार्थ (हे पृथा के पुत्र अर्जुन)! **क्लैब्यं** (नपुंसक) **मा स्म गमः** (मत बनो), **एतत्** (यह) **त्वयि** (तुम्हारे) **उपपद्यते न** (योग्य नहीं है)। **परंतप** (हे कामादिक शत्रुओं को ताप देने वाले अर्जुन)! **क्षुद्रम्** (क्षुद्र) **हृदयदौर्बल्यम्** (हृदय की दुर्बलता को) **त्यक्त्वा** (छोड़कर) **उत्तिष्ठ** (उठो)।

अर्जुन उवाचः– कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ 2/4

कथम् भीष्मम् अहम् संख्ये द्रोणम् च मधुसूदन। इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हौ अरिसूदन।।

(अर्जुन ने कहा):–मधुसूदन (हे कामनाथ!) **भीष्मं** (भीष्म) {रूप सन्यासियों}
च (और) **द्रोणं** (द्रोण आदि) {विद्वानाचार्यों के सामने} **संख्ये** (युद्ध में) **अहं** (मैं) **इषुभिः** (बाणों से) **कथं** (कैसे) **प्रति योत्स्यामि** (युद्ध करूँगा)? **अरिसूदन** (हे कामादिक शत्रुओं को नाश करने वाले)! {वे दोनों मेरे} **पूजार्हौ** (पूजनीय हैं)।

गुरूनहत्वा हि महानुभावाञ्छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ 2/5

गुरून् अहत्वा हि महानुभावान् श्रेयः भोक्तुम् भैक्ष्यम् अपि इह लोके।
हत्वा अर्थकामान् तु गुरून् इह एव भुंजीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्।।

महानुभावान् (महानुभाव) **गुरून्** (गुरुओं को) **अहत्वा हि** (मारने की अपेक्षा) **इह लोके** (इस लोक में) **भैक्ष्यं** (भीख माँगकर) **भोक्तुं** (खाना) **अपि** (भी) **श्रेयः** (अच्छा है)। **अर्थकामान्** (धनेच्छुक) **गुरून्** (गुरुओं को) **हत्वा** (मारकर) **तु इह** (तो यहाँ) **रुधिरप्रदिग्धान्** (रक्त से सने) **भोगान्** (भोगों को) **एव** (ही) **भुंजीय** (भोगूँगा)

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयोयद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ 2/6

न च एतत् विद्मः कतरत् नः गरीयः यत् वा जयेम यदि वा नः जयेयुः।
यान् एव हत्वा न जिजीविषामः ते अवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।।

च (और) **नः** (हमारे लिए) **कतरत्** (क्या) **गरीयः** (श्रेष्ठ है) **वा** (अथवा) **यत्** (कि) **जयेम** {हम} (जीतेंगे) **वा** (अथवा) **यदि नः** (यदि हमको) **जयेयुः** {वे} (जीतेंगे)–**एतत्** (यह) **न विद्मः** {हम} (नहीं जानते)। **यान्** (जिन्हें) **हत्वा** (मारकर) **न जिजीविषामः** {हम} (जीना नहीं चाहते), **ते धार्तराष्ट्राः** (वे पूंजीवादी धृतराष्ट्र के पुत्र) {कौरवजन} **प्रमुखे एव** (सामने ही) **अवस्थिताः** (खड़े हैं)।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ 2/7

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वाम् धर्मसम्मूढचेताः।
यत् श्रेयः स्यात् निश्चितम् ब्रूहि तत् मे शिष्यः ते अहम् शाधि माम् त्वाम् प्रपन्नम्।।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः (दीनता के दोष से विकृत स्वभाव वाला) {और} **धर्मसम्मूढचेताः** (धर्म के विषय में मोहित चित्त वाला) {मैं} **त्वां** (आपसे) **पृच्छामि** (पूछता हूँ)। **यत्** (जो) **निश्चितं** (निश्चित) **श्रेयः** (कल्याण की बात) **स्यात्** (हो), **तत्** (वह) **मे ब्रूहि** (मुझे कहो)। **अहं** (मैं) **ते** (आपका) **शिष्यः** (शिष्य हूँ), **त्वां** (आपकी) **प्रपन्नं** (शरण में आए हुए) **माम्** (मुझको) **शाधि** (उपदेश दीजिए)।

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ 2/8

न हि प्रपश्यामि मम अपनुद्यात् यत् शोकम् उच्छोषणम् इन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमौ असपत्नम् ऋद्धम् राज्यम् सुराणाम् अपि च आधिपत्यम्।।

हि (क्योंकि) **भूमौ** (पृथ्वी पर) **असपत्नं** (निष्कंटक), **ऋद्धम्** (एश्वर्य सम्पन्न) **राज्यं** (राज्य) **च** (और) **सुराणां** (देवों का) **आधिपत्यं** (स्वामित्व) **अवाप्य** (पा करके) **अपि** (भी), **यत्** (जो) **इन्द्रियाणां** (इन्द्रियों को) **उच्छोषणं** (सुखाने वाले) **मम** (मेरे) **शोकं** (शोक को) **अपनुद्यात्** (दूर करे), {वैसा} **न प्रपश्यामि** {मैं} (नहीं देखता)।

सञ्जय उवाचः– एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ 2/9

एवम् उक्त्वा हृषीकेशम् गुडाकेशः परंतप। न योत्स्य इति गोविन्दम् उक्त्वा तूष्णीम् बभूव ह।।

परंतप (कामादिक शत्रुओं को ताप देने वाला), **गुडाकेशः** (निद्राजीत प्रजापिता ब्रह्मार्जुन)!–**हृषीकेशं गोविन्दम्** (इन्द्रिय रूपी घोड़ों के स्वामी परमपवित्र भगवान से) **एवं** (ऐसा) **उक्त्वा** (कहने के बाद) **'न योत्स्ये'** ('{मैं} युद्ध नहीं करूँगा') **इति** (ऐसा) **ह** (स्पष्ट) **उक्त्वा** (कहकर) **तूष्णीं** (चुप) **बभूव** (हो गया)।

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ 2/10

तम् उवाच हृषीकेशः प्रहसन् इव भारत। सेनयोः उभयोः मध्ये विषीदन्तम् इदम् वचः।।

भारत (हे भरतवंशी धृतराष्ट्र)! **उभयोः** (दोनों) **सेनयोः** (सेनाओं के) **मध्ये** (बीच में) **विषीदन्तं** (शोकाकुल) **तं** (उस {प्रजापिता ब्रह्मार्जुन} से) **हृषीकेशः** (परमपवित्र शिवबाबा) **प्रहसन् इव** (प्रसन्न होते हुए के समान) **इदम्** (यह) **वचः** (वचन) **उवाच** (कहने लगे)।

भगवानुवाचः– अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ 2/11
अशोच्यान् अन्वशोचः त्वम् प्रज्ञावादान् च भाषसे।
गतासून् अगतासून् च न अनुशोचन्ति पण्डिताः।।

त्वं (तू) **अशोच्यान्** (शोक न करने योग्य का) **अन्वशोचः** (शोक कर रहा है) **च** (तथा) **प्रज्ञावादान्** (ज्ञानियों जैसे वचन) **भाषसे** (बोलता है)। **पण्डिताः** (पण्डितजन) **गतासून्** {अनिश्चय में} (मरे हुए) **च** (और) **अगतासून्** (जीने वालों का) **न अनुशोचन्ति** (शोक नहीं करते)।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ 2/12
न तु एव अहम् जातु न आसम् न त्वम् न इमे जनाधिपाः।
न च एव न भविष्यामः सर्वे वयम् अतः परम्।।

अहं (मैं) **जातु** (कोई भी समय) **न आसम्** (नहीं था)–{ऐसा} **न** (नहीं) {है}, **एव** (उसी तरह) **त्वं न** (तू नहीं) {था अथवा} **इमे** (ये) **जनाधिपाः** (नेतागण) **न** (नहीं) {थे} **च** (और) **अतः परम्** (अब बाद में) **वयम्** (हम) **सर्वे** (सब) **न भविष्यामः** (नहीं होंगे)–{ऐसा भी} **न** (नहीं) {है}।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ 2/13
देहिनः अस्मिन् यथा देहे कौमारम् यौवनम् जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरः तत्र न मुह्यति।।

यथा (जैसे) **देहिनः** (आत्मा की) **अस्मिन्** (इस) **देहे** (देह में) **कौमारं** (कुमारावस्था), **यौवनं** (युवावस्था) {और} **जरा** (बुढ़ापा) {होता है}, **तथा** (वैसे ही) **देहांतरप्राप्तिः** (दूसरे–2 {उत्तरोत्तर पतित} शरीरों की प्राप्ति होती है)। **धीरः** (धैर्यवान् पुरुष) **तत्र** (उस विषय में) **न मुह्यति** (मोह नहीं करते)।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ 2/14
मात्रास्पर्शाः तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनः अनित्याः तान् तितिक्षस्व भारत।।

कौन्तेय (हे कुंती माता के पुत्र)! **मात्रास्पर्शाः तु** (इन्द्रियों के विषय तो) **शीतोष्णसुखदुःखदाः** (सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख देने वाले हैं), **आगमापायिनः** (आने और जाने वाले हैं) {और} **अनित्याः** (नित्य नहीं रहते हैं)। **भारत** (हे भरतवंशी अर्जुन!) **तान्** (उनको) **तितिक्षस्व** {तू} (सहन कर)।

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ 2/15
यम् हि न व्यथयन्ति एते पुरुषम् पुरुषर्षभ। समदुःखसुखम् धीरम् सः अमृतत्वाय कल्पते।।

पुरुषर्षभ (हे पुरुषों {आत्माओं} में श्रेष्ठ) {प्रजापिता ब्रह्मा रूपी अर्जुन}! **समदुःखसुखं** (दुःख–सुख में समान रहने वाले) **यं धीरं पुरुषं** (जिस धैर्यवान पुरुष को) **एते** (ये) {विषय} **न व्यथयन्ति** (व्यथित नहीं करते), **सः हि** (वह निश्चय ही) **अमृतत्वाय** (अमरत्व {अर्थात् देवत्व के लिए}) **कल्पते** (योग्य बनता है)।

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ 2/16

न असतः विद्यते भावः न अभावः विद्यते सतः।
उभयोः अपि दृष्टः अंतः तु अनयोः तत्त्वदर्शिभिः।।

असतः (असत् {वस्तु} का) **भावः** (अस्तित्व) **न विद्यते** (नहीं होता) **तु** (और) **सतः** (सत्य {वस्तु} का) **अभावः** (अभाव) {भी} **न विद्यते** (नहीं होता)। **अनयोः उभयोः** (इन दोनों का) **अपि** (भी) **अन्तः** (निर्णय) **तत्त्वदर्शिभिः** (तत्वज्ञानियों द्वारा) **दृष्टः** (देख लिया गया है)।

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ 2/17

अविनाशि तु तत् विद्धि येन सर्वम् इदम् ततम्।
विनाशम् अव्ययस्य अस्य न कश्चित् कर्तुम् अर्हति।।

येन (जिस {मनुष्य सृष्टि के बीज–रूप आदम या आदिदेव शंकर} के द्वारा) **इदं** (यह) **सर्वं** (सम्पूर्ण) {विश्व} **ततम्** (विस्तार को प्राप्त हुआ है), **तत् तु** (उसको तो) **अविनाशि विद्धि** (अविनाशी जान)। **अस्य** (इस) **अव्ययस्य** (अव्यय {पुरुष शंकर} का) **विनाशं कर्तुं** (विनाश करने के लिए) **कश्चित्** (कोई भी) **न अर्हति** (समर्थ नहीं है)।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ 2/18

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्य उक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनः अप्रमेयस्य तस्मात् युध्यस्व भारत।।

नित्यस्य (नित्य), **अनाशिनः** (अविनाशी), **अप्रमेयस्य** (माप न करने योग्य) **शरीरिणः** (शरीर धारणकर्ता आत्मा के) **इमे देहाः** (ये शरीर) **अन्तवन्तः** (नाशवान्) **उक्ताः** (कहे गए हैं), **तस्मात्** (इसलिए) **भारत** (हे भरतवंशी!) **युध्यस्व** ({धर्म} युद्ध कर)।

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ 2/19

य एनम् वेत्ति हन्तारम् यः च एनम् मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतः न अयम् हन्ति न हन्यते।।

यः (जो) **एनं** (इस {आत्मा} को) **हन्तारं** (मारने वाला) **वेत्ति** (समझता है) **च यः** (और जो) **एनं** (इसे) **हतं** (मरा हुआ) **मन्यते** (मानता है), **तो उभौ** (वे दोनों) {ही} **न विजानीतः** {ठीक} (नहीं जानते)। **अयं** (यह) {आत्मा} **न** (न) **हन्ति** {किसी को} (मारता है) {और} **न हन्यते** (न मारा जाता है)।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ 2/20

न जायते म्रियते वा कदाचित् न अयम् भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजः नित्यः शाश्वतः अयम् पुराणः न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

अयं (यह) {आत्मा} **न कदाचित्** (न कभी) **जायते** (जन्मता है) **वा** (और) **न म्रियते** (न मरता है) **वा** (अथवा) **भूत्वा** (होकर) **भूयः** (फिर से) **न भविता** (नहीं होगा)–{ऐसा भी नहीं है}। **अजः** (अजन्मा), **नित्यः** (नित्य), **शाश्वतः** (सनातन), **पुराणो** (पुरातन) **अयं** (यह) {आत्मा}, **शरीरे** (शरीर) **हन्यमाने** (नाश होने पर) {भी} **न हन्यते** (नहीं मारा जाता)।

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥ 2/21

वेद अविनाशिनम् नित्यम् य एनम् अजम् अव्ययम्।
कथम् स पुरुषः पार्थ कम् घातयति हन्ति कम्।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति)! **यः** (जो) **एनं** (इस {आत्मा} को) **नित्यं** (नित्य), **अजं** (जन्मरहित), **अव्ययं** (अक्षय) {और} **अविनाशिनं** (विनाशरहित) **वेद** (जानता है), **सः पुरुषः** (वह पुरुष) **कं** (किसको) **कथं** (कैसे) **घातयति** (मरवाता है) {और} **कं हन्ति** (किसको मारता है)?

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ 2/22

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरः अपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि अन्यानि संयाति नवानि देही।।

यथा (जैसे) **नरः** (मनुष्य) **जीर्णानि** (पुराने) **वासांसि** (वस्त्रों को) **विहाय** (त्याग कर) **अपराणि** (दूसरे) **नवानि** (नए {वस्त्रों} को) **गृह्णाति** (ग्रहण करता है), **तथा** (वैसे) {ही} **देही** (आत्मा) **जीर्णानि** (पुराने) **शरीराणि** (शरीरों को) **विहाय** (छोड़कर) **अन्यानि** (दूसरे) **नवानि** (नए {शरीरों} को) **संयाति** (ग्रहण करता जाता है)।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ 2/23

न एनम् छिन्दन्ति शस्त्राणि न एनम् दहति पावकः।
न च एनम् क्लेदयन्ति आपः न शोषयति मारुतः।।

एनं (इस {आत्मा} को) **शस्त्राणि** (शस्त्र) **न छिन्दन्ति** (नहीं काटते), **एनम्** (इसको) **पावकः** (अग्नि) **न दहति** (नहीं जलाती), **एनम्** (इसको) **आपः** (पानी) **न क्लेदयन्ति** (नहीं भिगोता) **च** (और) **मारुतः** (हवा) {भी} **न शोषयति** (नहीं सुखाती)।

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ 2/24

अच्छेद्यः अयम् अदाह्यः अयम् अक्लेद्यः अशोष्यः एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुः अचलः अयम् सनातनः।।

अयम् (यह) {आत्मा} **अच्छेद्यः** (काटा नहीं जा सकता), **अयं अदाह्यः** (यह जलता नहीं), **अक्लेद्यः** ({यह} भीगता नहीं) **च** (और) **एव** (निःसन्देह) **अशोष्यः** (सूखता नहीं)। **अयम्** (यह) **नित्यः** (नित्य), **सर्वगतः** (सब जगह पहुँच वाला है), **सनातनः** (सनातन), **स्थाणुः** (स्थितशील) {और} **अचलः** (अचल {भी} है)।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ 2/25

अव्यक्तः अयम् अचिन्त्यः अयम् अविकार्यः अयम् उच्यते।
तस्मात् एवम् विदित्वा एनम् न अनुशोचितुम् अर्हसि।।

अयम् (यह) {आत्मा} **अव्यक्तः** (अव्यक्त है)। **अयम्** (यह) {अज्ञानियों द्वारा} **अचिन्त्यः** (चिंतन न करने योग्य) {और} **अयम्** (यह) **अविकार्यः** {अपने मूल रूप में} (विकारी न होने योग्य) **उच्यते** (बताई जाती है)। **तस्मात्** (इस कारण) **एनं** (इस {आत्मा} को) **एवं** (ऐसा) **विदित्वा** (जानकर) {भी तू} **अनुशोचितुं** (शोक करने के) **न अर्हसि** (योग्य नहीं है)

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ 2/26

अथ च एनम् नित्यजातम् नित्यम् वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वम् महाबाहो न एवम् शोचितुम् अर्हसि।।

अथ च (और यदि) **एनम्** (इसको) **नित्यजातम्** (सदा जन्मने वाला) **वा** (अथवा) **नित्यं मृतम्** (नित्य मरने वाला) **मन्यसे** (मानता है), **तथापि** (तो भी) **महाबाहो** (हे दीर्घबाहु)! **त्वम्** (तू) **एवम्** (इस तरह) **शोचितुम्** (शोक करने) **न अर्हसि** (योग्य नहीं है);

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ 2/27

जातस्य हि ध्रुवः मृत्युः ध्रुवम् जन्म मृतस्य च।
तस्मात् अपरिहार्ये अर्थे न त्वं शोचितुम् अर्हसि।।

हि (क्योंकि) **जातस्य** (जन्म लेने वाले की) **मृत्युः** (मृत्यु) **ध्रुवः** (निश्चित है) **च** (और) **मृतस्य** (मरने वाले का) **जन्म ध्रुवम्** (जन्म {भी} सुनिश्चित है), **तस्मात्** (इसलिए) **अपरिहार्ये अर्थे** (न टलने योग्य बात में) **त्वम्** (तू) **शोचितुम्** (शोक करने के) **न अर्हसि** (योग्य नहीं है)।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ 2/28

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनानि एव तत्र का परिदेवना।।

भारत (हे भरतवंशी!) **भूतानि** (प्राणियों का) **अव्यक्तादीनि** (आदि दिखाई नहीं देता)। {वि} **व्यक्तमध्यानि** (बीच में प्रगट होते हैं) {और} **अव्यक्तनिधनानि एव** (अंत में भी प्रत्यक्ष नहीं रहते), **तत्र** (उसमें) **का परिदेवना** (शोक क्या करना?) {इस श्लोक से आत्मा अव्यक्त लोक–परमधाम वासी प्रमाणित होती है।}

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ 2/29

आश्चर्यवत् पश्यति कश्चित् एनम् आश्चर्यवत् वदति तथा एव च अन्यः।
आश्चर्यवत् च एनम् अन्यः शृणोति श्रुत्वा अपि एनम् वेद न च एव कश्चित्।।

कश्चित् (कोई {व्यक्ति}) **एनम्** (इस {आत्मा} को) **आश्चर्यवत्** (आश्चर्य की तरह) **पश्यति** (देखता है) **च अन्यः** (और दूसरा) **तथा एव** (उसी प्रकार) **आश्चर्यवत् वदति** (आश्चर्य की ज्यों वर्णन करता है) **च अन्यः** (और दूसरा) {कोई} **एनम्** (इसको) **आश्चर्यवत्** (आश्चर्य की तरह) **शृणोति** (सुनता है) **च** (और) **कश्चित्** (कोई) **श्रुत्वा अपि** (सुनकर भी) **एनम्** (इसे) **न वेद** (नहीं जानता)। • शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। (मु.ता.14.5.70)

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ 2/30

देही नित्यम् अवध्यः अयम् देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात् सर्वाणि भूतानि न त्वम् शोचितुम् अर्हसि।।

भारत (हे अर्जुन)! **अयम्** (यह) **देही** (आत्मा) **सर्वस्य देहे** (सबके शरीरों में) **नित्यम्** (सदा) **अवध्यः** (अवध्य है {अर्थात् मारी नहीं जा सकती}), **तस्मात्** (इसलिए) **त्वम्** (तू) **सर्वाणि भूतानि** (सब प्राणियों का) **शोचितुम्** (शोक करने के लिए) **न अर्हसि** (योग्य नहीं है)।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ 2/31

स्वधर्मम् अपि च अवेक्ष्य न विकम्पितुम् अर्हसि।
धर्म्यात् हि युद्धात् श्रेयः अन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते।।

च (इसके अतिरिक्त) **स्वधर्मम्** (अपने धर्म को) **अपि** (भी) **अवेक्ष्य** (देखकर) **विकम्पितुम्** (विचलित होने) **न अर्हसि** (योग्य {तू} नहीं है); **हि** (क्योंकि) **धर्म्यात्** (धर्म) **युद्धात्** (युद्ध के सिवाय) **क्षत्रियस्य** (क्षत्रिय–{योद्धा} के लिए) **अन्यत्** (दूसरा) **श्रेयः** (कल्याण) **न विद्यते** (नहीं है)।

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ 2/32

यदृच्छया च उपपन्नम् स्वर्गद्वारम् अपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धम् ईदृशम्।।

यदृच्छया (अनायास) **उपपन्नम्** (प्राप्त हुए) **च** (और) **अपावृतम्** (खुले हुए) **स्वर्गद्वारम्** (स्वर्ग के द्वार स्वरूप) **ईदृशम्** (ऐसे) **युद्धम्** (युद्ध को) **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **सुखिनः क्षत्रियाः** (सुखी क्षत्रियजन) {ही} **लभन्ते** (पाते हैं)।

• जो (मायावी) युद्ध के मैदान में शरीर (देहभान) छोड़ेंगे वो स्वर्ग में आवेंगे।

(मु.6.5.67 पृ.1 अंत)

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ 2/33

अथ चेत् त्वम् इमम् धर्म्यम् संग्रामम् न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मम् कीर्तिम् च हित्वा पापम् अवाप्स्यसि।।

अथ चेत् (यदि) **त्वं** (तू) **इमं** (यह) **धर्म्यं** (धार्मिक) **संग्रामं** (युद्ध) **न करिष्यसि** (नहीं करेगा) **ततः** (तो) **स्वधर्मं** (स्वधर्म) **च** (और) **कीर्तिं** (कीर्ति को) **हित्वा** (नष्ट करके) **पापं** (पाप का) **अवाप्स्यसि** (भागी बनेगा)

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ 2/34

अकीर्तिम् च अपि भूतानि कथयिष्यन्ति ते अव्ययाम्।
सम्भावितस्य च अकीर्तिः मरणात् अतिरिच्यते।।

च (और) **भूतानि** (लोग) **अव्ययां** (निरंतर) **ते** (तेरी) **अकीर्तिं** (अपकीर्ति) **कथयिष्यन्ति** (करेंगे) **च** (और) **सम्भावितस्य** (सम्मानित व्यक्ति के लिए) **अकीर्तिः** (अपकीर्ति) **मरणात्** (मौत से) **अपि अतिरिच्यते** (भी बढ़कर है)।

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ 2/35

भयात् रणात् उपरतम् मंस्यन्ते त्वाम् महारथाः।
येषाम् च त्वम् बहुमतः भूत्वा यास्यसि लाघवम्।।

महारथाः (महारथी–{पुरुषार्थी}) **त्वां** (तुझको) **भयात्** (भय के कारण) **रणात्** ({माया के} युद्ध से) **उपरतं** (विमुख हुआ) **मंस्यन्ते** (मानेंगे)। **येषां** (जिनके {मन में}) **त्वं बहुमतो भूत्वा** (तेरा बहुत मान है) {वे ही} **यास्यसि लाघवम्** ({तुझको} तुच्छ समझेंगे)

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥ 2/36

अवाच्यवादान् च बहून् वदिष्यन्ति तव अहिताः।
निन्दन्तः तव सामर्थ्यम् ततः दुःखतरम् नु किम्।।

च (और) **तव** (तेरे) **अहिताः** (विरोधी) **तव** (तेरे) **सामर्थ्यं** (बल की) **निन्दन्तः** (निंदा करते हुए) **बहून्** (बहुत–सी) **अवाच्यवादान्** (अनकहनी बातें) **वदिष्यन्ति** (बोलेंगे)। **ततः** (उससे) **दुःखतरं** (बढ़कर दुःख) {की बात} **नु** (और) **किम्** (क्या होगी)!

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ 2/37

हतः वा प्राप्स्यसि स्वर्गम् जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **वा** (या) **हतः** {तो अनिश्चय बुद्धि की मौत} (मारा गया) {तो} **स्वर्गं** (स्वर्ग को) **प्राप्स्यसि** (पाएगा) **वा** (अथवा) **जित्वा** (जीतकर) **महीं** (धरणी को) **भोक्ष्यसे** (भोगेगा), **तस्मात्** (इसलिए) **युद्धाय** (युद्ध के लिए) **कृतनिश्चयः** (निश्चय करके) **उत्तिष्ठ** (उठ खड़ा हो)।

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ 2/38
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततः युद्धाय युज्यस्व न एवम् पापम् अवाप्स्यसि।।

सुखदुःखे (सुख–दुःख को), **लाभालाभौ** (लाभ–हानि को) {और} **जयाजयौ** (जय–पराजय को) **समे** (समान) **कृत्वा** {मान} (करके), **ततः** (बाद में) **युद्धाय** (युद्ध के लिए) **युज्यस्व** (तैयार हो जा)। **एवं** (इस तरह) **पापं** (पाप को) **न अवाप्स्यसि** {तू} (नहीं पाएगा)।

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ 2/39
एषा ते अभिहिता सांख्ये बुद्धिः योगे तु इमाम् शृणु।
बुद्ध्या युक्तः यया पार्थ कर्मबंधम् प्रहास्यसि।।

पार्थ (हे अर्जुन)! **एषा** (यह) **बुद्धिः** (मत) **ते** (तेरे लिए) **सांख्ये** (ज्ञान के अनुसार) **अभिहिता** (कही गई है) **तु** (और) {अब} **योगे** (आत्मा का परमात्मा के साथ योग में) **इमाम्** (इस {मत} को) **शृणु** {तू} (सुन)–**यया** (जिस) **बुद्ध्या** (मत से) **युक्तः** (युक्त हुआ) {तू} **कर्मबन्धम्** (कर्मो के बंधन को) **प्रहास्यसि** (नष्ट कर देगा)।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ 2/40
न इह अभिक्रमनाशः अस्ति प्रत्यवायः न विद्यते।
स्वल्पम् अपि अस्य धर्मस्य त्रायते महतः भयात्।।

इह (इस {योग} में) **अभिक्रमनाशः** (किए गए प्रयत्न का नाश) **न अस्ति** (नहीं होता), **प्रत्यवायः** (उल्टा फल) {भी} **न विद्यते** (नहीं होता)। **अस्य** (इस {आत्म–परमात्म–ज्ञान–योग} की) **धर्मस्य** (धारणा का) **स्वल्पं** (थोड़ा अंश) **अपि** (भी) **महतः** (महान) **भयात्** (भय से) **त्रायते** (रक्षण करता है)।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ 2/41
व्यवसायात्मिका बुद्धिः एका इह कुरुनन्दन।
बहुशाखा हि अनन्ताः च बुद्धयः अव्यवसायिनाम्।।

कुरुनन्दन (हे कुरुवंश को आनंदित करने वाले)! **इह** (इस {योग मार्ग} में) **व्यवसायात्मिका** (निश्चयात्मक) **बुद्धिः** ({श्री}मत्) **एका** (एक {भगवान की} ही) {है}, **च** (जबकि) **अव्यवसायिनां** (निश्चय शून्य मनुष्यों की) **बुद्धयः** (मतें) {तो} **हि** (निश्चय ही) **बहुशाखाः** (अनेक {हिंदू–मुस्लिम मठ–पंथ–सम्प्रदायादि} शाखाओं वाली) **अनन्ताः** (असंख्य हैं)।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ 2/42
याम् इमाम् पुष्पिताम् वाचम् प्रवदन्ति अविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ न अन्यत् अस्ति इति वादिनः।।

पार्थ (हे पार्थ)! **वेदवादरताः** (वेदों के अर्थवाद में लिप्त) {और} **अन्यत्** (दूसरा कोई) {ज्ञानमार्ग} **न अस्ति** (नहीं है)–**इति वादिनः** (ऐसा कहने वाले) **अविपश्चितः** (अविवेकीजन हैं), **याम्** (जो) **इमाम्** (ये) **पुष्पिताम्** (फूली–2 आपातरमणीय) **वाचम्** (वाणी) **प्रवदन्ति** (बोलते हैं)।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ 2/43
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलाम् भोगैश्वर्यगतिम् प्रति।।

{वे} **कामात्मानः** ({सांसारिक} कामनाओं की लालसा वाले हैं), **स्वर्गपराः** (स्वर्ग को ही परम पुरुषार्थ मानने वाले हैं) {और} **भोगैश्वर्यगतिं प्रति** (सांसारिक भोग–वैभव की प्राप्ति के लिए) **जन्मकर्मफलप्रदां** (अनेक जन्म के कर्मफलों को प्रदान करने वाले) **क्रियाविशेषबहुलां** (विशेष प्रकार के यज्ञादिक क्रियाकाण्ड करने की बहुत बातें कहते हैं)।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ 2/44

भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम् तया अपहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।

तया (उस {आपातरमणीय वाणी} से) **अपहृतचेतसां** (खिंचे हुए चित्त वालों की) {और} **भोगैश्वर्यप्रसक्तानां** (सांसारिक विषयभोग तथा ऐश्वर्य में आसक्त जनों की) **व्यवसायात्मिका** (अनिश्चयात्मक) **बुद्धिः** (बुद्धि) **समाधौ** (ईश्वर की याद में) **न विधीयते** (स्थित नहीं होती)।

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ 2/45

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यः भव अर्जुन। निर्द्वन्द्वः नित्यसत्त्वस्थः निर्योगक्षेम आत्मवान्।।

अर्जुन (अर्ज+उनन्, हे ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सद्भाग्य का अर्जन करने वाले–अर्जुन)! **वेदाः** (वेद) **त्रैगुण्यविषयाः** ({सत्–रज–तम}, तीनों गुणों के विषय वाले हैं)। {तू} **निस्त्रैगुण्यः** (तीन गुणों के भाव से रहित), **नित्यसत्त्वस्थः** (नित्य सत्व गुण में स्थिर रहने वाला), **निर्द्वन्द्वः** (सुख–दुःखादि द्वन्द्वों से मुक्त), **निर्योगक्षेमः** (प्राप्ति और उसकी रक्षा से रहित) {और} **आत्मवान्** (ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मस्थिति वाला) **भव** (हो)।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ 2/46

यावान् अर्थः उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके। तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।

सर्वतः (चारों ओर से) **संप्लुतोदके** (लबालब भरे हुए बड़े मानसरोवर के) {होने पर} **यावान्** (जितना) **अर्थः** (प्रयोजन) **उदपाने** (पोखरे में रह जाता है), **तावान्** (उतना) {ही प्रयोजन} **विजानतः** (विशेष ज्ञानवान्) **ब्राह्मणस्य** (ब्राह्मण वत्स का) **सर्वेषु वेदेषु** (सब वेदों {ब्रह्म वाक्य रूपी मुरलियों} में रह जाता है) {अर्थात् साक्षात् भगवान द्वारा सत्य ज्ञान मिल जाने से वेद आदि पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं रहती}।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ 2/47

कर्मणि एव अधिकारः ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुः भूः मा ते संगः अस्तु अकर्मणि।।

ते (तेरा) **कर्मणि** (कर्मयोग में) **एव** (ही) **अधिकारः** (अधिकार है), **फलेषु** ({वर्तमानकालीन} फलों में) **कदाचन** (कभी) {भी} **मा** (नहीं); {इसलिए} **कर्मफलहेतुः** (कर्मफल का हेतु–{उत्पादक}) **मा भूः** (मत बनो) {और} **ते** (तुम्हारी) **अकर्मणि** (कर्म न करने में) {भी} **संगः** (आसक्ति) **मा अस्तु** (न हो)।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ 2/48

योगस्थः कुरु कर्माणि संगम् त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समः भूत्वा समत्वम् योग उच्यते।।

धनंजय (धनं+जयति, हे ज्ञानधन जीतने वाले अर्जुन)! **संगं** (आसक्ति को) **त्यक्त्वा** (त्याग कर), **योगस्थः** (योग में स्थित होकर), **सिद्ध्यसिद्ध्योः** (सफलता वा असफलता में) **समः भूत्वा** (समान होकर) **कर्माणि कुरु** (कर्मों को कर)। **समत्वं** (समत्व) {ही} **योगः उच्यते** (योग कहा जाता है)।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ 2/49

दूरेण हि अवरम् कर्म बुद्धियोगात् धनंजय। बुद्धौ शरणम् अन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ।।

धनंजय (हे ज्ञानधन जीतने वाले)! **बुद्धियोगात्** ({परमात्मा में} बुद्धि लगाने के सिवाय) **हि कर्म** (केवल कर्म करना) **दूरेण** (अत्यन्त) **अवरं** (नीचा है), {तू} **बुद्धौ** (बुद्धिमानों की) **शरणं** (शरण) **अन्विच्छ** (ले)। **फलहेतवः** {वर्तमान जन्म में} (फल की इच्छा करने वाले) **कृपणाः** (कंजूस हैं)।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ 2/50

बुद्धियुक्तः जहाति इह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्मात् योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।

बुद्धियुक्तः (बुद्धि को परमात्मा में जोड़ने वाला) **इह** (इस {लोक} में) **उभे सुकृतदुष्कृते** (अच्छे या {चोरी आदि} बुरे {समझे जाने वाले}, दोनों प्रकार के कर्मों को) **जहाति** (छोड़ देता है)। **कर्मसु** (कर्मों में) **कौशलम्** ({युक्तियुक्त} कुशलता) {ही} **योगः** (योग है), **तस्मात्** (इसलिए) **योगाय** (योग के लिए) **युज्यस्व** (जुट जा)।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ 2/51

कर्मजम् बुद्धियुक्ता हि फलम् त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदम् गच्छन्ति अनामयम्।।

हि (क्योंकि) **बुद्धियुक्ताः** ({ईश्वर में} बुद्धि लगाने वाले) **मनीषिणः** (ज्ञानीजन) **कर्मजं** (कर्म से उत्पन्न हुए) **फलं** ({वर्तमान} परिणाम को) **त्यक्त्वा** (त्यागकर {अर्थात् उसकी परवाह न करके}), **जन्मबंधविनिर्मुक्ताः** (इन कलियुगी जन्मादिक दुःखों के बंधन से विशेष रूप से मुक्त होकर), **अनामयम्** (दुःख रहित) **पदं** ({संगमयुगी} परम पद को) **गच्छन्ति** (प्राप्त करते हैं)।

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ 2/52

यदा ते मोहकलिलम् बुद्धिः व्यतितरिष्यति। तदा गन्तासि निर्वेदम् श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।

यदा ते (जब तेरी) **बुद्धिः** (बुद्धि) **श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च** (सुनी–सुनाई हुई बातों के) **मोहकलिलं** (मोह रूपी कीचड़ को) **व्यतितरिष्यति** (पार कर जाएगी), **तदा** (तब) **निर्वेदं** ({परम} वैराग्य को) **गन्तासि** {तू} (प्राप्त हो जाएगा)। • सुनी–सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।

(मु.30.1.71 पृ.4 आ.)

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ 2/53

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधौ अचला बुद्धिः तदा योगम् अवाप्स्यसि।।

यदा (जब) **ते** (तेरी) **श्रुतिविप्रतिपन्ना** (नाना श्रुतियों, वेद–शास्त्रों द्वारा विक्षिप्त–भ्रमित हुई) **बुद्धिः** (बुद्धि) **समाधौ** (परमात्मा की याद में) **निश्चला** (अविचल) {और} **अचला स्थास्यति** (स्थिर हो जाएगी), **तदा** (तब) **योगं अवाप्स्यसि** ({तू सम्पूर्ण} योग {की अवस्था} को पा लेगा)।

• इन शास्त्र आदि पढ़ने से किसको सद्गति नहीं मिलती। मनुष्य आत्माओं की सद्गति का ज्ञान इन शास्त्रों में नहीं है। मानवीय गीता से भी किसकी सद्गति हो नहीं सकती। (मु.ता.20.5.92 पृ.1 आ.)

अर्जुन उवाचः– स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ 2/54

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।

स्थितधीः किम् प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम्।।

केशव ('क'+ईश अर्थात् हे 'ब्रह्मा' रूपी बैल के ईश्वर {शिवशंकर जी})! **स्थितप्रज्ञस्य** (स्थिर बुद्धि का) {और} **समाधिस्थस्य** (परमात्मा की याद में स्थित होने वाले की) **का भाषा** (क्या परिभाषा है)? **स्थितधीः** (स्थिर बुद्धि वाला) **किं प्रभाषेत** (कैसे बोलता है), **किं आसीत** (कैसे बैठता है) {और} **किं व्रजेत** (कैसे चलता है)?

श्रीभगवानुवाचः– प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ 2/55

प्रजहाति यदा कामान्✷ सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मनि एव आत्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञः तदा उच्यते।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) **मनोगतान्** (मनोगत) **सर्वान् कामान्** (सब {वर्तमान जन्म की लौकिक} इच्छाओं को) **यदा** (जब) {मनुष्य} **प्रजहाति** (त्याग देता है) {और} **आत्मना** (अपने आपसे) **आत्मनि** (आत्म स्थिति में) **एव** (ही) **तुष्टः** (संतुष्ट–{प्रसन्न} रहता है), **तदा** (तब) **स्थितप्रज्ञः** (स्थिर बुद्धि वाला) **उच्यते** (कहा जाता है)।
✷ इच्छामात्रमविद्या

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ 2/56

दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीः मुनिः उच्यते।।

दुःखेषु (दुःखों में) **अनुद्विग्नमनाः** (उद्वेग–{बेचैनी} से रहित मन वाला), **सुखेषु** ({लौकिक} सुखों में) **विगतस्पृहः** (इच्छारहित) {और} **वीतरागभयक्रोधः** (राग–भय–क्रोध से रहित) **मुनिः** (मननशील व्यक्ति) **स्थितधीः** (स्थिरबुद्धि) **उच्यते** (कहा जाता है)।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ 2/57

यः सर्वत्र अनभिस्नेहः तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम्।
न अभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

यः (जो) **सर्वत्र** ({देह और देह के} सर्व {सम्बंधों–पदार्थों} में) **अनभिस्नेहः** (स्नेहरहित हुआ) **तत्–तत्** (उन–2) **शुभाशुभं प्राप्य** (शुभ या अशुभ को पाकर) **न अभिनन्दति** (न आनंदित होता है), **न द्वेष्टि** (न द्वेष करता है), **तस्य** (उसकी) **प्रज्ञा** (बुद्धि) **प्रतिष्ठिता** ({दृढ़तापूर्वक} स्थिर है)।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ 2/58

यदा संहरते च अयम् कूर्मः अंगानि इव सर्वशः।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

च (और) **यदा** (जब) **अयम्** (यह {योगी पुरुष}) **कूर्मः अंगानि** (कछुए के अंगों की) **इव** (तरह) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियों को) **इन्द्रियार्थेभ्यः** (इन्द्रियों के विषयों से) **सर्वशः** (सब ओर से) **संहरते** (खींच लेता है), {तब} **तस्य** (उसकी) **प्रज्ञा** (बुद्धि) **प्रतिष्ठिता** (दृढ़ता से स्थिर हो जाती है)।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ 2/59

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जम् रसः अपि अस्य परम् दृष्ट्वा निवर्तते।।

निराहारस्य (विषय भोगों का आहार न करने वाले) **देहिनः** (पुरुष के) **विषयाः** (विषय भोग) **विनिवर्तन्ते** (हट जाते हैं); {किंतु} **रसवर्जं** ({राग}–आसक्ति नहीं हटती)। {जबकि} **अस्य** (इस {योगी} की) **रसः** (आसक्ति) **अपि** (भी) **परम्** (परमार्थ को) **दृष्ट्वा** (देखकर) **निवर्तते** (हट जाती है)।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ 2/60

यततः हि अपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभम् मनः।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **यततः** (प्रयत्न करते हुए) **विपश्चितः** (बुद्धिमान्) **पुरुषस्य** (पुरुष की) **अपि** (भी) **प्रमाथीनि** (मथ डालने वाली) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियाँ) **मनः** (मन को) **प्रसभम्** (बलपूर्वक) **हरन्ति** (खींच लेती हैं)।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ 2/61

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्य इन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

तानि सर्वाणि (उन सब {इन्द्रियों} को) **संयम्य** (वश में करके) **मत्परः** (मुझ {ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परम आत्मा} में) **युक्तः आसीत** (मन लगाना चाहिए); **हि** (क्योंकि) **यस्य** (जिसकी) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियाँ) **वशे** (वश में) {हैं}, **तस्य** (उसकी) **प्रज्ञा** (बुद्धि) **प्रतिष्ठिता** ({दृढ़तापूर्वक} स्थिर रहती है)।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ 2/62

ध्यायतः विषयान् पुंसः संगः तेषु उपजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधः अभिजायते।।

विषयान् (विषयों का) **ध्यायतः** (ध्यान करने वाले) **पुंसः** (पुरुष को) **तेषु** (उन {विषयों} में) **संगः** (आसक्ति) **उपजायते** (उत्पन्न होती है)। **संगात्** (आसक्ति से) **कामः** (कामना) **संजायते** (पैदा होती है), **कामात्** (कामना {की पूर्ति न होने} से) **क्रोधः** (क्रोध) **अभिजायते** (उत्पन्न होता है)।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ 2/63

क्रोधात् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।

क्रोधात् (क्रोध से) **संमोहः** (सम्पूर्ण मोह {अर्थात् मूढ़ता}) **भवति** (आती है), **संमोहात्** (मूढ़ता से) **स्मृतिविभ्रमः** (स्मृति का नाश होता है), **स्मृतिभ्रंशात्** (स्मृति के भ्रष्ट होने से) **बुद्धिनाशः** (बुद्धि का नाश होता है) {और} **बुद्धिनाशात्** (बुद्धि का नाश होने से) **प्रणश्यति** {अनिश्चय बुद्धि रूपी} (मृत्यु को प्राप्त हो जाता है)।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ 2/64

रागद्वेषवियुक्तैः तु विषयान् इन्द्रियैः चरन्। आत्मवश्यैः विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति।।

तु (परंतु) **विधेयात्मा** (अनुशासित मन वाला पुरुष) **रागद्वेषवियुक्तैः** (रागद्वेषविहीन) {और} **आत्मवश्यैः** (आत्मा के वशीभूत हुई) **इन्द्रियैः** (इन्द्रियों के द्वारा) {आत्मकल्याणार्थ उचित} **विषयान्** (विषयों का) **चरन्** (आचरण करता हुआ) **प्रसादं** (प्रसन्नता को) **अधिगच्छति** (प्राप्त करता है)।

प्रसादे सर्वदुःखानां ह्यनिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ 2/65

प्रसादे सर्वदुःखानाम् हानिः अस्य उपजायते। प्रसन्नचेतसः हि आशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।।

प्रसादे (प्रसन्नता प्राप्त होने पर) **अस्य** (इस {पुरुष} के) **सर्वदुःखानां** (सब दुःखों का) **हानिः** (नाश) **उपजायते** (हो जाता है); **हि** (क्योंकि) **प्रसन्नचेतसः** (प्रसन्नचित्त {हर्षितमुख} व्यक्ति की) **बुद्धिः** (बुद्धि) **आशु** (शीघ्र) {ही} **पर्यवतिष्ठते** (भली–भाँति स्थिर हो जाती है)। **{हर्षितमुखता}**

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ 2/66
न अस्ति बुद्धिः अयुक्तस्य न च अयुक्तस्य भावना।
न च अभावयतः शांतिः अशान्तस्य कुतः सुखम्।।

अयुक्तस्य (अयोगी/भोगी व्यक्ति में) **बुद्धिः** {सात्विकी} (बुद्धि) **न अस्ति** (नहीं होती) **च** (और) **अयुक्तस्य** (अयोगी व्यक्ति में) **भावना** (भावना) {भी} **न** (नहीं) {होती} **च** (और) **अभावयतः** (भावनाहीन को) **शांतिः** (शान्ति) **न** (नहीं) {होती; अतः} **अशांतस्य** (अशांत व्यक्ति को) **सुखं** (सुख) **कुतः** (कहाँ से होगा)?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ 2/67
इन्द्रियाणाम् हि चरताम् यत् मनः अनु विधीयते।
तत् अस्य हरति प्रज्ञाम् वायुः नावम् इव अम्भसि।।

यत् (जो) **मनः** (मन) **चरताम्** {विषयों में} (विचरण करती हुई) **इन्द्रियाणाम्** (इन्द्रियों का) **अनु विधीयते** (अनुसरण करता है), **तत्** (वह {मन}) **वायुः** (वायु द्वारा) **अम्भसि** (पानी में) **नावं** (नाव की) **इव** (तरह) **अस्य प्रज्ञां** (इस {पुरुष} की बुद्धि को) **हरति** (हर लेता है)।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ 2/68
तस्मात् यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

महाबाहो (हे सहयोगियों रूपी लम्बी भुजा वाले)! **तस्मात्** (इसलिए) **यस्य** (जिसकी) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियाँ) **इन्द्रियार्थेभ्यः** (इन्द्रियों के विषयों से) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **निगृहीतानि** (रोक ली गई हैं), **तस्य** (उसकी) **प्रज्ञा प्रतिष्ठिता** (बुद्धि स्थिर है)।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ 2/69
या निशा सर्वभूतानाम् तस्याम् जागर्ति संयमी।
यस्याम् जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतः मुनेः।।

सर्वभूतानां (सर्व {सामान्य} प्राणियों की) **या निशा** (जो {आध्यात्मचिन्तन रूपी} रात्रि है), **तस्यां संयमी** (उस {अध्यात्म जगत} में योगी) **जागर्ति** (जागता है) {और} **यस्यां** (जिस {दुनियावी भौतिकता की अज्ञान रात्रि} में) **भूतानि जाग्रति** ({सांसारिक} प्राणी जागते हैं), **सा** (वह) **पश्यतः मुनेः** (मननशील मुनि के लिए) **निशा** (रात्रि है)।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ 2/70
आपूर्यमाणम् अचलप्रतिष्ठम् समुद्रम् आपः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत् कामाः यम् प्रविशन्ति सर्वे स शांतिम् आप्नोति न कामकामी।।

आपूर्यमाणं (चारों ओर से भरपूर) **अचलप्रतिष्ठं** (अचल प्रतिष्ठा वाले) **समुद्रम्** (समुद्र में) **यद्वत्** (जैसे) **आपः प्रविशन्ति** ({नदी–नालों के} जल प्रवेश पाते हैं), **तद्वत्** (वैसे ही) **यं** (जिस {पुरुष} की) **सर्वे ◈कामाः** (सारी कामनाएँ) **प्रविशन्ति** {ज्ञान सागर परमात्मा में} (प्रवेश कर जाती हैं), **स** (वह {पुरुष}) **शांतिं** (शांति को) **आप्नोति** (पाता है); **कामकामी न** (कामनाओं का इच्छुक नहीं) {पाता है}। ◈एक शिवबाबा दूसरा न कोई, बाकी सब इच्छामात्रमविद्या

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ 2/71
विहाय कामान् यः सर्वान् पुमान् चरति निःस्पृहः ।
निर्ममः निरहंकारः स शांतिम् अधिगच्छति।।

यः (जो) **पुमान्** (पुरुष) **सर्वान्** (सब) **कामान्** (कामनाओं को) **विहाय** (छोड़कर) **निःस्पृहः** (लालसारहित), **निर्ममः** (ममताहीन) {और} **निरहंकारः** (निरहंकारी भाव का) **चरति** (आचरण करता है), **सः** (वह) **शांतिम्** (शांति) **अधिगच्छति** (प्राप्त करता है)।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ 2/72
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ न एनाम् प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वा अस्याम् अन्तकाले अपि ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति।।

पार्थ (हे अर्जुन)! **एषा** (यह) **ब्राह्मी** (ब्रह्मा से उत्पन्न हुई) {अव्यक्त} **स्थितिः** (अवस्था है)। **एनाम्** (इसको) **प्राप्य** (प्राप्त करके) {मनुष्य} **न विमुह्यति** (मोह में नहीं पड़ता) {और} **अन्तकाले** (महामृत्यु के समय) **अपि** (भी) **अस्याम्** (इस अवस्था में) **स्थित्वा** (स्थिर होकर) **ब्रह्मनिर्वाणम्** (पारलोक को) **ऋच्छति** (प्राप्त करता है)।

अध्याय–3

अर्जुन उवाचः– ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ 3/1
ज्यायसी चेत् कर्मणः ते मता बुद्धिः जनार्दन।
तत् किम् कर्मणि घोरे माम् नियोजयसि केशव।।

जनार्दन {जनैरर्द्यते याच्यते पुरुषार्थलाभाय, अर्द+ल्युट्;} (हे परमेश्वर)! **ते** (आप) **कर्मणः** (कर्म से) **बुद्धिः** (बुद्धियोग) **ज्यायसी** (श्रेष्ठ) **मता चेत्** (मानते हों), **तत्** (तो) **केशव** (हे परमेश्वर)! **घोरे कर्मणि** {मायावी युद्ध जैसे} (भयंकर कर्म में) **माम्** (मुझे) **किम्** (किसलिए) **नियोजयसि** (लगा रहे हो)?

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ 3/2
व्यामिश्रेण इव वाक्येन बुद्धिम् मोहयसि इव मे।
तत् एकम् वद निश्चित्य येन श्रेयः अहम् आप्नुयाम्।।

व्यामिश्रेण इव ({परस्पर} मिले हुए–से) **वाक्येन** (वाक्यों से) **मे बुद्धिं** (मेरी बुद्धि) **मोहयसि इव** (भ्रमित–सी कर रहे हो)। **तत्** (तो) **निश्चित्य** (निश्चय करके) **एकम्** (एक बात) **वद** (कहो), **येन** (जिससे) **अहं श्रेयः** (मैं कल्याण को) **आप्नुयाम्** (प्राप्त करूँ)।

भगवानुवाचः– लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ 3/3
लोके अस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मया अनघ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानाम् कर्मयोगेन योगिनाम्।।

अनघ (हे पाप रहित अर्जुन)! **पुरा** ({सृष्टि के} आदि पुरुषोत्तम संगम में) **मया** (मैंने) **अस्मिन् लोके** (इस लोक में) **द्विविधा** (दो प्रकार की) **निष्ठा** (प्रणाली) **प्रोक्ता** (कही थी)। **ज्ञानयोगेन** (ज्ञान–योग द्वारा) **सांख्यानां** (ज्ञानियों की) {अर्थात् कपिलमुनि जैसे मनन–चिंतनशील पुरुषों के लिए ज्ञानयोग} {और} **योगिनाम्** (योगीजनों के लिए) **कर्मयोगेन** (कर्मयोग द्वारा) {मार्ग बताया था}।

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ 3/4

न कर्मणाम् अनारम्भात् नैष्कर्म्यम् पुरुषः अश्नुते।
न च संन्यसनात् एव सिद्धिम् समधिगच्छति।।

पुरुषः (व्यक्ति) **कर्मणां** (कर्मों के) **अनारम्भात्** (आरम्भ न करने से) **नैष्कर्म्यं** (कर्मशून्यता {रूप संन्यास} को) **न अश्नुते** (नहीं प्राप्त करता), **च** (उसी तरह) **संन्यसनात्** ({कर्मों के सम्पूर्ण} त्याग से) **एव** (भी) **सिद्धिं** {मुक्ति रूपी} (सिद्धि) **न समधिगच्छति** (प्राप्त नहीं हो सकती)।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ 3/5
न हि कश्चित् क्षणम् अपि जातु तिष्ठति अकर्मकृत्।
कार्यते हि अवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैः गुणैः।।

हि (निःसन्देह) **कश्चित्** (कोई भी) {पुरुष} **क्षणं अपि** (क्षण भर भी) **अकर्मकृत्** (कर्म किए बिना) **न जातु तिष्ठति** (रह नहीं पाता); **हि** (क्योंकि) **प्रकृतिजैः** (प्रकृति से उत्पन्न) **गुणैः** ({तीनों} गुणों के कारण) **सर्वः** (सबको) **अवशः** (बरबस ही) **कर्म कार्यते** (कर्म करने पड़ते हैं)।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ 3/6
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

यः (जो) **विमूढात्मा** (महामूर्ख) **कर्मेंद्रियाणि** (कर्मेन्द्रियों को) **संयम्य** ({जबरियन} रोक कर) **इन्द्रियार्थान्** (इन्द्रियों के विषय–भोगों को) **मनसा** (मन से) **स्मरन्** (याद करता हुआ) **आस्ते** (बैठा रहता है), **सः** (वह) **मिथ्याचारः** (पाखण्डी–ढोंगी) **उच्यते** (कहा जाता है)।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ 3/7
यः तु इन्द्रियाणि मनसा नियम्य आरभते अर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगम् असक्तः स विशिष्यते।।

अर्जुन (हे अर्जुन)! **तु यः** (परंतु जो) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियों को) **मनसा** (मन से) **नियम्य** (नियंत्रित करके) **असक्तः** (अनासक्त हुआ) **कर्मेंद्रियैः** (कर्मेंद्रियों से) **कर्मयोगम्** (कर्म करते हुए ईश्वरीय स्मृति का) **आरभते** (अनुष्ठान करता है), **स विशिष्यते** (वह {औरों से} श्रेष्ठ है)।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धेदकर्मणः ॥ 3/8
नियतम् कुरु कर्म त्वम् कर्म ज्यायः हि अकर्मणः।
शरीरयात्रा अपि च ते न प्रसिद्धचेत् अकर्मणः।।

त्वं (तू) **नियतं** (नियत किए हुए) **कर्म कुरु** (कर्मों को कर)। **अकर्मणः** (कर्म न करने से) **कर्म** (कर्म करना) **हि** (ही) **ज्यायः** (श्रेष्ठ है) **च** (और) **अकर्मणः** (बिना कर्म के) **ते** (तेरा) **शरीरयात्रा** (शारीरिक निर्वाह) **अपि** (भी) **न प्रसिद्धचेत्** (सिद्ध नहीं होगा)।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ 3/9
यज्ञार्थात् कर्मणः अन्यत्र लोकः अयम् कर्मबंधनः।
तदर्थम् कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।।

यज्ञार्थात् ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ के सिवाय) **अन्यत्र** (दूसरे किसी भी) **कर्मणः** ({लौकिक} कर्म द्वारा) **अयम् लोकः** (यह संसार) **कर्मबंधनः** (कर्मबंधन में डालने वाला है)। **कौन्तेय** (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **मुक्तसंगः** {लौकिक कर्मों प्रति} (आसक्ति छोड़कर) **तदर्थम्** (उस {रुद्र यज्ञ} के लिए) **कर्म समाचर** (कर्म कर)।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ 3/10
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरा उवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वम् एषः वः अस्तु इष्टकामधुक् ।।

पुरा (सृष्टि के आदि में) **सहयज्ञाः** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ सहित) **प्रजाः** (मानसी प्रजा को) **सृष्ट्वा** (उत्पन्न करके) **प्रजापतिः** (प्रजापिता ब्रह्मा ने) {उस प्रजा से} **उवाच** (कहा) {कि} **अनेन** (इस {यज्ञ} द्वारा) **प्रसविष्यध्वम्** (वृद्धि प्राप्त करो), **एषः** (यह) {यज्ञ} **वः** (तुम्हारी) **इष्टकामधुक्** (इष्ट कामनाओं की पूर्ति करने वाला) **अस्तु** (हो)।

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ 3/11
देवान् भावयत अनेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ ।।

अनेन (इस {यज्ञ} से) **देवान्** ({श्रेष्ठ} देवात्माओं को) **भावयत** (सन्तुष्ट करो) {और} **ते देवाः** (वे दिव्यात्माएँ) **वः** (तुमको) **भावयन्तु** ({दिव्य गुण आदि से} सन्तुष्ट करें)। **परस्परम्** {इस तरह} (परस्पर, एक–दूसरे को) **भावयन्तः** (तृप्त करते हुए) **परं श्रेयः** (परम् कल्याण को) **अवाप्स्यथ** (प्राप्त करो)।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥ 3/12
इष्टान् भोगान् हि वः देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैः दत्तान् अप्रदाय एभ्यः यः भुंक्ते स्तेन एव सः ।।

यज्ञभाविताः (यज्ञ सेवा से संतुष्ट हुए) **देवाः** ({ब्राह्मण} देव) **हि** (ही) **वः** (तुमको) **इष्टान्** (इच्छित) **भोगान्** (भोग) **दास्यन्ते** (प्रदान करेंगे)। **तैः** (उनके द्वारा) **दत्तान्** (दिए हुए {भोगों} को) **एभ्यः** (उन्हें) **अप्रदाय** (अर्पण किए बिना) **यः** (जो) {पुरुष} **भुंक्ते** (भोगता है), **सः** (वह) **स्तेनः एव** (चोर ही है)।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ 3/13
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुंजते ते तु अघम् पापा ये पचन्ति आत्मकारणात् ।।

यज्ञशिष्टाशिनः (यज्ञ से बचे हुए को खाने वाले) **सन्तः** (संत–पुरुष) **सर्वकिल्बिषैः** (सब पापों से) **मुच्यन्ते** (मुक्त हो जाते हैं)। **ये** (जो) **आत्मकारणात्** (अपने लिए ही) **पचन्ति** (बनाते हैं), **ते पापाः** (वे पापी लोग) **तु** (तो) **अघम्** (पाप को) {ही} **भुंजते** (भोगते हैं)।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ 3/14
अन्नात् भवन्ति भूतानि पर्जन्यात् अन्नसम्भवः। यज्ञात् भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्भवः ।।

अन्नात् {अद्+क्त} ({स्मृति रूपी} भोजन से) **भूतानि** ({सात्विक मानसी सृष्टि के} प्राणियों की) **भवन्ति** (उत्पत्ति होती है), **पर्जन्यात्** ({ज्ञान} वर्षा से) **अन्नसम्भवः** ({स्मृति रूपी} भोजन उत्पन्न होता है), **यज्ञात्** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ {अर्थात् ईश्वरीय सेवा} से) **पर्जन्यः** ({ज्ञान–अमृत की} वृष्टि) **भवति** (होती है) {और} **यज्ञः** (यज्ञ) **कर्मसमुद्भवः** (कर्मयोग से उत्पन्न हुआ है)।

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ 3/15
कर्म ब्रह्मोद्भवम् विद्धि ब्रह्म अक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात् सर्वगतम् ब्रह्म नित्यम् यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

कर्म ({सात्विक} कर्म को) **ब्रह्मोद्भवं** (ब्रह्मा से उत्पन्न हुआ) **विद्धि** (जान) {और} **ब्रह्म** (ब्रह्मा) **अक्षरसमुद्भवम्** (अक्षर परमेश्वर {सदाशिव–शंकर} से उत्पन्न हुआ है); **तस्मात्** (इसलिए) **यज्ञे** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ में) **सर्वगतम्** (सब जगह {अपनी संकल्प शक्ति से} पहुँचा हुआ) **ब्रह्म** (ब्रह्मा) **नित्यं** (सर्वदा) **प्रतिष्ठितम्** (प्रतिष्ठित है) {अर्थात् जहाँ–2 ज्ञान–यज्ञ होता है, वहाँ–2 ब्रह्मा स्वरूप हनूमान की उपस्थिति होती है}।

• जो साकार रूप में ब्रहमा बाप ने जैसा किया, जो किया, वही सात्विक (कर्म) करना है। फॉलो फादर करना है। (अ.वा.19.12.84 पृ.75 म.)

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ 3/16

एवम् प्रवर्तितम् चक्रम् न अनुवर्तयति इह यः।
अघायुः इन्द्रियारामः मोघम् पार्थ स जीवति।।

इह (इस {संसार} में) **यः** (जो) {पुरुष} **एवं** (इस प्रकार) **प्रवर्तितं** (चलाए गए) **चक्रं** (चक्र का) **न अनुवर्तयति** (अनुसरण नहीं करता {अर्थात् सहायक नहीं बनता}), **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **सः** (वह) **अघायुः** (पापपूर्ण जीवन बिताने वाला) {और} **इन्द्रियारामः** (इन्द्रियों के सुखों में मग्न रहने वाला) **मोघम्** (व्यर्थ) {ही} **जीवति** (जीवन बिता रहा है);

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ 3/17

यः तु आत्मरतिः एव स्यात् आत्मतृप्तः च मानवः।
आत्मनि एव च संतुष्टः तस्य कार्यम् न विद्यते।।

तु (परंतु) **यः मानवः** (जो मनुष्य) **आत्मरतिः एव** ({ज्योतिर्बिन्दु रूप} आत्मा में ही प्रीति वाला) **च** (और) **आत्मतृप्तः** (आत्मा से तृप्त), **च** (उसी तरह) **आत्मनि** (आत्मा में) **एव** (ही) **संतुष्टः** (अत्यन्त प्रसन्न) **स्यात्** (हो), **तस्य** (उसके लिए) **कार्यम्** (कोई कार्य) **न विद्यते** (नहीं रहता)। {जैसे सतयुगी देवात्माएँ}

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ 3/18

न एव तस्य कृतेन अर्थः न अकृतेन इह कश्चन।
न च अस्य सर्वभूतेषु कश्चित् अर्थव्यपाश्रयः।।

इह (इस {लोक} में) **तस्य** (उसको) **न कृतेन** (न कुछ करने से) **अर्थः** (प्रयोजन है), **एव** (उसी तरह) **अकृतेन** (न करने से) {भी} **कश्चन** (कोई) {खास प्रयोजन} **न** (नहीं) {है} **च** (और) **न अस्य** (न इस {पुरुष} का) **सर्वभूतेषु** (किसी प्राणी पर) **कश्चित्** (कोई) **अर्थव्यपाश्रयः** (कार्य निर्भर करता है)।

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ 3/19

तस्मात् असक्तः सततम् कार्यम् कर्म समाचर।
असक्तः हि आचरन् कर्म परम् आप्नोति पूरुषः।।

तस्मात् (इससे) **असक्तः** (अनासक्त हुआ) **सततं** (निरंतर) **कार्यं** (करने योग्य) **कर्म** (कर्मों का) **समाचर** {तू} (आचरण कर); **हि** (क्योंकि) **असक्तः** (अनासक्त) **पूरुषः** (पुरुष) **कर्म** (कर्मों का) **आचरन्** (आचरण करता हुआ) **परम्** ({विष्णु रूप} परम पद को) **आप्नोति** (प्राप्त करता है);

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ 3/20

कर्मणा एव हि संसिद्धिम् आस्थिताः जनकादयः।
लोकसंग्रहम् एव अपि सम्पश्यन् कर्तुम् अर्हसि।।

हि (क्योंकि) **जनकादयः** (जनक आदि) **कर्मणा** (कर्म द्वारा) **एव** (ही) **संसिद्धिं** (सम्यक् सिद्धि को) **आस्थिताः** (प्राप्त हुए थे)। **लोकसंग्रहं** (लोक संग्रह को) **सम्पश्यन्** ({भलीभाँति} देखते हुए) **अपि** (भी) {तू} **कर्तुम्** {कर्म} (करने के लिए) **एव** (ही) **अर्हसि** (योग्य है)।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ 3/21
यत् यत् आचरति श्रेष्ठः तत् तत् एव इतरः जनः।
स यत् प्रमाणम् कुरुते लोकः तत् अनुवर्तते।।

श्रेष्ठः (उत्तम पुरुष) **यत्–यत्** (जो–2) **आचरति** (आचरण करता है), **तत्–तत् एव** (वैसा ही) **इतरः** (दूसरे सामान्य) **जनः** (लोग) {भी करते हैं}। **सः** (वह) {उत्तम पुरुष} **यत्** (जिस) **प्रमाणं** (प्रमाणित कार्य को) **कुरुते** (करता है), **लोकः** {सामान्य} (लोग) **तत्** (उस {कार्य} का) {ही} **अनुवर्तते** (अनुसरण करते हैं)। • जैसा कर्म हम (ब्राह्मण) करेंगे, हमको देख और करेंगे। (मु.6.6.90 पृ.2आ.)

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥ 3/22
न मे पार्थ अस्ति कर्तव्यम् त्रिषु लोकेषु किंचन।
न अनवाप्तम् अवाप्तव्यम् वर्त एव च कर्मणि।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति)! **त्रिषु लोकेषु** (तीनों लोकों में) **मे** (मुझको) **किंचन** (कुछ) {भी} **कर्तव्यं** (करने योग्य कर्म) **न अस्ति** (नहीं है), **न अवाप्तव्यम्** ({ऐसा कुछ} पाने योग्य नहीं है) **अनवाप्तं** (जो प्राप्त न हुआ हो), **च एव** (तो भी) **कर्मणि** (कर्मों में) **वर्त** (लगा हुआ हूँ)।

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ 3/23
यदि हि अहम् न वर्तेयम् जातु कर्मणि अतन्द्रितः।
मम वर्त्म अनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

हि (क्योंकि) **यदि** (जो) **अहं** (मैं) **जातु** (कदाचित्) **कर्मणि** (कर्मों में) **अतन्द्रितः** (आलस्यहीन होकर) **न वर्तेयं** (न लगा रहूँ), {तो} **पार्थ** (हे पार्थ)! **मनुष्याः** {सब} (मनुष्य) **मम वर्त्म** (मेरे मार्ग का) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **अनुवर्तन्ते** (अनुसरण करने लगें)।

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥ 3/24
उत्सीदेयुः इमे लोका न कुर्याम् कर्म चेत् अहम्।
संकरस्य च कर्ता स्याम् उपहन्याम् इमाः प्रजाः।।

अहं (मैं) **कर्म** {विश्व नवनिर्माण का} (कार्य) **न कुर्याम्** (न करूँ), **चेत्** (तो) **इमे लोकाः** (ये मनुष्य) **उत्सीदेयुः** (समूल नष्ट हो जायँ) **च** (और) {मैं} **संकरस्य** (वर्णसंकर प्रजा का) **कर्ता स्याम्** (करने वाला बनूँ) {और अंततः} **इमाः प्रजाः** (इस {ब्राह्मण वर्णावली} प्रजा का) **उपहन्याम्** (विनाश कर बैठूँ)।

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ॥ 3/25
सक्ताः कर्मणि अविद्वांसः यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्यात् विद्वान् तथा असक्तः चिकीर्षुः लोकसंग्रहम्।।

भारत (हे भरतवंशी)! **अविद्वांसः** (अज्ञानी लोग) **यथा** (जैसे) **कर्मणि** (कर्म में) **सक्ताः** (आसक्त होकर) **कुर्वन्ति** {कर्म} (करते हैं), **तथा** (उसी प्रकार) **विद्वान्** (ज्ञानी पुरुष) **असक्तः** (अनासक्त होकर) **लोकसंग्रहं** (संसार व्यवस्था की) **चिकीर्षुः** (इच्छा से) **कुर्यात्** {कर्म} (करे)।

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥ 3/26

न बुद्धिभेदम् जनयेत् अज्ञानाम् कर्मसंगिनाम्।
जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन्।।

कर्मसंगिनाम् (सांसारिक कर्मों में आसक्त) **अज्ञानां** (अज्ञपुरुषों की) **बुद्धिभेदं** (बुद्धि में भेद {अर्थात् संशय}) **न जनयेत्** (पैदा न करे), {उन्हें कर्म से विचलित न करे, अपितु} **युक्तः** (कर्मयोगी–लगनशील) **विद्वान्** (ज्ञानी) **सर्वकर्माणि** ({स्वयं} सब {यज्ञ}–कर्मों का) **समाचरन्** (आचरण करता हुआ) **जोषयेत्** {दूसरों को यज्ञ–कर्म में} (लगाए)।

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 3/27

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहंकारविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते।।

कर्माणि (सब कार्य) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **प्रकृतेः** {अनादि निश्चित} (प्राणी स्वभाव के) **गुणैः** {सात्विक, राजसी और तामसी} (गुणों द्वारा) **क्रियमाणानि** (किए जा रहे हैं), {जिससे} **अहंकारविमूढात्मा** (अहंकार से विमूढ़ बना पुरुष) **इति** (ऐसा) **मन्यते** (मानता है) {कि केवल} **अहं** (मैं) {ही} **कर्ता** (करने वाला हूँ);

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ 3/28

तत्त्ववित् तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।।

तु (किंतु) **महाबाहो** (हे दीर्घबाहु)! **गुणकर्मविभागयोः** (गुण और कर्म के विभाग का) **तत्त्ववित्** (तत्व जानने वाला पुरुष)–**गुणाः** (गुण) **गुणेषु** ({परस्पर} गुणों में) **वर्तन्ते** (क्रिया कर रहे हैं), **इति** (ऐसा) **मत्वा** (मानकर) **न सज्जते** (आसक्त नहीं होता) {अर्थात् अनादि निश्चित ड्रामानुसार सारे कार्य स्वभावतः हो रहे हैं}।

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् ॥ 3/29

प्रकृतेः गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु।
तान् अकृत्स्नविदः मन्दान् कृत्स्नवित् न विचालयेत्।।

प्रकृतेः ({त्रिगुणमयी} प्रकृति के) **गुणसंमूढाः** (गुणों से भ्रान्त हुए लोग) **गुणकर्मसु** {उन} (गुणों से उत्पन्न कर्मों में) **सज्जन्ते** (आसक्त हो जाते हैं)। **तान्** (उन) **अकृत्स्नविदः** (अधकचरी समझ वाले) **मन्दान्** (मन्दबुद्धि लोगों को) **कृत्स्नवित्** (सम्पूर्ण ज्ञानी) **न विचालयेत्** (विचलित न करे)।

मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ 3/30

मयि सर्वाणि कर्माणि सन्यस्य अध्यात्मचेतसा। निराशीः निर्ममः भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः।।

अध्यात्मचेतसा (आध्यात्मिक बुद्धि से) **मयि** (मेरे में) **सर्वाणि** (सब) **कर्माणि** (कर्मों को) **संन्यस्य** (अर्पण करके) **निराशीः** ({समस्त लौकिक} इच्छाओं से रहित) {तथा} **निर्ममः** (ममतारहित) **भूत्वा** (होकर) {और} **विगतज्वरः** (शोकरहित) {होकर} **युध्यस्व** {तू} (युद्ध कर)।

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥ 3/31

ये मे मतम् इदम् नित्यम् अनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तः अनसूयन्तः मुच्यन्ते ते अपि कर्मभिः।।

ये (जो) **श्रद्धावन्तः** (श्रद्धावान्) **अनसूयन्तः** (ईर्ष्यारहित हुए) **मानवाः** (मनुष्य) **मे इदं मतं** (मेरी इस {श्री}मत का) **नित्यं** (निरंतर) **अनुतिष्ठन्ति** (पालन करते हैं), **ते अपि** (वे भी) **कर्मभिः** (कर्मबंधन से) **मुच्यन्ते** (मुक्त हो जाते हैं);

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥ 3/32
ये तु एतत् अभ्यसूयन्तः न अनुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढान् तान् विद्धि नष्टान् अचेतसः।।

तु (किन्तु) **ये** (जो) **अभ्यसूयन्तः** (ईर्ष्या करने वाले) {लोग} **मे** (मेरी) **एतत्** (इस) **मतम्** ({श्री}मत का) **न अनुतिष्ठन्ति** (पालन नहीं करते), **तान्** (उन) **सर्वज्ञानविमूढान्** (सम्पूर्ण ज्ञान के प्रति अंधे), **अचेतसः** (बुद्धुओं को) **नष्टान्** (नष्ट हुआ) **विद्धि** (जान)।

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ 3/33
सदृशम् चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः ज्ञानवान् अपि।
प्रकृतिम् यान्ति भूतानि निग्रहः किम् करिष्यति।।

ज्ञानवान् (ज्ञानी मनुष्य) **अपि** (भी) **स्वस्याः** (अपने) **प्रकृतेः** {अनादि निश्चित} (स्वभाव के) **सदृशं** (अनुसार) **चेष्टते** (आचरण करता है), **भूतानि** (प्राणी) **प्रकृतिं** (अपने स्वभाव की ओर) **यान्ति** (जाते हैं)। {इस विषय में तू} **निग्रहः** (रोकथाम या बलप्रयोग) **किं** (क्या) **करिष्यति** (करेगा)!

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ 3/34
इन्द्रियस्य इन्द्रियस्य अर्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोः न वशम् आगच्छेत् तौ हि अस्य परिपन्थिनौ।।

इन्द्रियस्य (इन्द्रिय का) **इन्द्रियस्यार्थे** {उस} (इन्द्रिय के विषय–{भोग} में) **रागद्वेषौ** (राग अथवा द्वेष) **व्यवस्थितौ** (होता है), **तयोः** (उन {राग–द्वेष} दोनों के) **वशम्** (वश में) **न आगच्छेत्** (न आए); **हि** (क्योंकि) **तौ** (वे दोनों) **अस्य** (इस {पुरुष} के) **परिपंथिनौ** (शत्रु हैं)।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ 3/35
श्रेयान् स्वधर्मः विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मः भयावहः।।

स्वनुष्ठितात् (स्वधर्म का पालन करने से) **विगुणः** ({तीनों} गुणों से विहीन) **स्वधर्मः** (ज्योतिर्बिन्दु आत्मा का सात्विक धर्म) **पर+धर्मात्** (प्रकृति अर्थात् देह के जड़तत्वादि धर्म से) **श्रेयान्** (श्रेष्ठ है)। **स्वधर्मे** (शान्त–चेतन ज्योतिबिंदु स्वरूप आत्मा की धारणा में) {टिककर} **निधनं** (देह त्यागना) **श्रेयः** (कल्याणकर है), **परधर्मः** (प्रकृति अर्थात् देह का धर्म) **भयावहः** (खतरनाक है) {अर्थात् ज्योतिबिन्दु चेतन आत्मा के गुणों को धारण करना श्रेष्ठ है, जड़ देह के गुणों की धारणा ठीक नहीं}।

अर्जुन उवाचः– अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥ 3/36
अथ केन प्रयुक्तः अयम् पापम् चरति पूरुषः।
अनिच्छन् अपि वार्ष्णेय बलात् इव नियोजितः।।

वार्ष्णेय (वृष्णि–मेघ रूपी अज्ञान में से उत्पन्न हुए ज्ञानसूर्य–हे परमेश्वर)! **अनिच्छन्** (इच्छा न करते हुए) **अपि** (भी) **अथ** (पीछे से) **बलात्** (बलपूर्वक) **नियोजितः** (लगाए हुए की) **इव** (तरह) **अयं पूरुषः** (यह पुरुष) **केन** (किसकी) **प्रयुक्तः** (प्रेरणा से) **पापं** (पाप) **चरति** (करता है)?

श्रीभगवानुवाचः– काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥ 3/37
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनः महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणम्।।

रजोगुणसमुद्भवः (रजोगुण से उत्पन्न) **एष काम** (यह काम) **एष क्रोध** {अथवा} (यह क्रोध) **महाशनः** (बहुत भोग चाहता है) {और} **महापाप्मा** (बड़ा पापी है)। **इह** (इस {संसार} में) **एनम्** (इसको) **वैरिणं विद्धि** (वैरी समझ)।

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥ 3/38
धूमेन आव्रियते वह्निः यथा आदर्शः मलेन च।
यथा उल्बेन आवृतः गर्भः तथा तेन इदम् आवृतम्।।

यथा (जैसे) **वह्निः** (अग्नि) **धूमेन** (धुएँ से) **च** (और) **आदर्शः** (शीशा) **मलेन** (मैल से) **आव्रियते** (ढक जाता है) {तथा} **यथा** (जैसे) **गर्भः** (गर्भ) **उल्बेन** (थैली से) **आवृतः** (ढका रहता है), **तथा** (वैसे ही) **तेन** (उस {काम अथवा क्रोध} से) **इदं** (यह) {ज्ञान} **आवृतम्** (ढका रहता है)।

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥ 3/39
आवृतं ज्ञानम् एतेन ज्ञानिनः नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेण अनलेन च।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **ज्ञानिनः** (ज्ञानी पुरुष का) **नित्यवैरिणा** (नित्य शत्रु जैसा) **च** (तथा) **दुष्पूरेण** (कभी पूर्ति न होने वाली) **एतेन** (इस) **कामरूपेण** (कामविकार रूपी) **अनलेन** (अग्नि से) **ज्ञानं** (ज्ञान) **आवृतम्** (ढका रहता है)।

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥ 3/40
इन्द्रियाणि मनः बुद्धिः अस्य अधिष्ठानम् उच्यते।
एतैः विमोहयति एषः ज्ञानम् आवृत्य देहिनम्।।

इन्द्रियाणि ({दस} इन्द्रियाँ), **मनः** (संकल्प शक्ति) {और} **बुद्धिः** ({निर्णयात्मक} बुद्धि)–**अस्य** (इस {काम रूपी शत्रु} का) **अधिष्ठानं** (आश्रयस्थान) **उच्यते** (कही जाती है)। **एषः** (यह) {काम विकार} **एतैः** (इनके द्वारा) **ज्ञानं** (ज्ञान को) **आवृत्य** (ढक कर) **देहिनं** ({देहधारी} जीवात्मा को) **विमोहयति** (पथभ्रष्ट करता है)।

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ 3/41
तस्मात् त्वम् इन्द्रियाणि आदौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानम् प्रजहि हि एनम् ज्ञानविज्ञाननाशनम्।।

भरतर्षभ (हे भरतवंश में श्रेष्ठ)! **तस्मात्** (इसलिए) **त्वं** (तू) **आदौ** (पहले) **इन्द्रियाणि** (इंद्रियों को) **नियम्य** (नियंत्रित करके), **ज्ञान+विज्ञाननाशनं** (ज्ञान और योग का नाश करने वाले) **एनं** (इस) **पाप्मानं** (पापी काम विकार को) **हि प्रजहि** (अवश्य त्याग दे)।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥ 3/42
इन्द्रियाणि पराणि आहुः इन्द्रियेभ्यः परम् मनः। मनसः तु परा बुद्धिः यः बुद्धेः परतः तु सः।।

आहुः (कहा जाता है कि) **इन्द्रियाणि पराणि** (इन्द्रियाँ बड़ी प्रबल हैं); **मनः** (मन) **इन्द्रियेभ्यः** (इन्द्रियों से) **परम्** (बड़ा है); **बुद्धिः मनसः तु परा** (बुद्धि मन से भी बड़ी है); **तु** (किंतु) **यः** (जो) **बुद्धेः** (बुद्धि से) **परतः सः** (बड़ा है वह {परमात्मा} है)। **{बुद्धिमानों की बुद्धि परमात्मा}**

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ 3/43
एवम् बुद्धेः परम् बुद्ध्वा संस्तभ्य आत्मानम् आत्मना।
जहि शत्रुम् महाबाहो कामरूपम् दुरासदम्।।

एवं (इस प्रकार) **बुद्धेः** {निश्चयात्मक} (बुद्धि से) **परं** (जो परे है, उस परमपिता परमात्मा शिव को) **बुद्ध्वा** (जानकर), **आत्मानं** (अपने को) **आत्मना** (अपने {मन–बुद्धि} द्वारा) **संस्तभ्य** (स्थिर करके) **महाबाहो** (हे दीर्घबाहु!) {तू} **दुरासदम्** (कठिनाई से हाथ आने वाले) {इस} **कामरूपं** (काम विकार रूपी) **शत्रुं** (शत्रु को) **जहि** (मार डाल)।

अध्याय–4

श्रीभगवानुवाचः– इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ 4/1
इमम् विवस्वते योगम् प्रोक्तवान् अहम् अव्ययम्।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुः इक्ष्वाकवे अब्रवीत्।।

अहम् (मैंने) **इमम्** (यह) **अव्ययम्** (अविनाशी) **योगम्** (योग) **विवस्वते** (विवस्वान् नामक आदि मनु {अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा} को) **प्रोक्तवान्** (कहा था), **विवस्वान्** (विवस्वान् मनु ने) **मनवे** (अपने पुत्रों {सात मनुओं} को) **प्राह** (कहा) {और} **मनुः** (मनु ने) **इक्ष्वाकवे** {अपने पुत्र} इक्ष्वाकु {अर्थात् इच्छा करने वाले त्रेतान्त के राजा कामदेव} को) **अब्रवीत्** (कहा)। ✡ मनु=मनन–चिंतन–मंथन शील

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥ 4/2
एवम् परम्पराप्राप्तम् इमम् राजर्षयः विदुः। स कालेन इह महता योगः नष्टः परंतप।।

एवम् (इस प्रकार) **परम्पराप्राप्तं** (परम्परा से पीढ़ी दर पीढ़ी आते हुए) **इमम्** (इसे) **•राजर्षयः** ({विक्रमादित्यादि} राजर्षियों ने) **विदुः** (जाना)। **परंतप** (हे कामादिक परम शत्रुओं को तपाने वाले)! **सः** (वह) **योगः** (योग) **महता** (लम्बे) **कालेन** (काल से) **इह** (इस {कलियुग} में) **नष्टः** (नष्ट हो गया है)।

• पहले ब्रह्मर्षियों को जानना चाहिए, फिर राजर्षियों को जानना चाहिए।

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ 4/3
स एव अयम् मया ते अद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तः असि मे सखा च इति रहस्यम् हि एतत् उत्तमम्।।

{तू} **मे** (मेरा) **भक्तः** (भक्त) **च** (और) **सखा** (मित्र) **असि** (है), **इति** (इस कारण से) **सः एव** (वही) **अयम्** (यह) **पुरातनः** (प्राचीन) **योगः** (योग) **मया** (मैंने) **ते** (तुझको) **अद्य** (आज) **प्रोक्तः** (कहा है)। **एतत् हि** (यह निश्चय ही) **उत्तमं रहस्यम्** (श्रेष्ठतम रहस्य है)।

अर्जुन उवाचः– अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ 4/4
अपरम् भवतः जन्म परम् जन्म विवस्वतः।
कथम् एतत् विजानीयाम् त्वम् आदौ प्रोक्तवान् इति।।

विवस्वतः (आदि मनु {प्रजापिता ब्रह्मा} का) **जन्म परम्** ({दिव्य} जन्म प्राचीन काल में हुआ है) {और} **भवतः** (आपका) **जन्म अपरं** ({दिव्य} जन्म अब {द्वापर/कलियुगांत में} हुआ है), {तो} **त्वम्** (आपने) **आदौ** ({सतयुग} आदिकाल में) **एतत्** (यह {योग}) **प्रोक्तवान्** (कहा)–**इति कथं** (यह कैसे) **विजानीयाम्** (मानूँ)?

श्रीभगवानुवाचः– बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥ 4/5
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव च अर्जुन।
तानि अहम् वेद सर्वाणि न त्वम् वेत्थ परंतप।।

अर्जुन (हे अर्जुन)! **मे** (मेरे {भगवान रूप में}) **च** (और) **तव** (तेरे {प्रजापिता ब्रह्मार्जुन रूप में}) **बहूनि** (असंख्य {कल्पों में}) **जन्मानि** ({असंख्य} जन्म) **व्यतीतानि** (बीत चुके हैं)। **तानि** (उन) **सर्वाणि** (सब {कल्पों में हुए जन्मों} को) **अहं** (मैं) **वेद** (जानता हूँ), **परंतप** (हे कामादिक परम शत्रुओं को पीड़ा देने वाले)! **त्वं** (तू) **न वेत्थ** (नहीं जानता)। ☺ कल्प–2 लगि प्रभु अवतारा अर्थात् हर 5000 वर्ष में हूबहू रिपीट ड्रामा।

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ 4/6
अजः अपि सन् अव्ययात्मा भूतानाम् ईश्वरः अपि सन्।
प्रकृतिम् स्वाम् अधिष्ठाय सम्भवामि आत्ममायया।।

अव्ययात्मा (अक्षय अर्थात् जिस आत्मा की शक्ति का कभी क्षरण न हो, वह मैं परमपिता शिव) **अजः** (अजन्मा) **सन्** (होते हुए) **अपि** (भी) {और} **भूतानां** (प्राणियों का) **ईश्वरः** (श्रेष्ठतम शासनकर्ता) **सन्** (होते हुए) **अपि** (भी), **स्वां** (अपने) **प्रकृतिं** (प्रकृष्ट ज्ञानयुक्त रचना परम्ब्रह्म का) **अधिष्ठाय** (आधार लेकर), **आत्ममायया** (आत्मशक्ति से) **सम्भवामि** ({दिव्य} जन्म लेता हूँ)।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ 4/7
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदा आत्मानम् सृजामि अहम्।।

भारत (हे भरतवंशी)! **यदा यदा** (जब–2) ✷{कलियुग के अन्त में} **धर्मस्य** {सत्} (धर्म की) **ग्लानिः** (हानि) {और} **अधर्मस्य** {इस्लामी–बौद्धी–क्रिश्चियनादि} (अधर्म की) **अभ्युत्थानं** (वृद्धि) **भवति** (होती है), **तदा** (तब) **हि** (ही) **अहं** (मैं) **आत्मानं** (स्वयं) **सृजामि** (जन्म लेता हूँ)। {✷जैन और वैदिक सृष्टि प्रक्रिया के अनुसार, पापी कलियुग–अंत में ही धर्म की सम्पूर्ण ग्लानि होती है।}

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ 4/8
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

{मैं} **साधूनां** (साधु–सन्तों की) **परित्राणाय** (रक्षा के लिए), **दुष्कृतां** (दुराचारियों के) **विनाशाय** (विनाश के लिए) **च** (और) **धर्मसंस्थापनार्थाय** {सत्}(धर्म की संपूर्ण स्थापना के लिए) **युगे–युगे** (दो युगों {कलियुग और सतयुग के संधिकाल} में) **सम्भवामि** (जन्म लेता हूँ)।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ 4/9
जन्म कर्म च मे दिव्यम् एवम् यः वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहम् पुनः जन्म न एति माम् एति सः अर्जुन।।

अर्जुन (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले अर्जुन)! **एवं** (इस प्रकार) **मे** (मेरे) **दिव्यं** (दिव्य) **जन्म** (जन्म) {अर्थात् विशिष्ट परकाया प्रवेश} **च** (और) **कर्म** ({दिव्य} कार्यों को) **यः** (जो) **तत्त्वतः** (सत्य रूप में) **वेत्ति**

(जान लेता है), **सः** (वह) **देहं** (शरीर को) **त्यक्त्वा** (त्याग कर) {इस कलियुगी दुःखी संसार में} **पुनर्जन्म** (फिर से जन्म) **न एति** (नहीं लेता), **माम् एति** (मुझ अव्यक्तमूर्ति शिवलिंग को प्राप्त होता है)। {परमेश्वर के परकाय प्रवेश के प्रमाणों के लिए देखिए 'आदीश्वर रहस्य' में 'शिव का दिव्य जन्म' नामक अध्याय–5}

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ 4/10
वीतरागभयक्रोधा मन्मया माम् उपाश्रिताः। बहवः ज्ञानतपसा पूता मद्भावम् आगताः।।

{पहले भी} **वीतरागभयक्रोधाः** (राग, भय और क्रोध से मुक्त), **मन्मयाः** (मेरे में ध्यानमग्न) {और} **माम्** (मेरा) {ही} **उपाश्रिताः** (आश्रय लेने वाले) {सम्पूर्ण समर्पित} **बहवः** (बहुत {लोग}) **ज्ञानतपसा** (ज्ञान {और योग} रूपी तपस्या से) **पूताः** (पवित्र हुए) **मद्भावम्** (मुझ {ईश्वर के ईशित्व/राजाई} भाव को) **आगताः** (प्राप्त हुए हैं)।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ 4/11
ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान् तथा एव भजामि अहम्।
मम वर्त्म अनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

ये (जो) **यथा** (जैसे {अर्थात् जिस–2 संबंध से}) **माम्** (मुझको) **प्रपद्यन्ते** (भजते हैं {अर्थात् याद करते हैं}), **तान्** (उनको) **तथा** (उसी रीति) {सम्बन्ध से} **एव** (ही) **अहम्** (मैं) **भजामि** (अपनाता हूँ)। **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **मनुष्याः** (लोग) **मम** (मेरे) **वर्त्म** (मार्ग का) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **अनुवर्तन्ते** (अनुकरण करते हैं)।

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ 4/12
कांक्षन्तः कर्मणाम् सिद्धिम् यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रम् हि मानुषे लोके सिद्धिः भवति कर्मजा।।

इह (इस लोक में) **कर्मणाम्** (कर्मों की) **सिद्धिं** (सिद्धि के) **कांक्षन्तः** (इच्छुक {व्यक्ति}) **देवताः** (देवताओं का) **यजन्ते** (यज्ञ–पूजनादि करते हैं); **हि** (क्योंकि) **मानुषे लोके** {मनु की औलाद} (मनुष्य लोक में) **कर्मजा** (कर्मों से उत्पन्न) **सिद्धिः** (सफलता) **क्षिप्रम् भवति** (शीघ्र होती है)।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥ 4/13
चातुर्वर्ण्यम् मया सृष्टम् गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारम् अपि माम् विद्धि अकर्तारम् अव्ययम्।।

{कल्प पहले भी} **मया** (मैंने) **गुणकर्मविभागशः** (गुण और कर्मों के भेद के अनुसार) **चातुर्वर्ण्यं** (ब्राह्मण अर्थात् देवता, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–इन चार वर्णों के समूह को) **सृष्टम्** (रचा था)। **तस्य** (उसका) **कर्तारम्** (कर्ता) {होने पर} **अपि** (भी) **अकर्तारम्** (अकर्ता) {और} **अव्ययम्** (क्षयरहित) **माम्** (मुझको) **विद्धि** ({तू} जान ले)।

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ 4/14
न माम् कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति माम् यः अभिजानाति कर्मभिः न स बध्यते।।

न माम् (न मुझको) **कर्माणि** (कर्मों का) **लिम्पन्ति** (लेप लगता है), **न मे** (न मुझे) **कर्मफले** (कर्मों के फल में) **स्पृहा** (इच्छा है)। **इति** (इस रूप में) **यः** (जो) **माम्** (मुझको) **अभिजानाति** (सर्वथा जान लेता है), **सः** (वह) **कर्मभिः** ({लौकिक} कर्मों में) **न बध्यते** (नहीं बँधता)।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ 4/15

एवम् ज्ञात्वा कृतम् कर्म पूर्वैः अपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्म एव तस्मात् त्वम् पूर्वैः पूर्वतरम् कृतम्।।

एवं ज्ञात्वा (ऐसा जानकर) **पूर्वैः** (पूर्व कल्प के) **मुमुक्षुभिः** (मुक्ति के अभिलाषियों ने) **अपि** (भी) **कर्म कृतम्** (कर्म किया था), **तस्मात्** (इसलिए) **त्वम्** (तू) **पूर्वैः** (पूर्व कल्प से) {भी} **पूर्वतरम्** (पूर्वतर) {अर्थात् अनेक बार} **कृतम्** (किए हुए) **कर्म एव** (कर्मों को ही) **कुरु** (कर)। ★{कल्प की हूबहू पुनरावृत्ति होती है।} {★ शास्त्रों में भी कल्प पूर्व हूबहू पुनरावृत्ति के प्रमाण अनेकशः मिल रहे हैं।} जैसे रामायण में– कल्प–2 लगि प्रभु अवतारा।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ 4/16
किम् कर्म किम् अकर्म इति कवयः अपि अत्र मोहिताः।
तत् ते कर्म प्रवक्ष्यामि यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात्।।

किम् (क्या) **कर्म** (कर्म है) {और} **किम्** (क्या) **अकर्म** (अकर्म है)?– **इति** (इस प्रकार) **अत्र** (इस विषय में) **कवयः** (विद्वान लोग) **अपि** (भी) **मोहिताः** (चकरा गए हैं)। **तत्** (इससे) **ते** (तुझे) **कर्म प्रवक्ष्यामि** (कर्म का स्वरूप बताता हूँ), **यत्** (जिसे) **ज्ञात्वा** (जानकर) **अशुभात्** (अशुभ {कर्मों} से) **मोक्ष्यसे** (मुक्त हो जाएगा)।

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ 4/17
कर्मणः हि अपि बोद्धव्यम् बोद्धव्यम् च विकर्मणः।
अकर्मणः च बोद्धव्यम् गहना कर्मणः गतिः।।

कर्मणः (कर्म को) **बोद्धव्यम्** (जानना चाहिए) **च** (और) **विकर्मणः** (विपरीत कर्म को) **अपि** (भी) **बोद्धव्यम्** (जानना चाहिए) **च** (और) **अकर्मणः** (अकर्म) {भी} **बोद्धव्यम्** (जानने योग्य है); **हि** (क्योंकि) **कर्मणः गतिः** (कर्म की गति) **गहना** (गहन है)।

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ 4/18
कर्मणि अकर्म यः पश्येत् अकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्।।

यः (जो {व्यक्ति}) **कर्मणि** ({सांसारिक} कर्म में) **अकर्म पश्येत्** ({ज्योतिर्बिन्दु रूप आत्मस्थिति द्वारा} अकर्म की बात जानता है) **च** (और) **यः** (जो {व्यक्ति}) **अकर्मणि** ({सांसारिक} कर्म त्याग में) {भी} **कर्म** {मनसा से} (कर्म) {का होना देखता है}, **सः मनुष्येषु** (वह मनुष्यों में) **बुद्धिमान्** (समझदार है) {और} **सः** (वह) **युक्तः** (योगी) **कृत्स्नकर्मकृत्** (सम्पूर्ण {श्रेष्ठ} कर्मों का करने वाला है)।
• बाप कर्म–विकर्म–अकर्म की गति समझाते हैं। (मु.2.7.68 पृ.2 म.)

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥ 4/19
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः। ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् तम् आहुः पण्डितम् बुधाः।।

यस्य (जिस {व्यक्ति} के) **सर्वे** (सब) **समारम्भाः** (आरम्भ किए गए कार्य) **कामसंकल्पवर्जिताः** (काम विकार के संकल्प से रहित हैं), **तम्** (उसको) **बुधाः** (बुद्धिमान् लोग) **ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम्** (ज्ञान की अग्नि से अपने कर्मों को जलाने वाला) **पंडितम्** (पंडित) **आहुः** (कहते हैं)।

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः ॥ 4/20
त्यक्त्वा कर्मफलासंगम् नित्यतृप्तः निराश्रयः।
कर्मणि अभिप्रवृत्तः अपि न एव किंचित् करोति सः।।

निराश्रयः (सांसारिक आश्रय से रहित), **कर्मफलासंगम्** ({सांसारिक} कर्म के फल की आसक्ति को) **त्यक्त्वा** (त्यागकर) **नित्यतृप्तः** (सदा संतुष्ट हुआ) **सः** (वह {व्यक्ति}) **कर्मणि** (कर्म में) **अभिप्रवृत्तः** (अच्छी तरह लगा रहने पर) **अपि** (भी) **किंचित् एव** (कुछ भी) **न करोति** (नहीं करता)।

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ 4/21

निराशीः यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरम् केवलम् कर्म कुर्वन् न आप्नोति किल्बिषम्।।

निराशीः ({सभी लौकिक} आशाओं से रहित), **यतचित्तात्मा** (अपने मन–बुद्धि को वश में करने वाला) {और} **त्यक्तसर्वपरिग्रहः** (सब प्रकार के स्वामित्व का त्याग करने वाला) {पुरुष} **केवलं** (केवल) **शारीरं** (शारीरिक) **कर्म** (कार्य) **कुर्वन्** (करता हुआ) **किल्बिषं** (पाप को) **न आप्नोति** (नहीं प्राप्त होता)।

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्ध्यवसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ 4/22

यदृच्छालाभसंतुष्टः द्वन्द्वातीतः विमत्सरः। समः सिद्धौ असिद्धौ च कृत्वा अपि न निबध्यते।।

यदृच्छालाभसंतुष्टः (संयोगवश प्राप्त हुई वस्तु से संतुष्ट रहने वाला), **द्वन्द्वातीतः** (सुख–दुःखादि द्वन्द्वों से परे), **विमत्सरः** (ईर्ष्याहीन) **च** (और) **सिद्धौ, असिद्धौ** ({सांसारिक} सफलता–असफलता में) **समः** (समान रहने वाला) {पुरुष} **कृत्वा** (कर्म करके) **अपि** (भी) **न निबध्यते** (बँधन में नहीं पड़ता)।

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ 4/23

गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञाय आचरतः कर्म समग्रम् प्रविलीयते।।

गतसंगस्य (आसक्ति रहित), **मुक्तस्य** (बँधनमुक्त), **ज्ञानावस्थितचेतसः** (ईश्वरीय ज्ञान में दृढ़तापूर्वक स्थिर हुई बुद्धि वाले) {और} **यज्ञायाचरतः** (यज्ञ की सेवा भाव से आचरण करने वाले के) **समग्रं कर्म** (सब कर्म) **प्रविलीयते** (पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं)।

अलौकिक यज्ञों के प्रकार :–

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ 4/24

ब्रह्म अर्पणम् ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्म एव तेन गन्तव्यम् ब्रह्मकर्मसमाधिना।।

{'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' कहने वालों के अनुसार} **अर्पणं** (अर्पण {कार्य}) **ब्रह्म** (ब्रह्म है), **ब्रह्मणा** (ब्रह्म रूप कर्ता द्वारा) **ब्रह्माग्नौ** (ब्रह्म {तत्व} रूपी अग्नि में) **हुतम् हविः** (अर्पित की गई हवि) {भी} **ब्रह्म** (ब्रह्म है)। **ब्रह्मकर्मसमाधिना** (ब्रह्म {तत्व रूपी} अग्नि में {मनसा से} समाधिस्थ) **तेन** (उस {ब्रह्म तत्व के ज्ञान} द्वारा) **ब्रह्म एव** (ब्रह्मलोक ही) **गन्तव्यम्** (जाने योग्य {स्थान है})।

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ 4/25

दैवम् एव अपरे यज्ञम् योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नौ अपरे यज्ञम् यज्ञेन एव उपजुह्वति।।

अपरे (दूसरे) **योगिनः** (योगीजन) **दैवं यज्ञं** ({ब्रह्मा जैसे} देव यज्ञ की) **एव** (ही) **पर्युपासते** (उपासना करते हैं), {जबकि} **अपरे** (अन्य) {योगी} **यज्ञेन** (यज्ञ द्वारा) **यज्ञं** (रुद्र ज्ञान यज्ञ की सेवा को) **एव** (ही) **ब्रह्माग्नौ** (ब्रह्मतत्व की अग्नि में) **उपजुह्वति** (हवन करते हैं)। ❁ अर्थात् ब्रह्मलोक की अव्यक्त स्टेज में रहकर सेवा करते हैं।

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ 4/26

श्रोत्रादीनि इन्द्रियाणि अन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन् विषयान् अन्ये इन्द्रियाग्निषु जुह्वति।।

अन्ये (अन्य) {लोग} **श्रोत्रादीनि** (कान आदि) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियों की) **संयमाग्निषु** (संयम रूपी अग्नि में) **जुह्वति** (आहुति देते हैं), {जबकि} **अन्ये** (अन्य) {गृहस्थजन} **शब्दादीन्** (शब्दादि) **विषयान्** (विषय भोगों को) **इन्द्रियाग्निषु** ({अपनी} इन्द्रियों की आग में) **जुह्वति** (आहुति डाल देते हैं)।

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ 4/27

सर्वाणि इन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि च अपरे। आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते।।

अपरे (दूसरे) {लोग} **सर्वाणीन्द्रियकर्माणि** (इन्द्रियों के सारे कर्मों को) **च** (और) **प्राणकर्माणि** (श्वासोच्छ्वासादि प्राण कर्मों को) **ज्ञानदीपिते** ({ईश्वरीय} ज्ञान द्वारा प्रज्ज्वलित) **आत्मसंयमयोगाग्नौ** (आत्म–संयम रूपी योगाग्नि में) **जुह्वति** (अर्पित करते हैं)।

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ 4/28

द्रव्ययज्ञाः तपोयज्ञाः योगयज्ञाः तथा अपरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः च यतयः संशितव्रताः।।

द्रव्ययज्ञाः (भौतिक पदार्थों का {दान रूपी} यज्ञ करने वाले), **तपोयज्ञाः** ({आत्मस्थिति की} तपस्या रूपी यज्ञ करने वाले), **योगयज्ञाः** ({परमात्म} योग रूपी यज्ञ करने वाले) **तथा अपरे** (तथा दूसरे) **स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः** (अध्ययन रूपी ज्ञान यज्ञ करने वाले), {ये} **यतयः** (योगीजन) **संशितव्रताः** (तीक्ष्ण व्रत वाले हैं)।

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥ 4/29

अपाने जुह्वति प्राणम् प्राणे अपानम् तथा अपरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः।।

अपरे (अन्य) {योगी} **अपाने** (अपान वायु में) **प्राणम्** (प्राण वायु की) **तथा प्राणे** (तथा प्राण वायु में) **अपानम्** (अपान वायु की) **जुह्वति** (आहुति देते हैं), {जबकि अन्य} **प्राणापानगती** (प्राण और अपान, दोनों की गति को) **रुद्ध्वा** (रोककर) **प्राणायामपरायणाः** (प्राणायाम के ही आश्रय में रहते हैं)। ◎ यहाँ प्राणवायु रूपी शुद्ध संकल्प और अपानवायु रूपी अशुद्ध संकल्पों की बात है। अर्थात् दैहिक वायु तत्व को रोकने–छोड़ने की बात नहीं है।

अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ 4/30

अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वति। सर्वे अपि एते यज्ञविदः यज्ञक्षपितकल्मषाः।।

अपरे (अन्य) **नियताहाराः** ({उपवासादि} नियमित आहार वाले) **प्राणान्** (प्राणों को) **प्राणेषु** (प्राणवायु में) **जुह्वति** (विलीन करते हैं)। **यज्ञक्षपितकल्मषाः** {इन विविध} (यज्ञों द्वारा {कर्मों के सामान्य} मैल को क्षीण करने वाले) **एते सर्वे अपि** (ये सब {योगी} भी) **यज्ञविदो** ({रुद्र} यज्ञ के जानकार हैं)।

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥ 4/31

यज्ञशिष्टामृतभुजः यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
न अयम् लोकः अस्ति अयज्ञस्य कुतः अन्यः कुरुसत्तम।।

यज्ञशिष्टामृतभुजो ({परमार्थी रूपी रुद्र} यज्ञ से बचे हुए अमृततुल्य को भोगने वाले) **सनातनं ब्रह्म** (अनादि ब्रह्मलोक को) **यान्ति** ({पहले} जाते हैं); {परन्तु} **कुरुसत्तम** (हे कुरुओं में उत्तम)! **अयज्ञस्य** (सर्वथा स्वार्थी

को) {तो} **अयं लोकः** (यह संसार) {भी} **न अस्ति** {सुखदायी} (नहीं है), {फिर} **अन्यः कुतः** (दूसरे {लोक} कैसे होंगे)?

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ 4/32

एवम् बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणः मुखे।
कर्मजान् विद्धि तान् सर्वान् एवम् ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे।।

एवम् (इसी प्रकार) **ब्रह्मणः मुखे** (ब्रह्मा की वेद वाणी द्वारा) **बहुविधाः** (अनेक भाँति के) **यज्ञाः** (यज्ञों का) **विताताः** (विस्तार हुआ है)। **तान् सर्वान्** (उन सबको) **कर्मजान्** (कर्म से उत्पन्न हुआ) **विद्धि** (जान)। **एवं ज्ञात्वा** (ऐसा जानकर) **विमोक्ष्यसे** ({तू उनसे भी} मुक्त हो जाएगा)।

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ 4/33

श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परंतप। सर्वम् कर्म अखिलम् पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।

परंतप (हे शत्रुपीड़क)! **द्रव्यमयात्** (उपरिवर्णित भौतिक पदार्थों द्वारा किए जाने वाले) **यज्ञात्** (यज्ञ से) **ज्ञानयज्ञः** (*अविनाशी अश्वमेध रुद्र ज्ञान यज्ञ) **श्रेयान्** (अधिक अच्छा है); {क्योंकि} **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **अखिलम्** (अखिल विश्व के) **सर्वं कर्म** (सारे कर्मकाण्ड) **ज्ञाने परिसमाप्यते** ({रुद्र} ज्ञान यज्ञ में समाप्त हो जाते हैं)। ***राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्रज्ञान यज्ञः**—'राजस्व'—स्व अर्थात् आत्मा का राज्य—सच्चा स्वराज्य प्रदान कराने वाला यज्ञ। 'अश्वमेध'— मन रूपी अश्व प्रधान रूप से मारा जाता है जिसमें ऐसा यज्ञ। 'अविनाशी'—भौतिक यज्ञ तो भौतिक पदार्थों की प्रधानता होने से नाशवान हैं; परंतु यह ईश्वरीय ज्ञानयज्ञ अविनाशी है; क्योंकि इसमें मन—बुद्धि रूपी अविनाशी आत्मा की ही प्रधानता है। 'रुद्र ज्ञानयज्ञ'—रुद्र अर्थात् शिव—शंकर द्वारा ज्ञान दिए जाने के कारण इसका नाम 'रुद्र ज्ञानयज्ञ' है। रुद्र यज्ञ इसलिए है कि इसके अन्त में कलियुगी महाविनाश के रूप में सारे संसार की आहुति रौद्र रूप धारणकर्ता शंकर द्वारा डाली जाती है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ 4/34

तत् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानम् ज्ञानिनः तत्त्वदर्शिनः।।

प्रणिपातेन (परम आदरपूर्वक), **परिप्रश्नेन** (प्रश्नोत्तरपूर्वक) {और} **सेवया** ({यज्ञ} सेवा द्वारा) **तत्** (उस {ज्ञान—यज्ञ} को) **विद्धि** ({तू} जान ले)। **तत्त्वदर्शिनः** (परम पवित्रता रूपी सार को जानने वाले) **ज्ञानिनः** (ज्ञानीजन) **ते** (तुझको) **ज्ञानं** (रुद्र ज्ञान यज्ञ का) **उपदेक्ष्यन्ति** (उपदेश करेंगे)।

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥ 4/35

यत् ज्ञात्वा न पुनः मोहम् एवम् यास्यसि पांडव।
येन भूतानि अशेषेण द्रक्ष्यसि आत्मनि अथो मयि।।

पाण्डव (हे पाण्डव)! **यत्** (जिस {ज्ञान} को) **ज्ञात्वा** (जानकर) **पुनः** (फिर से) **एवं** (इस तरह) **मोहं** {दैहिक संबंधियों के} (मोहान्धकार को) **न यास्यसि** ({तू} नहीं प्राप्त करेगा), **अथो** (तत्पश्चात्) **येन** (जिस {रुद्रज्ञानयज्ञ} द्वारा) {तू} **आत्मनि** (आत्मिक स्वरूप में) **अशेषेण** (समस्त) **भूतानि** (प्राणियों को) **मयि** (मेरे में) {अर्थात् मुझ मनुष्य सृष्टि के बीज—रूप शिवशंकर में समाए सृष्टि—वृक्ष की तरह} **द्रक्ष्यसि** (देखेगा)।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ॥ 4/36

अपि चेत् असि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वम् ज्ञानप्लवेन एव वृजिनम् संतरिष्यसि।।

चेत् (चाहे) **सर्वेभ्यः** (सब) **पापेभ्यः** (पापियों से) **अपि** (भी) **पापकृत्तमः** (अधिक पापी) **असि** ({तू क्यों न} हो), {तो भी} **ज्ञानप्लवेन** (ज्ञान रूपी नौका से) **एव** (निःसन्देह) **सर्वम्** (सारे ही) **वृजिनं** (पाप–समुद्र को) **संतरिष्यसि** ({तू} भली प्रकार तैर कर पार कर जाएगा)।

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ 4/37
यथा एधांसि समिद्धः अग्निः भस्मसात् कुरुते अर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा।।

अर्जुन (हे पुरुषार्थ का अर्जन करने वाले अर्जुन)! **यथा** (जिस रीति) **समिद्धः अग्निः** (जलाई हुई अग्नि) **एधांसि** (ईंधन को) **भस्मसात्** (जलाकर राख) **कुरुते** (कर देती है), **तथा** (उसी रीति) **ज्ञानाग्निः** ({साक्षात् रुद्र रूप ईश्वर की} ज्ञान रूपी अग्नि) **सर्वकर्माणि** (सब {खोटे} कर्मों को) **भस्मसात् कुरुते** (भस्म कर देती है)।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥ 4/38
न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् इह विद्यते।
तत् स्वयम् योगसंसिद्धः कालेन आत्मनि विन्दति।।

इह (इस {लोक} में) **ज्ञानेन** ({साक्षात् ईश्वरीय} ज्ञान के) **सदृशं** (समान) **पवित्रं** (पवित्र) **हि न विद्यते** (कुछ भी नहीं है)। **योगसंसिद्धः** ({साक्षात् ज्योतिर्बिन्दु शिवबाप से} योग द्वारा सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त हुआ {परम} पुरुष) **कालेन** (समय आने पर) **स्वयं** (स्वयं ही) **आत्मनि** (अपने अंदर) **तत्** (उस {सम्पूर्ण ज्ञान} को) **विन्दति** (प्राप्त कर लेता है)। • (प्रैक्टिकल पार्टधारी ज्योतिर्बिन्दु शिव) बाप को (निरंतर) याद करने से ज्ञान आपे ही इमर्ज हो जाता है। (चाहे बूढ़ा–बुढ़िया ही क्यों न हो।) (अ.वा.24.1.70 पृ.3 आ.)

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ 4/39
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानम् लब्ध्वा पराम् शांतिम् अचिरेण अधिगच्छति।।

श्रद्धावान् {भगवान की श्रीमत में} (श्रद्धा रखने वाला) **तत्परः** (निरंतर प्रयत्नशील) {और} **संयतेन्द्रियः** (इन्द्रियों को संपूर्ण रूप से वश में करने वाला {पुरुष}) **ज्ञानं लभते** ({ईश्वरीय} ज्ञान प्राप्त करता है)। **ज्ञानं लब्ध्वा** (ज्ञान पाकर) **अचिरेण** (शीघ्र ही) **परां शांतिं** (परम शांति) **अधिगच्छति** (पाता है)।

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ 4/40
अज्ञः च अश्रद्दधानः च संशयात्मा विनश्यति।
न अयम् लोकः अस्ति न परः न सुखम् संशयात्मनः।।

अज्ञः (मूर्ख) **च** (और) **अश्रद्दधानः** (श्रद्धाहीन) **च** (तथा) **संशयात्मा** (संशय के स्वभाव वाला) {पुरुष} **विनश्यति** {संपूर्ण आत्मस्थिति से} (नष्ट हो जाता है)। **संशयात्मनः** (संशयालु व्यक्ति को) **न अयं लोकः** (न यह संसार {है}), **न परः** (न परलोक) {रूपी स्वर्ग} **अस्ति** (है) {और} **न सुखम्** (न {सांसारिक} सुख {ही है})।

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ॥ 4/41
योगसंन्यस्तकर्माणम् ज्ञानसंछिन्नसंशयम्। आत्मवन्तम् न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय।।

धनंजय (हे ज्ञानधनजयी अर्जुन)! **योगसंन्यस्तकर्माणं** (सहज राजयोग द्वारा कर्मबन्धन का सम्पूर्ण त्याग करने वाले) {और} **ज्ञानसंछिन्नसंशयं** (ईश्वरीय ज्ञान द्वारा संशय का सम्पूर्ण छेदन करने वाले) **आत्मवन्तं** (ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा की स्मृति में टिके पुरुष को) **कर्माणि न निबध्नन्ति** (कर्मबंधन नहीं लगते);

तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ 4/42
तस्मात् अज्ञानसम्भूतम् हृत्स्थम् ज्ञानासिना आत्मनः।
छित्त्वा एनम् संशयम् योगम् आतिष्ठ उत्तिष्ठ भारत।।

तस्मात् (इसलिए) **भारत** (हे भरतवंशी अर्जुन!) **अज्ञानसंभूतं** (अज्ञान से उत्पन्न हुए) **हृत्स्थं** (हृदय में स्थित) **एनं** (इस) **संशयं** (संशय को) **आत्मनः** (आत्मा की) **ज्ञानासिना** (ज्ञानकटारी से) **छित्त्वा** (काटकर) **योगं** (योग में) **आतिष्ठ** (जुट जा) {और} **उत्तिष्ठ** (उठ खड़ा हो)।

अध्याय–5

अर्जुन उवाचः– सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ 5/1
संन्यासम् कर्मणाम् कृष्ण पुनः योगम् च शंससि।
यत् श्रेयः एतयोः एकम् तत् मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।।

कृष्ण ({हे ज्ञान मुरली द्वारा आत्माओं को} आकर्षित करने वाले परमपिता शिव)! **कर्मणां** ({लौकिक} कर्मों के) **संन्यासं** (समुचित त्याग की) **च** (और) **पुनः** (फिर {कभी}) **योगं** (कर्मयोग की) **शंससि** ({आप} प्रशंसा करते हो)। **एतयोः** (इन दोनों में से) **यत् श्रेयः** (जो अधिक श्रेष्ठ हो) **तत्** (उस) **एकं** (एक को) **सुनिश्चितं** (निश्चियपूर्वक) **मे ब्रूहि** (मुझे बताइए)।

श्रीभगवानुवाचः– सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ 5/2
संन्यासः कर्मयोगः च निःश्रेयसकरौ उभौ। तयोः तु कर्मसंन्यासात् कर्मयोगः विशिष्यते।।

संन्यासः (लौकिक कर्म का समुचित त्याग करते हुए योग) **च** (और) **कर्मयोगः** (लौकिक कर्म {सेवा} करते हुए भी परमात्मा से योग)–**उभौ** ({ये} दोनों) **निःश्रेयसकरौ** (परमकल्याणकारी हैं); **तु** (किन्तु) **तयोः** (उन दोनों में) **कर्मसंन्यासात्** (लौकिक कर्मों के सम्पूर्ण त्याग रूपी सन्यासयोग से) **कर्मयोगः** (लौकिक कर्म करते हुए परमात्मा की याद रूपी कर्मयोग) **विशिष्यते** (विशेष अच्छा है)।

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ 5/3
ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यः न द्वेष्टि न कांक्षति।
निर्द्वन्द्वः हि महाबाहो सुखम् बन्धात् प्रमुच्यते।।

महाबाहो (हे सहयोगी रूपी दीर्घ भुजा वाले)! **यः** (जो) **न द्वेष्टि** (न द्वेष करता है), **न कांक्षति** (न {कोई लौकिक} इच्छा करता है), **सः** (वही) **नित्यसंन्यासी** ({लौकिक कर्मों का} सदा त्याग करने वाला सन्यासयोगी) **ज्ञेयः** (जाना जाता है); **हि** (क्योंकि) **निर्द्वन्द्वः** (राग–द्वेष आदि द्वन्द्वों से रहित) {पुरुष} **बन्धात्** (कर्मबंधन से) **सुखं प्रमुच्यते** (सुखपूर्वक छूट जाता है)।

साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥ 5/4
सांख्ययोगौ पृथक् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकम् अपि आस्थितः सम्यक् उभयोः विन्दते फलम्।।

***सांख्ययोगौ** (केवल ज्ञान और कर्मयोग–ये दोनों) **पृथक्** (अलग हैं), {ऐसा} **बालाः** (बाल बुद्धि {अर्थात् कच्ची बुद्धि} वाले) **प्रवदन्ति** (कहते हैं), **न पण्डिताः** (पण्डितजन नहीं {कहते})। **एकं** (एक का) **अपि** (भी) **सम्यक्** (भली प्रकार) **आस्थितः** (आसरा लेने वाला) **उभयोः फलं** (दोनों का फल) **विन्दते** (पाता है)। ***संख्या** (सं+आख्या)=संपूर्ण आख्या अर्थात् विचार और उससे उत्पन्न होने वाला ज्ञान=सांख्य।

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ 5/5
यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानम् तत् योगैः अपि गम्यते।
एकम् सांख्यम् च योगम् च यः पश्यति स पश्यति।।

सांख्यैः (ज्ञान द्वारा) **यत् स्थानं** (जो पद) **प्राप्यते** (मिलता है), **तत्** (वही {पद}) **योगैः** (कर्मयोग द्वारा) **अपि गम्यते** (भी प्राप्त होता है)। {अतः} **सांख्यं च योगं च** (ज्ञानयोग और कर्मयोग को) **यः एकं पश्यति** (जो एक देखता है), **स पश्यति** (वही {सत्य} देखता है)।

सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ 5/6
सन्यासः तु महाबाहो दुःखम् आप्तुम् अयोगतः।
योगयुक्तः मुनिः ब्रहम नचिरेण अधिगच्छति।।

महाबाहो (हे महान सहयोगियों रूपी दीर्घबाहु)! **संन्यासः** (सन्यास) **तु** (तो) **अयोगतः** (कर्मयोग बिना, {लौकिक कर्मों का अनुभव किए बिना}) **दुःखं** (दुःखपूर्वक) **आप्तुम्** (प्राप्त होता है)। {परमात्मा से लगन होगी तो ही लौकिक कर्मों का त्याग कर सकेंगे। अयोगी अर्थात् भोगी को ज्ञान नहीं मिलता}। **योगयुक्तः** (परमात्मा की याद की लगन में लगा हुआ) **मुनिः** (मननशील ज्ञानी) **ब्रह्म** (ब्रहमलोक को) **नचिरेण** (शीघ्र ही) **अधिगच्छति** (प्राप्त कर लेता है)। ✱ प्रायः ऐसा समझा जाता है कि जिन सांसारिक कार्यों को सर्वथा त्यागकर, केवल ज्ञान की अलौकिक सेवा में अपना जीवन अर्पण कर दिया है, वे अधिक श्रेष्ठ हैं; परंतु गीता में इस बात का खण्डन किया गया है और दूसरे श्लोक में तो सुगमता की दृष्टि से सन्यासयोग से कर्मयोग को ही श्रेष्ठ बताया है। यद्यपि ये दोनों ही मित्र नहीं हैं, अपितु प्राप्ति की दृष्टि से दोनों समान हैं। ऐसा पाँचवें श्लोक में भी बताया गया है।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ 5/7
योगयुक्तः विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन् अपि न लिप्यते।।

योगयुक्तः (योगयुक्त), **विशुद्धात्मा** (विशेष रूप से मनसा तक शुद्ध हुआ), **विजितात्मा** (मन–बुद्धि को भी जीतने वाला), **जितेन्द्रियः** (इन्द्रियजीत) {और} **सर्वभूतात्मभूतात्मा** (सब प्राणियों में आत्मभाव रखने वाला पुरुष) **कुर्वन्** {कर्म} (करता हुआ) **अपि** (भी) **न लिप्यते** {कर्म में} (आसक्त नहीं होता)।

नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥ 5/8
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ 5/9
न एव किंचित् करोमि इति युक्तः मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्।।
प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्।।

युक्तः (परमात्मा की याद की लग्न में लगा हुआ) **तत्त्ववित्** (सारभूत को जानने वाला–ज्ञानी) **इन्द्रियाणि** ({जिह्वा आदि} इन्द्रियाँ) **इन्द्रियार्थेषु** (भोजन आदि विषयों में) **वर्तन्ते** {स्वाभाविक रीति से} (लगी हुई हैं)–**इति धारयन्** (ऐसा निश्चय करके) **पश्यन्** (देखते), **शृण्वन्** (सुनते), **स्पृशन्** (छूते), **जिघ्रन्** (सूँघते), **अश्नन्** (खाते), **गच्छन्** (जाते), **स्वपन्** (सोते), **श्वसन्** (श्वाँस लेते), **प्रलपन्** (बोलते), **विसृजन्** ({मल–मूत्र} त्याग करते), **गृह्णन्** (लेते), **उन्मिषन्, निमिषन्** (आँखें खोलते और मींचते हुए) **अपि** (भी), **किंचित् न एव** (कुछ भी

नहीं) **करोमि** (करता हूँ), **इति मन्येत** (इस तरह {हल्केपन का} अनुभव करता है)। {अर्थात् सब कुछ मेरे से कराने वाला साक्षात् ईश्वर है।}

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ 5/10
◈ब्रह्मणि आधाय कर्माणि संगम् त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रम् इव अम्भसा।।

यः (जो {योगी}) **ब्रह्मण्याधाय** {बुद्धि द्वारा} (ब्रह्मलोक का आधार लेकर अर्थात् अव्यक्त होकर) {और} **संगं त्यक्त्वा** (आसक्ति का त्याग करके) **कर्माणि** ({इन} कर्मों को) **करोति** (करता है), **सः** (वह) **अम्भसा** (पानी से) **पद्मपत्रं** (कमल पत्र की) **इव** (तरह) **पापेन** (पाप से) **न लिप्यते** (लिप्त नहीं होता)। ◈गीता 5/15 के अनुसार, परमात्मा किसी के पाप–पुण्यों को ग्रहण नहीं करता। अतः यहाँ कर्मों को परमात्मा में अर्पित करने का अर्थ नहीं लगाया जा सकता।

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ 5/11
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैः इन्द्रियैः अपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगम् त्यक्त्वा आत्मशुद्धये।।

योगिनः (योगीजन) **कायेन** (शरीर से), **मनसा** (मन द्वारा), **बुद्ध्या** (बुद्धि द्वारा) {और} **केवलैः इन्द्रियैः** (केवल इन्द्रियों द्वारा) **अपि** (भी) **आत्मशुद्धये** (आत्मा की शुद्धि के लिए), **संगं त्यक्त्वा** (आसक्ति को त्यागकर) **कर्म कुर्वन्ति** (कर्म करते हैं)।

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ 5/12
युक्तः कर्मफलम् त्यक्त्वा शांतिम् आप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तः निबध्यते।।

युक्तः (योगी) **कर्मफलं त्यक्त्वा** (कर्मों की फलासक्ति को त्याग कर) **नैष्ठिकीं** (निश्चल) **शांतिं** (शांति को) **आप्नोति** (प्राप्त करता है); {परंतु} **अयुक्तः** (अयोगी {अर्थात् जो परमात्मा की याद में कर्म नहीं करता, वह}) **कामकारेण** ({सांसारिक} कामना के कारण) **फले** ({कर्म के} फल में) **सक्तः** (आसक्त हुआ) **निबध्यते** ({कर्म बंधन में अत्यन्त} बँध जाता है)।

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ 5/13
सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्य आस्ते सुखम् वशी।
नवद्वारे पुरे देही न एव कुर्वन् न कारयन्।।

वशी (मन सहित इन्द्रियों को वश में करने वाला) **देही** (आत्मा) **सर्वकर्माणि** (सब कर्मों को) **मनसा** (मन से), {न कि स्थूल रूप से}, **संन्यस्य** (सम्पूर्ण त्याग कर) **नवद्वारे** (नौ द्वार वाले) **पुरे** ({शरीर रूपी} नगर में) {मानों} **न कुर्वन्** (न करता हुआ) {और} **न कारयन्** (न कराता हुआ) **एव** (ही) **सुखं** (सुख से) **आस्ते** (रहता है)।

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ 5/14
न कर्तृत्वम् न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगम् स्वभावः तु प्रवर्तते।।

प्रभुः (परमेश्वर) **लोकस्य** (संसार के) **कर्तृत्वं न** (न कर्तापने का), **न कर्माणि** (न कर्मों का) {और} **न कर्मफलसंयोगं** (न कर्मों का उनके फलों के साथ संयोग) **सृजति** (विधान करता है); **तु** (किंतु) **स्वभावः** {जड़

जंगम सृष्टि का अनादि निश्चित} (स्वभाव) {स्वतः ही} **प्रवर्तते** (प्रवर्तन करता है)। {परमात्मा सब कुछ नहीं करता, बल्कि अनादि निश्चित 5000 वर्षीय ड्रामाप्लेनअनुसार स्वभावतः सारे कार्य होते हैं।}

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ 5/15
न आदत्ते कस्यचित् पापम् न च एव सुकृतम् विभुः ।
अज्ञानेन आवृतम् ज्ञानम् तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।।

विभुः (परमात्मा) **कस्यचित्** (किसी के) **न पापं** (न पाप को) **च न सुकृतं** (न पुण्य को) **एव आदत्ते** (ही ग्रहण करता है)। **अज्ञानेन** {सर्वव्यापी के} (अज्ञान द्वारा) **ज्ञानं** (ज्ञान) **आवृतं** (ढका हुआ है), **तेन** (जिससे) **जन्तवः मुह्यन्ति** (प्राणी मोहित हो रहे हैं);

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ 5/16
ज्ञानेन तु तत् अज्ञानम् येषाम् नाशितम् आत्मनः ।
तेषाम् आदित्यवत् ज्ञानम् प्रकाशयति तत्परम् ।।

तु (किंतु) **ज्ञानेन** {एकव्यापी के} (ज्ञान द्वारा) **येषां** (जिनका) **आत्मनः** (आत्मा सम्बंधी) **तत्** (वह) **अज्ञानं नाशितं** (अज्ञान नष्ट हो गया है), **तेषां** (उनका) **तत् ज्ञानं** (वह ज्ञान) **परम्** (परमेश्वर को) **आदित्यवत्** (सूर्य की तरह) **प्रकाशयति** (प्रत्यक्ष करता है) {सन शोज़ फादर}।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ 5/17
तद्बुद्धयः तदात्मानः तन्निष्ठाः तत्परायणाः । गच्छन्ति अपुनरावृत्तिम् ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ।।

तद्बुद्धयः (उस एकव्यापी परमेश्वर में ही निश्चय बुद्धि वाले), **तदात्मानः** (उसी में अपना मन लगाने वाले), **तन्निष्ठाः** (उसी में निष्ठावान), **तत्परायणाः** (उसे ही परम आधार मानने वाले) {और} **ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः** (ईश्वरीय ज्ञान जल द्वारा जिनके पाप धुल गए हैं)–{ऐसे पुरुष} **अपुनरावृत्तिं गच्छन्ति** (पुनः {इस दुःखी लोक कलियुग में} नहीं आते)।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ 5/18
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि च एव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।

विद्याविनयसम्पन्ने (विद्या और विनयशील) **ब्राह्मणे** ({सत्वगुणी} ब्राह्मण में), **गवि** (गाय–{बैल जैसे रजोगुणी मनुष्य में}), **हस्तिनि शुनि च** (हाथी और कुत्ते {जैसे तमोगुणी पुरुष में}) **च** (और) **श्वपाके** (कामी कुत्ते को भी पकाने वाले चाण्डाल {जैसे अत्यन्त तामसी पुरुष} में) **पण्डिताः एव** {आत्माभिमानी (पण्डितजन) ही} **समदर्शिनः** (समान आत्मिक दृष्टि वाले) {होते हैं}।

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ 5/19
इह एव तैः जितः सर्गः येषाम् साम्ये स्थितम् मनः ।
निर्दोषम् हि समम् ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः ।।

येषां (जिनका) **मनः** (मन) **साम्ये** {एक शिव बाप की संतान आत्मा–2 भाई–2 की} (समानता में) **स्थितं** (स्थिर है), **तैः** (उन्होंने) **इह** (संसार में) **एव** (ही) **सर्गः** ({जन्म–मृत्यु रूप} संसार✷ को) **जितः** (जीत लिया है); **हि** (क्योंकि) **ब्रह्म** (ब्रह्मतत्व) **निर्दोषं** (दोष–पापरहित) {और} **समं** (समान है); **तस्मात्** (इसलिए) **ते ब्रह्मणि स्थिताः** (वे ब्रह्मतत्व में {ही} स्थिर हैं)। ✷ तुम बच्चे इस संसार में ही ब्रह्मलोक को उतार लेंगे।

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ 5/20

न प्रहृष्येत् प्रियम् प्राप्य न उद्विजेत् प्राप्य च अप्रियम्।
स्थिरबुद्धिः असम्मूढः ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः।।

प्रियं (प्रिय {वस्तु} को) **प्राप्य** (पाकर) **न प्रहृष्येत्** (हर्षित नहीं होना चाहिए) **च** (और) **अप्रियं** (अप्रिय {वस्तु} को) **प्राप्य** (पाकर) **न उद्विजेत्** (दुःखी नहीं होना चाहिए)। **स्थिरबुद्धिः** (स्थिर बुद्धि वाला), **असंमूढः** (मोहरहित) {और} **ब्रह्मवित्** (ब्रह्मतत्व का जानकार पुरुष) **ब्रह्मणि स्थितः** (ब्रह्मतत्व में {ही} स्थित है)।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥ 5/21

बाह्यस्पर्शेषु असक्तात्मा विन्दति आत्मनि यत् सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखम् अक्षयम् अश्नुते।।

बाह्यस्पर्शेषु (बाहरी विषय भोगों में) **असक्तात्मा** (आसक्ति से रहित पुरुष), **आत्मनि** (आत्मा में) **यत्** (जो) **सुखं** {अतीन्द्रिय} (सुख) **विन्दति** (पाता है), **स** (वह {पुरुष}) **ब्रह्मयोगयुक्तात्मा** {परमब्रह्म से} (योगयुक्त हुआ) **अक्षयं** (अखूट) **सुखं** ({अतीन्द्रिय} सुख) **अश्नुते** (भोगता है)।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ 5/22

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते। आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।।

ये (जो) **संस्पर्शजाः** (इन्द्रियों के विषयों से जन्म लेने वाले) **भोगाः** (भोग हैं), **ते हि** (वे ही) **दुःखयोनयः** (दुःखों को उत्पन्न करने वाले हैं) {और} **आद्यन्तवन्तः एव** (आदि–अंत वाले {अर्थात् क्षणिक ही} हैं)। **कौन्तेय** ({पवित्र माता गुरु} कुन्ती माता के पुत्र)! **बुधः** (बुद्धिमान्) **तेषु** (उन {विषयों} में) **न रमते** (रमण नहीं करते)।

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ 5/23

शक्नोति इह एव यः सोढुम् प्राक् शरीरविमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवम् वेगम् स युक्तः स सुखी नरः।।

इह एव (इस {लोक} में ही) **यः** (जो {पुरुष}) **शरीरविमोक्षणात्** (शरीर छूटने से) **प्राक्** (पहले) **कामक्रोधोद्भवं** (काम–क्रोध से उत्पन्न हुए) **वेगं** (आवेग को) **सोढुं शक्नोति** (सहन कर सकता है), **स नरः** (वह मनुष्य) **युक्तः** (योगी है), **स सुखी** (वही सुखी है)।

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ 5/24

यः अन्तःसुखः अन्तरारामः तथा अन्तर्ज्योतिः एव यः।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणम् ब्रह्मभूतः अधिगच्छति।।

यः (जो {पुरुष}) **अन्तःसुखः** (अन्तरात्मा में सुखी है), **अन्तरारामः** (अन्तरात्मा में ही आनन्दित है) **तथा** (इसी तरह) **अन्तर्ज्योतिः एव** (जिसमें ज्योतिबिंदु रूप आत्मज्योति ही प्रकाशित है); **ब्रह्मभूतः** (ब्रह्मलोक में स्थित हुआ) **सः योगी** (वह योगी) **ब्रह्मनिर्वाणं** (परमब्रह्म के निर्वाण पद को) **अधिगच्छति** (प्राप्त कर लेता है)।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ 5/25

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम् ऋषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।

क्षीणकल्मषाः (पापों को क्षीण करने वाले), **छिन्नद्वैधाः** (द्विविधा अर्थात् संशय का छेदन करने वाले), **यतात्मानः** (मन–बुद्धि को वश में करने वाले) {और} **सर्वभूतहिते रताः** (सब प्राणियों के हित में रत {अर्थात् आनन्द लेने वाले}) **ऋषयः** (ऋषिजन) **ब्रह्मनिर्वाणं** (ब्रह्मतत्व रूप निर्वाण पद को) **लभन्ते** (पाते हैं)।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ 5/26

कामक्रोधवियुक्तानाम् यतीनाम् यतचेतसाम्। अभितः ब्रह्मनिर्वाणम् वर्तते विदितात्मनाम्।।

कामक्रोधवियुक्तानां (काम–क्रोध से रहित), **यतचेतसां** (संयमित मन–बुद्धि वालों का) {और} **विदितात्मनां** (ज्योतिबिंदु आत्म स्वरूप को भली–भाँति जानने वाले) **यतीनां** (यतियों का) **ब्रह्मनिर्वाणं** (ब्रह्म रूप निर्वाण पद) **अभितः** (दोनों ओर) **वर्तते** (होता है)। {'दोनों ओर' अर्थात् परलोक और इस लोक में भी वे ब्रह्मलोक की शांति का अनुभव करते हैं।}

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ 5/27
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ 5/28

स्पर्शान् कृत्वा बहिः बाह्यान् चक्षुः च एव अन्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः मुनिः मोक्षपरायणः। विगतेच्छाभयक्रोधः यः सदा मुक्त एव सः।।

बाह्यान् (बाहर के) **स्पर्शान्** (इन्द्रिय विषयों को) **बहिः** (बाहर) **एव** (ही) **कृत्वा** (करके) **च** (और) **चक्षुः** (मन–बुद्धि रूपी ज्योतिबिंदु आत्म नेत्र को) **भ्रुवोः अन्तरे** (दोनों भृकुटि के बीच में) **नासाभ्यन्तरचारिणौ** (नासिका से संचार करने वाले) **प्राणापानौ** (प्राण और अपान वायु को) **समौ कृत्वा** (समान करके {अर्थात् स्वाभाविक श्वास–प्रश्वास लेते हुए}), **यतेन्द्रियमनोबुद्धिः** (इन्द्रिय, मन और बुद्धि को वश करने वाला), **मोक्षपरायणः** (दुःखों से मुक्ति को परमगति मानने वाला), **विगतेच्छाभयक्रोधः** (इच्छा, भय और क्रोध से रहित) **यः** (जो) **मुनिः** (मुनि) {होता है}, **सः** (वह) **सदा मुक्तः एव** (सदा मुक्त ही है)।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ 5/29

भोक्तारम् यज्ञतपसाम् सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदम् सर्वभूतानाम् ज्ञात्वा माम् शांतिम् ऋच्छति।।

यज्ञतपसां (सब प्रकार की यज्ञ सेवा और आत्मस्थिति रूप तपस्या का) **भोक्तारं** (भोग स्वीकार करने वाले) {और} **सर्वभूतानां** (सब प्राणियों के) **सुहृदं** (मित्रस्वरूप) **मां** (मुझ) **सर्वलोकमहेश्वरं** (सर्व लोकों के महान ईश्वर को) **ज्ञात्वा** (जानकर) **शांतिं** (शांति को) **ऋच्छति** (प्राप्त करता है)।

अध्याय–6

श्रीभगवानुवाचः– अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥ 6/1

अनाश्रितः कर्मफलम् कार्यम् कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निः न च अक्रियः।।

यः (जो) **कर्मफलं** (कर्मों के फल का) **अनाश्रितः** (आश्रय न लेकर) **कार्यं** (करने योग्य) **कर्म करोति** (कर्म करता है), **सः संन्यासी** (वह सन्यास योगी) **च** (और) **योगी** (कर्मयोगी है); **च** (परंतु) **निरग्निः** (ज्ञान–योग रूपी अग्नि से रहित) **न** (नहीं है) **च** (और) **अक्रियः** (निष्क्रिय) **न** (नहीं है)।

यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन ॥ 6/2

यम् संन्यासम् इति प्राहुः योगम् तम् विद्धि पाण्डव।
न हि असंन्यस्तसंकल्पः योगी भवति कश्चन।।

पाण्डव (हे पाण्डव)! **यं** (जिसको) **संन्यासं** ({लौकिक कर्मों का समुचित त्याग रूप} सन्यास) **इति** (ऐसा) **प्राहुः** (कहा जाता है), **तं** (उसको) **योगं** ({कर्म}योग) **विद्धि** (समझो); **हि** (क्योंकि) **असंन्यस्तसंकल्पः** ({लौकिक} संकल्पों का समुचित त्याग न करने वाला) **कश्चन** (कोई भी) **योगी न भवति** ({कर्म}योगी नहीं होता)। ✶लौकिक संकल्पों का त्याग करने वाला कर्मयोगी भी, लौकिक कर्मों का बुद्धि से त्याग करने वाले ज्ञानी की तरह ही है; परंतु लौकिक कर्मों को त्यागने वाले ज्ञानी ने यदि सांसारिक संकल्पों–आशाओं को नहीं त्यागा, तो वह योगी नहीं कहा जाएगा।

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ 6/3

आरुरुक्षोः मुनेः योगम् कर्म कारणम् उच्यते।
योगारूढस्य तस्य एव शमः कारणम् उच्यते।।

योगं (योगयुक्त स्थिति में) **आरुरुक्षोः** (चढ़ने की इच्छा वाले) **मुनेः** (मुनि के लिए) **कर्म** ({अलौकिक} कर्म) {ही} **कारणं** (उस स्थिति की प्राप्ति में कारण {अर्थात् साधन}) **उच्यते** (कहा जाता है) {और} **तस्य** (उस) **योगारूढस्य** (योगयुक्त अवस्था को चढ़े हुए व्यक्ति के) {टिकाऊपने में} **शमः** {कर्म करते हुए भी} (चित्त की उपरामता) **एव** (ही) **कारणं उच्यते** (कारण कही जाती है); ✧लौकिक कर्मों को भी अलौकिक समझ कर करने से ऊँची स्थिति बनती है, जिसे उपराम रहकर स्थायी बनाया जा सकता है।

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ 6/4

यदा हि न इन्द्रियार्थेषु न कर्मसु अनुषज्जते। सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढः तदा उच्यते।।

हि (क्योंकि) **यदा** (जब) **सर्वसंकल्पसंन्यासी** (सब {लौकिक} संकल्पों का {सम्यक् रीति} त्याग करने वाला {ज्ञानी}) **न इन्द्रियार्थेषु** (न इन्द्रियों के रूप रस आदि विषयों में) {और} **न कर्मसु** (न कर्मों में) **अनुषज्जते** (आसक्त होता है), **तदा** (तब) **योगारूढः** (योगयुक्त अवस्था को चढ़ा हुआ) **उच्यते** (कहा जाता है)। ⏩किसी कर्म में आसक्त नहीं होना है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ 6/5

उद्धरेत् आत्मना आत्मानम् न आत्मानम् अवसादयेत्।
आत्मा एव हि आत्मनः बंधुः आत्मा एव रिपुः आत्मनः।।

आत्मना (अपने मन–बुद्धि के द्वारा) **आत्मानं** (सूक्ष्म ज्योतिबिंदु आत्मा को) **उद्धरेत्** (उत्+हरेत्; ऊर्ध्वलोक (ब्रह्मलोक) में ले जाना चाहिए)। **आत्मानं** (आत्मा को) **न अवसादयेत्** (अधोगति में न पहुँचने दे); **हि** (क्योंकि) **आत्मा एव** (आत्मा ही) **आत्मनः** (अपना) **बन्धुः** (मित्र है) {और} **आत्मा एव** (आत्मा ही) **आत्मनः** (अपना) **रिपुः** (शत्रु है)। ▸ सदैव परमधाम रूपी घर को याद करना है, कलियुगी अधोलोक को याद नहीं करना है। • जीवात्मा अपना ही मित्र है, अपना ही शत्रु है। (मु.ता.21.3.67 पृ.3)

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ 6/6

बंधुः आत्मा आत्मनः तस्य येन आत्मा एव आत्मना जितः।
अनात्मनः तु शत्रुत्वे वर्तेत आत्मा एव शत्रुवत्।।

येन (जिसने) **आत्मना** (अपने मन–बुद्धि के द्वारा) **आत्मा** (ज्योतिबिंदु आत्मा को) **जितः** (जीता अर्थात् पाया है), **तस्य** (उसकी) **आत्मा** (आत्मा) **एव** (ही) **आत्मनः** (अपना) **बन्धुः** (मित्र है); **तु** (किंतु) **अनात्मनः** (आत्मज्ञानरहित देहाभिमानी का) **आत्मा** (मन–बुद्धि रूप आत्मा) **एव** (ही) **शत्रुवत्** (शत्रु की तरह) **शत्रुत्वे** (शत्रुता करने में) **वर्तेत** (तत्पर रहता है)।

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥ 6/7

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।।

जितात्मनः (आत्मजयी) **प्रशान्तस्य** (परम शान्त पुरुष की) **परमात्मा** (हीरो पार्टधारी आत्मा) **शीतोष्णसुखदुःखेषु** (सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख में) **तथा मानापमानयोः** (तथा मान–अपमान में) **समाहितः** (स्थिर–अडोल रहती है)।

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥ 6/8

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थः विजितेंद्रियः। युक्त इति उच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः।।

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा (ईश्वरीय ज्ञान और ध्यान योग के विशेष ज्ञान से संतुष्ट हुई आत्मा वाला), **कूटस्थः** (ब्रह्मलोक रूपी पर्वतीय शिखर पर स्थिर रहने वाला), **विजितेन्द्रियः** (इन्द्रियजयी) {और} **समलोष्टाश्मकांचनः** (मिट्टी, पत्थर, स्वर्ण आदि में समान) {रूप से अनासक्त} **योगी युक्तः** (योगी योगनिष्ठ है), **इति उच्यते** (ऐसा कहा जाता है)।

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ 6/9

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु। साधुषु अपि च पापेषु समबुद्धिः विशिष्यते।।

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु (स्नेही, मित्र, शत्रु, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेषीजनों और बंधुबांधवों में), **साधुषु** (साधु पुरुषों) **च** (और) **पापेषु** (पापियों में) **अपि** (भी) **समबुद्धिः** {आत्म रूप से} (समान भाव रखने वाला) **विशिष्यते** (विशेष अच्छा माना जाता है)।

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ 6/10

योगी युंजीत सततम् आत्मानम् रहसि स्थितः। एकाकी यतचित्तात्मा निराशीः अपरिग्रहः।।

यतचित्तात्मा (इन्द्रियों सहित मन–बुद्धि को वश में करने वाला), **निराशीः** ({लौकिक} आशाओं से रहित) {और} **अपरिग्रहः** ({लौकिक हेतु से} संग्रहवृत्ति का त्याग करने वाला) **योगी** (योगी {पुरुष}) **एकाकी** (अकेला) **रहसि** (एकांत स्थान में) **स्थितः** (स्थित हुआ) **आत्मानम्** ({मन–बुद्धि स्वरूप} ज्योतिबिंदु आत्मा को) **सततं युंजीत** (निरन्तर {परमात्मा से} जोड़े)।

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ 6/11
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ 6/12

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरम् आसनम् आत्मनः।
न अत्युच्छ्रितम् न अतिनीचम् चैलाजिनकुशोत्तरम्।।
तत्र एकाग्रम् मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्य आसने युंज्यात् योगम् आत्मविशुद्धये।।

शुचौ देशे (पवित्र स्थान में), **चैलाजिनकुशोत्तरं** (कुशा घास पर मृगचर्म डालकर, उस पर वस्त्र बिछाकर), **नातिनीचं** (न अति नीचा) **नात्युच्छ्रितं** (न अति ऊँचा) **आत्मनः** (अपना) **स्थिरं आसनं** (स्थिर आसन) **प्रतिष्ठाप्य**

(जमाकर), **तत्र आसने** (उस आसन पर) **उपविश्य** (बैठकर) {तथा} **मनः** (मन को) **एकाग्रं** (एकाग्र) **कृत्वा** (करके) **यतचित्तेन्द्रियक्रियः** (मन–बुद्धि और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में करने वाला {योगी}) **आत्मविशुद्धये** (आत्मा की विशेष शुद्धि के लिए) **योगं युंज्यात्** (परमात्मा से लगन लगाए)।

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ 6/13
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥ 6/14
समम् कायशिरोग्रीवम् धारयन् अचलम् स्थिरः।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रम् स्वम् दिशः च अनवलोकयन्।।
प्रशान्तात्मा विगतभीः ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तः युक्त आसीत मत्परः।।

स्थिरः (स्थिर हुआ) {योगी} **कायशिरोग्रीवं** (शरीर, गर्दन और सिर को) **समं** (एक सीध में) **अचलं धारयन्** (अडोल रखते हुए) **च** (और) **स्वं** (अपनी) **नासिकाग्रं** (नाक के सामने) **संप्रेक्ष्य** (सम्यक् रीति देखते हुए {अर्थात् आँखें खुली रखकर}), **दिशः अनवलोकयन्** (इधर–उधर न देखते हुए), **प्रशान्तात्मा** (शान्तचित्त हुआ), **विगतभीः** (भय रहित हुआ) {और} **ब्रह्मचारिव्रते** (ब्रह्मचर्य व्रत में) **स्थितः** (स्थिर हुआ), **मनः संयम्य** (मन को वश में करके) **मच्चित्तः** (मुझ {चैतन्य ज्योतिर्लिंग शिव} में चित्त लगाकर), **मत्परः** (मेरे परायण हुआ) **युक्तः आसीत** (योगयुक्त बना रहे)।

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥ 6/15
युंजन् एवम् सदा आत्मानम् योगी नियतमानसः।
शांतिम् निर्वाणपरमाम् मत्संस्थाम् अधिगच्छति।।

नियतमानसः (मन को संयत रखने वाला) **योगी एवं** (योगी इस प्रकार) **सदा** (निरंतर) **आत्मानं** ({ज्योतिबिंदु} आत्मा को) **युंजन** {चैतन्य ज्योतिर्लिंग परमपिता शिव में} (जोड़ता हुआ) **मत्संस्थां** (मुझ {परमात्मा} में स्थित) **निर्वाणपरमां** (निर्वाणधाम की परम) **शान्तिं** (शान्ति को) **अधिगच्छति** (प्राप्त कर लेता है)।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ 6/16
न अति अश्नतः तु योगः अस्ति न च एकान्तम् अनश्नतः।
न च अति स्वप्नशीलस्य जाग्रतः न एव च अर्जुन।।

अर्जुन (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले अर्जुन)! **न तु अत्यश्नतः** (न तो अत्यधिक खाने वाले का) **च न** (और न) **एकान्तमनश्नतः** (बिल्कुल उपवास रखने वाले का) **योगः अस्ति** (योग लगता है) **च** (तथा) **न अति स्वप्नशीलस्य** (न अधिक सोने वाले का) **च** (और) **न जाग्रतः एव** (न बिल्कुल जागने वाले का ही) {योग लगता है}। ✷ भोजन–निद्रा आदि सभी बातों के संबंध में सहज राजयोगी को किसी तरह की अति अर्थात हठ नहीं करनी चाहिए।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ 6/17
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगः भवति दुःखहा।।

युक्ताहारविहारस्य (आहार–विहार में नियमित होने वाले का), **कर्मसु युक्तचेष्टस्य** (कर्मों में युक्तियुक्त चेष्टा करने वाले का) {और} **युक्तस्वप्नावबोधस्य** (नियमित निद्रा तथा जागरण करने वाले का) **योगः** (योग) **दुःखहा भवति** (दुःखों को हरने वाला होता है)। ✷सुबह से शाम तक की सारी दिनचर्या नियमित होनी चाहिए।

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ 6/18
यदा विनियतम् चित्तम् आत्मनि एव अवतिष्ठते।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः युक्त इति उच्यते तदा।।

यदा (जब) **विनियतं** (विशेष रूप से नितांत संयम में रखा गया) **चित्तं** ({मन–बुद्धि रूप} चित्त) **आत्मनि** (ज्योतिबिंदु आत्मरूप में) **एव** (ही) **अवतिष्ठते** (स्थिर हो जाता है), **तदा** (तब) **सर्वकामेभ्यः** (सब कामनाओं से) **निःस्पृहः** (निस्पृह हुआ) **युक्तः** ('योगयुक्त'), **इति उच्यते** (ऐसा कहा जाता है)।

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ 6/19
यथा दीपः निवातस्थः न इंगते सा उपमा स्मृता।
योगिनः यतचित्तस्य युंजतः योगम् आत्मनः।।

यथा (जैसे) **निवातस्थः** (वायुहीन स्थान में स्थित) **दीपः** (दीपक) **न इंगते** (हिलता नहीं है), {वैसे ही} **यतचित्तस्य** (वशीभूत मन–बुद्धि वाली) **आत्मनः** (आत्मा का) **योगं** (लगन या सम्बंध) **युंजतः** ({परमात्मा से} जोड़ते हुए), **योगिनः** (योगी की) **सा** (वह {दीपक वाली}) **उपमा स्मृता** (उपमा स्मरण की जाती है)। {अर्थात् योगयुक्त आत्मा के नेत्र निश्चल–एकटिक हो जाते हैं।}

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ 6/20
यत्र उपरमते चित्तम् निरुद्धम् योगसेवया।
यत्र च एव आत्मना आत्मानम् पश्यन् आत्मनि तुष्यति।।

यत्र (जिस {अवस्था} में) **योगसेवया** (योगाभ्यास के द्वारा) **निरुद्धं** (नितान्त वशीभूत) **चित्तं उपरमते** (चित्त उपराम हो जाता है) **च** (और) **यत्र** (जिस {दशा} में) {योगी} **आत्मना** (अपने मन–बुद्धि द्वारा) **आत्मानं** (सूक्ष्म ज्योतिबिंदु आत्मा को) **पश्यन्** (देखता हुआ) **आत्मनि एव** (आत्मा में ही) **तुष्यति** (आनन्दित होता है);

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ 6/21
सुखम् आत्यन्तिकम् यत् तत् बुद्धिग्राह्यम् अतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न च एव अयम् स्थितः चलति तत्त्वतः।।

बुद्धिग्राह्यं (बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य) **यत्** (जो) **अतीन्द्रियं** (इन्द्रियों से परे का) **आत्यन्तिकं** (उत्कृष्टतम) **सुखं** (सुख है), **तत्** (उसको) **अयं** (यह {योगी}) **यत्र** (जिस {अवस्था} में) **वेत्ति** (जानता है) **च** (और) **स्थितः** (स्थिर हुआ) **तत्त्वतः** {ज्योतिबिंदु} (आत्मस्वरूप से) **न एव चलति** (कभी विचलित नहीं होता);

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ 6/22
यम् लब्ध्वा च अपरम् लाभम् मन्यते न अधिकम् ततः।
यस्मिन् स्थितः न दुःखेन गुरुणा अपि विचाल्यते।।

च (उसी तरह) **यं** (जिस {अतीन्द्रिय सुख} को) **लब्ध्वा** (पाकर) **ततः** (उससे) **अपरं** (दूसरे) **लाभं** (लाभ को) **अधिकं न मन्यते** (अधिक नहीं मानता), **यस्मिन्** (जिसमें) **स्थितः** (स्थित हुआ) **गुरुणा दुःखेन** (महान दुःख से) **अपि** (भी) **न विचाल्यते** ({तनिक भी} विचलित नहीं होता);

तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम् ।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ 6/23
तम् विद्यात् दुःखसंयोगवियोगम् योगसंज्ञितम्।

स निश्चयेन योक्तव्यः योगः अनिर्विण्णचेतसा।।

दुःखसंयोगवियोगं (दुःखों की प्राप्ति से दूर करने वाले) **तं** (उस {अतीन्द्रिय सुख} को) **योगसंज्ञितं** (योग के नाम से) **विद्यात्** (जानना चाहिए)। **अनिर्विण्णचेतसा** (दुःखरहित अर्थात् हर्षित चित्त से) **निश्चयेन** (निश्चयपूर्वक) **सः योगः** (वह योग) **योक्तव्यः** (लगाना चाहिए)।

सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥ 6/24

संकल्पप्रभवान् कामान् त्यक्त्वा सर्वान् अशेषतः।
मनसा एव इन्द्रियग्रामम् विनियम्य समन्ततः।।

संकल्पप्रभवान् (संकल्प से उत्पन्न हुई) **सर्वान् कामान्** (सब {सांसारिक} कामनाओं को) **अशेषतः** (सम्पूर्णतया) **त्यक्त्वा** (त्यागकर) **मनसा एव** (मन द्वारा ही) **इन्द्रियग्रामं** (इन्द्रियों के समूह को) **समंततः** (चारों ओर से) **विनियम्य** (भली भाँति नियमित करके),

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥ 6/25

शनैः शनैः उपरमेत् बुद्ध्या धृतिगृहीतया।
आत्मसंस्थम् मनः कृत्वा न किंचित् अपि चिन्तयेत्।।

शनैः शनैः (धीरे–2) **धृतिगृहीतया** (धैर्य ग्रहण करने वाली) **बुद्ध्या** (बुद्धि के द्वारा) **उपरमेत्** (उपराम हो जाए) {और} **मनः** (मन को) **आत्मसंस्थं** (बिन्दु रूप आत्मा में स्थिर) **कृत्वा** (करके) **किंचिदपि** ({सिवाय ज्योतिबिंदु आत्मा के} कुछ भी) **न चिन्तयेत्** (चिंतन न करे)।

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥ 6/26

यतः यतः निश्चरति मनः चंचलम् अस्थिरम्।
ततः ततः नियम्य एतत् आत्मनि एव वशम् नयेत्।।

अस्थिरं (अस्थिर) {और} **चंचलं** (चंचल) **मनः** (मन) **यतः यतः** (जहाँ–2 से) **निश्चरति** (चलायमान हो), **ततः ततः** (वहाँ–2 से) **एतत्** (इस {मन} को) **नियम्य** (नियमित करके) **आत्मनि** (स्टारस्वरूप आत्मा के) **एव** (ही) **वशं नयेत्** (वश में ले आए);

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ 6/27

प्रशांतमनसम् हि एनम् योगिनम् सुखम् उत्तमम्।
उपैति शांतरजसम् ब्रह्मभूतम् अकल्मषम्।।

हि (क्योंकि) **प्रशान्तमनसं** (भली–भाँति शान्त हुए मन वाले) {और} **शांतरजसं** (शांत हुए रजोगुण वाले) **एनं योगिनं** (इस योगी को) **ब्रह्मभूतं** (परमब्रह्म से उत्पन्न हुआ) **अकल्मषं** (दोषरहित) **उत्तमं** (उत्तम) **सुखं** ({अतीन्द्रिय} सुख) **उपैति** (प्राप्त होता है)।

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ 6/28

युंजन् एवम् सदा आत्मानम् योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शम् अत्यन्तम् सुखम् अश्नुते।।

एवं (इस प्रकार) **सदा** (सदैव) **आत्मानं** ({ज्योतिबिंदु} आत्मा को) {ज्योतिलिंग रूप परमात्मा से} **युंजन्** (जोड़ता हुआ) **विगतकल्मषः** (पापरहित) **योगी** (योगी) **सुखेन** (सुखपूर्वक) **ब्रह्मसंस्पर्शं** (परमब्रह्म से भली–भाँति स्पर्श वाले) **अत्यन्तं** (सीमाहीन) **सुखं** ({अतीन्द्रिय} सुख को) **अश्नुते** (भोगता है)।

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ 6/29
सर्वभूतस्थम् आत्मानम् सर्वभूतानि च आत्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।।

योगयुक्तात्मा (परमात्मा की लगन में लगा हुआ पुरुष) **सर्वत्र** (सब जगह) **समदर्शनः** (समान आत्मिक दृष्टि वाला होकर), **सर्वभूतस्थं** (सब प्राणियों में स्थित) **आत्मानं** ({ज्योतिबिंदु} आत्मा को) **च** (अथवा) **सर्वभूतानि** (सब प्राणियों को) **आत्मनि** ({ज्योतिबिंदु} आत्मस्वरूप में) **ईक्षते** (देखता है)।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ 6/30
यः माम् पश्यति सर्वत्र सर्वम् च मयि पश्यति।
तस्य अहम् न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।

यो (जो) {प्रेमी, प्रेमिका की भाँति} **सर्वत्र** (सब जगह) **मां** (मुझे) **पश्यति** (देखता है) **च** (और) {बीज में वृक्ष की भाँति} **मयि** (मेरे में) **सर्वं** (सबको) **पश्यति** (देखता है), **अहं** (मैं) **तस्य** (उससे) **न प्रणश्यामि** ({कभी} दूर नहीं होता) **च** (और) **सः** (वह) **मे** (मेरे से) **न प्रणश्यति** ({कभी} अदृश्य नहीं होता)।

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ 6/31
सर्वभूतस्थितम् यः माम् भजति एकत्वम् आस्थितः।
सर्वथा वर्तमानः अपि स योगी मयि वर्तते।।

एकत्वमास्थितः (एक परमात्मा का ही आश्रय लेने वाला) **यः** (जो {योगी}) **सर्वभूतस्थितं** (सब प्राणियों में {मेरी याद की शक्ति रूप से} स्थित) **मां** (मुझ {ज्योतिर्लिंगम परमेश्वर} को) **भजति** (भजता है), **सः योगी** (वह योगी) **सर्वथा** (सब प्रकार से) **वर्तमानः** (व्यवहार करता हुआ) **अपि** (भी) **मयि** (मेरे में) **वर्तते** (रहता है)।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ 6/32
आत्मौपम्येन सर्वत्र समम् पश्यति यः अर्जुन।
सुखम् वा यदि वा दुःखम् स योगी परमः मतः।।

अर्जुन (हे सौभाग्य का अर्जन करने वाले अर्जुन)! **यः** (जो {योगी}) **आत्मौपम्येन** (आत्मभाव से अर्थात् अपनी ही तरह) **सर्वत्र** (सब प्राणियों में) **सुखं** (सुख को) **यदि वा** (अथवा) **दुःखं** (दुःख को) **समं** (समान) **पश्यति** (देखता है), **सः योगी** (वह योगी) **परमः** (सम्पूर्ण) **मतः** (माना जाता है)।

अर्जुनोवाचः– योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥ 6/33
यः अयम् योगः त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।
एतस्य अहम् न पश्यामि चंचलत्वात् स्थितिम् स्थिराम्।।

मधुसूदन (हे काम विकार रूपी मीठे दैत्य को मारने वाले भगवान शिव)! **त्वया** (आपने) **साम्येन** {आत्मिक स्वरूप की} (समानता द्वारा) **यः** (जो) **अयं** (यह) **योगः** (योग) **प्रोक्तः** (कहा है), **एतस्य** (उसके लिए) **चंचलत्वात्** ({मन की} चंचलता के कारण) **स्थिरां स्थितिं** (कोई स्थिर आधार) **अहम् न पश्यामि** (मुझे दिखाई नहीं देता)।

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ 6/34
चंचलम् हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढम्।
तस्य अहम् निग्रहम् मन्ये वायोः इव सुदुष्करम्।।

कृष्ण (हे आत्मा रूपी गोपियों को आकर्षित करने वाले परमपिता शिव)! **मनः** (मन) **चंचलं** (चंचल है), **प्रमाथि** (इन्द्रियों को मथने वाला है), **बलवत्** (बलवान है) {और} **दृढम्** (हठी है)। **हि** (इससे) **अहं** (मैं) **तस्य** (उसका) **निग्रहं** (रोकना) **वायोः** (वायु के) **इव** (समान) **सुदुष्करं** (अति कठिन) **मन्ये** (मानता हूँ)।

श्रीभगवानुवाचः– असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ 6/35
असंशयम् महाबाहो मनः दुर्निग्रहम् चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

महाबाहो (हे दीर्घबाहु)! **असंशयं** (निःसंदेह) **चलं** (चंचल) **मनः** (मन को) **दुर्निग्रहं** (वश में करना कठिन है); **तु** (किन्तु) **कौन्तेय** (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **अभ्यासेन** ({योग के} अभ्यास द्वारा) **च** (और) **वैराग्येण** ({पुरानी कलियुगी दुनिया के} वैराग्य द्वारा) **गृह्यते** (वश में किया जाता है)।

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ 6/36
असंयतात्मना योगः दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्यः अवाप्तुम् उपायतः।।

असंयतात्मना (असंयत मन वाले के लिए) **योगो दुष्प्राप** (योग की प्राप्ति कठिन है), **इति** (ऐसा) **मे मतिः** (मैं मानता हूँ); **तु** (किंतु) **यतता** (प्रयत्नवान) **वश्यात्मना** (वशीभूत मन वाले योगी द्वारा) **उपायतः** (युक्तिपूर्वक) **अवाप्तुं शक्यः** (प्राप्त किया जा सकता है)।

अर्जुनोवाचः– अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥ 6/37
अयतिः श्रद्धया उपेतः योगात् चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिम् काम् गतिम् कृष्ण गच्छति।।

कृष्ण (हे आकर्षणमूर्त)! **श्रद्धया** (श्रद्धा से) **उपेतः** (युक्त); {किंतु} **योगात्** (योग से) **चलितमानसः** (विचलित हुए मन वाला) **अयतिः** (योगभ्रष्ट मनुष्य) **योगसंसिद्धिं** (योग की सफलता को) **अप्राप्य** (न पाकर) **कां गतिं** (किस गति को) **गच्छति** (जाता है)?

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ 6/38
कच्चित् न उभयविभ्रष्टः छिन्नाभ्रम् इव नश्यति। अप्रतिष्ठः महाबाहो विमूढः ब्रह्मणः पथि।।

महाबाहो (हे सहयोगियों रूपी विशाल भुजाओं वाले भगवान)! **ब्रह्मणः** (ब्रह्मलोक के) **पथि** (मार्ग में) **विमूढः** (भूला हुआ) **अप्रतिष्ठः** (स्थानभ्रष्ट योगी) **उभयविभ्रष्टः** {सन्यास और कर्मयोग} (दोनों से भ्रष्ट हुआ) **छिन्नाभ्रं** (फटे हुए बादल की) **इव** (तरह) **कच्चित्** (कहीं) **न नश्यति** (नष्ट तो नहीं हो जाता)?

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ 6/39
एतत् मे संशयम् कृष्ण छेत्तुम् अर्हसि अशेषतः।
त्वदन्यः संशयस्य अस्य छेत्ता न हि उपपद्यते।।

कृष्ण (हे आकर्षणमूर्त)! **मे** (मेरे) **एतत्** (इस) **संशयं** (सन्देह को) **अशेषतः** (पूरी तरह) **छेत्तुं** (नष्ट करने में) **अर्हसि** (समर्थ हो); **हि** (क्योंकि) **अस्य संशयस्य** (इस संशय का) **छेत्ता** (नाश करने वाला) **त्वदन्यः** (आपके सिवा दूसरा) **न उपपद्यते** (नहीं मिल सकता)।

श्रीभगवानुवाचः– पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ 6/40
पार्थ न एव इह न अमुत्र विनाशः तस्य विद्यते।

न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिम् तात गच्छति।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति)! **तस्य** (उस {योगी} का) **न** (न) **इह** (इस {लोक} में) {अथवा} **अमुत्र** (परलोक में) **एव** (भी) **विनाशः** (विनाश) **न विद्यते** (नहीं होता); **हि** (क्योंकि) **तात** (हे तात)! **कश्चित्** (कोई भी) **कल्याणकृत्** (कल्याणकारी मनुष्य) **दुर्गतिं** (अधोगति को) **न गच्छति** (नहीं जाता)।

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ 6/41

प्राप्य पुण्यकृताम् लोकान् उषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनाम् श्रीमताम् गेहे योगभ्रष्टः अभिजायते।।

योगभ्रष्टः {ऐसा} (योगभ्रष्ट व्यक्ति) **पुण्यकृतां** (पुण्यात्माओं {अर्थात् देवताओं} के) **लोकान्** (लोकों को) **प्राप्य** (पाकर), **शाश्वतीः** (अनेक) **समाः** (वर्षों तक) {वहाँ साधारण प्रजा के रूप में} **उषित्वा** (रहकर), {अन्त में} **शुचीनां** (पवित्र) **श्रीमतां** (श्रीमन्तों के) **गेहे** (घर में) **अभिजायते** (जन्म लेता है)

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥ 6/42

अथवा योगिनाम् एव कुले भवति धीमताम्। एतत् हि दुर्लभतरम् लोके जन्म यत् ईदृशम्।।

अथवा धीमतां (अथवा बुद्धिमान) **योगिनां** (योगियों के) **कुले** ({ब्राह्मण} कुल में) **एव** (ही) **भवति** (उत्पन्न होता है); **हि** (किन्तु) **ईदृशं** (इस प्रकार का) **यत्** (जो) **जन्म** (जन्म है), **एतत्** (वह) **लोके** ({इस संगमयुगी} लोक में) **दुर्लभतरम्** ({पाना} अधिक कठिन है)।

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ 6/43

तत्र तम् बुद्धिसंयोगम् लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततः भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।।

तत्र (उस {संगमयुगी दूसरे जन्म} में) {भी} **पौर्वदेहिकम्** (पूर्वजन्म से प्राप्त हुए) **तं** (उस) **बुद्धिसंयोगं** (बुद्धि के संयोग {अर्थात् ज्ञान के संस्कारों} को) **लभते** (पाता है) **च** (और) **कुरुनन्दन** (हे अर्जुन)! **ततः** (बाद में) **भूयः** (पुनः) **संसिद्धौ** (सम्पूर्ण सिद्धि या सफलता के लिए) **यतते** (यत्न करता है)।

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥ 6/44

पूर्वाभ्यासेन तेन एव ह्रियते हि अवशः अपि सः।
जिज्ञासुः अपि योगस्य शब्दब्रह्म अतिवर्तते।।

सः (वह) **तेन** ({अपने} उस) **पूर्वाभ्यासेन** (पूर्वजन्म के अभ्यास द्वारा) **एव** (ही) **अवशः** (विवश होकर) **ह्रियते** ({पूर्ण सिद्धि की ओर} खिंच जाता है)। **योगस्य** (सहज राजयोग का) **जिज्ञासुः** (ज्ञान पाने की इच्छा करने वाला) **अपि** (भी) **शब्दब्रह्म** (भक्तिमार्ग की आवाज़ करने वाले कर्मकाण्ड को) **अतिवर्तते** (पार कर जाता है);

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥ 6/45

प्रयत्नात् यतमानः तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धः ततः याति पराम् गतिम्।।

तु (किन्तु) **प्रयत्नात्** (प्रयत्नपूर्वक) **यतमानः** (अभ्यास करता हुआ) **योगी** (योगी) **संशुद्धकिल्बिषः** (सम्पूर्ण पापों के धुल जाने पर), **अनेकजन्मसंसिद्धः** (अनेक जन्मों के अन्त में सम्पूर्ण सिद्ध होकर), **ततः** (बाद में) **परां गतिं** (परमगति को) **याति** (पाता है)।

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ 6/46

तपस्विभ्यः अधिकः योगी ज्ञानिभ्यः अपि मतः अधिकः।

कर्मिभ्यः च अधिकः योगी तस्मात् योगी भव अर्जुन।।

योगी (सहजराजयोगी) **तपस्विभ्यः** (शारीरिक तप करने वालों से) **अधिकः** (बढ़कर है), **ज्ञानिभ्यः** (ज्ञानियों से) **अपि** (भी) **अधिकः** (श्रेष्ठ) **मतः** (माना गया है) **च** (और) **कर्मिभ्यः** (कर्मकाण्डियों से भी) **योगी** (सहजराजयोगी) **अधिकः** (बड़ा है); **तस्मात्** (इसलिए) **अर्जुन** (हे अर्जुन)! **योगी भव** ({तू} योगी बन)।

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ 6/47
योगिनाम् अपि सर्वेषाम् मद्गतेन अन्तरात्मना।
श्रद्धावान् भजते यः माम् स मे युक्ततमः मतः।।

सर्वेषां (सब) **योगिनां** (योगियों में) **अपि** (भी) **यः** (जो) **श्रद्धावान्** (श्रद्धावान् {योगी}) **मद्गतेन** (मेरे में लगाई हुई) **अन्तरात्मना** (अन्तरात्मा {अर्थात् मन–बुद्धि} द्वारा) **मां** (मुझको) **भजते** (याद करता है), **सः** (उसे) **मे** (मैं) **युक्ततमः** (सबसे श्रेष्ठ) **मतः** (मानता हूँ)।

अध्याय–7

श्रीभगवानुवाचः– मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ 7/1
मयि आसक्तमनाः पार्थ योगम् युंजन् मदाश्रयः।
असंशयम् समग्रम् माम् यथा ज्ञास्यसि तत् शृणु।।

पार्थ (पृथ्वीश्वर)! **मयि** (मेरे में) **आसक्तमनाः** (आसक्त हुए मन वाला) {और} **मदाश्रयः** (मेरा ही आश्रय लेने वाला), **योगं युंजन्** {मेरे से पिता–पुत्र–सखादि का प्रैक्टिकल} (सम्बंध जोड़ता हुआ) {तू} **मां** (मेरे) **समग्रं** (सम्पूर्ण स्वरूप को) **यथा** (जिस प्रकार) **असंशयं** (संशयरहित) **ज्ञास्यसि** (जान सकेगा), **तत् शृणु** (उसे सुन)।

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ 7/2
ज्ञानम् ते अहम् सविज्ञानम् इदम् वक्ष्यामि अशेषतः।
यत् ज्ञात्वा न इह भूयः अन्यत् ज्ञातव्यम् अवशिष्यते।।

अहं (मैं) **ते** (तुझे) **सविज्ञानं** (अनुभवयुक्त विशेष ज्ञान अर्थात् योग सहित) **इदं ज्ञानं** (इस ज्ञान को) **अशेषतः** (पूरी तरह) **वक्ष्यामि** (कहूँगा), **यत्** (जिसे) **ज्ञात्वा** (जानकर) **भूयः** (पुनः) **इह** (इस {लोक} में) **अन्यत्** {कुछ भी} **ज्ञातव्यं** (जानने योग्य) **न अवशिष्यते** (नहीं रहता)।

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ 7/3
मनुष्याणाम् सहस्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये।
यताम् अपि सिद्धानाम् कश्चित् माम् वेत्ति तत्त्वतः।।

सहस्रेषु (हज़ारों) **मनुष्याणां** (मनुष्यों में) **कश्चित्** (कोई एक) **सिद्धये** (आत्मज्ञान रूपी सिद्धि के लिए) **यतति** (यत्न करता है) {और} **यततां** (यत्न करने वाले) **सिद्धानां** ({अनेक} सिद्धों में) **अपि** (भी) **कश्चित्** (कोई ही) **माम्** (मुझे) **तत्त्वतः** (यथार्थ रीति) **वेत्ति** (जान पाता है)।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ 7/4
भूमिः आपः अनलः वायुः खम् मनः बुद्धिः एव च।
अहंकारः इति इयम् मे भिन्ना प्रकृतिः अष्टधा।।

भूमिः (पृथ्वी), **आपः** (जल), **अनलः** (अग्नि), **वायुः** (हवा), **खं** (आकाश), **मनः** {सदा चलने वाला (मन) रूपी चन्द्रमा}, **बुद्धिः** (जिस दर्शनशक्ति द्वारा जाना या देखा जावे {अर्थात् सूर्य}) **च** (और) **अहंकार** (सृष्टि–नवनिर्माण रूपी यज्ञ कराने वाला मैं स्वयं याजक) **एव** (भी)–**इति** (इस तरह) **इयं** (यह) **मे** (मेरी) **प्रकृतिः** (प्रकृष्ट सृष्टि रूपी कृति या रचना) **अष्टधा** (आठ प्रकार से) **भिन्ना** (विभक्त है)।

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ 7/5

अपरा इयम् इतः तु अन्याम् प्रकृतिम् विद्धि मे पराम्।
जीवभूताम् महाबाहो यया इदम् धार्यते जगत्।।

महाबाहो (हे दीर्घबाहु)! **इयं** (यह {ऊपर कही गई}) **अपरा** (नीची अर्थात् हल्की प्रकृति है); **तु** (किंतु) **इतः** (इससे) **अन्यां** (अतिरिक्त) **मे** (मेरी) **जीवभूतां** ({अष्टदेव} रूपी जीवंत) **प्रकृतिं** (प्रकृष्ट रचना को) **परां विद्धि** ({तू} श्रेष्ठ जान), **यया** (जिस {अष्टदेव रूपी चैतन्य प्रकृति} के द्वारा) **इदं** (यह) **जगत् धार्यते** (जगत् धारण किया जाता है)। **{शिव की अष्टमूर्तियाँ}**

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ 7/6

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणि इति उपधारय। अहम् कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयः तथा।।

सर्वाणि भूतानि (सब प्राणी) **एतद्योनीनि** (इस दो प्रकार की प्रकृति से ही जन्मे हैं), **इति** (ऐसा) **उपधारय** ({तू} जान ले) {और} **अहं** (मैं) **कृत्स्नस्य** (समस्त) **जगतः** (जगत् का) **प्रभवः** (उत्पत्तिकर्ता) **तथा प्रलयः** (और विनाशकर्ता हूँ)।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ 7/7

मत्तः परतरम् न अन्यत् किंचित् अस्ति धनंजय।
मयि सर्वम् इदम् प्रोतम् सूत्रे मणिगणा इव।।

धनंजय (हे ज्ञानधनजेता अर्जुन)! **मत्तः** (मेरे से) **परतरं** (श्रेष्ठतर) **किंचित्** (कुछ भी) **अन्यत् न अस्ति** (अन्य नहीं है)। **सूत्रे** (धागे में) {पिरोए गए} **मणिगणाः** (मणकों की) **इव** (तरह) **इदम्** (यह) **सर्वं** (सारा {जगत्}) **मयि** (मेरी {याद रूपी प्रीति के धागे} में) **प्रोतम्** (पिरोया हुआ है)। {परमपिता परमात्मा की नं०वार योग रूपी शक्ति ही सारे जड़ जंगम जगत का आधार है।}

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ 7/8

रसः अहम् अप्सु कौन्तेय प्रभा अस्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषम् नृषु।।

कौन्तेय (हे कुंतीपुत्र अर्जुन)! {ज्योतिर्बिंदु शिव की यौगिक शक्तिस्वरूप से} **अप्सु** (जल में) **रसः** (रस) **अहं** (मैं) {हूँ}, **शशिसूर्ययोः** (चन्द्र–सूर्य की) **प्रभा** (कान्ति) **अस्मि** (मैं हूँ), **सर्ववेदेषु** (सब वेदों में) **प्रणवः** (ऊँकार), **खे** (आकाश में) **शब्दः** (शब्द) {और} **नृषु** (पुरुषों में) **पौरुषम्** (पुरुषत्व {रूपी शक्ति}) {भी मैं हूँ}।

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ 7/9

पुण्यः गन्धः पृथिव्याम् च तेजः च अस्मि विभावसौ।
जीवनम् सर्वभूतेषु तपः च अस्मि तपस्विषु।।

पृथिव्यां (पृथ्वी में) **पुण्यः गन्धः** (निर्विकारी सुगन्ध) **च** (और) **विभावसौ** (अग्नि में) **तेजः अस्मि** (तेज {मैं} हूँ) **च** (तथा) **सर्वभूतेषु** (प्राणी मात्र में) **जीवनं** (जीवनशक्ति {अर्थात् आयुष्य}) **च** (और) **तपस्विषु** (तपस्वियों में) **तपः** (तपशक्ति) {भी} **अस्मि** (मैं हूँ)।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ 7/10
बीजम् माम् सर्वभूतानाम् विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिः बुद्धिमताम् अस्मि तेजः तेजस्विनाम् अहम्।।

पार्थ (हे पृथ्वीश्वर)! **सर्वभूतानां** (सब प्राणियों का) **सनातनं** (सनातन) **बीजं** (ज्योतिर्बिन्दु परमपिता रूपी बीज) **मां** (मुझको) **विद्धि** (जान)। **बुद्धिमतां** (बुद्धिमानों की) **बुद्धिः** (बुद्धि) **अस्मि** (मैं हूँ), **तेजस्विनां** (तेजस्वी पुरुषों का) **तेजः** (तेज) **अहं** (मैं हूँ)।

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ 7/11
बलम् बलवताम् च अहम् कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धः भूतेषु कामः अस्मि भरतर्षभ।।

अहं (मैं) {ज्योतिर्बिन्दु शिव} **बलवतां** (बलवानों का) **कामरागविवर्जितं** (काम और राग रहित {शुद्ध}) **बलं** (बल हूँ) **च** (और) **भरतर्षभ** (हे भरतवंश में श्रेष्ठ)! **भूतेषु** (प्राणियों में) **धर्माविरुद्धः** (धर्म के अनुकूल) **कामः** (स्त्री–संग की निर्विकारी कामना) {भी} **अस्मि** (मैं हूँ)।

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ 7/12
ये च एव सात्त्विका भावा राजसाः तामसाः च ये।
मत्त एव इति तान् विद्धि न तु अहम् तेषु ते मयि।।

च (और) **एव** (भी) **ये** (जो) {क्रमशः} **सात्त्विकाः** (सात्विक), **राजसाः** (राजसी) **च** (और) **तामसाः** (तामसी) **भावाः** (भाव–{संकल्प–विकल्पादि} हैं), **तान्** (उनको) {सतयुग से कलियुग तक के पतनोन्मुखी कालक्रम में} **मत्तः** (मेरे मानवीय सृष्टि के बीजरूप से) **एव** (ही) {उत्पन्न हुआ} **इति** (ऐसा) **विद्धि** (जान)। **अहं** (मैं) **तेषु** (उनमें) **न** (नहीं हूँ); **तु** (किन्तु) **ते** (वे) {भाव अपने मूल शुद्ध स्वरूप में} **मयि** (मेरे {साकार मनुष्य–सृष्टि के बीज प्रजापिता} में {हैं})।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥ 7/13
त्रिभिः गुणमयैः भावैः एभिः सर्वम् इदम् जगत्।
मोहितम् न अभिजानाति माम् एभ्यः परम् अव्ययम्।।

एभिः (इन {सत–रज–तम}) **त्रिभिः** (तीन) **गुणमयैः** (गुणों से युक्त) **भावैः** (भावों द्वारा) **मोहितं** (मोहित हुआ) **इदं** (यह) **सर्वं जगत्** (सारा जगत्), **एभ्यः** (इन {गुणों} से) **परं** (परे) **मां** (मुझ) **अव्ययं** (अविनाशी {साकार में निराकार ज्योतिर्बिंदु शिव पार्टधारी} को) **न अभिजानाति** (नहीं जानता)।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ 7/14
दैवी हि एषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। माम् एव ये प्रपद्यन्ते मायाम् एताम् तरन्ति ते।।

मम (मेरी) **एषा** (यह) **दैवी गुणमयी** (दैवी {अलौकिक} गुणमयी) **माया** (माया) **हि दुरत्यया** (निश्चय ही कठिनाई से पार करने योग्य है)। **ये** (जो) **मां** (मेरी) **एव** (ही) **प्रपद्यन्ते** (शरण लेते हैं), **ते** (वे) **एतां** (इस {दैवी}) **मायां** (माया को) **तरन्ति** (पार कर पाते हैं)। **{दैवी माया}**

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥ 7/15
न माम् दुष्कृतिनः मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
मायया अपहृतज्ञानाः आसुरम् भावम् आश्रिताः।।

{किंतु आसुरी} **मायया** (माया द्वारा) **अपहृतज्ञानाः** (जिनका ज्ञान हर लिया गया है, {ऐसे}) **आसुरं** (आसुरी) **भावमाश्रिताः** (स्वभाव वाले) **दुष्कृतिनो** (पापी), **नराधमाः** (मनुष्यों में नीच), **मूढाः** (मूर्ख लोग) **मां** (मेरी) **न प्रपद्यन्ते** (शरण में नहीं आते)। **{आसुरी माया}**

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ 7/16

चतुर्विधा भजन्ते माम् जनाः सुकृतिनः अर्जुन। आर्तः जिज्ञासुः अर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।।

भरतर्षभ अर्जुन (हे भरतवंश में श्रेष्ठ अर्जुन)! **चतुर्विधाः** (चार प्रकार के) **सुकृतिनः** (पुण्य कर्म वाले {ब्राह्मण}) **जनाः** (जन) **मां** (मेरी) **भजन्ते** (याद करते हैं)–**आर्तः** (विपत्तिग्रस्त, दुःखी या परेशान), **जिज्ञासुः** ({कौतूहलवश कुछ} जानने की इच्छा वाले), **अर्थार्थी** (धन–वैभव की चाहना वाले) **च** (और) **ज्ञानी** (ज्ञानी)–{सब कुछ जानने–समझने का उद्यमी}। {गीता पण्डा/ब्रह्मा पुत्र ब्राह्मणों को ही सुनाई गई है। पुण्यकर्मी पांडव/ब्राह्मण ही भगवान को भजते हैं, असुर नहीं।}

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ 7/17

तेषाम् ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिः विशिष्यते।
प्रियः हि ज्ञानिनः अत्यर्थम् अहम् स च मम प्रियः।।

तेषां (उनमें) **एकभक्तिः** (एक की अव्यभिचारी याद वाला) **नित्ययुक्तः** (सदा योगी) **ज्ञानी** (ज्ञानी जन) **विशिष्यते** (विशेष श्रेष्ठ है); **हि** (क्योंकि) **ज्ञानिनः** (ज्ञानी को) **अहं** (मैं) **प्रियः** (प्रिय हूँ) **च** (और) **सः** (वह) **मम** (मुझको) **अत्यर्थं** (अत्यन्त) **प्रियः** (प्रिय है)। **{ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है।}**

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥ 7/18

उदाराः सर्व एव एते ज्ञानी तु आत्मा एव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा माम् एव अनुत्तमाम् गतिम्।।

{यों तो} **एते** (ये) {चारों} **एव** (ही) **उदाराः** (अच्छे हैं); **तु** (किन्तु) **ज्ञानी** (ज्ञानी) {तो मेरी} **आत्मा** (आत्मा अर्थात् स्वरूप) **एव** (ही है)–{ऐसा} **मे मतं** (मेरा मत है); **हि** (क्योंकि) **सः** (वह) **युक्तात्मा** (योगयुक्त पुरुष) **मां** (मुझ) **अनुत्तमां** (सर्वश्रेष्ठ) **गतिं** (गति का) **एव** (ही) **आस्थितः** (आधार लेता है), {अन्य किसी देहधारी या ब्राह्मण परिवार का आधार नहीं लेता}।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ 7/19

बहूनाम् जन्मनाम् अन्ते ज्ञानवान् माम् प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वम् इति स महात्मा सुदुर्लभः।।

ज्ञानवान् (ज्ञानी तू आत्मा) **बहूनां** (बहुत {अर्थात् 84}) **जन्मनां** (जन्मों के) **अन्ते** (अन्त में) **मां** (मुझको) **प्रपद्यते** (प्राप्त होता है)। **सर्वं** (सारा {जगत}) **वासुदेवः** (ज्ञान धन–सम्पत्ति देने वाले वसुदेव शिवबाबा की रचना है), **इति** (ऐसा {मानने वाला}) **स** (वह) **महात्मा** (महान् आत्मा) **सुदुर्लभः** (बड़ी कठिनाई से मिलता है)।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ 7/20

कामैः तैः तैः हृतज्ञानाः प्रपद्यन्ते अन्यदेवताः।
तम् तम् नियमम् आस्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।।

तैः तैः (उन–2) {विशेष} **कामैः** (कामनाओं द्वारा) **हृतज्ञानाः** (विवेकरहित {अर्थात् मोहित हुए लोग}), **तं तं** (उस–2) {कनवर्टिड देवता के} **नियमं** (नियम–{सिद्धान्त} का) **आस्थाय** (आधार लेकर), **स्वया** (अपने) {अनादि

निश्चित} **प्रकृत्या** (स्वभाव से) **नियताः** (बँधे हुए) **अन्यदेवताः** (दूसरे {ब्राह्मण} देवों की) **प्रपद्यन्ते** (शरण में जाते हैं)।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥ 7/21
यः यः याम् याम् तनुम् भक्तः श्रद्धया अर्चितुम् इच्छति।
तस्य तस्य अचलाम् श्रद्धाम् ताम् एव विदधामि अहम्।।

यः यः भक्तः (जो–2 व्यक्ति) **यां यां** (जिस–2) **तनुं** (देवता के {साकार} स्वरूप को) **श्रद्धया** (श्रद्धापूर्वक) **अर्चितुं** (पूजने वा याद करने के लिए) **इच्छति** (इच्छा करता है), **तस्य–तस्य** (उस–2 भक्त की) **तामेव** (उसी) **अचलां** (दृढ़) **श्रद्धां** (श्रद्धा को) **अहं** (मैं) **विदधामि** (निश्चित करता हूँ)।

• जो जिस धर्म का है वह उसी (धर्मपिता) की बात मानेगा। (मु.ता.....)

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥ 7/22
स तया श्रद्धया युक्तः तस्य आराधनम् ईहते।
लभते च ततः कामान् मया एव विहितान् हि तान्।।

तया {मेरे द्वारा निश्चित की हुई} (उस) **श्रद्धया** (श्रद्धा से) **युक्तः** (लगा हुआ) **सः** (वह {व्यक्ति}) **तस्य** (उस {देवता} की) **आराधनं** (प्रसन्नता को) **ईहते** (चाहता है) **च** (और) **ततः** (उस {देवता} से) **मया** (मेरे द्वारा) **एव** (ही) **विहितान्** (बनाए गए) **तान्** (उन) **कामान्** (कामनाओं को) **हि** (निःसन्देह) **लभते** (पाता है)।

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ 7/23
अन्तवत् तु फलम् तेषाम् तत् भवति अल्पमेधसाम्।
देवान् देवयजः यान्ति मद्भक्ता यान्ति माम् अपि।।

तेषां (उन) **अल्पमेधसां** (अल्पबुद्धि वाले, बेसमझ लोगों का) **तु** (तो) **तत्** (वह) **फलं** (फल) **अन्तवत्** (विनाशी) **भवति** (होता है); {क्योंकि} **देवयजः** ({अन्यान्य ब्राह्मण}–देवों के प्रति त्याग करने वाले) **देवान्** {कम कलाओं वाले कनवर्टिड} (देवताओं को) **यान्ति** (पाते हैं) {और} **मद्भक्ताः** (मुझे भजने वाले) **मां** (मेरे {16 कला सम्पूर्ण पद} को) {अर्थात् अर्धनारीश्वर शिव के भगवान–भगवती स्वरूप को} **अपि** (ही) **यान्ति** (पाते हैं)।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ 7/24
अव्यक्तम् व्यक्तिम् आपन्नम् मन्यन्ते माम् अबुद्धयः।
परम् भावम् अजानन्तः मम अव्ययम् अनुत्तमम्।।

अबुद्धयः (बेसमझ लोग) **मां** (मुझ) **अव्यक्तं** (अव्यक्त {ज्योतिर्बिंदु स्वरूप निराकार शिव} को) **व्यक्तिं** (व्यक्त देहधारी ब्रह्मा के रूप में) **आपन्नं** (आया हुआ) **मन्यन्ते** (मानते हैं) {और} **मम** (मेरे) **अनुत्तमं** (सर्वश्रेष्ठ) **अव्ययं** {84 जन्मों में भी} (अविनाशी) **परं भावं** (परम ज्योतिर्बिन्दु प्रैक्टिकल स्वरूप शिव–शंकर को) **अजानन्तः** (नहीं जान पाते)।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥ 7/25
न अहम् प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढः अयम् न अभिजानाति लोकः माम् अजम् अव्ययम्।।

योगमायासमावृतः (योगमाया से ढका हुआ) **अहं** (मैं) **सर्वस्य** (सबके लिए) **प्रकाशः** (प्रकट) **न** (नहीं हूँ)। **अयं** (यह) **मूढः** (मूढ़) **लोको** (जगत) **मां** (मुझ) **अजं** {गर्भ से} (अजन्मा), **अव्ययं** (अविनाशी पार्टधारी को) **न अभिजानाति** (नहीं जान पाता)।

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ 7/26
वेद अहम् समतीतानि वर्तमानानि च अर्जुन।
भविष्याणि च भूतानि माम् तु वेद न कश्चन।।

अर्जुन (हे अर्जुन)! **अहं** {अजन्मा होने से त्रिकालदर्शी} (मैं) {शिव} **समतीतानि** (भूतकालीन) **च** (और) **वर्तमानानि** (वर्तमानकालीन) **च** (तथा) **भविष्याणि** (भविष्य में होने वाले) **भूतानि** (प्राणियों को) **वेद** (जानता हूँ); **तु** (किन्तु) **मां** (मुझ {अव्यक्त ज्योतिर्बिंदु शिव} को) **कश्चन** (कोई) **न वेद** (नहीं जानता)।

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥ 7/27
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि सम्मोहम् सर्गे यान्ति परंतप।।

परंतप (हे कामादिक शत्रुओं को पीड़ित करने वाले)! **भारत** (हे भरतवंशी)! **इच्छाद्वेषसमुत्थेन** (इच्छा और द्वेष से उत्पन्न हुए) **द्वन्द्वमोहेन** (सुख–दुःख आदि द्वन्द्वों के मोह से) **सर्वभूतानि** (सब प्राणी) **सर्गे** (कल्पान्त काल में) **संमोहं** (सम्पूर्ण मूढ़ता को) **यान्ति** (पहुँच जाते हैं) {अर्थात् चतुर्युगांत कालीन तामसी कलियुग के अन्त में सब तमोप्रधान हो जाते हैं}।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ 7/28
येषाम् तु अन्तगतम् पापम् जनानाम् पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते माम् दृढव्रताः।।

तु (परंतु) **येषां** (जिन) **पुण्यकर्मणां** {ईश्वरीय सेवा का} (पुण्य कर्म करने वाले) **जनानां** ({ब्राह्मण} जनों का) **पापं** (पाप) **अन्तगतं** (नष्ट हो गया है), **ते** (वे) **द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः** (सुख–दुःखादि द्वन्द्वों के मोह से मुक्त हुए) **दृढव्रताः** (दृढ़व्रत वाले) **माम् भजन्ते** (मुझको भजते हैं)।

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ 7/29
जरामरणमोक्षाय माम् आश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तत् विदुः कृत्स्नम् अध्यात्मम् कर्म च अखिलम्।।

ये (जो) **जरामरणमोक्षाय** (बुढ़ापा और मृत्यु {के दुःख} से मुक्त होने के लिए) **मां** (मेरा) **आश्रित्य** (आधार लेकर) **यतन्ति** (पुरुषार्थ करते हैं), **ते** (वे) **तत्** (उस) **ब्रह्म** (ब्रह्म को), **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **अध्यात्मं** (आध्यात्म {ज्ञान} को) **च** (और) **अखिलं** (समस्त) **कर्म** (कर्म को) **विदुः** (जानते हैं)।

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥ 7/30
साधिभूताधिदैवम् माम् साधियज्ञम् च ये विदुः।
प्रयाणकाले अपि च माम् ते विदुः युक्तचेतसः।।

ये (जो {ब्राह्मण}) **मां** (मुझे) **साधिभूताधिदैवं** (प्राणियों और देवताओं के अधिष्ठाता सहित) **च** (और) **साधियज्ञं** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ के अधिपति {प्रजापिता ब्रह्मा} सहित) **विदुः** (जानते हैं), **ते** (वे) **युक्तचेतसः** (योगयुक्त मन–बुद्धि वाले) **अपि** (भी) **प्रयाणकाले** ({कल्पान्त में}, ब्रह्मलोक जाने के समय) **मां** (मुझको) **च** (ही) **विदुः** (जान जाते हैं)।

अध्याय–8

अर्जुन उवाचः– किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ 8/1
किम् तत् ब्रह्म किम् अध्यात्मम् किम् कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतम् च किम् प्रोक्तम् अधिदैवम् किम् उच्यते।।

पुरुषोत्तम (हे आत्माओं में उत्तम–परमपिता शिव)! **तत्** (वह) **ब्रह्म** (ब्रह्म) **किम्** (क्या है)? **अध्यात्मं** (अध्यात्म) **किम्** (क्या है)? **कर्म किम्** (कर्म क्या है)? **अधिभूतं किम्** (अधिभूत किसको) **प्रोक्तं** (कहते हैं)? **च** (और) **अधिदैवं किं** (अधिदैव किसे) **उच्यते** (कहा जाता है)?

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥ 8/2
अधियज्ञः कथम् कः अत्र देहे अस्मिन् मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथम् ज्ञेयः असि नियतात्मभिः।।

मधुसूदन (हे मधु रूपी कामविकार को नाश करने वाले शिवपिता)! **अत्र** (इस) **देहे** (देह में) **अधियज्ञः** (यज्ञ का अधिष्ठाता) **कथं** (कैसे) {और} **कः** (कौन है?) **च** (और) **प्रयाणकाले** {कल्पान्त में} (महामृत्यु के समय) **नियतात्मभिः** (वशीभूत मन–बुद्धि वालों द्वारा) **अस्मिन्** (इस {शरीर} में) **कथं** (कैसे) **ज्ञेयः** (जानने योग्य) **असि** (है)?

श्रीभगवानुवाचः– अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः ॥ 8/3
अक्षरम् ब्रह्म परमम् स्वभावः अध्यात्मम् उच्यते। भूतभावोद्भवकरः विसर्गः कर्मसंज्ञितः।।

अक्षरं (अविनाशी) **परमं** (परमधाम) **ब्रह्म** (ब्रह्म {तत्व} है)। **स्वभावः** (आत्मभाव) **अध्यात्मं** (अध्यात्म) **उच्यते** (कहा जाता है)। **भूतभावोद्भवकरः** {सतोगुणी} (प्राणियों की उत्पत्ति करने वाला) **विसर्गः** (त्याग {अर्थात् यज्ञ–सेवा}) **कर्मसंज्ञितः** (कर्म कहा जाता है)।

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥ 8/4
अधिभूतम् क्षरः भावः पुरुषः च अधिदैवतम्। अधियज्ञः अहम् एव अत्र देहे देहभृताम् वर।।

देहभृतां वर (हे देहधारियों में श्रेष्ठ) {प्रजापिता ब्रह्मा रूपी अर्जुन}! **क्षरो** (नाशवान या पतनशील) **भावः** (भाव) **अधिभूतं** (अधिभूत {भूतों का अधिष्ठाता ब्रह्मा} है) **च** (और) **पुरुषः** (शरीर रूपी पुरी में आराम से शयन अर्थात् शांति प्राप्त करने वाली आत्मा) **अधिदैवतम्** (अधिदैव {रूपी परम पुरुष विष्णु} है)। **अत्र** (इस) {संगमयुगी प्रथम ब्राह्मण के} **देहे** (शरीर में) **अधियज्ञो** (त्याग रूपी यज्ञ सेवा का अधिपति–{परमपिता शिव}) **अहं** (मैं) **एव** (ही हूँ)।

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ 8/5
अन्तकाले च माम् एव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावम् याति न अस्ति अत्र संशयः।।

यः (जो) **अन्तकाले** (कल्पान्तकाल में) **च** (भी) **मां** (मुझ {शिव–शंकर} को) **एव** (ही) **स्मरन्** (याद करता हुआ) **कलेवरं** (शरीर को) **मुक्त्वा** (छोड़कर) **प्रयाति** (प्रबल रूहानी यात्रा करता है), **सः** (वह {योगी}) **मद्भावं** (मेरे {ईशत्व अर्थात् विश्वनाथ के} भाव को) **याति** (पाता है)। **अत्र** (इस {विषय} में) **संशयः** (संदेह) **न अस्ति** (नहीं है)।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ 8/6

यम् यम् वा अपि स्मरन् भावम् त्यजति अन्ते कलेवरम्।
तम् तम् एव एति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **वा** (अथवा) **यं यं** (जिस–2) **भावं** (भाव को) **अपि** (भी) **स्मरन्** (स्मरण करता हुआ), **अन्ते** (अन्तकाल में) **कलेवरं** (शरीर को) **त्यजति** (त्यागता है), **सदा** (सदैव) **तद्भावभावितः** (उसी भावना से युक्त हुआ) **तं तं** (उस–2 {भाव} को) **एव** (ही) **एति** (पाता है);

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ 8/7

तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च।
मयि अर्पितमनोबुद्धिः माम् एव एष्यसि असंशयम्।।

तस्मात् (इसलिए) **सर्वेषु कालेषु** (हर समय) **मां** (मुझे) **अनुस्मर** (याद कर) **च** (और) **युध्य** {स्व काम विकार रूपी माया से} (युद्ध कर)। **असंशयं** (निस्सन्देह) **मयि** (मुझमें) **अर्पितमनोबुद्धिः** (मन–बुद्धि से अर्पित हुआ) {तू} **मां*** (मेरे {ईशत्व अर्थात् शासकीय भाव} को) **एव** (ही) **एष्यसि** (पाएगा)। **{लक्ष्य}** *राजयोग का अर्थ ही है राजाई पद पाना।

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥ 8/8

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमम् पुरुषम् दिव्यम् याति पार्थ अनुचिन्तयन्।।

पार्थ (हे पृथ्वी के शासनकर्ता)! **अभ्यासयोगयुक्तेन** (अभ्यास द्वारा योगयुक्त हुई) **नान्यगामिना** (अव्यभिचारी) **चेतसा** (मन–बुद्धि से) **अनुचिन्तयन्** (विचार–सागर–मन्थन करता हुआ) {ब्राह्मण} **दिव्यं** (प्रकाशित) **परमं पुरुषं** (परम पुरुष–{परमपिता शिव} को) **याति** (पाता है)।

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ 8/9
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ 8/10

कविम् पुराणम् अनुशासितारम् अणोः अणीयांसम् अनुस्मरेत् यः।
सर्वस्य धातारम् अचिन्त्यरूपम् आदित्यवर्णम् तमसः परस्तात्।।
प्रयाणकाले मनसा अचलेन भक्त्या युक्तः योगबलेन च एव।
भ्रुवोः मध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक् स तम् परम् पुरुषम् उपैति दिव्यम्।।

यः (जो {योगी}) **कविं** (कवि) **पुराणं** (पुरातन), **अनुशासितारं** (सबके शासक), **अणोः** (सूक्ष्म अणु से) {भी} **अणीयांसं** (अति सूक्ष्म), **सर्वस्य धातारं** (सबको धारण करने वाले), **अचिन्त्यरूपं** (अचिंत्य रूप वाले), **आदित्यवर्णं** (सूर्य की तरह प्रकाशित), **तमसः** (अंधकार से) **परस्तात्** (परे) {ज्योतिर्लिंग शिव को} **प्रयाणकाले** ({कल्पान्तकालीन} महामृत्यु के समय) **अचलेन** (अडोल) **मनसा** (मन से), **भक्त्या** (भक्ति भाव से) {और} **योगबलेन** (योगबल से) **युक्तः** (लगा हुआ) **भ्रुवोः** (भ्रकुटि के) **मध्ये** (बीच में) **एव** (ही) ***प्राणं** ({मन–बुद्धि रूपी} आत्मा को) **सम्यक्** (भली प्रकार) **आवेश्य** (स्थापित करके) **अनुस्मरेत्** (स्मरण करता है), **सः** (वह {योगी}) **तं** (उस) **दिव्यं** (प्रकाशित) **परं पुरुषं** (परम पुरुष परमात्मा {शिव–शंकर} को) **उपैति** (पाता है)। *प्राणिति जीवात्मनेन–मन–बुद्धि रूपी शक्ति।

यदक्षरं वेदविदो वदन्तिविशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ 8/11

यत् अक्षरम् वेदविदः वदन्ति विशन्ति यत् यतयः वीतरागाः।
यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यम् चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण प्रवक्ष्ये।।

वेदविदः ({ब्रह्मवाक्यस्वरूप} वेद {मुरली} को जानने वाले) **यत्** (जिसे) **अक्षरं** (अविनाशी) **वदन्ति** (बताते हैं), **वीतरागाः** (आसक्ति रहित) **यतयः** (योगीजन) **यत्** (जिसमें) **विशन्ति** (प्रवेश करते हैं) {अर्थात् मन्मनाभव} {और} **यत्** (जिसकी) **इच्छन्तः** (इच्छा करने वाले) **ब्रह्मचर्यं** (ब्रह्मचर्य {व्रत} का) **चरन्ति** (आचरण करते हैं), **तत्** (उस) **पदं** {विष्णु रूप} (परम पद को) **संग्रहेण** (संक्षेप में) **ते** (तुझे) **प्रवक्ष्ये** (बताऊँगा)।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ 8/12
सर्वद्वाराणि संयम्य मनः हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्नि आधाय आत्मनः प्राणम् आस्थितः योगधारणाम्।।

सर्वद्वाराणि (सब इन्द्रियों के नौ द्वारों को) **संयम्य** (सम्पूर्ण नियमित करके) **च** (और) **मनः** (संकल्पशक्ति को) **हृदि** (अन्तःकरण में) **निरुध्य** (रोककर), **आत्मनः** (आत्मा की) **प्राणं** (शक्ति को) **मूर्ध्नि** (भृकुटि के मध्य में) **आधाय** (रोककर), **योगधारणां** (योग की धारणा में) **आस्थितः** (स्थिर हुआ)।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ 8/13
ओम इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहम् स याति परमाम् गतिम्।।

ॐ ('ॐ') **इति** (इस प्रकार) {आदि, मध्य और अंत सूचक अर्थात् आत्म–अर्थक} **एकाक्षरं** (एक अक्षर को) **व्याहरन्** {मन में} (उच्चारण करके) **मां ब्रह्म** (मुझ सत्य {स्वरूप परमेश्वर शिव–शंकर} का) ✷**अनुस्मरन्** (स्मरण करता हुआ) **देहं** (शरीर को) **त्यजन्** (त्यागकर) **यः** (जो {पुरुष}) **प्रयाति** {कल्पान्तकालीन} (अन्तिम यात्रा करता है), **सः** (वह) **परमां गतिं** ({विष्णु रूप} परम गति को) **याति** (पाता है)। ✷ अंतकाल में भष्कुटि–मध्य अणु रूप आत्मा को याद करना है।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥ 8/14
अनन्यचेताः सततम् यः माम् स्मरति नित्यशः।
तस्य अहम् सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।

अनन्यचेताः (अनन्यचित्त वाला) **यः** (जो {व्यक्ति}) **मां** (मुझको) **नित्यशः** (नित्य)–✷**सततं** (निरन्तर) **स्मरति** (स्मरण करता है), **पार्थ** (हे अर्जुन)! **नित्ययुक्तस्य** (नित्यलगनशील) **तस्य** (उस) **योगिनः** (योगी को) **अहं** (मैं) **सुलभः** (सुख से मिल जाता हूँ)। ✷श्वासों–श्वास मुझे याद करना है।

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ 8/15
माम् उपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयम् अशाश्वतम्।
न आप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिम् परमाम् गताः।।

मां (मुझ परमधामवासी के) **उपेत्य** (पास पहुँचकर) **परमां** ({विष्णु रूप} परम) **संसिद्धिं** (सिद्धि {अर्थात् ल०ना० रूपी लक्ष्य} को) **गताः** (पहुँचे हुए) **महात्मानः** (महात्माजन) **अशाश्वतं** (नाशवान) **दुःखालयम्** ({कलियुगी} दुःखों के घर {स्वरूप}) **पुनर्जन्म** (पुनर्जन्म को) **न आप्नुवन्ति** (नहीं प्राप्त करते) {अर्थात् वे स्वर्णिम संगमयुगी बैकुण्ठ स्वरूप सतयुग में शाश्वत्–सुख को ही पाते हैं}।

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ 8/16
आब्रह्मभुवनात् लोकाः पुनरावर्तिनः अर्जुन। माम् उपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।।

अर्जुन (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले)! {यद्यपि} **आब्रह्ममुवनात्** (ब्रह्मलोक से लेकर) **लोकाः** (सभी लोक) **पुनरावर्तिनः** (पुनः पुनः आवर्तन करने वाले हैं); **तु** (किन्तु) **कौन्तेय** (हे कुन्ती पुत्र)! **माम्** (मेरे) **उपेत्य** (पास पहुँच कर) {इस दुःखी लोक में} **पुनर्जन्म*** (फिर से जन्म) **न विद्यते** (नहीं होता)। *****मेरे घर ब्रह्मलोक में पहुँचने की बात है।

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ 8/17
सहस्रयुगपर्यन्तम् {द्विसहस्रार्धवर्षाणां} अहः यत् ब्रह्मणः विदुः।
रात्रिम् युगसहस्रान्ताम् {प्रमाणमेतेषां} ते अहोरात्रविदः जनाः।।

ब्रह्मणः (ब्रह्मा के) **द्विसहस्रार्धवर्षाणां** (ढाई हज़ार वर्ष के) **अहः** ({सतयुग–त्रेतायुग रूपी} दिन को) {तथा} **एतेषां** (इतने ही वर्ष) **प्रमाणं** (प्रमाण की) **रात्रिं** ({द्वापर–कलियुग रूपी अज्ञान}–रात्रि को) **यत्** (जो) **विदुः** (जानते हैं), **ते** (वे) **अहोरात्रविदः** (ब्रह्मा के ज्ञानप्रकाश रूपी दिन और अज्ञानान्धकार रूपी रात्रि को जानने वाले) **जनाः** (मनुष्य हैं)।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके ॥ 8/18
अव्यक्तात् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति अहरागमे।
रात्र्यागमे {रात्र्यान्ते} प्रलीयन्ते तत्र एव अव्यक्तसंज्ञके।।

अहरागमे {ब्रह्मा का सतयुग–त्रेता रूपी स्वर्गीय} (दिन आने पर) **अव्यक्तात्** (अव्यक्त परमधाम से) **सर्वाः व्यक्तयः** (सभी व्यक्त प्राणी) **प्रभवन्ति** {नं०वार} (उत्पन्न होते हैं) {और} **रात्र्यान्ते** {ब्रह्मा की द्वापर–कलियुग रूपिणी} (रात्रि के अन्त में) **अव्यक्तसंज्ञके** (अव्यक्त संज्ञा वाली ज्योतिर्बिन्दु आत्माएँ) **तत्र** (उस {परमधाम} में) **एव** (ही) **प्रलीयन्ते** (भली प्रकार एकाग्र अर्थात् मूल स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाती हैं)। **ଓ३** प्र+लीयते। लीन=ली+क्त=एकाग्र, अर्थात् मूल स्वरूप से प्रतिष्ठित होना।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ 8/19
भूतग्रामः स एव अयम् भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमे {रात्र्यान्ते} अवशः पार्थ प्रभवति अहरागमे।।

सः (वह) **एव** (ही) **अयं** (यह) **भूतग्रामः** (प्राणियों का समूह) **भूत्वा भूत्वा** (बार–2 जन्म लेकर) **रात्र्यान्ते** {ब्रह्मा की द्वापर–कलियुगी अज्ञान} (रात्रि के अन्त में) **अवशः** {अनादि निश्चित विश्व नाटक के पराधीन} (विवश हुआ) **प्रलीयते** (भली–भाँति मूल अव्यक्त स्वरूप में एकाग्र हो जाता है)। {और} **पार्थ** (हे अर्जुन)! **अहरागमे** {ब्रह्मा का सतयुग रूपी} (दिन आने पर) **प्रभवति** {नं०वार} (प्रगट हो जाता है)।

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ 8/20
परः तस्मात् तु भावः अन्यः अव्यक्तः अव्यक्तात् सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।।

तस्मात् (उस) **अव्यक्तात्** (अव्यक्त {भूतग्राम} से) **तु** (भी) **परः** (बढ़कर) **यः** (जो) **अव्यक्तः** (अप्रगट) {और} **सनातनः** (नित्य), **अन्यः** (दूसरा) **भावः** (भाव) {अर्थात् बीज–रूप आत्मभाव है}, **सः** (वह) **सर्वेषु भूतेषु** (सब प्राणियों में) **नश्यत्सु** {व्यक्त स्वरूप के} (नष्ट होने पर) {भी} **न विनश्यति** (नष्ट नहीं होता)।

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ 8/21
अव्यक्तः अक्षरः इति उक्तः तम् आहुः परमाम् गतिम्।
यम् प्राप्य न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम।।

अव्यक्तः (अप्रगट) {विष्णुलोक} **अक्षर** (अविनाशी) **इत्युक्तः** (ऐसे कहा जाता है), **तं** (उसको) **परमां गतिं** (परम गति) **आहुः** (कहते हैं)। **यं** (जिसको) **प्राप्य** (पाकर) **न निवर्तन्ते** {प्राणी इस दुःखी संसार में} (नहीं लौटते), **तत्** (वह) **मम** (मेरा) **परमं धाम** (परमधाम है)।

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ 8/22
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यः तु अनन्यया।
यस्य अन्तःस्थानि भूतानि येन सर्वम् इदम् ततम्।।

❤**पार्थ** (हे पृथ्वी के राजा)! **सः** (वह) **परः पुरुषः** (परम+आत्मा) **तु** (तो) **अनन्यया** (अव्यभिचारी) **भक्त्या** (याद द्वारा) **लभ्यः** (पाने योग्य है)। **यस्य** (जिस {मनुष्य–सृष्टि के बीज आदिदेव} के) **अन्तःस्थानि भूतानि** (अंदर सब प्राणी स्थित हैं) {और} **येन** (जिससे) **इदं सर्वं** (यह सारा) {जगत् बीज से वृक्ष की तरह} **ततम्** ✖ (विस्तृत हुआ है)। ❤**पार्थ** (पृथोः पृथिव्याः ईश्वरः अण्) पृथ्वी का राजा। ✖**ततम्** (तन्+क्त) विस्तृत अर्थात् विस्तार को पाया हुआ।

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥ 8/23
यत्र काले तु अनावृत्तिम् आवृत्तिम् च एव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तम् कालम् वक्ष्यामि भरतर्षभ।।

भरतर्षभ (हे भरतवंश में श्रेष्ठ)! **यत्र काले** (जिस {कल्पान्त} काल में) **प्रयाताः** (परमधाम की सर्वोत्तम यात्रा करने वाले) **योगिनः** (योगी जन) {इस दुःखी संसार में} **अनावृत्तिं** (नहीं आते) **च** (अथवा) **आवृत्तिं** (आवर्तन रूप स्थिति को) **यान्ति** (पाते {भी} हैं), **तं** (उस) **कालं** (काल को) **वक्ष्यामि** ({मैं तुझे} बताऊँगा)।

{पुरुषोत्तम संगमयुगी वर्णन}

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ 8/24
अग्निः ज्योतिः अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदः जनाः।।

अग्निः (अग्नि रूप शिव की) **ज्योतिः** (ज्ञान सूर्य स्वरूप ज्योति), **अहः** (दिवस), **शुक्लः** (शुक्ल पक्ष), **उत्तरायणं** (उत्तरायण के) **षण्मासाः** (छः महीने)–{यह प्रकाशयुक्त ज्ञान मार्ग है}–**तत्र** (वहाँ) **प्रयाताः** (प्रलयकालीन महामृत्यु को प्राप्त हुए) **ब्रह्मविदः** (ज्ञानी) **जनाः** (जन) **ब्रह्म** ({जीते जी} प्रजापिता ब्रह्मा सो विष्णुलोक को) **गच्छन्ति** (पाते हैं)।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥ 8/25
धूमः रात्रिः तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसम् ज्योतिः योगी प्राप्य निवर्तते।।

धूमः (धूम), **रात्रिः** (रात्रि) **तथा** (तथा) **कृष्णः** (कृष्ण पक्ष), **षण्मासाः** (छः महीना रूप) **दक्षिणायनं** (दक्षिणायन मार्ग)–{यह अज्ञान–अन्धकारयुक्त मार्ग है}, **तत्र** (वहाँ) {मृत्यु प्राप्त} **योगी** {ईश्वरीय जिज्ञासा को गौण समझ कर, कर्म को ही प्रधानता देने वाला} (योगी) **चांद्रमसं** ({ज्ञान} चन्द्रमा {ब्रह्मा} सम्बन्धी) **ज्योतिः** ({धूमिल ज्ञान} प्रकाश को) **प्राप्य** (प्राप्त करके), **निवर्तते** ({फिर इसी दुःखी संसार में सूक्ष्म शरीरधारी भूत–प्रेत बनकर} लौटता है), {जीते जी बैकुण्ठ में नहीं जाता}।

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥ 8/26

शुक्लकृष्णे गती हि एते जगतः शाश्वते मते।
एकया याति अनावृत्तिम् अन्यया आवर्तते पुनः।।

जगतः ({सारे} जगत की) **शुक्लकृष्णे** (शुक्ल और कृष्ण) **एते** (ये दोनों) **गती** (गतियाँ) **हि** (निश्चय ही) **शाश्वते** (शाश्वत) **मते** (मानी जाती हैं)। **एकया** {इनमें से} (एक ज्ञानमार्गीय शुक्ल गति से) **अनावृत्तिं** ({दुःखी संसार में} आना नहीं होता), {जबकि} **अन्यया** (दूसरी {धूमिल ज्ञान वाली कृष्ण} गति से) **पुनः** (फिर से) **आवर्तते** ({दुःखी संसार में} आना होता है)।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥ 8/27

न एते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तः भव अर्जुन।।

पार्थ (हे पृथ्वी के राजा)! **एते** (इन दोनों) **सृती** (गतियों को) **जानन्** (जानने वाला) **कश्चन** (कोई भी) **योगी** {ज्ञानवान} (योगी) **न मुह्यति** (मोहान्धकार को नहीं पाता)। **तस्मात्** (इस कारण) **अर्जुन** (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले)! {तू} **सर्वेषु** (हर) **कालेषु** (समय) **योगयुक्तः** (योगयुक्त) **भव** (रह)।

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ 8/28

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु च एव दानेषु यत् पुण्यफलम् प्रदिष्टम्।
अत्येति तत् सर्वम् इदम् विदित्वा योगी परम् स्थानम् उपैति च आद्यम्।।

वेदेषु (वेदों में), **यज्ञेषु** ({भौतिक} यज्ञों में), **तपःसु** ({शारीरिक} तपस्याओं में) **च** (और) **दानेषु** ({सांसारिक} दान में) **एव** (भी) **यत्** (जो) **पुण्यफलं** (पुण्यफल) **प्रदिष्टं** (बताया गया है), **योगी** (योगी) **तत् सर्वं** (उस सबको) **इदं** (यह {गीता ज्ञान}) **विदित्वा** (जान लेने पर), **अत्येति** (अतिक्रमण कर जाएगा) **च** (और) **आद्यम्** (आदिकालीन) **परम् स्थानम्** {विष्णु रूप} (परम पद को) **उपैति** (प्राप्त कर लेगा)।

अध्याय–9

श्रीभगवानुवाचः– इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ 9/1

इदम् तु ते गुह्यतमम् प्रवक्ष्यामि अनसूयवे।
ज्ञानम् विज्ञानसहितम् यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात्।।

अनसूयवे ({गुणों में} दोष न देखने वाले) **ते** (तुझको) **विज्ञानसहितं** (योग रूपी विशेष ज्ञान सहित) **गुह्यतमं** (अत्यन्त गुप्त) **इदम् ज्ञानं** (इस {ईश्वरीय} ज्ञान को) **प्रवक्ष्यामि** (बताऊँगा) **तु** (कि) **यत्** (जिसको) **ज्ञात्वा** (जानकर) **अशुभात्** (पाप अथवा दुःख से) **मोक्ष्यसे** (मुक्त हो जाएगा)।

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ 9/2

राजविद्या राजगुह्यम् पवित्रम् इदम् उत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमम् धर्म्यम् सुसुखम् कर्तुम् अव्ययम्।।

इदं (यह {ईश्वरीय ज्ञान}) **राजविद्या** (राजाओं की विद्या है), **राजगुह्यं** (राजाई का रहस्य है), **पवित्रं** (पवित्र है), **उत्तमं** (सर्वोत्तम {ज्ञान है}), **प्रत्यक्षावगमं** (प्रत्यक्ष {अर्थात् साक्षात् ईश्वर द्वारा} जाना जाता है), **धर्म्यं** (धर्मानुकूल है), **कर्तुं** (पालन करने के लिए) **सुसुखं** (अत्यंत सहज है) {और} **अव्ययम्** (अविनाशी {भी} है)।

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ 9/3

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्य अस्य परंतप। अप्राप्य माम् निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।।

परंतप (हे कामादिक शत्रुओं को ताप देने वाले)! **अस्य** (इस) **धर्मस्य** ({गीता वर्णित} धर्म की) **अश्रद्दधानाः** (श्रद्धा न करने वाले) **पुरुषाः** (पुरुष) **मां** (मुझ {अव्यक्त ज्ञान सूर्य– गी. 8/24, 25} को) **अप्राप्य** (न पाकर), **मृत्युसंसारवर्त्मनि** (मृत्युलोक के मार्ग {कृष्ण गति} में) **निवर्तन्ते** (लौट जाते हैं)।

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ 9/4
मया ततम् इदम् सर्वम् जगत् अव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न च अहम् तेषु अवस्थितः।।

मया (मेरे) **अव्यक्तमूर्तिना** (अति सूक्ष्म होने से, प्रगट न होने वाले निराकारी ज्योतिर्बिंदु की विस्तारित बीजरूप साकार लिंगमूर्ति के द्वारा) **इदं** (यह) **सर्वं** (सारा) **जगत्** (जगत्) {सूक्ष्म बीज से वृक्ष की भाँति} **ततम्** (विस्तृत हुआ है)। {अतः} **सर्वभूतानि** (सभी प्राणी) **मत्स्थानि** (मुझ {अव्यक्त बीजरूप शिवलिंग} में स्थित हैं); **च** {किन्तु} **अहं** (मैं) **तेषु** (उनमें) **न अवस्थितः** (स्थित नहीं हूँ)। {अर्थात् सर्वव्यापी नहीं हूँ।} ॐ नाहं तेषु ते मयि (गीता 7/12)

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ 9/5
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगम् ऐश्वरम्।
भूतभृत् न च भूतस्थः मम आत्मा भूतभावनः।।

मे (मेरे) **ऐश्वरं** (ऐश्वर्यवान् ज्योतिर्लिंग) **योगं** (योगस्वरूप को) **पश्य** (देख), {जहाँ} **भूतानि** (आकाशादि पंचभूत) **च** (भी) **मत्स्थानि न** (मेरे में स्थित नहीं है)। **भूतभावनः** ({ज्ञान बीज से} प्राणियों को उत्पन्न करने वाली) {तथा} **भूतभृत्** ({योग रूपी खुराक से} प्राणियों का भरण–पोषण करने वाली) **ममात्मा** (मेरी आत्मा) **भूतस्थो** ({उन जड़जंगम} प्राणियों में स्थित) **च न** (भी नहीं है)। {अर्थात् सर्वव्यापी नहीं हूँ।}

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ 9/6
यथा आकाशस्थितः नित्यम् वायुः सर्वत्रगः महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानि इति उपधारय।।

यथा (जिस तरह) **नित्यं** (निरंतर) **सर्वत्रगः** (हर जगह जाने वाली) **महान् वायुः** (महान वायु) **आकाशस्थितः** (आकाश में स्थित है), **तथा** (उसी तरह) **सर्वाणि** (सब) **भूतानि** ({जड़जंगम} प्राणी) **मत्स्थानि** (मुझ {बीज रूप साकार प्रजापिता} में स्थित है), **इति** (ऐसा) **उपधारय** ({तू} जान ले)। {अर्थात् मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ।}

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥ 9/7
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनः तानि कल्पादौ विसृजामि अहम्।।

कौन्तेय (हे कुन्ती पुत्र)! **कल्पक्षये** (कल्पान्तकाल में) **सर्वभूतानि** (सब प्राणी) **मामिकां** (मेरी) **प्रकृतिं** (निराकारी स्टेज धारण करने वाली प्रकृष्ट शरीर रूपी कृति शंकर के अव्यक्त ज्योतिर्बिन्दु आत्मिक भाव को) **यान्ति** (पाते हैं) {और} **कल्पादौ** (कल्प के आदि काल से) **अहं** (मैं) **तानि** (उन्हें) **पुनः** (फिर से) **विसृजामि** (सृष्टि के लिए छोड़ देता हूँ)।

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ 9/8
प्रकृतिम् स्वाम् अवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः।

भूतग्रामम् इमम् कृत्स्नम् अवशम् प्रकृतेः वशात्।।

{मैं} **स्वां** (अपनी) **प्रकृतिं** (प्रकृति {अर्थात् अव्यक्त ज्योतिर्लिंग स्वभाव} को) **अवष्टभ्य** (वश में रखकर) **प्रकृतेः** {पतनशील} (स्वभाव की) **वशात्** (आधीनता से) **अवशं** (पराधीन) **इमं** (इस) **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **भूतग्रामं** (प्राणी समुदाय को) **पुनः पुनः** (बार–2) **विसृजामि** (सृष्टि के लिए छोड़ता हूँ)

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ 9/9

न च माम् तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय।
उदासीनवत् आसीनम् असक्तम् तेषु कर्मसु।।

च (और) **धनंजय** (हे ज्ञानधनजेता)! **तानि** (वे) **कर्माणि** (कर्म) **मां** (मुझ {ज्योतिर्लिंग शिव–शंकर} को) **न निबध्नन्ति** (नहीं बाँधते); {क्योंकि मैं} **तेषु** (उन) **कर्मसु** (कर्मों में) **उदासीनवत्** (उदासीन के समान) **असक्तं** (अनासक्त) **आसीनम्** (रहता हूँ)।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥ 9/10

मया अध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुना अनेन कौन्तेय जगत् विपरिवर्तते।।

कौन्तेय (हे कुन्ती पुत्र!) {कल्पादिकाल में} **मयाध्यक्षेण** (मेरी अध्यक्षता में {अर्थात् देखरेख में}) **प्रकृतिः** (प्रकृष्ट रचना परंब्रह्म) **सचराचरं** (जड़–चेतन रूप स्वर्णिम संगमयुगी शुद्ध जगत को) **सूयते** (पैदा करती है), **अनेन** (इस एक) {ही} **हेतुना** (कारण से) **जगत्** ({यह अधोमुखी} जगत्) **विपरिवर्तते** (विपरीत गति से {सतयुगी ऊर्ध्वलोक में} परिवर्तित होता है)। {उल्टी सीढ़ी की चाढ़ी}

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ 9/11

अवजानन्ति माम् मूढा मानुषीम् तनुम् आश्रितम्।
परम् भावम् अजानन्तः मम भूतमहेश्वरम्।।

मूढाः (मूर्ख लोग) **मानुषीं** (मानवीय) **तनुं** ({मुकर्रर} शरीर का) **आश्रितं** (आधार लेने वाले) **मां** (मुझ परमेश्वर शिव–शंकर की) **अवजानन्ति** (अवज्ञा करते हैं), {वे मूर्ख} **भूतमहेश्वरं** (प्राणियों के ईश्वर स्वरूप) **मम** (मेरे) **परं** (श्रेष्ठतम {ज्योतिर्लिंग}) **भावं** ({अव्यक्त} भाव को) **अजानन्तः** (नहीं जानते)।

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥ 9/12

मोघाशा मोघकर्माणः मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीम् आसुरीम् च एव प्रकृतिम् मोहिनीम् श्रिताः।।

{मेरी अवज्ञा करने से} **मोघाशाः** (व्यर्थ आशाओं वाले), **मोघकर्माणः** (व्यर्थ कर्म वाले), **मोघज्ञानाः** (व्यर्थ ज्ञान वाले) **विचेतसः** (विपरीत मन–बुद्धि वाले लोग) **राक्षसीं** (राक्षसी), **आसुरीं** (आसुरी) **च मोहिनीं** (और मोहित करने वाली) **प्रकृतिं** (प्रकृति {के महाकाली स्वभाव} को) **एव** (ही) **श्रिताः** (धारण करते हैं) {अर्थात् तामसी प्रकृति का ही आश्रय लेते हैं};

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ 9/13

महात्मानः तु माम् पार्थ दैवीम् प्रकृतिम् आश्रिताः।
भजन्ति अनन्यमनसः ज्ञात्वा भूतादिम् अव्ययम्।।

तु (किंतु) **पार्थ** (हे पृथ्वी के राजा)! **दैवीं** (देवताओं की) **प्रकृतिं** (स्वभाव को) **आश्रिताः** (धारण करने वाली) **महात्मानः** (महान् आत्माएँ) **मां** (मुझ) **भूतादिम्** (प्राणियों के आदि आदिदेव) **अव्ययं** (अविनाशी {ज्योतिर्लिंग} स्वरूप को) **ज्ञात्वा** (जानकर) **अनन्यमनसः** (अव्यभिचारी मन से) **भजन्ति** (याद करते हैं)।

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ 9/14

सततम् कीर्तयन्तः माम् यतन्तः च दृढव्रताः।
नमस्यन्तः च माम् भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।।

{वे} **सततं** (निरंतर) **मां** (मेरा) **कीर्तयन्तः** (गुणगान करते हुए) **च** (और) **यतन्तः** (यत्न करते हुए) **दृढव्रताः** ({ब्रह्मचर्यादि व्रतों पर} दृढ़ रहने वाले हैं) **च** (तथा) **नित्ययुक्ताः** {ऐसे} (सदायोगी) **नमस्यन्तः** (विनम्र रहते हुए) **मां** (मुझ ज्योतिर्लिंग शिव–शंकर की) **भक्त्या** (श्रद्धाभक्तिपूर्वक) **उपासते** (याद करते हैं)। {मन को परमपिता परमात्मा के पास बैठाना ही उप+आसना है।}

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥ 9/15

ज्ञानयज्ञेन च अपि अन्ये यजन्तः माम् उपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।।

अन्ये (दूसरे {सामान्य लोग}) **अपि** (भी) **ज्ञानयज्ञेन** ({शास्त्रीय} ज्ञान यज्ञ द्वारा) **एकत्वेन** (अद्वैत भाव से), **पृथक्त्वेन** (द्वैत भाव से) **च** (और) **विश्वतोमुखं** (विश्वव्यापी मुखवाला पंचमुखी ब्रह्मा सो विष्णु, सो शिव–शंकर जानकर) **यजन्तः** (पूजा करते हुए) **मां** (मुझ ज्योतिर्लिंग शिव–शंकर की) **बहुधा** (अनेक प्रकार से) **उपासते** (उपासना करते हैं)।

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ 9/16

अहम् क्रतुः अहम् यज्ञः स्वधा अहम् अहम् औषधम्।
मन्त्रः अहम् अहम् एव आज्यम् अहम् अग्निः अहम् हुतम्।।

अहं (मैं) **क्रतुः** (किया हुआ शुद्ध संकल्प या प्रज्ञा हूँ), **अहं यज्ञः** (मैं {त्याग रूप} यज्ञ हूँ), **अहं स्वधा** (मैं {आत्मा का स्मृति रूपी} अन्न हूँ), **अहं औषधं** (मैं {रोगी आत्माओं के लिए} औषधि हूँ), **अहं मंत्रो** (मैं महामंत्र हूँ), **अहं आज्यं** (मैं {स्मृति रूपी} घृत हूँ), **अहं अग्निः** (मैं {ज्ञान–योग रूपी} अग्नि हूँ), **अहं एव हुतम्** (मैं ही {दान रूप} आहुति हूँ)।

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।
वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च ॥ 9/17

पिता अहम् अस्य जगतः माता धाता पितामहः।
वेद्यम् पवित्रम् ओंकारः ऋक् साम यजुः एव च।।

अस्य (इस) **जगतः** (जगत् का) **पिता** ({ज्ञानबीज रूपी परम}पिता), **माता** ({ज्ञान द्वारा संवर्धन करने वाली ब्रह्मा रूपी वृहत्} माता), **धाता** (कर्मफल विधाता {धर्मराज}) {और} **पितामहः** (बाबा) {भी} **अहम्** (मैं हूँ)। **वेद्यं** (जानने योग्य) **पवित्रं ओंकारः** (पवित्र {आत्मा स्वरूप} ओंकार), **ऋक्** (ऋग्वेद), **साम** (सामवेद) **च** (और) **यजुः** (यजुर्वेद) {रूपी सच्चा ज्ञान भंडार मैं} **एव** (ही) {हूँ}।

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥ 9/18

गतिः भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणम् सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानम् निधानम् बीजम् अव्ययम्।।

{मैं} **गतिः** (सद्गति वाले ना० रूप मनुष्य जीवन का लक्ष्य हूँ), **भर्ता** (पति हूँ), **प्रभुः** (स्वामी हूँ); **साक्षी** (साक्षी), **निवासः** (आश्रय), **शरणं सुहृत्** (शरण और मित्र हूँ)। **प्रभवः** (उत्पत्ति), **प्रलयः** (विनाश), **स्थानं** (स्थिति), **निधानं** (आधार) {और} **बीजमव्ययम्** (अविनाशी {आत्माओं और मनुष्य सृष्टि का} बीज) {भी मैं ही हूँ}।

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥ 9/19
तपामि अहम् अहम् वर्षम् निगृह्णामि उत्सृजामि च।
अमृतम् च एव मृत्युः च सत् असत् च अहम् अर्जुन।।

अहं तपामि (मैं {ज्ञान सूर्य बनकर} तप रहा हूँ), **अहं वर्षं** (मैं {मेघ बनकर ज्ञान} वर्षा करता हूँ), **निगृह्णामि** {सूर्य रूप में ज्ञान जल} (खींचता) **च** (और) **उत्सृजामि** (छोड़ता हूँ) **च** (और) {मैं} **एव** (ही) **अमृतं** ({ज्ञान मंथन रूपी} अमृत हूँ) **च** (और) **असत् मृत्युः** (असत्य रूपी अनिश्चय/मृत्यु) **च** (भी हूँ)। **अर्जुन** (हे सद्भाग्य अर्जनकर्ता अर्जुन)! **सत्** (सदा सत्य) **अहं** (मैं) {ही हूँ}।

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥ 9/20
त्रैविद्या माम् सोमपाः पूतपापा यज्ञैः इष्ट्वा स्वर्गतिम् प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यम् आसाद्य सुरेन्द्रलोकम् अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्।।

{जो ज्ञानी} **त्रैविद्याः** ({ब्राह्मण, देव और क्षत्रिय–इन} तीन {धर्मों की} विधाओं के जानकार हैं), **सोमपाः** ({ज्ञान रूपी} सोमरस को पीने वाले हैं) {और उससे} **पूतपापाः** (पापमुक्त हुए) **यज्ञैः** ({तन–मन–धनादि के समर्पण रूप} यज्ञ–सेवाओं से) **मां** (मुझ {चेतन अव्यक्त ज्योतिर्लिंग शिव–शंकर} को) **इष्ट्वा** (प्रसन्न करके) **स्वर्गतिं** (स्वर्गीय श्रेष्ठ गति की) **प्रार्थयन्ते** (याचना अर्थात् माँग करते हैं), **ते** (वे) **दिवि** ({सतयुगी–त्रेतायुगी} स्वर्ग में) **पुण्यं** (पवित्र) **सुरेन्द्रलोकं** (राजघराने को) **आसाद्य** (पाकर) **दिव्यान् देवभोगान्** (दिव्य भोगों को) **अश्नन्ति** (भोगते हैं)।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ 9/21
ते तम् भुक्त्वा स्वर्गलोकम् विशालम् क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकम् विशन्ति।
एवम् त्रयीधर्मम् अनुप्रपन्नाः गतागतम् कामकामा लभन्ते।।

ते (वे {ज्ञानी जन}) **तं** (उस) **विशालं** (विशाल {2500 वर्षीय}) **स्वर्गलोकं** ({सतयुगी–त्रेतायुगी} स्वर्गलोक को) **भुक्त्वा** (भोगकर), **पुण्ये क्षीणे** ({पु० संगमयुगी} पुण्य {कर्मों की प्रारब्ध} क्षीण होने पर) **मर्त्यलोकं** ({द्वैतवादी द्वापर–कलियुगी} मृत्युलोक में) **विशन्ति** (प्रवेश करते हैं)। **एवं** (इस प्रकार) **त्रयीधर्मं** ({ब्राह्मण, देव और क्षत्रिय–इन} तीन धर्मों का) **अनुप्रपन्नाः** (अनुकरण करने वाले) **गतागतं** (भूत–भविष्य सम्बंधी) **कामकामाः** (काम्य कामनाओं को) **लभन्ते** (पाते हैं)।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ 9/22
अनन्याः चिन्तयन्तः माम् ये जनाः पर्युपासते।
तेषाम् नित्याभियुक्तानाम् योगक्षेमम् वहामि अहम्।।

ये (जो) **अनन्याः** (अव्यभिचारी) **जनाः** (लोग) **मां चिन्तयन्तः** (मेरा चिन्तन करते हुए) **पर्युपासते** {तन–मन–धन, समय–संपर्क, सर्व संबंध आदि सब प्रकार से} (मेरे निकट रहते हैं), **तेषां** (उन) **नित्याभियुक्तानां** (निरंतर योगियों के) **योगक्षेमं** (अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त हुई की रक्षा के भार को) **अहं** (मैं) **वहामि** (सम्भालता हूँ)। • बाबा की सर्विस में लग जाने से तुम कब भूख नहीं मरेंगे। (मु.16.10.77 पृ.3 मध्यांत)

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।

तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥ 9/23
ये अपि अन्यदेवताः भक्ता यजन्ते श्रद्धया अन्विताः।
ते अपि माम् एव कौन्तेय यजन्ति अविधिपूर्वकम्।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र)! **ये** (जो) **अन्यदेवता भक्ता** ({ज्योतिर्लिंग शिवशंकर महादेव की अपेक्षा} अन्य देवताओं के भक्त) **अपि** (भी) **श्रद्धया** (श्रद्धा से) **अन्विताः** (भर कर) **यजन्ते** (त्याग करते हैं), **ते** (वे) **अपि** (भी) **अविधिपूर्वकं** (अवैधनीय रूप {अर्थात् श्रीमत के बरखिलाफ}) **मां** (मेरा) **एव** (ही) **यजन्ति** (यजन करते हैं)।

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥ 9/24
अहम् हि सर्वयज्ञानाम् भोक्ता च प्रभुः एव च।
न तु माम् अभिजानन्ति तत्त्वेन अतः च्यवन्ति ते।।

हि (क्योंकि) **अहं** (मैं) **एव** (ही) **सर्वयज्ञानां** ({त्याग रूप} सभी {देशी–विदेशी धर्म} यज्ञों का) **भोक्ता** (उपभोग करने वाला) **च** (और) **प्रभुः** (स्वामी हूँ)। **तु** (तो) **च** (भी) **ते** (वे {विधिहीन यजन करने वाले}) **मां** (मुझ {चैतन्य ज्योतिर्लिंग अव्यक्त शिव–शंकर} को) **तत्त्वेन** (वास्तविक रूप से) **न अभिजानन्ति** (नहीं पहचान पाते), **अतः** (इसलिए) **च्यवन्ति** {सत्य सनातन धर्म से कनवर्ट होकर इस्लामी आदि धर्मों में} (भ्रष्ट हो जाते हैं)।

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ 9/25
यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनः अपि माम्।।

देवव्रताः (देवताओं के भक्त) **देवान्** (देवताओं को) **यान्ति** (पाते हैं), **पितृव्रताः** (पितृभक्त) **पितॄन्** (पितरों–{माँ–बाप} को) **यान्ति** (पाते हैं), **भूतेज्याः** (भूतों के पुजारी) **भूतानि** (भूतों को) **यान्ति** (पाते हैं) {और} **मद्याजिनः** (मेरे में {तन–मन–धन} यजन करने वाले) **मां अपि यान्ति** (मेरे {ईशित्व भाव} को ही पाते हैं)।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥ 9/26
पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम् यः मे भक्त्या प्रयच्छति।
तत् अहम् भक्त्युपहृतम् अश्नामि प्रयतात्मनः।।

यः (जो {निर्धन व्यक्ति}) **पत्रं, पुष्पं** (पत्ते, पुष्प), **फलं, तोयं** (फल वा जल जैसी साधारण वस्तुओं को) {भी} **मे** (मुझे) **भक्त्या** (भावनापूर्वक) **प्रयच्छति** (प्रदान करता है), **प्रयतात्मनः** ({उस} शुद्ध बुद्धि वाले की) **भक्त्युपहृतम्** (भावनापूर्वक लाई गई) **तत्** (उस {भेंट} को) **अहं** (मैं) **अश्नामि** ({यज्ञ–सेवा के लिए} ग्रहण कर लेता हूँ)।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ 9/27
यत् करोषि यत् अश्नासि यत् जुहोषि ददासि यत्।
यत् तपस्यसि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम्।।

कौन्तेय (हे अर्जुन)! **यत् करोषि** (जो {कर्म तू} करता है), **यत् अश्नासि** (जो {तू} खाता है), **यत् जुहोषि** (जो तू यज्ञ सेवा करता है), **यत् ददासि** (जो देता है) {और} **यत् तपस्यसि** (जो {आत्मस्थिति में रहकर} तपस्या करता है), **तत्** (वह सब) **मदर्पणं** (मेरे लिए {यज्ञार्थ} अर्पण) **कुरुष्व** (कर)।

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥ 9/28
शुभाशुभफलैः एवम् मोक्ष्यसे कर्मबंधनैः। संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तः माम् उपैष्यसि।।

एवं (इस प्रकार) **शुभाशुभफलैः** (शुभ और अशुभ फल वाले) **कर्मबंधनैः** ({लौकिक} कर्मों के बंधनों से) **मोक्ष्यसे** (छूट जाएगा) {और} **विमुक्तः** ({उनसे} छूटा हुआ) **संन्यासयोगयुक्तात्मा** (समुचित त्याग करने से योगयुक्त हुआ) **मां उपैष्यसि** (मेरे {ईशित्व/शासक वा राजाई–भाव} को प्राप्त करेगा)।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ 9/29
समः अहम् सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यः अस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु माम् भक्त्या मयि ते तेषु च अपि अहम्।।

अहं (मैं) **सर्वभूतेषु** (सब प्राणियों में) **समः** (समान भाव वाला {अर्थात् पक्षपातरहित} हूँ)। **मे** (मेरे लिए) **न** (न {कोई}) **द्वेष्यः** (द्वेष करने योग्य है), **न प्रियः अस्ति** (न प्यारा है); **तु** (किंतु) **ये** (जो) **मां** (मुझको) **भक्त्या** (श्रद्धापूर्वक) **भजन्ति** (याद करते हैं), **ते मयि** (वे मुझमें हैं) **च** (और) **तेषु** (उनमें) **अहं** (मैं) **अपि** (भी) हूँ। {बाकी में?} (माया रावण)

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ 9/30
अपि चेत् सुदुराचारः भजते माम् अनन्यभाक्। साधुः एव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितः हि सः।।

चेत् (यदि) **सुदुराचारो** ({कोई} अत्यन्त दुराचारी) **अपि** (भी) **अनन्यभाक्** (अव्यभिचारी भाव से) **मां** (मुझको) **भजते** (याद करता है), {तो} **सः** (वह) **साधुः** (सत्पुरुष) **एव** (ही) **मन्तव्यः** (मानने योग्य है); **हि** (क्योंकि) **सः** (उसने) **सम्यक्** (समुचित–ठीक) **व्यवसितः** (निश्चय कर लिया है)।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ 9/31
क्षिप्रम् भवति धर्मात्मा शश्वत् शान्तिम् निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

{वह} **क्षिप्रं** (जल्दी ही) **धर्मात्मा** ({गुणों का} धारणकर्ता) **भवति** (बन जाता है), **शश्वत्** (स्थायी) **शांतिं** (शान्ति) **निगच्छति** (पा लेता है)। **कौन्तेय** (हे कुंती पुत्र अर्जुन)! **प्रति जानीहि** (निश्चय जानो) {कि} **मे भक्तः** (मेरा भक्त) **न प्रणश्यति** (नष्ट नहीं होता)।

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ 9/32
माम् हि पार्थ व्यपाश्रित्य ये अपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियः वैश्याः तथा शूद्राः ते अपि यान्ति पराम् गतिम्।।

हि (क्योंकि) **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **ये** (जो) **पापयोनयः** (नीच कुलों में जन्मे हुए) **अपि** (भी) **स्युः** (हों) **तथा** (अथवा) **स्त्रियः** (स्त्रियाँ) **वैश्याः** (वैश्य), **शूद्राः** (शूद्र) {हों}, **ते** (वे) **अपि** (भी) **मां** (मेरा) **व्यपाश्रित्य** (आश्रय लेकर) **परां गतिं** ({विष्णु रूप} परम गति को) **यान्ति** (पाते हैं),

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥ 9/33
किम् पुनः ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयः तथा।
अनित्यम् असुखम् लोकम् इमम् प्राप्य भजस्व माम्।।

पुनः (फिर) **पुण्याः** (पुण्यशील) **ब्राह्मणाः** (ब्रह्मा–पुत्र ब्राह्मणों का) **तथा** (तथा) **भक्ताः** (भक्तप्रवर) **राजर्षयः** (राजऋषियों का) **किं** (क्या {कहना})! **इमं** (इस) **अनित्यं** (क्षणभंगुर) {और} **असुखं** (दुःखी) **लोकं** ({कलियुगी} नरकलोक को) **प्राप्य** (पाकर), **मां** (मुझको) **भजस्व** (याद कर)।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ 9/34

मन्मना भव मद्भक्तः मद्याजी माम् नमस्कुरु।
माम् एव एष्यसि युक्त्वा एवम् आत्मानम् मत्परायणः।।

{तू} **मन्मनाः** (मेरे में मन लगाने वाला), **मद्याजी** (मेरा यज्ञ रूप ईश्वरीय सेवा रूपी कर्म करने वाला) **मद्भक्तः** {और} (मुझे भजने वाला) **भव** (बन)। **मां** (मेरे प्रति) **नमस्कुरु** (श्रद्धा से झुक जा)! **एवं** (इस प्रकार) **आत्मानं** (मन–बुद्धि रूपी आत्मा को) **युक्त्वा** (लगाकर) **मत्परायणः** (मेरे में आसक्त हुआ) {तू} **मां** (मेरे {ईशित्व अर्थात् राजाई भाव} को) **एव** (ही) **एष्यसि** (पाएगा)।

अध्याय–10

श्रीभगवानुवाचः– भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ 10/1

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमम् वचः। यत् ते अहम् प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।।

महाबाहो (हे {सहयोगियों रूपी} दीर्घबाहु)! **भूयः** (और) **एव** (भी) **मे** (मेरी) **परमं** (सर्वोत्तम) **वचः** (वाणी) **शृणु** (सुनो), **यत्** (जिसे) **अहम्** (मैं) **प्रीयमाणाय** (सुनने में प्रीतिमान हुए) **ते** (तेरे लिए) **हितकाम्यया** (हित की कामना से) **वक्ष्यामि** (कहूँगा)।

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ 10/2

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवम् न महर्षयः। अहम् आदिः हि देवानाम् महर्षीणाम् च सर्वशः।।

मे (मेरे) **प्रभवं** (उत्कृष्ट दिव्य जन्म को) **न सुरगणाः** (न {सतयुगी} देवगण) {और} **न महर्षयः** (न {द्वापरयुगी} महान् ऋषिजन) {ही} **विदुः** (जानते हैं); **हि** (क्योंकि) **देवानां** (देवताओं) **च** (और) **महर्षीणां** (महर्षियों का) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **आदिः** (आदि {आदिदेव शिवशंकर}) **अहम्** (मैं {ही} हूँ)।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ 10/3

यः माम् अजम् अनादिम् च वेत्ति लोकमहेश्वरम्। असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

यः (जो {ज्ञानी}) **मां** (मुझको) **अजं** (अजन्मा), **अनादिं** (अनादि) **च** (और) **लोकमहेश्वरं** ({शांतिधाम, सुखधाम और दुखधाम तीनों} लोकों का महान ईश्वर) **वेत्ति** (जानता है), **स** (वह) **मर्त्येषु** (मनुष्यों में) **असंमूढः** (मोहरहित हुआ), **सर्वपापैः** (सब पापों से) **प्रमुच्यते** ({पूर्ण} मुक्त हो जाता है)।

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ 10/4

बुद्धिः ज्ञानम् असंमोहः क्षमा सत्यम् दमः शमः।
सुखम् दुःखम् भवः अभावः भयम् च अभयम् एव च।।

बुद्धिः (निर्णय शक्ति), **ज्ञानं** (समझ शक्ति), **असंमोहः** (मोह का न होना), **क्षमा** (अपकारी प्रति दया), **सत्यं** (सत्य), **दमः** (इन्द्रिय संयम), **शमः** (शान्ति), **सुखं, दुःखं** (सुख, दुःख), **भवः** (उत्पत्ति), **अभावः** (अभाव), **भयं चाभयं** (भय और निडरता) **एव** (भी) **च** (तथा)

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ 10/5

अहिंसा समता तुष्टिः तपः दानम् यशः अयशः। भवन्ति भावा भूतानाम् मत्त एव पृथग्विधाः।।

अहिंसा (किसी को दुःखी न करना), **समता** (समदृष्टि), **तुष्टिः** (संतोष), **तपः** ({आत्मस्थिति रूपी} तपस्या), **दानं** (दान), **यशः** (कीर्ति), **अयशः** (अपकीर्ति) {इत्यादि} **भूतानां** (प्राणियों के) {कर्म कालक्रमानुसार बुद्धिभेद होने से} **पृथग्विधाः** (अनेक प्रकार के {अच्छे–बुरे}) **भावाः** (भाव) **मत्तः** {मूलतः} (मेरे से) **एव** (ही) **भवन्ति** (होते हैं)। [मैं शिव–शंकर महादेव साकार रूप में मनुष्य सृष्टि का बीज हूँ।]

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥ 10/6

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारः मनवः तथा। मद्भावा मानसा जाता येषाम् लोके इमाः प्रजाः।।

पूर्वे (पूर्वकालीन) **चत्वारः मनवः** (चार मानसपुत्र {सनतकुमार}) **तथा** (तथा) **सप्त महर्षयः** (सात महर्षि–{सप्तर्षि})–{ये सब} **मद्भावाः** (मेरे भाव {अर्थात् स्वरूप} हैं), **मानसाः** (जो मानसिक मंथन से) **जाताः** (उत्पन्न हुए हैं), **येषां** (जिनकी) **लोके** (संसार में) **इमाः प्रजाः** (यह {देवता, इस्लामी, बौद्धी आदि} सारी प्रजा है)।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ 10/7

एताम् विभूतिम् योगम् च मम यः वेत्ति तत्त्वतः।
सः अविकम्पेन योगेन युज्यते न अत्र संशयः।।

यः (जो) **मम** (मेरी) **एतां** (इस) **विभूतिं** (विभूति {अर्थात् विशेष रचना} को) **च** (तथा) **योगं** (योगशक्ति को) **तत्त्वतः** (यथार्थ रीति) **वेत्ति** (जानता है), **सः** (वह) **अविकम्पेन** (अविचलित) **योगेन** (योग द्वारा) {मेरे से} **युज्यते** (जुड़ जाता है)–**अत्र** (इस {बात} में) **संशयः** (संशय) **न** (नहीं है)।

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ 10/8

अहम् सर्वस्य प्रभवः मत्तः सर्वम् प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते माम् बुधा भावसमन्विताः।।

अहं (मैं {साकार मूर्तिमान शंकर, निराकार शिव का मेल}) **सर्वस्य** (सब जगत की) **प्रभवः** (उत्पत्ति का कारण हूँ)। **मत्तः** (मुझसे) **सर्वं** ({स्थापना–पालना–विनाश रूप} सारा {कार्य}) **प्रवर्तते** (चलता है), **इति** (ऐसा) **मत्वा** (मानकर) **भावसमन्विताः** (भावविभोर हुए) **बुधाः** (बुद्धिमान लोग) **मां** (मुझको) **भजन्ते** (भजते हैं)।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ 10/9

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तः च माम् नित्यम् तुष्यन्ति च रमन्ति च।।

मच्चित्ताः (मेरे में मन–बुद्धि लगाने वाले), **मद्गतप्राणाः** (मेरे में ही जिनके प्राण लगे हुए हैं); **परस्परं** (परस्पर एक–दूसरे को) **बोधयन्तः** (ज्ञान देते हुए) **च** (और) **नित्यं** (सदा) **मां** (मेरे {विषय} में) **च** (ही) **कथयन्तः** (वार्तालाप करते हुए), {वे} **तुष्यन्ति** (सन्तोष पाते हैं) **च** (और) **रमन्ति** (आनन्द मनाते हैं)।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ 10/10

तेषाम् सततयुक्तानाम् भजताम् प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगम् तम् येन माम् उपयान्ति ते।।

प्रीतिपूर्वकं (प्रीतिपूर्वक) **भजतां** (याद करने वाले) **तेषां** (उन) **सततयुक्तानां** (निरन्तर योगियों को) **तं** (ऐसी) **बुद्धियोगं** (बुद्धि की एकाग्रता) **ददामि** (देता
हूँ), **येन** (जिसके द्वारा) **ते** (वे) **मामुपयान्ति** (मेरे पास पहुँच जाते हैं)।

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ 10/11

तेषाम् एव अनुकम्पार्थम् अहम् अज्ञानजम् तमः।
नाशयामि आत्मभावस्थः ज्ञानदीपेन भास्वता।।

तेषां (उन पर) **अनुकम्पार्थं** (दया करने के लिए) **एव** (ही) **अहं** (मैं) **आत्मभावस्थः** (अपने ज्योतिर्लिंग स्वरूप अव्यक्त भाव में स्थित हुआ) **भास्वता** ({उस} चमकते हुए) **ज्ञानदीपेन** (ज्ञान दीपक से) **अज्ञानजं** (बेसमझी से उत्पन्न हुए) **तमः** {अंधश्रद्धा– अंधविश्वास रूपी} (अंधकार को) **नाशयामि** (नष्ट कर देता हूँ)।

अर्जुन उवाच :– परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥ 10/12

परम् ब्रह्म परम् धाम पवित्रम् परमम् भवान्।
पुरुषम् शाश्वतम् दिव्यम् आदिदेवम् अजम् विभुम्।।

भवान् (आप) **परं** (श्रेष्ठतम) **ब्रह्म** (सत्य रूप वेद हैं), **परं धाम** (श्रेष्ठतम आधार हैं), **परमं पवित्रं** (परम पवित्र हैं), **शाश्वतं दिव्यं पुरुषं** (शाश्वत दिव्य पुरुष हैं) {और} **विभुं** {वृद्ध, कुमार, कुमारी, स्त्री, पुरुष आदि बहुरूपिया के} (विविध योगयुक्त रूपों में व्यक्त होने वाले) **अजं** (अजन्मा–{दिव्यजन्मा}) **आदिदेवं** (आदि अर्थात् प्रथम दिव्य पुरुष हैं)।

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥ 10/13

आहुः त्वाम् ऋषयः सर्वे देवर्षिः नारदः तथा। असितः देवलः व्यासः स्वयम् च एव ब्रवीषि मे।।

{ऐसा} **त्वां** (आपके विषय में) **सर्वे** (सब) **ऋषयः** (ऋषियों ने), **देवर्षिः नारदः** (देवर्षि नारद ने), **असितः** (असित ने), **देवलः** (देवल ने) **तथा** (और) **व्यासः** (व्यास ने) **आहुः** (कहा है) **च** (और) **स्वयं** (आप स्वयं) **एव** (ही) **मे** (मुझे) {यही} **ब्रवीषि** (बताते हैं)।

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ 10/14

सर्वम् एतत् ऋतम् मन्ये यत् माम् वदसि केशव।
न हि ते भगवन् व्यक्तिम् विदुः देवाः न दानवाः।।

केशव (हे सुन्दर ज्ञान जटाओं वाले शिव–शंकर)! {आप} **यत्** (जो) **मां** (मुझे) **वदसि** (कहते हो), **एतत्** (यह) **सर्वं** (सब) **ऋतं** (सत्य) **मन्ये** (मानता हूँ); **हि** (क्योंकि) **भगवन्** (हे भगवन्)! **ते** (आपके) **व्यक्तिं** (व्यक्त साकारी भाव शंकर को) **न देवाः** (न देवता) **विदुः** (जानते हैं), **न दानवाः** (न दानव)।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ 10/15

स्वयम् एव आत्मना आत्मानम् वेत्थ त्वम् पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।।

पुरुषोत्तम (हे आत्माओं में श्रेष्ठतम)! **भूतभावन** (हे प्राणियों को {ज्ञान द्वारा नया} जन्म देने वाले)! **भूतेश** (हे भूतेश्वरनाथ)! **देवदेव** (हे देवाधिदेव)! **जगत्पते** (हे जगदीश्वर)! **त्वम्** (आप) **स्वयं** (स्वयं) **एव** (ही) **आत्मनात्मानं** (अपने द्वारा अपने यथार्थ स्वरूप को) **वेत्थ** (जानते हैं)। • वह सद्गुरु स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। (मु.ता.8.10.68 पृ.2 मध्य)

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥ 10/16

वक्तुम् अर्हसि अशेषेण दिव्या हि आत्मविभूतयः।
याभिः विभूतिभिः लोकान् इमान् त्वम् व्याप्य तिष्ठसि।।

यामिः (जिन) **विभूतिभिः** {पूर्ववर्णित सप्तर्षि आदि} (विभूतियों द्वारा) **इमान्** (इन) **लोकान्** ({स्वर्गादि} लोकों को) **व्याप्य** (फैलाकर) **त्वं** (आप) **तिष्ठसि** ({परमधाम में} बैठ जाते हो), {वे} **अशेषेण** (सारी) **दिव्याः** (दैवीय) **आत्मविभूतयः** (जीवात्म रूपी विभूतियाँ) {मुझे} **वक्तुं** (बताने के लिए) **अर्हसि** (समर्थ हो)।

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥ 10/17

कथम् विद्याम् अहम् योगिन् त्वाम् सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्यः असि भगवन् मया।।

योगिन् (हे योगी)! **अहं** (मैं) **कथं** (किस प्रकार) **सदा** (निरंतर) **परिचिन्तयन्** (ज्ञान–सागर–मनन–चिंतन–मंथन करता हुआ) **त्वां** (आपको) **विद्याम्** (पूरी रीति जान सकता हूँ) **च** (और) **भगवन्** (हे भगवन्)! **केषु–केषु** (किन–2) **भावेषु** (भावों में) **मया** (मेरे द्वारा) **चिन्त्यः असि** ({आप} चिन्तन करने योग्य हो)?

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ 10/18

विस्तरेण आत्मनः योगम् ❀विभूतिम् च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिः हि शृण्वतः न अस्ति मे अमृतम्।।

जनार्दन (हे अवढरदानी शिव)! **आत्मनः** (अपनी) {इस} **योगं** (योग शक्ति) **च** (और) **विभूतिं** (विभूति को) **भूयः** (दुबारा) **विस्तरेण** (विस्तार से) **कथय** (कहिए); **हि** (क्योंकि) **अमृतं** ({इस} ज्ञानामृत को) **शृण्वतः**(सुनते हुए) **मे** (मुझे) **तृप्तिः** (तृप्ति) **न अस्ति** (नहीं होती)। ❀{यहाँ वर्णन की गई विभूतियों में परमपिता शिव परमात्मा ज्योतिबिन्दु सर्वव्यापक नहीं है, उसकी यौगिक शक्ति ही उनमें व्यापक है। जगत् के सारे जड़जंगम पदार्थ छोटी–बड़ी बैटरी की भाँति हैं, जो कल्प के अंत में अवतरित परमपिता परमात्मा रूपी पावरहाउस से क्रमशः पात्रानुकूल और यथायोग्य योग की शक्ति ग्रहण करते हैं। अधिक शक्ति ग्रहण करने वाले मनु आदि भूतों/प्राणियों को ही यहाँ विभूति कहा गया है; क्योंकि वह इन सब जड़जंगम बैटरीज़ का वैरायटी बीज हैं।}

श्रीभगवानुवाचः– हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ 10/19

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या हि आत्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ न अस्ति अन्तः विस्तरस्य मे।।

कुरुश्रेष्ठ (हे कुरुश्रेष्ठ)! **प्राधान्यतः** (प्रमुख–2) **दिव्याः** (दिव्य) **आत्मविभूतयः** (अपनी विभूतियाँ) **ते** (तुझे) **हन्त** (आनन्दपूर्वक) **कथयिष्यामि** (कहूँगा); **हि** (क्योंकि) **मे** (मेरे) **विस्तरस्य** (विस्तार का) **अन्तः** (अन्त) **न अस्ति** (नहीं है)।

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥ 10/20

अहम् आत्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहम् आदिः च मध्यम् च भूतानाम् अन्तः एव च।।

गुडाकेश (हे निद्रा को जीतने वाले)! **अहमात्मा** {ज्योतिर्बिन्दु शिव–शंकर} (मैं आत्मा) **सर्वभूताशयस्थितः** (सब प्राणियों की आधार रूपा योगशक्ति में स्थित हूँ) **च** (और) {इसी यौगिक शक्ति रूप में} **भूतानां** (सब प्राणियों की) **आदिः** (उत्पत्ति), **मध्यं** (स्थिति) **च** (और) **अन्तः** (विनाश) **च** (भी) **अहं एव** (मैं ही हूँ)।

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥ 10/21

आदित्यानाम् अहम् विष्णुः ज्योतिषाम् रविः अंशुमान्।
मरीचिः मरुताम् अस्मि नक्षत्राणाम् अहम् शशी।।

ज्योतिषां (ज्योतिमान पदार्थों में) **अंशुमान् रविः** ({दमकती हुई} किरणों वाला सूर्य हूँ), **अहं** (मैं) {योगबल के रूप में} {ही} **आदित्यानां** (आदित्यों में) **विष्णुः** ({लक्ष्मी–नारायण का सम्मिलित स्वरूप परम पद} विष्णु हूँ), **मरुतां** (मरुतों में) **मरीचिः** (मरीचि) **अस्मि** (हूँ) {और} **नक्षत्राणां** (नक्षत्रों में) **शशी** (चन्द्रमा) **अहम्** (हूँ)।

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ 10/22
वेदानाम् सामवेदः अस्मि देवानाम् अस्मि वासवः।
इन्द्रियाणाम् मनः च अस्मि भूतानाम् अस्मि चेतना।।

वेदानां (वेदों में) **सामवेदः** (सामवेद) **अस्मि** (हूँ), **देवानां** (देवों में) **वासवः** {ज्ञानधन दाता शिव का बड़ा पुत्र} (महादेव) **अस्मि** (हूँ), **इन्द्रियाणां** (इन्द्रियों में) **मनः** (मस्तिष्क) **अस्मि** (हूँ) **च** (और) **भूतानां** ({सब} प्राणियों में) **चेतना** (चेतना शक्ति) **अस्मि** (हूँ)।

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ 10/23
रुद्राणाम् शंकरः च अस्मि वित्तेशः यक्षरक्षसाम्।
वसूनाम् पावकः च अस्मि मेरुः शिखरिणाम् अहम्।।

अहं (मैं) **रुद्राणां** (रुद्रों में) **शंकरः** (शंकर) **च** (और) **यक्षरक्षसां** (यक्ष–राक्षसों में) **वित्तेशः** (कुबेर) **अस्मि** (हूँ); **वसूनां** {अष्टदेव स्वरूप} (वसुओं में) **पावकः** (पतित–पावन शिव) **च** (और) **शिखरिणां** (शिखरों में) **मेरुः** (मेरु) **अस्मि** (हूँ)।

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥ 10/24
पुरोधसाम् च मुख्यम् माम् विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनाम् अहम् स्कन्दः सरसाम् अस्मि सागरः।।

पार्थ (पृथ्वीश्वर)! **पुरोधसां** (पुरोहितों में) **मुख्यं** (सबसे मुख्य) **बृहस्पतिं** (बृहस्पति) **मां** (मुझको) **विद्धि** (जान)। **अहं** (मैं) **सेनानीनां** (सेनापतियों में) **स्कन्दः** (कार्तिकेय) **च** (और) **सरसां** (सरोवरों में) **सागरः** (समुद्र) **अस्मि** (हूँ)।

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ 10/25
महर्षीणाम् भृगुः अहम् गिराम् अस्मि एकम् अक्षरम्।
यज्ञानाम् जपयज्ञः अस्मि स्थावराणाम् हिमालयः।।

अहं (मैं) **महर्षीणां** (महान् ऋषियों में) **भृगुः** (भृगु) {और} **गिरां** (वाणियों में) **एकं अक्षरं** (एक ओंकार) **अस्मि** (हूँ)। **यज्ञानां** (यज्ञों में) **जपयज्ञः** ({मानसिक} जप रूप यज्ञ) {और} **स्थावराणां** (पर्वतों में) **हिमालयः** (हिमालय) **अस्मि** (हूँ)।

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ 10/26
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम् देवर्षीणाम् च नारदः।
गन्धर्वाणाम् चित्ररथः सिद्धानाम् कपिलः मुनिः।।

सर्ववृक्षाणां (सब वृक्षों में) **अश्वत्थः** ({मन रूपी अश्वों में स्थिर रहने वाला मानवीय सृष्टिवृक्ष} अश्वत्थ), **देवर्षीणां** (देवर्षियों में) **नारदः** (नारद), **गन्धर्वाणां** (गन्धर्वों में) **चित्ररथः** (चित्ररथ) **च** (और) **सिद्धानां** (सिद्धों में) **कपिलो मुनिः** (कपिल मुनि) {हूँ}।

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ 10/27
उच्चैःश्रवसम् अश्वानाम् विद्धि माम् अमृतोद्भवम्।
ऐरावतम् गजेन्द्राणाम् नराणाम् च नराधिपम्।।

{तू} **मां** (मुझको) {योगबल के रूप में} **अश्वानां** ({मन रूपी} अश्वों के बीच) **अमृतोद्भवं** ({ज्ञान}–अमृत मंथन से उत्पन्न हुआ) **उच्चैःश्रवसं** (उच्चैःश्रवा), **गजेन्द्राणां** (श्रेष्ठ हाथियों {रूपी महारथियों} में) **ऐरावतं** (ऐरावत) **च** (और) **नराणां** (मनुष्यों में) **नराधिपं** (राजा) **विद्धि** (जान)।

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥ 10/28
आयुधानाम् अहम् वज्रम् धेनूनाम् अस्मि कामधुक्।
प्रजनः च अस्मि कन्दर्पः सर्पाणाम् अस्मि वासुकिः।।

अहं (मैं) **आयुधानां** (शस्त्रों में) **वज्रं** (वज्र) {हूँ}, **धेनूनां** (गायों में) **कामधुक्** (कामधेनु) **अस्मि** (हूँ), **प्रजनः** (सन्तान पैदा करने वालों में) **कन्दर्पः** (कामदेव) **अस्मि** (हूँ) **च** (और) **सर्पाणां** (सर्पों में) **वासुकिः** (वासुकि) **अस्मि** (हूँ)।

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥ 10/29
अनन्तः च अस्मि नागानाम् वरुणः यादसाम् अहम्।
पितॄणाम् अर्यमा च अस्मि यमः संयमताम् अहम्।।

अहं (मैं) **नागानां** (नागों में) **अनन्तः** (अनन्त–शेषनाग) **च** (और) **यादसां** ({ज्ञान} जल में विचरण करने वालों में) **वरुणः** (वरुण) **अस्मि** (हूँ)। **अहं** (मैं) **पितॄणां** (पूर्वजों में) **अर्यमा** ({ज्ञान} सूर्य) **च** (और) **संयमतां** (नियम पालन करने वालों में) **यमः अस्मि** (धर्मराज हूँ)।

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥ 10/30
प्रह्लादः च अस्मि दैत्यानाम् कालः कलयताम् अहम्।
मृगाणाम् च मृगेन्द्रः अहम् वैनतेयः च पक्षिणाम्।।

अहं (मैं) **दैत्यानां** (दैत्यों में) **प्रह्लादः** (प्रह्लाद) **च** (और) **कलयतां** (जाने वालों में) **कालः** (काल) **अस्मि** (हूँ), **च** (ऐसे ही) **मृगाणां** (पशुओं में) **मृगेन्द्रः** (सिंह) **च** (और) **पक्षिणां** (पक्षियों में) **वैनतेयः** (गरुड़) **अहम्** (हूँ)।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥ 10/31
पवनः पवताम् अस्मि रामः शस्त्रभृताम् अहम्।
झषाणाम् मकरः च अस्मि स्रोतसाम् अस्मि जाह्नवी।।

पवतां (पावन बनाने वालों में) **पवनः** (वायु) **अस्मि** (हूँ), **शस्त्रभृतां** ({ज्ञान} शस्त्र धारण करने वालों में) **रामः** (राम) **अहम्** (हूँ)। **झषाणां** (मच्छों में) **मकरः** (मगरमच्छ) {मत्स्यावतार} **अस्मि** (हूँ) **च** (और) **स्रोतसां** (नदियों में) **जाह्नवी** (गंगा) **अस्मि** (हूँ)।

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ 10/32
सर्गाणाम् आदिः अन्तः च मध्यम् च एव अहम् अर्जुन।
अध्यात्मविद्या विद्यानाम् वादः प्रवदताम् अहम्।।

अर्जुन (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले)! **सर्गाणां** (सृष्टियों की) **आदिः** (आदि), **मध्यं च अन्तः** (मध्य और अंत) **अहम्** (मैं) **एव** (ही हूँ)। **विद्यानां** (विद्याओं में) **अध्यात्मविद्या** (आत्मविद्या) **च** (और) **प्रवदतां** (वाद–विवाद करने वालों का) **अहं** (मैं) **वादः** (वाद {अर्थात् सत्यरूप तर्क}) {हूँ}।

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥ 10/33
अक्षराणाम् अकारः अस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च।
अहम् एव अक्षयः कालः धाता अहम् विश्वतोमुखः।।

अक्षराणां (अक्षरों में) **अकारः** ('अ'कार) **च** (और) **सामासिकस्य** (समासों में) **द्वन्द्वः** (द्वन्द्व समास) **अस्मि** (हूँ)। **अक्षयः** (अविनाशी) **कालः** (कालचक्र) **अहं** (हूँ) {और} **विश्वतोमुखः** (चारों ओर मुख वाला) **धाता** (ब्रह्मा) **अहम् एव** (मैं ही) (हूँ)।

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥ 10/34
मृत्युः सर्वहरः च अहम् उद्भवः च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीः वाक् च नारीणाम् स्मृतिः मेधा धृतिः क्षमा।।

सर्वहरः (सबका लोप करने वाला) **मृत्युः** (महाकाल) **अहं** (हूँ) **च** (और) **भविष्यतां** (भविष्य में उत्पन्न होने वालों का) **उद्भवः** (उद्गम स्थल) {हूँ} **च** (तथा) **नारीणां** (स्त्रियों की) **कीर्तिः** ({सतीत्व धर्म सम्बंधी} कीर्ति), **श्रीः** (शोभा), **वाक्** (वाणी की शक्ति), **स्मृतिः** (स्मरण शक्ति), **मेधा** (समझ शक्ति), **धृतिः** (धारणाशक्ति) **च** (और) **क्षमा** (क्षमाशीलता) {मेरा ही रूप है}।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ 10/35
बृहत्साम तथा साम्नाम् गायत्री छन्दसाम् अहम्।
मासानाम् मार्गशीर्षः अहम् ऋतूनाम् कुसुमाकरः।।

तथा (उसी तरह) **साम्नां** (सामवेद की ऋचाओं में) **बृहत्साम** (बृहत्साम हूँ), **छन्दसां** (छन्दों में) **गायत्री अहम्** (गायत्री मंत्र हूँ); **मासानां** (महीनों में) **मार्गशीर्षः** (मार्गशीर्ष महीना) {और} **ऋतूनां** (ऋतुओं में) **कुसुमाकरः** (बसन्त ऋतु) **अहम्** (हूँ)।

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥ 10/36
द्यूतम् छलयताम् अस्मि तेजः तेजस्विनाम् अहम्।
जयः अस्मि व्यवसायः अस्मि सत्त्वम् सत्त्ववताम् अहम्।।

अहं (मैं) **छलयतां** (छल करने वालों का) **द्यूतं** (जुआ हूँ), **तेजस्विनां** (तेजस्वियों का) **तेजः** (तेज) **अस्मि** (हूँ)। {विजयी होने वालों की} **जयोऽस्मि** (जय हूँ), {व्यवसायियों का} **व्यवसायोऽस्मि** (उद्यम हूँ) {और} **सत्त्ववतां** (बलवानों का) **सत्त्वं** (बल) **अहम्** (हूँ)।

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ 10/37
वृष्णीनाम् वासुदेवः अस्मि पाण्डवानाम् धनंजयः।
मुनीनाम् अपि अहम् व्यासः कवीनाम् उशना कविः।।

वृष्णीनां ({ज्ञानवर्षा करने वाले} वृष्णिवंशी यादवों में) **वासुदेवः** (ज्ञान धनदाता वसुदेव/शिव का बड़ा पुत्र–महादेव) **अस्मि** (हूँ), **पांडवानां** (पांडवों में) **धनंजयः** (अर्जुन) {हूँ}, **मुनीनां** (मुनियों में) **अहं** (मैं) **व्यासः** (व्यास) {हूँ और} **कवीनां** (कवियों में) **उशना कविः** (उशना {शुक्राचार्य} कवि) **अपि** (भी) {हूँ}।

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ 10/38
दण्डः दमयताम् अस्मि नीतिः अस्मि जिगीषताम्।
मौनम् च एव अस्मि गुह्यानाम् ज्ञानम् ज्ञानवताम् अहम्।।

दमयताम् (दण्ड देने वालों का) **दंडः** (दंडाधिकार) **अस्मि** (हूँ), **जिगीषतां** (विजयेच्छुकों की) **नीतिः** (नीति) **अस्मि** (हूँ), **गुह्यानाम्** (गोप–गोपियों का) {रक्षक} **मौनं** (मौन) **अस्मि** (हूँ) **च** (और) **ज्ञानवतां** (ज्ञानवानों का) **ज्ञानं** (तत्व ज्ञान) **अहं एव** (मैं ही हूँ)।

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ 10/39
यत् च अपि सर्वभूतानाम् बीजम् तत् अहम् अर्जुन।
न तत् अस्ति विना यत् स्यात् मया भूतम् चराचरम्।।

च (और) **अर्जुन** (हे अर्जुन)! **सर्वभूतानां** (सब चर–अचर प्राणी मात्र का) **यत्** (जो) **अपि** ({कुछ} भी) **बीजं** {सारी मनुष्य–सृष्टि का} (मूल–बीजरूप है), **तत्** (वह) **अहम्** (मैं {शिव–शंकर ही} हूँ)। **तत्** (वैसा) {एक भी} **चराचरं** (चर–अचर) **भूतं** (भूत) **न अस्ति** (नहीं है), **यत्** (जो) **मया विना स्यात्** (मेरे बिना हो)।

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ 10/40
न अन्तः अस्ति मम दिव्यानाम् विभूतीनाम् परंतप।
एष तु उद्देशतः प्रोक्तः विभूतेः विस्तरः मया।।

परंतप (हे कामादिक शत्रुओं को तपाने वाले)! **मम** (मेरी) **दिव्यानां** (दिव्य) **विभूतीनां** (विभूतियों का) **अन्तः** (अन्त) **न अस्ति** (नहीं है)। **एषः** (यह) **विभूतेः** (विभूतियों का) **विस्तरः** (विस्तार) **तु** (तो) **मया** (मैंने) **उद्देशतः** (संक्षेप में) **प्रोक्तः** (कहा है)

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥ 10/41
यत् यत् विभूतिमत् सत्त्वम् श्रीमत् ऊर्जितम् एव वा।
तत् तत् एव अवगच्छ त्वम् मम तेजोंऽशसम्भवम्।।

वा (अथवा) **यद्यत् एव** (जो भी कोई) **सत्त्वं** (प्राणी) **विभूतिमत्** (ऐश्वर्यवान्), **श्रीमत्** (श्रेष्ठ बुद्धियुक्त), **ऊर्जितं** (शक्तिवान् है), **तत्तदेव** (उसे ही) **त्वं** (तू) **मम** (मेरे) **तेजोंऽशसम्भवम्** {योग रूपी} तेज के अंश से उत्पन्न हुआ) **अवगच्छ** (जान)

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥ 10/42
अथवा बहुना एतेन किम् ज्ञातेन तव अर्जुन।
विष्टभ्य अहम् इदम् कृत्स्नम् एकांशेन स्थितः जगत्।।

अथवा (अथवा) **अर्जुन** (हे अर्जुन)! **तव** (तुझे) **एतेन** (इतना) **बहुना** (बहुत) **ज्ञातेन** (जानने से) **किं** (क्या {प्रयोजन है})? **अहं** (मैं {ज्योतिर्बिन्दु शिव}) **इदं** (इस) **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **जगत्** (जगत को) {अपनी योगशक्ति के} **एकांशेन** (एक अंश द्वारा) **विष्टभ्य** (टिका करके), {परमधाम में} **स्थितः** (स्थित हूँ)!

अध्याय–11

अर्जुन उवाचः– मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ 11/1
मदनुग्रहाय परमम् गुह्यम् अध्यात्मसंज्ञितम्।
यत् त्वया उक्तम् वचः तेन मोहः अयम् विगतः मम।।

त्वया (आपने) **मदनुग्रहाय** (मेरे ऊपर दया करके) **यत्** (जो) **अध्यात्मसंज्ञितं** (अध्यात्म नाम की) **परमं** (श्रेष्ठ) **गुह्यं** (रहस्यमयी) **वचः** (बात) **उक्तं** (कही है), **तेन** (उससे) **मम** (मेरा) **अयं** (यह) **मोहः** (मोह) **विगतः** (दूर हो गया है)। **※** गीता महाभारत में अर्जुन, दुर्योधन आदि नाम किसी एक व्यक्ति विशेष के लिए नहीं आए हैं, अपितु किसी समूह विशेष के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। अर्जुन कोई एक नहीं था। नर से नारायण बनने वाले नं०वार आठ या नौ अर्जुन हैं। भगवान ने कोई एक अर्जुन को गीता नहीं सुनाई थी। इस अध्याय में इन्हीं नारायण बनने वाले अर्जुनों को प्रजापिता ब्रह्मा के तन में, साकारी रूप धारण करने वाले परमपिता शिव सहित, सम्पूर्ण ब्रह्मा द्वारा 'विराट स्वरूप' दिखाया गया है, जिसमें उनके महाविनाश कालीन रौद्र रूप का भी वर्णन किया गया है।

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माह्मत्म्यमपि चाव्ययम् ॥ 11/2
भवाप्ययौ हि भूतानाम् श्रुतौ विस्तरशः मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यम् अपि च अव्ययम्।।

हि (क्योंकि) **कमलपत्राक्ष** (हे कमललोचन शिव)! **मया** (मैंने) **भूतानां** (प्राणियों की) **भवाप्ययौ** (उत्पत्ति और विनाश को) **त्वत्तः** (आपके द्वारा) **विस्तरशः** (विस्तारपूर्वक) **श्रुतौ** (सुन लिया है) **च** (और) {आपका} **अव्ययं** (अविनाशी) **माहात्म्यं** (महात्म्य) **अपि** (भी) {सुन लिया है}।

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ 11/3
एवम् एतत् यथा आत्थ त्वम् आत्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुम् इच्छामि ते रूपम् ऐश्वरम् पुरुषोत्तम।।

{फिर भी} **परमेश्वर** (महेश्वर)! **त्वं** (आपने) **आत्मानं** (अपने {विभूति स्वरूप} को) **यथा** (जैसा) **आत्थ** (बताया है), {यदि} **एतत्** (यह) **एवम्** (ऐसा) {ही है, तो} **पुरुषोत्तम** (हे आत्माओं में उत्तम पार्टधारी शिव)! **ते** (आपके) **ऐश्वरं** (ऐश्वर्यवान्) {उस प्रगट} **रूपं** (प्रत्यक्ष विराट रूप को) **द्रष्टुं** (देखना) **इच्छामि** (चाहता हूँ)।

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ 11/4
मन्यसे यदि तत् शक्यम् मया द्रष्टुम् इति प्रभो।
योगेश्वर ततः मे त्वम् दर्शय आत्मानम् अव्ययम्।।

प्रभो (हे प्रभु)! **यदि** (यदि) **इति** (ऐसा) **मन्यसे** ({आप} मानते हो) {कि} **मया** (मैं) **तत्** (उसे) **द्रष्टुं** (देख) **शक्यं** (सकता हूँ), **ततः** (तो) **योगेश्वर** (हे योगेश्वर शिव)! **त्वं** (आप) **आत्मानं** (अपने) **अव्ययं** (अविनाशी) {विभूति स्वरूप को} **मे दर्शय** (मुझे दिखाइए)।

श्रीभगवानुवाचः– पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ 11/5
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशः अथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।।

पार्थ (हे पृथ्वी के राजा)! **नानाविधानि** (अनेक प्रकार के) **च** (और) **नानावर्णाकृतीनि** (अनेक वर्ण और आकार वाले) **शतशः** (सैकड़ों) **अथ** (और) **सहस्त्रशः** (हज़ारों) **मे** (मेरे) {पुत्र रूप} **दिव्यानि** (दिव्य) **रूपाणि** (रूपों को) **पश्य** (देख)।

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ 11/6
पश्य आदित्यान् वसून् रुद्रान् अश्विनौ मरुतः तथा।
बहूनि अदृष्टपूर्वाणि पश्य आश्चर्याणि भारत।।

भारत (हे भरतवंशी)! **आदित्यान्** (12 सूर्यरूप चक्रवर्तियों), **वसून्** (अष्ट देवताओं), **रुद्रान्** (11 रुद्रों), **अश्विनौ** (दो {राम–कृष्ण} अश्विनी कुमारों), **मरुतः** (49 {ऋषभ शिव पुत्र} मरुतों को) **पश्य** (देख), **तथा** (उसी प्रकार) **अदृष्टपूर्वाणि** (पहले न देखे हुए) **बहूनि** (बहुत–से) **आश्चर्याणि** (आश्चर्यों को) **पश्य** (देख)।

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ 11/7

इह एकस्थम् जगत् कृत्स्नम् पश्य अद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यत् च अन्यत् द्रष्टुम् इच्छसि।।

गुडाकेश (हे निद्राजीत अर्जुन)! **अद्य** (आज) **मम** (मेरी) **इह** (इस) **देहे** (मनुष्य सृष्टि के बीज–रूप प्रजापति में) **सचराचरं** (जड़ और चेतन सहित) **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **जगत्** (विश्व को) **एकस्थं** (एक ही जगह) **पश्य** (देख लो) **च** (और) **यत्** (जो) **अन्यत्** (अन्य कुछ भी) **द्रष्टुं** (देखना) **इच्छसि** (चाहते हो), {देख लो};

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ 11/8

न तु माम् शक्यसे द्रष्टुम् अनेन एव स्वचक्षुषा।
दिव्यम् ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगम् ऐश्वरम्।।

तु (किंतु) **अनेनैव** (इन्हीं) **स्वचक्षुषा** (अपनी जड़ आँखों से) **मां** (मुझ {विराट स्वरूप} को) **न द्रष्टुं** (नहीं देख) **शक्यसे** (सकेगा); {अतः} **ते** (तुझको) **दिव्यं** (दिव्य) **चक्षुः** ({ज्ञान} चक्षु) **ददामि** (देता हूँ), {जिससे} **मे** (मेरे) **ऐश्वरं** (विभूतिवान) {और} **योगं** (ज्योतिर्लिंग यौगिक स्वरूप का) **पश्य** (साक्षात्कार कर)।

सञ्जय उवाचः– एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ 11/9

एवम् उक्त्वा ततः राजन् महायोगेश्वरः हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमम् रूपम् ऐश्वरम्।।

ततः (तब) **राजन्** (हे राजा धृतराष्ट्र)! **महायोगेश्वरः** (महान योगेश्वर) **हरिः** (शिव भगवान) **एवं** (ऐसा) **उक्त्वा** (कहकर) **पार्थाय** (अर्जुन को) **परमं** (परम) **ऐश्वरं** (ऐश्वर्यवान्) **रूपं** (विभूतिरूप) **दर्शयामास** (दिखाने लगे)।

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ 11/10
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥ 11/11

अनेकवक्त्रनयनम् अनेकाद्भुतदर्शनम्। अनेकदिव्याभरणम् दिव्यानेकोद्यतायुधम्।।
दिव्यमाल्याम्बरधरम् दिव्यगंधानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयम् देवम् अनन्तम् विश्वतोमुखम्।।

अनेकवक्त्रनयनं (अनेक मुख और नेत्र वाले), **अनेकाद्भुतदर्शनं** (अनेक अद्भुत दृष्टि वाले), **अनेकदिव्याभरणं** {कुण्डल आदि} (अनेक दिव्य गुणों के आभूषणों वाले), **दिव्यानेकोद्यतायुधं** (उठाए हुए {शंख, चक्र, गदा आदि} अनेक ज्ञान–आयुधों वाले), **दिव्यमाल्याम्बरधरं** (दिव्य मालाएँ और वस्त्र धारण करने वाले), **दिव्यगंधानुलेपनं** (दिव्य गंधों से अनुलिप्त), **सर्वाश्चर्यमयं** (सब आश्चर्यों से भरे हुए), **विश्वतोमुखं** (चारों ओर मुख वाले विराट स्वरूप) **अनन्तं देवं** (अनन्त देवताओं को) {देखा}।

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥ 11/12

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेत् युगपत् उत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्यात् भासः तस्य महात्मनः।।

यदि (यदि) **दिवि** (आकाश में) **सूर्यसहस्रस्य** (हज़ारों सूर्यों की) **भाः** (कान्ति) **युगपत्** (एक साथ) **उत्थिता** (उदित) **भवेत्** (हो), {तो} **सा भासः** (वह कांति) **तस्य** (उस) **महात्मनः** (महान आत्मा के) **सदृशी** (समान) **स्यात्** (हो सकती है)। **{अतिशयोक्ति अलंकार}**

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ 11/13
तत्र एकस्थम् जगत् कृत्स्नम् प्रविभक्तम् अनेकधा। अपश्यत् देवदेवस्य शरीरे पांडवः तदा।।
तदा (तब) **पाण्डवः** (अर्जुन ने) **देवदेवस्य** (देव देव महादेव शिव–शंकर के) **तत्र** (उस) **शरीरे** (विराट शरीर में) **अनेकधा** (अनेक प्रकार के) **प्रविभक्तं** (रूपों में बँटे हुए) **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **जगत्** (जगत को) **एकस्थं** (एक ही चैतन्य बीज में स्थित हुआ) **अपश्यत्** (देखा)।

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥ 11/14
ततः स विस्मयाविष्टः हृष्टरोमा धनंजयः। प्रणम्य शिरसा देवम् कृतांजलिः अभाषत।।
ततः (तब) **सः** (वह) **विस्मयाविष्टः** (आश्चर्य में भरकर) **हृष्टरोमा** (रोमांचित होने वाला) **धनंजयः** (ज्ञानधनजयी अर्जुन) **देवं** (शिवशंकर महादेव को) **शिरसा** (मस्तक द्वारा) **प्रणम्य** (प्रणाम करके) **कृतांजलिः** (हाथ जोड़ते हुए) **अभाषत** (कहने लगा)।

अर्जुन उवाचः– पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ 11/15
पश्यामि देवान् तव देव देहे सर्वान् तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणम् ईशम् कमलासनस्थम् ऋषीन् च सर्वान् उरगान् च दिव्यान्।।
देव (हे देव)! **तव** (आपके) **देहे** (शरीर में) **सर्वान्** (सब) **देवान्** (देवताओं को) **तथा** (तथा) **भूतविशेषसंघान्** (प्राणियों के विशिष्ट समुदायों को), **कमलासनस्थं** ({एक शरीर में} कमल आसन पर बैठे) **ईशं** (महेश्वर शिव) **च** (और) **ब्रह्माणं** (ब्रह्मा को), **सर्वान् ऋषीन्** (सब ब्रह्मर्षियों को) **च** (और) {सब} **दिव्यान्** (दिव्य) **उरगान्** (सर्प {रूप सन्यासियों} को) **पश्यामि** (देखता हूँ)। ***उरग** (उरसा गच्छति)–छाती के बल चलने वाले सर्प रूप सन्यासी, जो मुख द्वारा अज्ञान रूपी विष उगलते हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान को सरक जाते हैं। दूसरों द्वारा बनाए हुए घरों में रहते हैं।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥ 11/16
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम् पश्यामि त्वाम् सर्वतः अनन्तरूपम्।
न अंतम् न मध्यम् न पुनः तव आदिम् पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।।
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं (अनेक {ब्राहमण रूपी ज्ञान} नेत्र वाले, अनेक {देवता रूप} मुख वाले, अनेक {क्षत्रिय रूप} भुजाओं वाले और अनेक {वैश्यों रूपी} पेट वाले) {अर्थात्} **सर्वतः** (सब ओर से) **अनन्तरूपं** (अनन्त रूपों वाले), **त्वां** (आपका) **पश्यामि** (साक्षात्कार करता हूँ)। **विश्वेश्वर** (हे विश्व के शासनकर्ता)! **विश्वरूप** (हे विश्वरूप)! **पुनः** (फिर भी) {मैं} **तव** (आपके) **न अन्तं** (न अंत को), **न मध्यं** (न मध्य को), **न आदिं** (न आदि को) {ही} **पश्यामि** (देख पाता हूँ)।

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ 11/17
किरीटिनम् गदिनम् चक्रिणम् च तेजोराशिम् सर्वतः दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वाम् दुर्निरीक्ष्यम् समन्तात् दीप्तानलार्कद्युतिम् अप्रमेयम्।।
{आप} **किरीटिनं** ({पवित्रता की जिम्मेवारी के} ताज अर्थात् मुकुटधारी), **गदिनं** (दृढ़ता रूपी गदाधारी), **चक्रिणं** ({84 जन्मों के ज्ञान} चक्रधारी) **च** (और) **तेजोराशिं** ({योग रूपी} तेज के पुंज रूप) **सर्वतः** (चारों ओर से) **दीप्तिमंतम्** (प्रकाशमान हैं)। **समंतात्** (चारों ओर से) **दुर्निरीक्ष्यं** (कठिनाई से देखने योग्य), **दीप्तानलार्कद्युतिं** (दैदीप्यमान अग्नि और सूर्य की प्रभा वाले), **अप्रमेयं** (उपमाहीन) **त्वां** (आपको) **पश्यामि** ({मैं} देख रहा हूँ)।

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ 11/18
त्वम् अक्षरम् परमम् वेदितव्यम् त्वम् अस्य विश्वस्य परम् निधानम्।
त्वम् अव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनः त्वम् पुरुषः मतः मे।।
त्वं (आप) **अक्षरं** ({ऑलराउण्ड पार्टधारी} अविनाशी) **परमं** (परम {पद विष्णु स्वरूप} हैं) {और} **वेदितव्यम्** (जानने योग्य हैं)। **त्वं** (आप) **अस्य** (इस) **विश्वस्य** (जगत् के) **परं** (परम) **निधानं** (आश्रय–जगन्नाथ हैं)। **त्वं** (आप) **अव्ययः** (आत्मिक रूप से क्षय रहित) {और} **शाश्वतधर्मगोप्ता** (शाश्वत काल तक रहने वाले देवी–देवता सनातन धर्म के रक्षक हैं)। {अतः} **मे मतः** (मेरी मान्यता है कि) **त्वं** (आप) **सनातनः पुरुषः** (सनातन पुरुष {आदम या आदिदेव} हैं)।

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥ 11/19
अनादिमध्यान्तम् अनन्तवीर्यम् अनन्तबाहुम् शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वाम् दीप्तहुताशवक्त्रम् स्वतेजसा विश्वम् इदम् तपंतम्।।
अनादिमध्यान्तं (आदि, मध्य और अंत से रहित), **अनन्तवीर्यं** (अमोघ वीर्य वाले), **अनंतबाहुं** (असंख्य {क्षत्रियों रूपी} भुजाओं वाले), **शशिसूर्यनेत्रं** ({ब्रह्मा रूपी} चंद्रमा और {ज्ञान}सूर्य {परमपिता शिव} रूप नेत्रों वाले) {और} **दीप्तहुताशवक्त्रं** {महाविनाशकालीन} (धधकती हुई {रुद्र ज्ञान} अग्नि रूप मुख वाले), **त्वां** (आपको) **स्वतेजसा** (अपने तेज से) **इदं** (इस {कलियुगी}) **विश्वम्** (संसार को) **तपन्तं** (तपाता हुआ) **पश्यामि** (देख रहा हूँ)।

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥ 11/20
द्यावापृथिव्योः इदम् अन्तरम् हि व्याप्तम् त्वया एकेन दिशः च सर्वाः।
दृष्ट्वा अद्भुतम् रूपम् उग्रम् तव इदम् लोकत्रयम् प्रव्यथितम् महात्मन्।।
द्यावापृथिव्योः (परमधाम और पृथ्वी का) **इदं** (यह) **अन्तरं** (बीच वाला सारा सात्विक अन्तराल–वायुमंडल और अंतरिक्ष) **च सर्वाः दिशः** (और सारी दिशाएँ) **एकेन** (अकेले) **त्वया** (आपके द्वारा) **हि** (ही) **व्याप्तं** (विस्तीर्ण हुई हैं)। **तव** (आपका) **इदं** (यह) **अद्भुतं** (अद्भुत), **उग्रं** (भयंकर) **रूपं** {विनाशकारी} (रूप) **दृष्ट्वा** (देखकर), **महात्मन्** (हे महात्मन्)! **लोकत्रयं** {शांतिधाम, सुखधाम और दुखधाम आदि} (तीनों लोकों) {के सारे जीव} **प्रव्यथितम्** (अत्यंत काँप रहे हैं)।

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ 11/21
अमी हि त्वाम् सुरसंघा विशन्ति केचित् भीताः प्रांजलयः गृणन्ति।
स्वस्ति इति उक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति त्वाम् स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।।
हि (वास्तव में), **अमी** (ये) **सुरसंघाः** {ज्ञानी ब्राह्मण} (देवों के समूह) **त्वां** (आपके {समूचे विराट} रूप में) **विशंति** (समा जाते हैं) {अर्थात् सृष्टि का सारा ज्ञान पाते हैं, जबकि न पहचानने वाले} **केचित्** (कुछ {अज्ञानी भक्त लोग}) **भीताः** (भयभीत हुए) **प्रांजलयः** (हाथ जोड़कर) **गृणन्ति** ({'अहो! प्रभो तेरी माया' का} गुणगान ही करते रहते हैं)। **महर्षिसिद्धसंघाः** {द्वापरयुगी} (महर्षियों और सिद्धों के समूह) **स्वस्ति** ('कल्याण हो') **इति उक्त्वा** (ऐसी {शुभ भावना व कामना वाली वाणी} कहकर) **त्वां** (आपकी) **पुष्कलाभिः स्तुतिभिः** (अनेक स्तुतियों द्वारा) **स्तुवन्ति** (स्तुति ही करते रह जाते हैं)।

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥ 11/22

रुद्रादित्या वसवः ये च साध्या विश्वे अश्विनौ मरुतः च ऊष्मपाः च।
गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वाम् विस्मिताः च एव सर्वे।।

ये (जो) **रुद्रादित्याः** (11 रुद्रगण और 12 सूर्यरूप चक्रवर्ती), **वसवः** (अष्टदेव) **च** (और) **साध्याः** (प्रत्येक देव), **विश्वे** (13 विश्वदेव), **अश्विनौ** (दो अश्विनी कुमार), **मरुतः** (49 मरुद्गण) **च** (और) **ऊष्मपाः** (केवल योग रूपी ताप को पीने वाले पितृ) {*त्रेतायुगी आत्माओं को पितृ कहा जाता है; क्योंकि संगमयुग के आदि में यही क्षत्रिय आत्माएँ सम्पूर्ण पवित्रता में असफल हो जाने से उग्र तपस्वी होने के कारण नई सतयुगी पीढ़ी के माँ–बाप बनते हैं।} **च** (और) **गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः** ({द्वापरयुगी ऋक्–साम छन्दों को गाने वाले} गन्धर्व और यक्षजन तथा {कलियुगी दुःखदाई} राक्षस और रिद्धि–सिद्धि जानने वालों के समूह), {ये} **सर्वे** (सब) **त्वां** (आपके) {रौद्र स्वरूप को} **एव** (ही) **विस्मिताः** (आश्चर्यान्वित हुए) **वीक्षन्ते** (देख रहे हैं)।

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ 11/23

रूपम् महत् ते बहुवक्त्रनेत्रम् महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरम् बहुदंष्ट्राकरालम् दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथिताः तथा अहम्।।

महाबाहो (हे विशाल बुद्धि रूपी हाथों वाले)! **बहुवक्त्रनेत्रं** (अनेक {ब्राह्मणों–देवों रूपी} मुख और {ज्ञान}नेत्र वाले), **बहुबाहूरुपादं** (अनेक {क्षत्रिय रूपी} भुजाओं, {वैश्य रूपी} जंघाओं और {शूद्र रूपी} पैरों वाले), **बहूदरं** (अनेकों {वैश्य रूपी} पेट वाले) {और} **बहुदंष्ट्राकरालं** (अनेकानेक {अणु–बम्बादि विनाश के साधन रूप} विकराल दाढ़ों वाले), **ते** (आपके) **महत्** (महान्) **रूपं** ({रौद्र} रूप को) **दृष्ट्वा** (देखकर) **लोकाः** (सब लोग) **तथा** (तथा) **अहं** (मैं) {भी} **प्रव्यथिताः** (काँप रहा हूँ)।

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥ 11/24

नभःस्पृशम् दीप्तम् अनेकवर्णम् व्यात्ताननम् दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वाम् प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिम् न विन्दामि शमम् च विष्णो।।

हि (क्योंकि) **विष्णो** (हे {विषय वासना रहित} विष्णुदेव)! **नभःस्पृशं** (आकाश को छूने वाले), **दीप्तमनेकवर्णं** (अनेक रंगों में दमकने वाले), **व्यात्ताननं** (मुख फाड़ते हुए), **दीप्तविशालनेत्रं** (बड़ी–2 चमकती आँखों वाले), **त्वां** (तेरे) {प्रलयकालीन रौद्र रूप को} **दृष्ट्वा** (देखकर) **प्रव्यथितान्तरात्मा** (अत्यंत भय से पीड़ित हुई अन्तरात्मा वाला) {मैं} **धृतिं** (धीरज) **च** (और) **शमं** (शांति) **न विन्दामि** (नहीं पाता हूँ)।

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ 11/25

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वा एव कालानलसन्निभानि।
दिशः न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास।।

देवेश (हे देवों के ईश महादेव)! **दंष्ट्राकरालानि** {महाविनाशकालीन अणु–बम्बादि भयंकर साधनों की} (विकराल दाढ़ों वाले) **च** (और) **कालानलसन्निभानि** (प्रलयकालीन अग्नि के समान प्रज्वलित) **ते मुखानि** {आग उगलने वाले} (आपके मुखों को) **दृष्ट्वा** (देखकर) **एव** (ही) **दिशो न जाने** (दिशाओं को {भी} भूल गया हूँ) **च** (और) **शर्म** (चैन) **न लभे** (नहीं पड़ता)। {अतः} **जगन्निवास** (हे संसार के आश्रय रूप जगन्नाथ)! **प्रसीद** (प्रसन्न हो जाइए)।

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥ 11/26

अमी च त्वाम् धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सह एव अवनिपालसंघैः।
भीष्मः द्रोणः सूतपुत्रः तथा असौ सह अस्मदीयैः अपि योधमुख्यैः।।

अस्मदीयैः (हमारे) **योधमुख्यैः** (मुख्य योद्धाओं) **सह** (सहित), **अमी** (ये) **धृतराष्ट्रस्य** (पूंजीपतियों के) **पुत्राः** ({कौरवों अर्थात् कांग्रसियों रूपी} पुत्र) **च** (और) **भीष्मः** (सर्प की तरह अज्ञान विष उगलने वाले भयंकर

कलियुगी साधू–सन्यासी रूपी भीष्म), **द्रोणः** ({कलियुगी} विद्वान–आचार्य), **तथा** (उसी तरह) **असौ** (यह) **सूतपुत्रः** (सारथी का पुत्र कर्ण)–{ये} **सर्वे** (सब) **अवनिपालसंघैः** (पृथ्वी को पालने वाले कलियुगी शासकों का समूह)

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ 11/27
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचित् विलग्नाः दशनान्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैः उत्तमांगैः।।

ते (आपके) **दंष्ट्राकरालानि** (विकराल दाढ़ों वाले) **भयानकानि** (भयंकर) **वक्त्राणि** (मुखों में) **त्वरमाणाः** (तीव्रतापूर्वक) **विशन्ति** (घुसे जा रहे हैं)। **केचित्** (कुछ {लोग}) **दशनान्तरेषु** (दाँतों के बीच में) **विलग्नाः** (फँस जाने से) **चूर्णितैः** (चूर–2 हुए) **उत्तमांगैः** (सिरों के साथ) **संदृश्यन्ते** (अच्छी तरह दिखाई पड़ रहे हैं)।

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥ 11/28
यथा नदीनाम् बहवः अम्बुवेगाः समुद्रम् एव अभिमुखाः द्रवन्ति।
तथा तव अमी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राणि अभिविज्वलन्ति।।

यथा (जैसे) **नदीनां** (नदियों की) **बहवः** (अनेक) **अम्बुवेगाः** (जलधाराएँ) **समुद्रं** (समुद्र की ओर) **एव** (ही) **अभिमुखाः** (मुँह उठाए) **द्रवन्ति** (दौड़ती हैं), **तथा** (वैसे ही) **अमी** (ये) **नरलोकवीराः** (मनुष्यलोक के वीर पुरुष) {भी} **तव** (आपके) **अभिविज्वलन्ति** (चारों ओर से धधकते हुए) **वक्त्राणि** (मुखों में) **विशन्ति** (प्रवेश कर रहे हैं)।

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ 11/29
यथा प्रदीप्तम् ज्वलनम् पतंगा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथा एव नाशाय विशन्ति लोकाः तव अपि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।।

यथा (जैसे) **पतंगाः** (पतंगे) **प्रदीप्तं** (दहकती हुई) **ज्वलनं** (अग्नि में) **नाशाय** (मरने के लिए) **समृद्धवेगाः** (झपटकर) **विशन्ति** (जा गिरते हैं), **तथा** (वैसे) **एव** (ही) **लोकाः** (लोग) **अपि** (भी) **नाशाय** (अपने विनाश के लिए) **समृद्धवेगाः** (झपटते हुए) **तव** (आपके) **वक्त्राणि** (मुखों में) **विशंति** (चले जा रहे हैं)।

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥ 11/30
लेलिह्यसे ग्रसमानः समंतात् लोकान् समग्रान् वदनैः ज्वलद्भिः।
तेजोभिः आपूर्य जगत् समग्रम् भासः तव उग्राः प्रतपन्ति विष्णो।।

विष्णो (हे विषय विकारों विहीन महादेव)! **ज्वलद्भिः** (जलते हुए) **वदनैः** (मुखों से) **समग्रान्** (सब) **लोकान्** (लोगों को) **समंतात्** (चारों ओर से) **ग्रसमानः** (निगलते हुए) **लेलिह्यसे** (चाट रहे हैं)। **तव उग्राः** (आपकी भयंकर) **भासः** (ज्वालाएँ) **समग्रं** (सारे) **जगत्** (संसार को) **तेजोभिः** (तेज से) **आपूर्य** (भरती हुई) **प्रतपन्ति** (तीव्रता से जला रही हैं)।

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपोनमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥ 11/31
आख्याहि मे कः भवान् उग्ररूपः नमः अस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुम् इच्छामि भवंतम् आद्यम् न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।।

देववर (हे देवताओं में श्रेष्ठ महादेव)! **मे** (मुझे) **आख्याहि** (बताइए) {कि} **उग्ररूपः** ({ऐसे} भयंकर रूप वाले) **भवान्** (आप) **कः** (कौन हैं)? **ते** (आपको) **नमः** (प्रणाम) **अस्तु** (है)। **प्रसीद** (प्रसन्न हो जाइए)। **भवन्तं** (आपके)

आद्यं (आदिकालीन रूप को) **विज्ञातुं** (जानना) **इच्छामि** (चाहता हूँ); **हि** (क्योंकि) **तव** (आपके) **प्रवृत्तिं** (क्रियाकलाप को) **न प्रजानामि** ({मैं} नहीं जानता हूँ)।

श्रीभगवानुवाचः– कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ 11/32

कालः अस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः लोकान् समाहर्तुम् इह प्रवृत्तः।
ऋते अपि त्वाम् न भविष्यन्ति सर्वे ये अवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।

लोकक्षयकृत् (संसार का महाविनाश करने वाला) **प्रवृद्धः कालः** (महाकाल) **अस्मि** (मैं हूँ) {और} **इह** {कलियुग के अंतकालीन} (इस {संगमयुग} में) **लोकान्** {सतयुगी} (लोगों को) **समाहर्तुं** (संगठित करने के लिए) **प्रवृत्तः** (लगा हुआ हूँ)। **प्रत्यनीकेषु** (परस्पर विरोधी सम्प्रदायों रूपी सेनाओं में) **ये** (जो) **योधाः** {वाद–विवाद करने वाले} (योद्धा) **अवस्थिताः** (खड़े हैं), **सर्वे** (वे सब) **त्वां** (तेरे) {धर्मयुद्ध} **ऋते** (न करने पर) **अपि** (भी) **न भविष्यन्ति** (नहीं बचेंगे);

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् ।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥ 11/33

तस्मात् त्वम् उत्तिष्ठ यशः लभस्व जित्वा शत्रून् भुंक्ष्व राज्यम् समृद्धम्।
मया एव एते निहताः पूर्वम् एव निमित्तमात्रम् भव सव्यसाचिन्।।

तस्मात् (इसलिए) **त्वं** (तू) **उत्तिष्ठ** (उठ खड़ा हो), **यशः** (कीर्ति) **लभस्व** (प्राप्त कर) {और} **शत्रून्** ({कामादिक} शत्रुओं को) **जित्वा** (जीतकर) **समृद्धं** (धन–सम्पत्ति से भरपूर) {स्वर्गीय} **राज्यं** (राज्य का) **भुंक्ष्व** (भोग कर)। **एते** (ये) {कामक्रोधादि के साकार रूप दुर्योधनादि} **पूर्वं** (पूर्व कल्प में) **एव** (भी) **मया** (मेरे द्वारा) **निहताः** (मारे गए थे), {अतः इस बार भी} **सव्यसाचिन्** {विनाशकारी} (बाएँ हाथ से सरसंधान करने वाले हे अर्जुन)! {तू} **एव** (केवल) **निमित्तमात्रं** (निमित्त मात्र) **भव** (बन जा)।

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ 11/34

द्रोणम् च भीष्मम् च जयद्रथम् च कर्णम् तथा अन्यान् अपि योधवीरान्।
मया हतान् त्वम् जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।

द्रोणं ({शास्त्रज्ञान सिखाने वाले} विद्वान–आचार्य) **च** (और) **भीष्मं** {सर्प की तरह} (भयंकर सन्यासी) **च** (तथा) **जयद्रथं** (भौतिक शरीर रूपी रथ की शक्ति से जीत पाने वाले) {देहाभिमानी यवन} **च** (और) **कर्णं** (कर्ण), **तथा** (उसी तरह) **मया हतान्** (मेरे द्वारा {पहले से ही} मारे गए) **अन्यान्** (दूसरे) **अपि** (भी) **योधवीरान्** (वीर योद्धाओं को) **त्वं** (तुम) **जहि** (मार डालो)। **व्यथिष्ठा मा** (डरो मत) {इन पापियों के पापों से} **युध्यस्व** ({धर्म}युद्ध करो); {क्योंकि तुम्हीं} **रणे** ({धर्म}युद्ध में) **सपत्नान्** ({कामादिक} शत्रुओं को) **जेता** (जीतने वाले) **असि** (हो)।

सञ्जय उवाचः– एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी ।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ 11/35

एतत् श्रुत्वा वचनम् केशवस्य कृतांजलिः वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एव आह कृष्णम् सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।।

केशवस्य (सुन्दर ज्ञान केश वाले परमेश्वर शिव की) **एतत्** (इस) **वचनं** (बात को) **श्रुत्वा** (सुनकर) **किरीटी** (ताजधारी अर्जुन ने) **वेपमानः** (काँपते हुए) **कृतांजलिः** (हाथ जोड़कर) **नमस्कृत्वा** (नमस्कार किया) **भूयः एव** (और फिर) **भीतभीतः** (भयभीत हुआ) **प्रणम्य** (प्रणाम करके) **सगद्गदं** (रूँधी हुई वाणी में) **कृष्णं** (आकर्षणमूर्त शिव से) **आह** (कहा)।

अर्जुन उवाचः– स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ 11/36

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यति अनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशः द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।

हृषीकेश (हे मेरे इन्द्रियों रूपी घोड़ों के स्वामी)! **स्थाने** (यह ठीक ही है) {कि} **तव** (आपके) **प्रकीर्त्या** (उत्तम गुणगान से) **जगत्** (विश्व) **प्रहृष्यति** (प्रसन्न होता है) **च** (और) **अनुरज्यते** (उसमें प्रीति रखता है)। **भीतानि** (डरे हुए) **रक्षांसि** {कामादिक} (राक्षस) **दिशः** (दिशाओं में) **द्रवन्ति** (भाग रहे हैं) **च** (और) **सर्वे** (सब) **सिद्धसंघाः** (सिद्धों के समूह) **नमस्यन्ति** (प्रणाम कर रहे हैं)।

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥ 11/37

कस्मात् च ते न नमेरन् महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणः अपि आदिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वम् अक्षरम् सत् असत् तत्परम् यत्।।

महात्मन् (हे परमात्मन्)! **अनन्त** (हे अन्तरहित) {गुणों वाले}! **देवेश** (देवाधिदेव महादेव)! **जगन्निवास** (हे जगत् के आधार स्वरूप शिवशंकर)! **ब्रह्मणः** (ब्रह्मा के) **अपि** (भी) **आदिकर्त्रे** (प्रथम रचयिता) **च** (और) **गरीयसे** (सबके गुरू), **ते** (आपको) {वे} **कस्मात्** (कैसे) **न नमेरन्** (नमस्कार नहीं करेंगे)? {क्योंकि} **अक्षरं** (अविनाशी), **सत्** (सत्य), **असत्** (असत्य) {और} **तत्परम्** (उन दोनों से परे) **यत्** (जो है), {वह} **त्वम्** (आप हो)।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ 11/38

त्वम् आदिदेवः पुरुषः पुराणः त्वम् अस्य विश्वस्य परम् निधानम्।
वेत्ता असि वेद्यम् च परम् च धाम त्वया ततम् विश्वम् अनन्तरूप।।

त्वं (आप) **आदिदेवः** (सब देवों से भी प्रथम देवादिदेव शिवशंकर महादेव), **पुराणः पुरुषः** (पुरातन पुरुष हो)। **त्वं** (आप) **अस्य** (इस) **विश्वस्य** (जगत् के) **परं** (परम) **निधानम्** (आश्रय हो) **च** (और) {सब कुछ} **वेत्ता** (जानने वाले हो) **च** (तथा) **वेद्यं** (जानने योग्य) **असि** (हो)। **परं धाम** (परे ते परे धाम वाले!) **अनन्तरूप** (हे अनंतगुण रूप)! **विश्वं** (जगत्) **त्वया** {बीज से वृक्ष की तरह} (आपके द्वारा) **ततम्** (विस्तृत हुआ है)।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥ 11/39

वायुः यमः अग्निः वरुणः शशांकः प्रजापतिः त्वम् प्रपितामहः च।
नमः नमः ते अस्तु सहस्रकृत्वः पुनः च भूयः अपि नमः नमः ते।।

वायुः (वायुदेव), **यमः** (यमदेव), **अग्निः** (अग्निदेव), **वरुणः** (वरुणदेव), **शशांकः** (चंद्रमा), **प्रजापतिः** (प्रजापिता ब्रह्मा) **च** (और) **प्रपितामहः** (उनके भी पितामह {अर्थात् शिवबाबा रूप डाडे}) **त्वम्** (आप हो); {अतः} **ते** (आपको) **सहस्रकृत्वः** (हज़ारों बार) **नमः नमः** (नमस्कार! नमस्कार) **अस्तु** (हो!!) **च** (और) **पुनः** (फिर) **अपि** (भी) **ते** (आपको) **नमः नमः** (बारम्बार नमस्कार हो)।

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥ 11/40

नमः पुरस्तात् अथ पृष्ठतः तेः नमः अस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्य अमितविक्रमः त्वम् सर्वम् समाप्नोषि ततः असि सर्वः।।

ते (आपको) **पुरस्तात्** (सामने से) **अथ** (और) **पृष्ठतः** (पीछे से) **नमः** (नमस्कार है)। **सर्व** (हे सब कुछ)! **ते** (आपको) **सर्वतः** (सब ओर से) **एव** (ही) **नमः** (नमस्कार) **अस्तु** (हो)। **अनन्तवीर्य** (हे अमोघ वीर्यवान) {शिवशंकर}! **त्वं** (आप) **अमितविक्रमः** (अनन्त पराक्रमशील हो); **सर्वं** (सबमें) **समाप्नोषि** (योगशक्ति रूप से फैले हुए हो), **ततः** (इसलिए) **सर्वः असि** (सब कुछ हो)।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥ 11/41
सखा इति मत्वा प्रसभम् यत् उक्तम् हे कृष्ण हे यादव हे सखे इति।
अजानता महिमानम् तव इदम् मया प्रमादात् प्रणयेन वा अपि।।

तव (आपकी) **इदं महिमानं** (इस महिमा को) **अजानता** (न जानते हुए) {आपको} **सखा इति मत्वा** (अपना सखा मानकर) **प्रमादात्** (प्रमाद के कारण) **वा** (अथवा) **प्रणयेन** (प्रेम के कारण) **अपि** (भी) **मया** (मेरे द्वारा) **'हे कृष्ण, हे यादव, हे सखे'** ('हे आत्माओं को आकृष्ट करने वाले शिव! हे {विदेशी बनकर आए} यदुवंशी यादव! हे सदा साथ रहने वाले सखा!') **इति** (इस प्रकार) **यत्** (जो {कुछ}) **प्रसभं** (तिरस्कारपूर्वक) **उक्तं** (कहा हो),

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥ 11/42
यत् च अवहासार्थम् असत्कृतः असि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकः अथवा अपि अच्युत तत्समक्षम् तत् क्षामये त्वाम् अहम् अप्रमेयम्।।

च (और {कभी}) **विहारशय्यासनभोजनेषु** (खेल में, बिस्तर पर लेटे हुए या बैठे हुए या भोजन के समय), **एकः** (अकेले में) **अथवा** (अथवा) **तत्समक्षं** (दूसरों के सामने) **अवहासार्थं** (हँसी–मजाक में) **अपि** (भी) **यत्** (जो) **असत्कृतोऽसि** (असम्मान किया हो), **तत्** (उसके लिए) **अच्युत** (हे अव्यक्त भाव अर्थात् ऊँची स्टेज से कभी भी विचलित न होने वाले)! **अप्रमेयं** (जगत से न्यारे शिवबाबा)! **त्वां** (आपसे) **अहं** (मैं) **क्षामये** (क्षमा माँगता हूँ)।

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ 11/43
पिता असि लोकस्य चराचरस्य त्वम् अस्य पूज्यः च गुरुः गरीयान्।
न त्वत्समः अस्ति अभ्यधिकः कुतः अन्यः लोकत्रये अपि अप्रतिमप्रभाव।।

त्वं (आप) **अस्य** (इस) **चराचरस्य** (चेतन और जड़) **लोकस्य** (जगत् के) **पिता** {बीजरूप} (पिता) **असि** (हो) **च** (और) {इस जगत् के} **पूज्यः** (पूजनीय) **गरीयान्** (सर्वश्रेष्ठ) **गुरुः** (गुरू अर्थात् सच्चे जगद्गुरू हो)। **अप्रतिमप्रभाव** (हे अनुपम प्रभाव वाले)! **लोकत्रये** {आदि, मध्य, अंतकालीन पारलोक, स्वर्ग, नरकादि} (तीनों लोकों में) **त्वत्समः** (आपके समान) **अपि** (भी) **न अस्ति** ({कोई} नहीं है), {तो} **अन्यः** (दूसरा कोई) **अभ्यधिकः** (आप से बढ़कर) **कुतः** (कहाँ से होगा)?

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥ 11/44
तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायम् प्रसादये त्वाम् अहम् ईशम् ईड्यम्।
पिता इव पुत्रस्य सखा इव सख्युः प्रियः प्रियायाः अर्हसि देव सोढुम्।।

तस्मात् (इसलिए) **कायं** (शरीर को) **प्रणिधाय** (भली–भाँति अर्पण करते हुए) **प्रणम्य** (खूब नम्र होकर) **ईड्यं** (गुणगान करने योग्य) **त्वां** (आप) **ईशं** (ईश्वर को) **अहं** (मैं) **प्रसादये** (प्रसन्न करता हूँ)। **देव** (हे शिवशंकर महादेव)! **इव** (जैसे) **पिता** (पिता) **पुत्रस्य** (पुत्र के), **सखा सख्युः** (मित्र, मित्र के) {और} **प्रियः** (पति) **प्रियायाः** (पत्नी के) {अपराधों को क्षमा करता है}, **इव**
(उसी भाँति) {आप मेरे अपराधों को} **सोढुं** (सहन करने में) **अर्हसि** (समर्थ हो)।

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ।
तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ 11/45
अदृष्टपूर्वम् हृषितः अस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितम् मनः मे।
तत् एव मे दर्शय देव रूपम् प्रसीद देवेश जगन्निवास।।

अदृष्टपूर्व (पहले कभी न देखे हुए) {इन बुद्धिगत् साक्षात्कारों को} **दृष्ट्वा** (देखकर) **हृषितः** (हर्षित हुआ) **अस्मि** (हूँ), **च** (फिर भी) **भयेन** (भय से) **मे** (मेरा) **मनः** (मन) **प्रव्यथितम्** (अत्यन्त व्याकुल हो गया है); {अतः} **देव** (हे शिवशंकर महादेव)! **तदेव** (वही) **रूपं** (रूप) **मे** (मुझे) **दर्शय** (दिखाइए)। **देवेश** (हे देवों के ईश्वर महादेव)! **जगन्निवास** (जगत के आधार)! **प्रसीद** (प्रसन्न हो जाइए)।

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥ 11/46
किरीटिनम् गदिनम् चक्रहस्तम् इच्छामि त्वाम् द्रष्टुम् अहं तथैव।
तेन एव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्त्रबाहो भव विश्वमूर्ते।।
किरीटिनं {स्वर्ग की ज़िम्मेवारी के} (ताजधारी), **गदिनं** {दृढ़ता रूपी} (गदाधारी), **चक्रहस्तं** {बुद्धि रूपी हाथ में स्व–दर्शन} (चक्रधारी) **त्वां** (आपको) **तथा एवं** (उसी तरह) **द्रष्टुं** (देखने की) **अहम्** (मैं) **इच्छामि** (इच्छा करता हूँ)। **सहस्रबाहो** (हे हज़ार सहयोगी भुजाओं वाले)! **विश्वमूर्ते** (विराट्–विश्वरूप)! **चतुर्भुजेन** ({और हे ब्रह्मा, सरस्वती, जगदम्बा, पार्वती रूपी} चार आत्माओं के रूप में सहयोगी भुजा वाले)! **तेन एव** (उसी) **रूपेण** ({साकार} रूप में) **भव** {प्रगट} (हो जाइए)।

श्रीभगवानुवाचः– मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ 11/47
मया प्रसन्नेन तव अर्जुन इदम् रूपम् परम् दर्शितम् आत्मयोगात्।
तेजोमयम् विश्वम् अनन्तम् आद्यम् यत् मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।।
अर्जुन (हे अर्जुन)! **परं** (श्रेष्ठ) **तेजोमयं** (तेजोमय) **आद्यं** {सतयुग के} (आदिकालीन) **अनन्तं** (अनन्तगुणरूप) **इदं** (यह) **विश्वं रूपं** (विश्व रूप) **मया** (मैंने) **आत्मयोगात्** (अपने योगबल से) **प्रसन्नेन** (प्रसन्नपूर्वक) **तव** (तुमको) **दर्शितं** (दिखाया है), **मे** (मेरा) **यत्** (जो {रूप}) **त्वदन्येन** (तेरे {आदम/एडम या आदिदेव के} अलावा और किसी ने) **न दृष्टपूर्वम्** (पहले नहीं देखा है)।

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ 11/48
न वेदयज्ञाध्ययनैः न दानैः न च क्रियाभिः न तपोभिः उग्रैः।
एवंरूपः शक्यः अहम् नृलोके द्रष्टुम् त्वदन्येन कुरुप्रवीर।।
कुरुप्रवीर (हे कुरुकुलवीर)! **एवंरूपः** (ऐसे रूप वाला) **अहं** (मैं) **न वेदयज्ञाध्ययनैः** (न वेद, यज्ञ और स्वाध्याय से), **न दानैः** (न दान से), **न क्रियाभिः** (न {कर्मकाण्ड की} क्रियाओं द्वारा) **च** (और) **न उग्रैः** (न कठोर) **तपोभिः** ({शरीर की} तपस्याओं से) **त्वदन्येन** (तेरे अतिरिक्त कोई दूसरा) **नृलोके** ({इस} मनुष्य लोक में) **द्रष्टुं** (देखने को) **शक्यः** (समर्थ है)।

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥ 11/49
मा ते व्यथा मा च विमूढभावः दृष्ट्वा रूपम् घोरम् ईदृक् मम इदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनः त्वम् तत् एव मे रूपम् इदम् प्रपश्य।।
मम (मेरा) **ईदृक्** (ऐसा) **इदं** (यह) **घोरं** {प्रलयंकारी शंकर का} (भयंकर) **रूपं** (रूप) **दृष्ट्वा** (देखकर) **ते** (तू) **मा व्यथा** (मत घबरा) **च** (और) **मा विमूढभावः** (न किंकर्तव्यविमूढ़ हो)। **व्यपेतभीः** (भय त्याग कर) **प्रीतमनाः** (प्रसन्न मन वाला) **त्वं** (तू) **पुनः** (फिर से) **मे** (मेरे) **तत्** (उस) **एव** (ही) **इदं रूपं** (इस रूप को) **प्रपश्य** (देख)।

सञ्जय उवाचः– इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ 11/50
इति अर्जुनम् वासुदेवः{वसुदेवः} तथा उक्त्वा स्वकम् रूपम् दर्शयामास भूयः।

आश्वासयामास च भीतम् एनम् भूत्वा पुनः सौम्यवपुः महात्मा।।

इति (इस तरह) **वसुदेवः** (ज्ञान धन–सम्पत्ति देने वाले शिवबाबा ने) **अर्जुनं** (सद्भाग्य अर्जन करने वाले अर्जुन को) **तथा** (इस तरह) **उक्त्वा** (कह कर) **भूयः** (पुनः) **स्वकं** (अपना) **रूपं** (रूप) **दर्शयामास** (दिखाया) **च** (और) **पुनः** (फिर) **सौम्यवपुः** (शांत रूप) **भूत्वा** (होकर) **महात्मा** (महान् आत्मा ने) **भीतं** (भयभीत हुए) **एनं** (इस {अर्जुन} को) **आश्वासयामास** (आश्वासन दिया)।

अर्जुन उवाचः– दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥ 11/51
दृष्ट्वा इदम् मानुषम् रूपम् तव सौम्यम् जनार्दन।
इदानीम् अस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिम् गतः।।

जनार्दन (हे मनुष्यों का आर्तनाद सुनने वाले शिवबाबा)! **तव** (आपका) **इदं** (यह) **सौम्यं** (चंद्र जैसा शांत) **मानुषं** (मनुष्य की आकृति वाला) {आदिमानव आदम} **रूपं** (स्वरूप) **दृष्ट्वा** (देखकर) **इदानीं** (अब) **सचेताः** (सचेत) **संवृत्तः** (हुआ) **अस्मि** (हूँ) {और} **प्रकृतिं** (अपनी स्वाभाविक स्थिति में) **गतः** (आ गया हूँ)।

श्रीभगवानुवाचः– सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ 11/52
सुदुर्दर्शम् इदम् रूपम् दृष्टवान् असि यत् मम।
देवा अपि अस्य रूपस्य नित्यम् दर्शनकांक्षिणः।।

मम (मेरे) **यत्** (जिस) **रूपं** (रूप को) **दृष्टवानसि** ({तूने तीसरे ज्ञान नेत्र से} देखा है), **इदं** (उसे) **सुदुर्दर्शम्** (देख पाना बहुत कठिन है)। **देवाः** ({सब} देव) **अपि** (भी) **नित्यं** (सदैव) **अस्य रूपस्य** (इस रूप को) **दर्शनकांक्षिणः** (देखने के लिए लालायित रहते हैं)।

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ 11/53
न अहम् वेदैः न तपसा न दानेन न च इज्यया।
शक्य एवंविधः द्रष्टुम् दृष्टवान् असि माम् यथा।।

एवंविधः (इस भाँति) **मां** (मुझको) **यथा** (जिस रूप में) **दृष्टवानसि** ({तूने} देखा है), {उस रूप में} **अहं** (मुझे) **न वेदैः** (न वेदों द्वारा), **न तपसा** (न तपस्या द्वारा), **न दानेन** (न दान द्वारा) **च** (और) **न इज्यया** (न यज्ञ द्वारा) {ही} **द्रष्टुं** (देखा) **शक्यः** (जा सकता है);

• यज्ञ–तप–दान आदि करने से मैं (अर्थात् भगवान का यथार्थ रूप) नहीं मिलता हूँ। (मु.8.2.68 पृ.3 मध्यादि)

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ॥ 11/54
भक्त्या तु अनन्यया शक्य अहम् एवंविधः अर्जुन।
ज्ञातुम् द्रष्टुम् च तत्त्वेन प्रवेष्टुम् च परंतप।।

तु (किंतु) **परंतप** (कामादिक शत्रुओं को तपाने वाले) **अर्जुन** (हे अर्जुन)! **अनन्यया** (अव्यभिचारी) **भक्त्या** (भावना के द्वारा) **अहं** (मैं) **एवंविधः** (इस भाँति सम्पूर्ण रूप में) **ज्ञातुं** (जानने–पहचानने), **द्रष्टुं** {तीसरे ज्ञान नेत्र से} (साक्षात्कार करने) **च** (और) **तत्त्वेन** (तत्वपूर्वक) {पंचतत्वों से बने शरीर की गहराई तक} **प्रवेष्टुं** (प्रवेश पाने के) **च** (भी) **शक्यः** (योग्य हूँ)। {तात्पर्य है कि अव्यभिचारी ज्ञान व याद से ही परमात्मा की पूरी पहचान होती है।}

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ 11/55
मत्कर्मकृत् मत्परमः मद्भक्तः संगवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स माम् एति पाण्डव।।

पाण्डव {व्यक्त परमधाम रूपी महातीर्थ माउण्ट आबू में यात्रियों को इकट्ठा करने वाले} (हे पण्डा {शिव परमपिता} के पुत्र)! **यः** (जो) **मत्कर्मकृत्** (मेरे {अर्थात् रुद्र यज्ञ रूप के निमित्त} कर्म करता है), **मत्परमः** (मुझे परमगति मानता है), **संगवर्जितः** (अन्य संगों को त्यागते हुए) **मद्भक्तः** (मुझे भजता है), **सः** (वह) **सर्वभूतेषु** (सब प्राणियों में) **निर्वैरः** (वैरहीन हुआ) **मां** (मुझको) **एति** (प्राप्त करता है)।

अध्याय–12

अर्जुन उवाचः– एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ 12/1
एवम् सततयुक्ता ये भक्ताः त्वाम् पर्युपासते।
ये च अपि अक्षरम् अव्यक्तम् तेषाम् के योगवित्तमाः।।

एवं (इस प्रकार) **सततयुक्ताः** (सदा योगयुक्त हुए) **ये** (जो) **भक्ताः** (भक्तजन) **त्वां** {साकार सौम्य स्वरूप वाले} (आपकी) **पर्युपासते** (सब प्रकार से उपासना करते हैं) **च** (और) **ये** (जो) **अक्षरं** (अविनाशी) **अव्यक्तं** (अव्यक्त अति सूक्ष्म ज्योतिर्लिंगम् स्वरूप को) **अपि** (ही) {याद करते हैं}, **तेषां** (उसमें) **के** (कौन) **योगवित्तमाः** (योग के मर्म को अधिक जानते हैं)?

श्रीभगवानुवाचः– मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ 12/2
मयि आवेश्य मनः ये माम् नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परया उपेताः ते मे युक्ततमा मताः।।

ये (जो) **मयि** (मुझमें) **मनः** (मन को) **आवेश्य** (स्थिर करके) **नित्ययुक्ताः** (सदा योगयुक्त हुए), **परया** (परम) **श्रद्धया** (श्रद्धा से) **उपेताः** (भरकर) **मां** (मुझ) {साकार शंकर में निराकार शिव को} **उपासते** (याद करते हैं), **ते** (वे) **मे** (मेरे) **युक्ततमाः** (सब योगियों में श्रेष्ठतम) **मताः** (माने गए हैं);

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ 12/3
ये तु अक्षरम् अनिर्देश्यम् अव्यक्तम् पर्युपासते।
सर्वत्रगम् अचिन्त्यम् च कूटस्थम् अचलम् ध्रुवम्।।

तु (किंतु) **ये** (जो {योगी}) **अक्षरं** (अविनाशी), **अनिर्देश्यं** (अनिर्वचनीय), **सर्वत्रगं** {संकल्पशक्ति से} (सब जगह पहुँचने वाले), **अचिन्त्यं** {सबके द्वारा} (चिंतन न करने योग्य), **कूटस्थं** {परमधाम रूपी} (शिखर पर स्थित रहने वाले), **अचलं** (अचल), **ध्रुवं** (नित्य) **च** (और) **अव्यक्तं** (अव्यक्त) {सूक्ष्म ज्योतिर्लिंग शिव को} **पर्युपासते** (याद करते हैं),

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ 12/4
संनियम्य इन्द्रियग्रामम् सर्वत्र समबुद्धयः। ते प्राप्नुवन्ति माम् एव सर्वभूतहिते रताः।।

ते (वे {योगी}) **संनियम्येन्द्रियग्रामं** (सब इन्द्रियों को संयम में रखकर) **सर्वत्र** (सब {परिस्थितियों} में) **समबुद्धयः** (एकरस हुए), **सर्वभूतहिते** (सब प्राणियों के कल्याण में) **रताः** (लगे रहने वाले) **मामेव** (मुझको ही) **प्राप्नुवन्ति** (प्राप्त होते हैं)।

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ 12/5
क्लेशः अधिकतरः तेषाम् अव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिः दुःखम् देहवद्भिः अवाप्यते।।

अव्यक्तासक्तचेतसां (अव्यक्त {सूक्ष्म ज्योतिबिंदु स्वरूप} में आसक्त हुए चित्त वाले) **तेषां** (उन {योगियों} को) **क्लेशः** (कठिनाई) **अधिकतरः** (अधिक होती है); **हि** (क्योंकि) **देहवद्भिः** (देहधारियों के द्वारा) **अव्यक्ता** (निराकारी) **गतिः** (गति अर्थात् स्थिति) **दुःखं** (दुःखपूर्वक) **अवाप्यते** (प्राप्त होती है);

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ 12/6

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः। अनन्येन एव योगेन माम् ध्यायन्त उपासते।।

तु (किंतु) **मत्पराः** (मेरे परायण हुए) **ये** (जो {योगी}) **सर्वाणि** (सब) **कर्माणि** (कर्मों को) **मयि** (मुझ {यज्ञ पिता} में) **संन्यस्य** (समर्पण करके) **अनन्येन** (अव्यभिचारी) **योगेन** (याद से) **ध्यायन्तः** (चिन्तन करते हुए) **मां** (मुझको) **एव** (ही) **उपासते** (याद करते हैं),

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥ 12/7

तेषाम् अहम् समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात् पार्थ मयि आवेशितचेतसाम्।।

तेषां (उन) **मय्यावेशितचेतसां** (मेरे में मन–बुद्धि केंद्रित करने वालों का), **पार्थ** (हे पृथ्वीपति)! **मृत्युसंसारसागरात्** (मृत्युसंसारसागर से) **अहं** (मैं) **नचिरात्** (अति शीघ्र) **समुद्धर्ता** (उद्धार करने वाला) **भवामि** (हूँ)।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥ 12/8

मयि एव मन आधत्स्व मयि बुद्धिम् निवेशय।
निवसिष्यसि मयि एव अत ऊर्ध्वम् न संशयः।।

मयि (मेरे {स्वरूप} में) **एव** (ही) **मनः** (मन) **आधत्स्व** (लगा), **मयि** (मेरे में) **बुद्धिं** (बुद्धि को) **निवेशय** (स्थिर कर); **अतः** (इस प्रकार) **ऊर्ध्वं** (ऊर्ध्व {लोक} में) {स्थित} **मयि** (मेरे {निराकारी स्वरूप} में) **एव** (ही) **निवसिष्यसि** (निवास करेगा), **न संशयः** {इसमें कोई} (संदेह नहीं है)।

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय ॥ 12/9

अथ चित्तम् समाधातुम् न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततः माम् इच्छ आप्तुम् धनंजय।।

धनंजय (हे ज्ञानधन जीतने वाले)! **अथ** (यदि) **मयि** (मेरे {अव्यक्त रूप} में) **चित्तं** (मन–बुद्धि को) **स्थिरं** (स्थिरता पूर्वक) **समाधातुं** (लगाने में) **न शक्नोषि** (समर्थ नहीं हैं), **ततः** (तो) **अभ्यासयोगेन** (बारम्बार स्मृति के अभ्यास रूपी योग द्वारा) **मां** (मुझको) **आप्तुं** (पाने की) **इच्छ** (इच्छा कर)।

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ 12/10

अभ्यासे अपि असमर्थः असि मत्कर्मपरमः भव।
मदर्थम् अपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिम् अवाप्स्यसि।।

अभ्यासे ({बार–2 की स्मृति रूप} अभ्यास में) **अपि** (भी) **असमर्थः** (समर्थ न) **असि** (हो) {तो} **मत्कर्मपरमः** (मुझ {यज्ञपिता रूप} के प्रति कर्म करने वाला) **भव** (हो)। **मदर्थं** (मेरे लिए) **कर्माणि** ({अलौकिक} कर्मों को) **कुर्वन्** (करता हुआ) **अपि** (भी) **सिद्धिं** ({विष्णु रूप} सिद्धि को) **अवाप्स्यसि** (पा लेगा)।

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥ 12/11

अथ एतत् अपि अशक्तः असि कर्तुम् मद्योगम् आश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागम् ततः कुरु यतात्मवान्।।

अथ (यदि) **एतत्** (इतना) **अपि** (भी) **कर्तुं** (करने में) **अशक्तः** (अशक्त) **असि** (हो), **ततः** (तो) **मद्योगमाश्रितः** (मेरे अनुशासित सर्व सम्बंधों की शरण लेकर) **यतात्मवान्** (अपने को वश में करता हुआ) **सर्वकर्मफलत्यागं** {लौकिक} (सब कर्मफलों का त्याग) **कुरु** (कर दे)।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ 12/12

श्रेयः हि ज्ञानम् अभ्यासात् ज्ञानात् ध्यानम् विशिष्यते।
ध्यानात् कर्मफलत्यागः त्यागात् शांतिः अनन्तरम्।।

अभ्यासात् ({ज्ञानरहित} अभ्यास से) **ज्ञानं** (ज्ञान) **श्रेयो** (श्रेष्ठ है), **ज्ञानात्** (ज्ञान से) **ध्यानं** (ज्ञान का मंथन) **विशिष्यते** (विशेष है), **ध्यानात्** ({मनन–चिंतन रूप} ध्यान से) **कर्मफलत्यागः** {ईश्वरीय सेवा के} (कर्मफल का त्याग) {श्रेष्ठ है}; **हि** (क्योंकि) **त्यागात्** ({फलाशा का} त्याग करने के) **अनंतरं** (तुरंत बाद) **शांतिः** (शांति) {प्राप्त हो जाती है}।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ 12/13
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ 12/14

अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् मैत्रः करुण एव च।
निर्ममः निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।।
संतुष्टः सततम् योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मयि अर्पितमनोबुद्धिः यः मद्भक्तः स मे प्रियः।।

यः (जो {पुरुष}) **सर्वभूतानां** (सब प्राणियों में) **अद्वेष्टा** (बैर छोड़कर) **मैत्रः** (मित्रता) **च** (और) **करुणः** (दयाभाव वाला है) **एव** (तथा) **निर्ममः** (ममताहीन है), **निरहंकारः** (निरहंकारी है), **समदुःखसुखः** (दुःख–सुख में समान रहता है), **क्षमी** (क्षमावान् है), **सन्तुष्टः** (संतोषी है), **सततं योगी** (सदा योगी है), **यतात्मा** (अपने को वश में रखता है), **दृढनिश्चयः** (अटल निश्चय वाला है), {ऐसा} **मयि** (मेरे में) **अर्पितमनोबुद्धिः** (मन–बुद्धि को अर्पण करने वाला) **मद्भक्तः** (मेरा भक्त) **मे** (मुझे) **प्रियः** (प्यारा लगता है)।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ 12/15

यस्मात् न उद्विजते लोकः लोकात् न उद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तः यः स च मे प्रियः।।

यस्मात् (जिससे) **लोकः** (संसार) **न उद्विजते** (परेशान नहीं होता) **च यः** (और जो) **लोकात्** (संसार से) **न उद्विजते** (परेशान नहीं होता) **च** (और) **यः** (जो) **हर्षामर्षभयोद्वेगैः** (आनन्द, क्रोध, भय और चिंताओं से) **मुक्तः** (मुक्त है)–**सः** (वह {पुरुष}) **मे** (मुझे) **प्रियः** (प्रिय है)।

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ 12/16

अनपेक्षः शुचिः दक्षः उदासीनः गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी यः मद्भक्तः स मे प्रियः।।

यः (जो {पुरुष}) **अनपेक्षः** {एक शिवबाबा' दूसरा न} (कोई की अपेक्षा {आशा} नहीं करने वाला), **शुचिः** (पवित्र), **दक्षः** (कार्यकुशल), **उदासीनः** (पक्षपातरहित), **गतव्यथः** (अपनी मानसिक व्यथाओं से रहित) {और} **सर्वारम्भपरित्यागी** (सब प्रकार के लौकिक कार्यों का त्याग करने वाला है), {ऐसा} **मद्भक्तः** (मेरा भक्त) **मे प्रियः** (मुझे प्रिय है)।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥ 12/17
यः न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः।।

यः (जो {पुरुष}) न **हृष्यति** (न प्रसन्न होता है), **न द्वेष्टि** (न द्वेष करता है), **न शोचति** (न शोक करता है), **न कांक्षति** (न इच्छा करता है) {और} **यः** (जो) **शुभाशुभपरित्यागी** (भले और बुरे, दोनों का परित्याग करने वाला) **भक्तिमान्** (श्रद्धाभक्ति से युक्त है), {ऐसा मेरा भक्त} **मे प्रियः** (मुझे प्रिय है)।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥ 12/18
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥ 12/19
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः।।
तुल्यनिन्दास्तुतिः मौनी संतुष्टः येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिः भक्तिमान् मे प्रियः नरः।।

शत्रौ (शत्रु में) **च** (और) **मित्रे** (मित्र में), **तथा** (उसी तरह) **मानापमानयोः** (मान–अपमान में) **समः** (समान रहने वाला), **शीतोष्णसुखदुःखेषु** (सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख में) {भी} **समः** (समान) **च** (और) **संगविवर्जितः** ({किसी प्रकार की} आसक्ति से रहित), **तुल्यनिन्दास्तुतिः** (निंदा–स्तुति में समान), **मौनी** (अंतर्मुखी), **येन केनचित्** (जो कुछ भी) {सहज–2 मिले उसमें} **संतुष्टः** (सन्तोषी), **अनिकेतः** (अनिश्चित निवास स्थान वाला) {और फिर भी} **स्थिरमतिः** (स्थिर बुद्धि वाला) **भक्तिमान्** (श्रद्धाभावना से युक्त) **नरः** (मनुष्य) **मे प्रियः** (मुझको प्यारा लगता है);

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥ 12/20
ये तु धर्म्यामृतम् इदम् यथा उक्तम् पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्ताः ते अतीव मे प्रियाः।।

तु (परंतु) **ये** (जो) **मत्परमाः** (मेरे परायण हुए) **श्रद्दधानाः** (श्रद्धावान्) **यथोक्तं** (ऊपर कहे गए) **इदं** (इस) **धर्म्यामृतं** (धारणा रूपी अमृत का) **पर्युपासते** (भली–भाँति आचरण करते हैं), **ते भक्ताः** (वे भक्त) **मे** (मुझे) **अतीव प्रियाः** (अति प्यारे हैं)।

अध्याय–13

श्रीभगवानुवाचः– इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ 13/1
इदम् शरीरम् कौन्तेय क्षेत्रम् इति अभिधीयते।
एतत् यः वेत्ति तम् प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।।

कौन्तेय (हे अर्जुन)! **इदं** (यह) **शरीरं** ({मुकर्रर} शरीर {रूपी रथ}) **क्षेत्रं** (क्षेत्र) {यज्ञकुण्ड} **इति** (इस {नाम से}) **अभिधीयते** (कहा जाता है); **एतत्** (इसको) **यः** (जो) **वेत्ति** (जानता है), **तं** (उसको) **तद्विदः** (जानकार लोग) **क्षेत्रज्ञः** ('क्षेत्रज्ञ') **इति** (इस प्रकार) **प्राहुः** (कहते हैं)।

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ 13/2
क्षेत्रज्ञम् च अपि माम् विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः ज्ञानम् यत् तत् ज्ञानम् मतम् मम।।

भारत (हे भरतवंशी)! **सर्वक्षेत्रेषु** (सर्व{सामान्य} क्षेत्र {रूपी शरीरों} में) **क्षेत्रज्ञं** (क्षेत्र का जानने वाला) **अपि** (भी) **मां** (मुझ {शिव} को) **विद्धि** (जानो) **च** (और) **क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः** (क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का) **यत्** (जो) **ज्ञानं** (ज्ञान है), **तत्** (वही) **ज्ञानम्** ({सच्चा} ज्ञान है)–{ऐसा} **मम मतम्** (मेरा मत है)।

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् ।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ 13/3

तत् क्षेत्रम् यत् च यादृक् च यद्विकारि यतः च यत्।
स च यः यत्प्रभावः च तत् समासेन मे शृणु।।

तत् (वह) **क्षेत्रं** (क्षेत्र) **यत्** (जो है), **यादृक्** (जिस प्रकार का है) **च** (तथा) **यद्विकारि** (जो विकार वाला है) **च** (और) **यतः च यत्** (जहाँ से जिस स्वरूप का है) **च** (और) **सः** (वह {क्षेत्र}) **यः** (जो) **च यत्प्रभावः** (और जिस प्रभाव वाला है), **तत्** (वह सब) **समासेन** (संक्षेप में) **मे** (मुझसे) **शृणु** (सुन)।

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ 13/4

ऋषिभिः बहुधा गीतम् छन्दोभिः विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैः च एव हेतुमद्भिः विनिश्चितैः।।

ऋषिभिः (ऋषियों द्वारा) **बहुधा** (अनेक प्रकार से) **विविधैः** (नाना प्रकार के) **छन्दोभिः** (वेदमंत्रों द्वारा) **पृथक्** (पृथक रीति) **च** (और) **हेतुमद्भिः** (प्रमाण सहित) **विनिश्चितैः** (सुनिश्चित) **ब्रह्मसूत्रपदैः** (ब्रह्म सूत्र के पदों द्वारा) **एव** (भी) **गीतम्** (महिमा गायी गई है) –

महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥ 13/5

महाभूतानि अहंकारः बुद्धिः अव्यक्तम् एव च।
इन्द्रियाणि दश एकम् च पंच च इन्द्रियगोचराः।।

महाभूतानि ({पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश}–पंच महाभूत), **अहंकारः** (अहंकार), **बुद्धिः** (बुद्धि) **च एव** (उसी तरह) **एकं** (एक) **अव्यक्तं** (अव्यक्त {मन सहित}) **दश** (दस) **इन्द्रियाणि** (इन्द्रियाँ) **च** (और) **पंच** (पाँच) **इन्द्रियगोचराः** (इन्द्रियों के विषय–शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध),

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥ 13/6

इच्छा द्वेषः सुखम् दुःखम् संघातः चेतना धृतिः। एतत् क्षेत्रम् समासेन सविकारम् उदाहृतम्।।

इच्छा (इच्छा), **द्वेषः** (द्वेष), **सुखं** (सुख), **दुःखं** (दुःख), **चेतना** (स्मृति शक्ति), **धृतिः** (धारणा शक्ति) {आदि द्वंद्व और इन सबका} **संघातः** (समुदाय रूप पिण्ड)–**एतत्** (यह) **समासेन** (संक्षेप में) **सविकारं** (विकार सहित) **क्षेत्रं** (क्षेत्र) **उदाहृतम्** (कहा गया है)।

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ 13/7

अमानित्वम् अदम्भित्वम् अहिंसा क्षांतिः आर्जवम्। आचार्योपासनम् शौचम् स्थैर्यम् आत्मविनिग्रहः।।

अमानित्वं (निर्मानभाव), **अदम्भित्वं** (पाखण्डहीनता), **अहिंसा** (दुःख न देना), **क्षांतिः** (सहनशीलता), **आर्जवं** (सरलता), **आचार्योपासनं** (स्मृतिपूर्वक शिवाचार्य के पास रहना), **शौचं** (आंतरिक और बाह्य शुद्धि), **स्थैर्यं** (स्थिरता) {और} **आत्मविनिग्रहः** (आत्मसंयम);

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ 13/8

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् अनहंकार एव च। जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।।

इन्द्रियार्थेषु (इन्द्रियों के विषयों में) **वैराग्यं** (वैराग्य), **अनहंकारः** (निरहंकारी भाव) **च एव** (और) **जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्** (जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा, बीमारी और दुःखों के दोषों को समझना);

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ 13/9

असक्तिः अनभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु। नित्यम् च समचित्तत्वम् इष्टानिष्टोपपत्तिषु।।

असक्तिः (अनासक्ति), **पुत्रदारगृहादिषु** (पुत्र, स्त्री, घर आदि में) **अनभिष्वंगः** (मोह न होना) **च** (और) **इष्टानिष्टोपपत्तिषु** (चाही–अनचाही घटनाओं में) **नित्यं** (सदा) **समचित्तत्वम्** (एकरस रहना);

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ 13/10

मयि च अनन्ययोगेन भक्तिः अव्यभिचारिणी। विविक्तदेशसेवित्वम् अरतिः जनसंसदि।।

अनन्ययोगेन (अनन्य सम्बंध से) **मयि** (मेरे में) **अव्यभिचारिणी** (अव्यभिचारी) **भक्तिः** (भक्तिभाव), **विविक्तदेशसेवित्वं** {मन–बुद्धि द्वारा} (एकांत स्थान– {परमधाम} में रहना) **च** (और) **अरतिर्जनसंसदि** (मनुष्यों की भीड़भाड़ में अरूचि);

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥ 13/11

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतत् ज्ञानम् इति प्रोक्तम् अज्ञानम् यत् अतः अन्यथा।।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं (सदैव आत्मज्ञान में लगे रहना), **तत्त्वज्ञानार्थदर्शनं** (सृष्टि सम्बंधी तत्व ज्ञान का अर्थ समझना)–**एतत्** (7वें श्लोक से लेकर इतना) **ज्ञानमिति** ('ज्ञान ऐसा') **प्रोक्तम्** (कहा गया है)। **अतः अन्यथा** (इसके अतिरिक्त) **यत्** (जो) {कुछ भी है}, **अज्ञानम्** (अज्ञान है)।

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ 13/12

ज्ञेयम् यत् तत् प्रवक्ष्यामि यत् ज्ञात्वा अमृतम् अश्नुते।
अनादिमत् परम् ब्रह्म न सत् तत् न असत् उच्यते।।

यत् (जो) **ज्ञेयं** (जानने योग्य है), **यत्** (जिसे) **ज्ञात्वा** (जानकर) **अमृतं** (स्वर्ग का) **अश्नुते** (अनुभव करता है), **तत्** (उसे) **प्रवक्ष्यामि** ({मैं} कहता हूँ)। **तत्** (वह) **अनादिमत्** (आदिरहित) **परं ब्रह्म** (परब्रह्म परमात्मा) **न सत्** (न {परमाणुवत्} सत् है) {और} **न असत्** (न असत्) **उच्यते** (कहा जाता है)।

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ 13/13

सर्वतःपाणिपादम् तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतःश्रुतिमत् लोके सर्वम् आवृत्य तिष्ठति।।

{पुरुषोत्तम स्वर्णिम संगमयुग में} **तत्** (वह {निराकार स्टेज वाला परं ब्रह्म परमेश्वर}) **सर्वतःपाणिपादं** (सब ओर हाथ–पैर वाला है), **सर्वतोऽक्षिशिरोमुखं** (सब ओर आँख, मस्तक और मुख वाला) {और} **सर्वतःश्रुतिमत्** (सब ओर कान वाला है) {तथा} **लोके** (संसार में) **सर्वं** (सबको) **आवृत्य** (आवृत करके) **तिष्ठति** (रहता है)।

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥ 13/14

सर्वेन्द्रियगुणाभासम् सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। असक्तम् सर्वभृत् च एव निर्गुणम् गुणभोक्तृ च।।

{मुकर्रर रथ में प्रवेश करने पर} **सर्वेन्द्रियगुणाभासं** (जिस {शिवशंकर} में सब इन्द्रियों के गुणों का आभास होता है), {फिर भी} **सर्वेन्द्रियविवर्जितं** (सब इन्द्रियों से रहित है), **असक्तं** (अनासक्त) **च एव** (होने पर भी) **सर्वभृत्** (सबका भरण–पोषण करने वाला है) **च** (और) **निर्गुणं** ({प्रकृति के सत–रज–तम तीन} गुणों से रहित है), {फिर भी} **गुणभोक्तृ** (उनका उपभोग करने वाला है),

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥ 13/15
बहिः अन्तः च भूतानाम् अचरम् चरम् एव च।
सूक्ष्मत्वात् तत् अविज्ञेयम् दूरस्थम् च अन्तिके च तत्।।

तत् (वह) {परमपिता परमात्मा शिवशंकर योगशक्ति रूप में} **भूतानां** (प्राणियों के) **बहिः** (बाहर) {और} **अंतः** (अंदर) {है}, **अचरं** ({वह} अचल) **च** (और) **चरं एव** (चलायमान भी है), **सूक्ष्मत्वात्** (सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु आत्म स्टेज होने से) **तत्** (उसे) **अविज्ञेयम्** ({अज्ञानियों द्वारा} जाना नहीं जाता) **च** (और) **तत्** (वह) **दूरस्थं** {आत्मस्थिति से} (दूर {परमधाम} में स्थित है), **चान्तिके** (फिर भी {ज्ञानियों के} निकट है)।

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥ 13/16
अविभक्तम् च भूतेषु विभक्तम् इव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तत् ज्ञेयम् ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।।

तत् (वह {परमपिता परमात्मा याद की शक्ति रूप से}) **अविभक्तं** (अखण्ड अर्थात् अविभाज्य है), **च** (फिर भी) **भूतेषु** (प्राणियों में) **विभक्तं** {जैसे काम वैसे नाम–रूप से} (विभक्त हुआ) **इव** (सा) **स्थितम्** (रहता है) **च** (और) {इस प्रकार} **भूतभर्तृ** (प्राणियों का भरण–पोषण करने वाला {प्रवृत्तिमार्गीय अर्धनारीश्वर विष्णु}), **ग्रसिष्णु** (विनाशकर्ता शंकर) **च** (और) **प्रभविष्णु** (उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा–सरस्वती) **ज्ञेयम्** (माना जाता है)।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥ 13/17
ज्योतिषाम् अपि तत् ज्योतिः तमसः परम् उच्यते।
ज्ञानम् ज्ञेयम् ज्ञानगम्यम् हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।

तत् (वह {परमपिता परमात्मा}) **ज्योतिषामपि** (ज्योतिमान नक्षत्रों की भी) **ज्योतिः** (ज्योति है), **तमसः** (अंधकार से) **परं** (परे) **उच्यते** (कहा जाता है)। **ज्ञानं** ({वह} ज्ञान है), **ज्ञेयं** (जानने योग्य है), **ज्ञानगम्यं** (ज्ञान द्वारा ही पाने योग्य है) {और} **सर्वस्य** (सबके) **हृदि** ({मन–बुद्धि रूप} अंतःकरण में) {योगशक्ति से} **विष्ठितम्** (विराजमान है)।

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥ 13/18
इति क्षेत्रम् तथा ज्ञानम् ज्ञेयम् च उक्तम् समासतः।
मद्भक्त एतत् विज्ञाय मद्भावाय उपपद्यते।।

इति (इस प्रकार) **क्षेत्रं** {मुकर्रर रथ अर्थात् शरीर रूपी} (क्षेत्र) **तथा** (तथा) **ज्ञानं** (ज्ञान) **च** (और) **ज्ञेयं** (जानने योग्य परमपिता परमात्मा शिवशंकर को) **समासतः** (संक्षेप में) **उक्तम्** (कहा गया है)। **मद्भक्तः** (मुझे याद करने वाला) **एतत्** (इसको) **विज्ञाय** (जानकर) **मद्भावाय** (मेरे {ईशित्व अर्थात् शासनकर्ता} भाव को) **उपपद्यते** (प्राप्त करता है)।

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ॥ 13/19
प्रकृतिम् पुरुषम् च एव विद्धि अनादी उभौ अपि।
विकारान् च गुणान् च एव विद्धि प्रकृतिसंभवान्।।

प्रकृतिं ({जड़त्व भाव वाली} प्रकृति को) **च** (और) **पुरुषं** ({चेतन} आत्मा को)–**उभौ** (दोनों को) **अपि** (ही) **अनादी** (अनादि) **एव** (ही) **विद्धि** (जानो) **च** (और) **विकारान्** (विकारों को) **च** (तथा) **गुणान्** (तीनों गुणों को) **एव** (भी) **प्रकृतिसम्भवान्** (प्रकृति से उत्पन्न हुआ) **विद्धि** (जानो)।

कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥ 13/20

कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिः उच्यते। पुरुषः सुखदुःखानाम् भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते।।

प्रकृतिः (प्रकृति को) **कार्यकरणकर्तृत्वे** ({शरीर रूप} कार्य और इन्द्रिय रूप साधन {करण} की रचना में) **हेतुः** (कारण रूप) **उच्यते** (कहा जाता है) {और} **पुरुषः** (आत्मा को) **सुखदुःखानां** (सुख–दुःख का) **भोक्तृत्वे** (भोग स्वरूप अनुभव करने में) **हेतुः उच्यते** (कारण रूप कहा जाता है) {अर्थात् सुख–दुःख का अनुभव आत्मा को ही होता है, जड़ प्रकृति को नहीं};

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ 13/21

पुरुषः प्रकृतिस्थः हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्। कारणम् गुणसंगः अस्य सदसद्योनिजन्मसु।।

हि (क्योंकि) **प्रकृतिस्थः** ({जड़} प्रकृति में स्थित हुआ) **पुरुषः** (आत्मा) **प्रकृतिजान्** (प्रकृति से उत्पन्न हुए) **गुणान्** (गुणों को) **भुंक्ते** (भोगता है)। **गुणसंगः** ({इन सत्वादि} गुणों में आसक्ति) {ही} **अस्य** (इस {आत्मा} के) **सदसद्योनिजन्मसु** ({सतयुगी} सत् और {कलहयुगी} असत् योनियों में जन्म लेने का) **कारणं** (कारण है)।

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥ 13/22

उपद्रष्टा अनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मा इति च अपि उक्तः देहे अस्मिन् पुरुषः परः।।

अस्मिन् देहे (इस {प्रजापिता ब्रह्मा की} देह में) {स्थित} **परः पुरुषः** (परम पुरुष) **उपद्रष्टा** (समीप से देखने वाला), **अनुमन्ता** (कार्यों की अनुमति देने वाला), **भर्ता** {यज्ञ वत्सों का} (भरण–पोषण करने वाला), **भोक्ता** (भोग की वासना लेने वाला), **महेश्वरः** (महान् ईश्वर शिव) **च** (और) **परमात्मा**✧ (परमात्मा {रूपी परम पार्टधारी अर्थात् हीरो पार्टधारी}) **इति उक्तः** (इस तरह कहा जाता है)। ✧ अर्थात् परमपिता शिव है और परमात्मा शंकर है।

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥ 13/23

य एवम् वेत्ति पुरुषम् प्रकृतिम् च गुणैः सह। सर्वथा वर्तमानः अपि न स भूयः अभिजायते।।

यः (जो {व्यक्ति}) **एवं** (इस प्रकार) **पुरुषं** (आत्मा) **च** (और) **प्रकृतिं** (प्रकृति को) **गुणैः** (गुणों के) **सह** (साथ) **वेत्ति** (जान लेता है), **सः** (वह) **सर्वथा** (सब प्रकार) **वर्तमानः** (कार्य आवर्तन करता हुआ) **अपि** (भी) **भूयः** (पुनः) {इस दुःखी संसार में} **न अभिजायते** (जन्म नहीं लेता)।

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
अन्ये साङ्ख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ 13/24

ध्यानेन आत्मनि पश्यन्ति केचित् आत्मानम् आत्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन च अपरे।।

केचित् (कुछ लोग) **ध्यानेन** (गुणों के मनन–चिंतन द्वारा), **अन्ये** (दूसरे) **सांख्येन** (ज्ञान द्वारा), {कोई} **योगेन** ({ईश्वरीय} याद द्वारा) **चापरे** (और अन्य कोई) **कर्मयोगेन** (ईश्वरीय सेवा कर्म करते हुए) **आत्मना** (अपने मन–बुद्धि से) **आत्मानं** (ज्योतिबिंदु आत्मा को) **आत्मनि** (अपने अंदर) {ही} **पश्यन्ति** (देखते हैं)। {ईश्वरीय पढ़ाई के चार विषयः– ज्ञान, योग, धारणा और सर्विस}

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥ 13/25
अन्ये तु एवम् अजानन्तः श्रुत्वा अन्येभ्यः उपासते।
ते अपि च अतितरन्ति एव मृत्युम् श्रुतिपरायणाः।।

तु (किंतु) **अन्ये** (कुछ अन्य) {शास्त्रवादी या कर्मकाण्डी आदि लोग} **एवं** (ऐसा) **अजानन्तः** (न जानते हुए) **अन्येभ्यः** (दूसरों से) **श्रुत्वा** (सुनकर), {न कि स्वयं देखकर–अनुभूति करके}, **उपासते** (उपासना करते हैं) **च** (और) **ते** (वे) **श्रुतिपरायणाः** (सुनने–सुनाने वालों के आश्रित होने वाले), {न कि मत्परायण}, **अपि** (भी) {सामान्यतया} **मृत्युं** (मृत्युलोक को) **अतितरन्ति एव** (पार कर ही जाते हैं)।

यावत्सञ्जायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥ 13/26
यावत् संजायते किंचित् सत्त्वम् स्थावरजंगमम्। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् तत् विद्धि भरतर्षभ।।

भरतर्षभ (भरतश्रेष्ठ अर्जुन)! **यावत्** (जो) **किंचित्** (कुछ) **स्थावरजंगमं** (जड़–चेतन) **सत्त्वं** (पदार्थ) **संजायते** (उत्पन्न होता है), **तत्** (वह {सब}) **क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्** {मुकर्रर शरीर रूपी} (प्रकृति और परमपुरुष शिव–शंकर के सम्बंध से) {उत्पन्न हुआ} **विद्धि** (जान)।

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥ 13/27
समम् सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तम् परमेश्वरम्। विनश्यत्सु अविनश्यन्तम् यः पश्यति स पश्यति।।

यः (जो) **विनश्यत्सु** ({कल्पांत में} विनाश होते हुए) **सर्वेषु** (सब) **भूतेषु** (प्राणियों में) {योगशक्ति द्वारा} **समं** (समान भाव से {अपक्षपाती भाव से}) **तिष्ठन्तं** (बैठने वाले) **अविनश्यन्तं** (अविनाशी) **परमेश्वरं** (परमेश्वर {शिव–शंकर} को) **पश्यति** (देखता है), **सः** (वही) **पश्यति** ({ठीक} देखता है);

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥ 13/28
समम् पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितम् ईश्वरम्।
न हिनस्ति आत्मना आत्मानम् ततः याति पराम् गतिम्।।

हि (क्योंकि) **सर्वत्र** (सब {परिस्थितियों} में) **समवस्थितमीश्वरं** (समान रूप से {योगशक्ति द्वारा} स्थिर रहने वाले ईश्वर को) **समं** (समान {आत्मभाव से}) **पश्यन्** (देखता हुआ) **आत्मना** (अपने मन के {सत् संकल्पों} द्वारा) **आत्मानं** (आत्मा का) **न हिनस्ति** (घात नहीं करता) {और} **ततः** (तब) **परां गतिं** ({विष्णु रूप} परमगति को) **याति** (पा लेता है)

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥ 13/29
प्रकृत्या एव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः।
यः पश्यति तथा आत्मानम् अकर्तारम् स पश्यति।।

च (और) **यः** (जो {पुरुष}) **कर्माणि** (कर्मों को) **सर्वशः** (सब प्रकार से) **प्रकृत्या** (आत्मा के अनादि निश्चित स्वभाव के द्वारा) {पहले से} **एव** (ही) **क्रियमाणानि** (किया हुआ) **पश्यति** (देखता है) **तथा** (और इसी तरह) **आत्मानं** (अपने को) **अकर्तारं** (अकर्ता) {मानता है}, **स पश्यति** (वह {ठीक} देखता है)।

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ 13/30
यदा भूतपृथग्भावम् एकस्थम् अनुपश्यति। तत एव च विस्तारम् ब्रह्म संपद्यते तदा।।

यदा (जब) {व्यक्ति} **भूतपृथग्भावं** (प्राणियों की भिन्नता को) **एकस्थं** (एक बीजरूप परमात्मा में स्थित) **अनुपश्यति** (देखता है) **च** (और) **ततः** (उस {बीज} से) **एव** (ही) **विस्तारं** {सृष्टि वृक्ष के} (विस्तार को) {समझ लेता है}, **तदा** (तब) {उसे} **ब्रह्म** (ब्रह्मलोक) **सम्पद्यते** (प्राप्त हो जाता है)।

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ 13/31

अनादित्वात् निर्गुणत्वात् परमात्मा अयम् अव्ययः।
शरीरस्थः अपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते।।

कौन्तेय (हे कुंती पुत्र अर्जुन)! **अयं** (यह) **परमात्मा** (परमपिता परमात्मा शिवशंकर) **अनादित्वात्** (अनादि होने से) {और} **निर्गुणत्वात्** (तीन गुणों के समुदाय से रहित अर्थात् अप्रभावित होने के कारण) **अव्ययः** (क्षयरहित है), {जिससे} **शरीरस्थः** {प्रजापिता ब्रह्मा के} (शरीर में रहते हुए) **अपि** (भी) **न करोति** (न कर्म करता है), **न लिप्यते** (न उनमें लिप्त होता है)।

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ 13/32

यथा सर्वगतम् सौक्ष्म्यात् आकाशम् न उपलिप्यते।
सर्वत्र अवस्थितः देहे तथा आत्मा न उपलिप्यते।।

यथा (जैसे) **सर्वगतं** (सब जगह पहुँचने वाला) **आकाशं** (आकाश) **सौक्ष्म्यात्** (सूक्ष्म होने से) **न उपलिप्यते** (नहीं जाना जाता), **तथा** (उसी तरह) **देहे** (शरीर में) **सर्वत्र** (सब जगह) **अवस्थितः** {योगशक्ति से} (स्थित हुआ) **आत्मा** (अति सूक्ष्म ज्योतिबिंदु आत्मा) **नोपलिप्यते** (उपलब्ध नहीं होता)।

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥ 13/33

यथा प्रकाशयति एकः कृत्स्नम् लोकम् इमम् रविः।
क्षेत्रम् क्षेत्री तथा कृत्स्नम् प्रकाशयति भारत।।

भारत (हे भारत)! **यथा** (जिस तरह) **एकः रविः** (एक सूर्य) {एक ही जगह रहकर} **इमं** (इस) **कृत्स्नं** (सम्पूर्ण) **लोकं** (संसार को) **प्रकाशयति** (प्रकाशित करता है), **तथा** (उसी प्रकार) **क्षेत्री** (ज्योतिर्बिन्दु आत्मा) {भी भृकुटि–मध्य में रहकर} **कृत्स्नं** (सारे) **क्षेत्रं** (शरीर को) **प्रकाशयति** (प्रकाशित करता है)।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ 13/34

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः एवम् अन्तरम् ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षम् च ये विदुः यान्ति ते परम्।।

एवं (इस प्रकार) **ये** (जो {लोग}) **क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः** (शरीर रूपी प्रकृति और उसके ज्ञाता परमात्मा के) **अन्तरं** (अन्तर को) **च** (और) **भूतप्रकृतिमोक्षं** (सब प्राणियों के प्रकृति से मुक्त होने को) **ज्ञानचक्षुषा** (ज्ञान–नेत्रों द्वारा) **विदुः** (जान लेते हैं), **ते** (वे) **परं** (परम पद विष्णुलोक को) **यान्ति** (प्राप्त करते हैं)।

अध्याय–14

श्रीभगवानुवाचः– परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥ 14/1

परम् भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानाम् ज्ञानम् उत्तमम्।
यत् ज्ञात्वा मुनयः सर्वे पराम् सिद्धिम् इतः गताः।।

भूयः (पुनः), **ज्ञानानां** (सब ज्ञानों में) **उत्तमं** (उत्तम) **परं** (श्रेष्ठ) **ज्ञानं** (ज्ञान) **प्रवक्ष्यामि** (बताता हूँ), **यत्** (जिसे) **ज्ञात्वा** (जानकर) {पूर्वकल्प में भी} **सर्वे मुनयः** (सब मुनिजन) **इतः** (इस {नरकलोक} से) **परां सिद्धिं** (परम सिद्धि को) **गताः** (पहुँचे थे)।

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ 14/2

इदम् ज्ञानम् उपाश्रित्य मम साधर्म्यम् आगताः। सर्गे अपि न उपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।।

इदं (इस) **ज्ञानं** (ज्ञान का) **उपाश्रित्य** (आश्रय लेकर) **मम** (मेरे) **साधर्म्यं** (समान {निराकारी–निर्विकारी} गुणधर्म को) **आगताः** (प्राप्त हुए) {प्राणी} **सर्गे** {इस दुःखी} (संसार में) **न उपजायन्ते** (उत्पन्न नहीं होते) **च** (और) **प्रलये** (सृष्टि के महाविनाश में) **अपि** (भी) **न व्यथन्ति**❁ (दुःखी नहीं होते)। ❁ कयामत में खुदा के बन्दे दुखी नहीं होते। (कुरान)

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ 14/3

मम योनिः महत् ब्रह्म तस्मिन् गर्भम् दधामि अहम्। सम्भवः सर्वभूतानाम् ततः भवति भारत।।

भारत (हे अर्जुन)! **महद्ब्रह्म** {मुकर्रर स्थ रूपी} (महतत्व अथवा परम्ब्रह्म) **मम** (मेरी) **योनिः** (योनि है); **अहं** (मैं) **तस्मिन्** (उसमें) {महाविनाश के समय} **गर्भं** (समस्त ज्योतिबिंदु आत्माओं के ज्ञान का गर्भ) **दधामि** (डालता हूँ)। **ततः** (उससे) **सर्वभूतानां** (सब प्राणियों की) **सम्भवः** (उत्पत्ति) **भवति** (होती है)।

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ 14/4

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः। तासाम् ब्रह्म महत् योनिः अहम् बीजप्रदः पिता।।

कौन्तेय (हे कुन्तीपुत्र अर्जुन)! **सर्वयोनिषु** (सब योनियों में) **याः** (जो) **मूर्तयः** (देह की आकृतियाँ) **सम्भवन्ति** (उत्पन्न होती हैं), **तासां** (उन सबकी) **योनिः** (योनि रूपा माता) **महत् ब्रह्म** (महतत्व मुकर्रर स्थ रूपी परं ब्रह्म है) {और} **अहं** (मैं {शिव}) **बीजप्रदः** (ज्योतिबिंदु आत्माओं का ज्ञानवीर्य रूपी बीज डालने वाला) **पिता** (पिता हूँ)।

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ 14/5

सत्त्वम् रजः तमः इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनम् अव्ययम्।।

महाबाहो (दीर्घबाहु अर्जुन)! **सत्त्वं** (सत्वगुण), **रजः** (रजोगुण) {और} **तमः** (तमोगुण)–**इति** (ये) {क्रमशः} **प्रकृतिसम्भवाः** (प्रकृति स्वभाव से उत्पन्न हुए) **गुणाः** (तीनों गुण) **अव्ययं** (अविनाशी) **देहिनं** (आत्मा को) **देहे** (शरीर में) **निबध्नन्ति** (बाँधते हैं)।

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ 14/6

तत्र सत्त्वम् निर्मलत्वात् प्रकाशकम् अनामयम्। सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन च अनघ।।

अनघ (हे निष्पाप)! **तत्र** (उन {गुणों} में) **निर्मलत्वात्** (निर्मल होने से) **प्रकाशकम्** ({ज्ञान} प्रकाश करने वाला) {और} **अनामयं** (दुःखरहित) **सत्त्वं** (सत्वगुण), **ज्ञानसंगेन** (ज्ञान के प्रति आसक्ति होने से) **च** (और) **सुखसंगेन** (सुख की आसक्ति होने से) **बध्नाति** {आत्मा को सतयुगी दिव्य शरीर में} (बाँधता है)।

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥ 14/7

रजः रागात्मकम् विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्। तत् निबध्नाति कौन्तेय कर्मसंगेन देहिनम्।।

कौन्तेय (हे कुन्ती पुत्र)! **रागात्मकं** (अनुरागस्वरूप) **रजः** (रजोगुण को)
तृष्णासंगसमुद्भवं (लोभ और आसक्ति से उत्पन्न हुआ) **विद्धि** (जान) {और} **तत्** (वह {रजोगुण}) **देहिनं** (आत्मा को) **कर्मसंगेन** ({सांसारिक} कर्मों के प्रति आसक्ति होने से) {रजोगुणी द्वापरयुगी विकर्मी शरीर में} **निबध्नाति** (बाँधता है)।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥ 14/8

तमः तु अज्ञानजम् विद्धि मोहनम् सर्वदेहिनाम्। प्रमादालस्यनिद्राभिः तत् निबध्नाति भारत।।

भारत (हे {ज्ञान की रोशनी में रत रहने वाले} भारत)! **सर्वदेहिनां** (सब देहधारियों को) **मोहनं** (मूढ़ बनाने वाले) **तमः** (तमोगुण को) **तु** (तो) **अज्ञानजं** (अज्ञान से उत्पन्न हुआ) **विद्धि** (जान)। **तत्** (वह {तमोगुण}) **प्रमादालस्यनिद्राभिः** (लापरवाही, आलस्य और निद्रा द्वारा) {आत्मा रूपी अण्डे को कलियुगी अत्यंत दुखदायी तामसी शरीर में} **निबध्नाति** (बाँधता है)।

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥ 14/9

सत्त्वम् सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत। ज्ञानम् आवृत्य तु तमः प्रमादे संजयति उत।।

भारत (हे भारत)! **सत्त्वं** (सत्वगुण) **सुखे** ({स्वर्गीय} सुख में) {और} **रजः** (रजोगुण) **कर्मणि** ({द्वापरयुगी सांसारिक} कर्मों में) **संजयति** (लगाता है); **तु** (किंतु) **तमः** (तमोगुण) **ज्ञानं** (बुद्धि को) **आवृत्य** (ढककर) **प्रमादे** (गफलत में) **उत** (भी) **संजयति** (डाल देता है)।

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ 14/10

रजः तमः च अभिभूय सत्त्वम् भवति भारत। रजः सत्त्वम् तमः च एव तमः सत्त्वम् रजः तथा।।

भारत (हे भारत)! {सतयुग–त्रेता में} **रजः तमः च** (रजो और तमोगुण को) **अभिभूय** (दबाकर) **सत्त्वं** (सत्वगुण) **भवति** (प्रगट हो जाता है)। {द्वापर में} **सत्त्वं तमः च** (सत्व और तमोगुण को) {दबाकर} **रजः** (रजोगुण) **तथा** (तथा) {कलियुग में} **सत्त्वं रजः** (सत्व और रजोगुण को) {दबाकर} **तमः** (तमोगुण) {प्रबल हो जाता है}।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ 14/11

सर्वद्वारेषु देहे अस्मिन् प्रकाशः उपजायते।
ज्ञानम् यदा तदा विद्यात् विवृद्धम् सत्त्वम् इति उत।।

यदा (जब) **अस्मिन्** (इस) **देहे** (शरीर के) **सर्वद्वारेषु** (सभी इन्द्रिय रूप द्वारों में) {अर्थात् हरेक इन्द्रिय से कर्म करते हुए} **ज्ञानं प्रकाशः** (ज्ञान रूपी प्रकाश) **उपजायते** (उत्पन्न होने लगता है), **तदा** (तब) **उत** (अवश्य ही) **सत्त्वं** (सत्वगुण) **विवृद्धं** (बढ़ गया है), **इति** (ऐसा) **विद्यात्** (जान ले)।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ 14/12

लोभः प्रवृत्तिः आरम्भः कर्मणाम् अशमः स्पृहा। रजसि एतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।।

भरतर्षभ (हे भरत {अर्थात् विष्णु वंश में} श्रेष्ठ)! **रजसि** (रजोगुण) **विवृद्धे** (बढ़ जाने पर) **लोभः** (लोभ), **प्रवृत्तिः** {सांसारिक} (प्रवृत्ति), **कर्मणां** (कर्मों की) **आरम्भः** (शुरुआत), **अशमः** (अशांति) {और} **स्पृहा** (लालसा)–**एतानि** (ये सब) **जायन्ते** (उत्पन्न होते हैं)।

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।

तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ 14/13

अप्रकाशः अप्रवृत्तिः च प्रमादः मोह एव च। तमसि एतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन।।

कुरुनन्दन (हे कुरुनन्दन)! **तमसि** (तमोगुण) **विवृद्धे** (बढ़ जाने पर) **अप्रकाशः** (अज्ञानान्धकार), **अप्रवृत्तिः** (कार्यों में मन न लगना) **च** (और) **प्रमादः** (लापरवाही) **च** (और) **मोहः** (दैहिक लगाव)–**एतानि** (ये सब) **एव** (ही) **जायन्ते** (उत्पन्न होते हैं)।

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ 14/14

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयम् याति देहभृत्। तदा उत्तमविदाम् लोकान् अमलान् प्रतिपद्यते।।

{कल्पांत में} **यदा** (जब) **देहभृत्** (देहधारी मनुष्य) **सत्त्वे** (सत्वगुण) **प्रवृद्धे** (बढ़ जाने पर) **प्रलयं** (प्रलयकालीन अन्तिम मृत्यु को) **याति** (पाता है), **तदा** (तब) **तु** (तो) {वह} **उत्तमविदां** (पुरुषोत्तम {परमात्मा} को जानने वालों के) **अमलान्** (निर्मल) {सतयुगी} **लोकान्** (लोकों को) **प्रतिपद्यते** (प्राप्त करता है)।

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ 14/15

रजसि प्रलयम् गत्वा कर्मसंगिषु जायते। तथा प्रलीनः तमसि मूढयोनिषु जायते।।

रजसि (रजोगुण में) **प्रलयं गत्वा** (प्रलयकालीन महामृत्यु को पाकर) **कर्मसंगिषु** {सांसारिक} (कर्मों में आसक्ति वाले {द्वापरयुगी मनुष्यों} में) **जायते** (उत्पन्न होता है), **तथा** (उसी प्रकार) **तमसि** (तमोगुणी अवस्था में) **प्रलीनः** (प्रलयकालीन महामृत्यु को प्राप्त हुआ) **मूढयोनिषु** ({कलहयुगी} मूढ़मति वाले राक्षसों में) **जायते** (उत्पन्न होता है)। **{अंत मते सो गते।}**

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ 14/16

कर्मणः सुकृतस्य आहुः सात्त्विकम् निर्मलम् फलम्।
रजसः तु फलम् दुःखम् अज्ञानम् तमसः फलम्।।

सुकृतस्य (पुण्यस्वरूप अच्छे) **कर्मणः** (कर्मों का) **सात्त्विकं** (सत्वप्रधान), **निर्मलं** (निर्मल) **फलं** (फल) {स्वर्ग} **आहुः** (कहा जाता है); **तु** (किंतु) **रजसः** (राजसी कर्मों का) **फलं** (फल) **दुःखं** (दुःख या नरक) {और} **तमसः** (तामसी {राक्षसी} कर्मों का) **फलं** (फल) **अज्ञानम्** (बुद्धिहीन जानवरों का, रौरव नरक है)।

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥ 14/17

सत्त्वात् संजायते ज्ञानम् रजसः लोभ एव च। प्रमादमोहौ तमसः भवतः अज्ञानम् एव च।।

सत्त्वात् (सत्व गुण से) **ज्ञानं** (समझशक्ति) **च** (और) **रजसः** (रजोगुण से)
लोभः (लोभ) **एव** (ही) **संजायते** (उत्पन्न होता है)। **तमसः** (तमोगुण से) **अज्ञानं** (बेसमझी) **च** (और) **प्रमादमोहौ** (लापरवाही तथा मूढ़ता) **भवतः** (उत्पन्न होती है)।

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥ 14/18

ऊर्ध्वम् गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधः गच्छन्ति तामसाः।।

{कल्पांत में} **सत्त्वस्थाः** (सत्व गुण में स्थिर रहने वाले) **ऊर्ध्वं** (ऊपर के {सत–त्रेतायुगी देवलोक} में) **गच्छन्ति** (जाते हैं), **राजसाः** (रजोगुणी स्वभाव वाले) **मध्ये** (द्वापरयुगी पृथ्वीलोक में) **तिष्ठन्ति** (स्थित रहते हैं) {और} **जघन्यगुणवृत्तिस्थाः** (नीच तमोगुणी वृत्तियों में स्थिर रहने वाले) **तामसाः** (राक्षसी लोग) **अधः** (अधोगति वाले {कलियुगी–घोर नरक} में) **गच्छन्ति** (जाते हैं)।

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥ 14/19
न अन्यम् गुणेभ्यः कर्तारम् यदा द्रष्टा अनुपश्यति।
गुणेभ्यः च परम् वेत्ति मद्भावम् सः अधिगच्छति।।

यदा (जब) **द्रष्टा** (देखने वाला) **गुणेभ्यः** (गुणों के संघात के) **अन्यं** (अलावा–अन्य किसी को) **कर्तारं** (कर्ता) **न अनुपश्यति** (नहीं देखता) **च** (और) **गुणेभ्यः** (गुण संघात से) **परं** (परे {सत्वस्थ आत्मा} को) **वेत्ति** (जान लेता है), {तब} **सः** (वह) **मद्भावं** (मेरे {नित्य सत्वस्थ} भाव को) **अधिगच्छति** (पा लेता है)।

गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ 14/20
गुणान् एतान् अतीत्य त्रीन् देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैः विमुक्तः अमृतम् अश्नुते।।

देही (आत्मा) **देहसमुद्भवान्** (देह से उत्पन्न होने वाले) **एतान्** (इन) **त्रीन् गुणान्** (तीनों गुणों के संघात को) **अतीत्य** (पार करके) **जन्ममृत्युजरादुःखैः** (जन्म–मरण और बुढ़ापे के दुःखों से) **विमुक्तः** (अच्छी तरह मुक्त हुआ) **अमृतं** (अमर पद अर्थात् स्वर्ग को) **अश्नुते** (भोगता है)।

अर्जुन उवाचः– कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥ 14/21
कैः लिंगैः त्रीन् गुणान् एतान् अतीतः भवति प्रभो।
किमाचारः कथम् च एतान् त्रीन् गुणान् अतिवर्तते।।

प्रभो (हे प्रभु)! **कैः** (किन) **लिंगैः** (लक्षणों से) {पुरुषः} **एतान्** (इन) **त्रीन् गुणान्** (तीनों गुणों के समुदाय से) **अतीतः** (पार) **भवति** (हो जाता है)? {उसका} **आचारः** (आचरण) **किम्** (कैसा होता है) **च** (और) **एतान्** (इन) **त्रीन् गुणान्** (तीनों गुणों के संघात को) **कथं** (कैसे) **अतिवर्तते** (पार कर जाता है)?

श्रीभगवानुवाचः– प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥ 14/22
प्रकाशम् च प्रवृत्तिम् च मोहम् एव च पाण्डव। न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति।।

पाण्डव (हे पाण्डु पुत्र अर्जुन)! **प्रकाशं** (सत्वगुण के प्रकाश), **प्रवृत्तिं** (रजोगुण की कर्मों में प्रवृत्ति) **च** (और) **मोहं** (तमोगुणी मूढ़भाव के) **सम्प्रवृत्तानि** (उत्पन्न होने पर) {जो} **न द्वेष्टि** (न द्वेष करता है) **च** (और) **न निवृत्तानि** (न निवृत्त होने पर) **कांक्षति** (अकांक्षा करता है);

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥ 14/23
उदासीनवत् आसीनः गुणैः यः न विचाल्यते। गुणा वर्तन्त इति एव यः अवतिष्ठति न इंगते।।

यः (जो) **उदासीनवत्** (तटस्थ–साक्षी की भाँति) **आसीनः** (रहता हुआ) **गुणैः** {प्रकृति के मायावी} (गुणों से) **न विचाल्यते** (विचलित नहीं होता) {और} **गुणाः** ({मायावी} गुण) **एव** (ही) **वर्तन्ते** (परस्पर वर्तन कर रहे हैं)–**इति** (ऐसा {समझकर}) **यः** (जो) **अवतिष्ठति** (स्थिर रहता है) {और} **नेंगते** (डोलता नहीं);

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥ 14/24
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः। तुल्यप्रियाप्रियः धीरः तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।।

{जो} **समदुःखसुखः** (सुख–दुःख में समान है), **स्वस्थः** (स्वरूप में स्थित है), **समलोष्टाश्मकांचनः** (मिट्टी–पत्थर जैसी सस्ती अथवा स्वर्ण जैसी मूल्यवान सांसारिक वस्तुओं में समान है), **तुल्यप्रियाप्रियः** (प्रिय और अप्रियजनों में समान है), **धीरः** (धैर्यवान है) {और} **तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः** (निंदा–स्तुति में समान है);

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥ 14/25
मानापमानयोः तुल्यः तुल्यः मित्रारिपक्षयोः। सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।।

{जो} **मानापमानयोः** (मान–अपमान में) **तुल्यः** (समान है), **मित्रारिपक्षयोः तुल्यः** (मित्र और शत्रु, दोनों पक्षों में समान रहता है) {और} **सर्वारम्भपरित्यागी** (सब {सांसारिक} कर्मो का परित्याग कर चुका है), **सः** (वह) **गुणातीतः** (गुणों के संघात से परे) **उच्यते** (कहा जाता है)।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ 14/26
माम् च यः अव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते। स गुणान् समतीत्य एतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

च (और) **यः** (जो {पुरुष}) **अव्यभिचारेण** (अव्यभिचारी) **भक्तियोगेन** (भक्तियोग द्वारा) **मां** (मुझ {यज्ञ स्वरूप} की) **सेवते** {मनसा, वाचा, कर्मणा} (सेवा करता है), **सः** (वह) **एतान् गुणान्** (इन गुणों के समुदाय को) **समतीत्य** (उल्लंघन करके) **ब्रह्मभूयाय** (नित्य सत्वस्थ ब्रह्मभाव के लिए) **कल्पते** (योग्य हो जाता है);

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥ 14/27
ब्रह्मणः हि प्रतिष्ठा अहम् अमृतस्य अव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्य ऐकान्तिकस्य च।।

हि (क्योंकि) **अहं** (मैं {ज्योतिर्बिन्दु शिव}) **अव्ययस्य** (अविनाशी) **ब्रह्मणः** (परमब्रह्म की) **च** (और) **अमृतस्य** (अमर पद–विष्णु की) **च** (तथा) **शाश्वतस्य धर्मस्य** (शाश्वत {सनातन} धर्म की) **च** (और) **ऐकान्तिकस्य** (अत्यन्तिक) **सुखस्य** (सुख की) **प्रतिष्ठा** (आबरू हूँ)।

अध्याय–15

श्रीभगवानुवाचः– ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ 15/1
ऊर्ध्वमूलम् अधःशाखम् अश्वत्थम् प्राहुः अव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यः तम् वेद स वेदवित्।।

ऊर्ध्वमूलं ({मनुष्य सृष्टि के बीजरूप प्रजापिता ब्रहमा से उत्पन्न ब्राह्मण धर्म की} ऊपर जाने वाली जड़ों वाले), **अधःशाखम्** {अधोमुखी ब्रहमा की} (पतनोन्मुखी अनेकानेक धर्मो की शाखाओं वाले) {तथा} **छन्दांसि** (वेदादि) **यस्य** (जिसके) **पर्णानि** (पत्ते हैं), {ऐसे} **अश्वत्थं** {चिरकाल तक स्थित रहने वाले मानवीय सृष्टि रूपी} (अश्वत्थ वृक्ष को) {ऋषियों ने} **अव्ययं** (अविनाशी) **प्राहुः** (बताया है)। **यः** (जो) **तं** (उसे) **वेद** (जानता है), **सः** (वह) **वेदवित्** (वेदों का ज्ञाता है)।

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ 15/2
अधः च ऊर्ध्वम् प्रसृताः तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधः च मूलानि अनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके।।

तस्य (उस {सृष्टि वृक्ष} की) **गुणप्रवृद्धाः** ({सत्व, रज, तम}–तीनों गुणों द्वारा क्रमशः बढ़ने वाली) {और} **विषयप्रवालाः** (विषय विकार रूपी विधर्मी टहनियों या अंकुरों वाली) **शाखाः** (शाखाएँ) **अधः** (नीचे) {साकारी मनुष्य लोक में} **च** (तथा) **ऊर्ध्वं** (ऊपर) {स्वर्गलोक में} **प्रसृताः** (फैली हुई हैं); **च** (किंतु) **कर्मानुबंधीनि** (कर्मो को बाँधने वाली) **मूलानि** (वैराइटी धर्म रूपी जड़ें) **अधः** (नीचे) **मनुष्यलोके** (मनुष्यलोक में) **अनुसंततानि** (फैली हुई हैं)।

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ 15/3

न रूपम् अस्य इह तथा उपलभ्यते न अन्तः न च आदिः न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्वत्थम् एनम् सुविरूढमूलम् असंगशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।।

अस्य (इस {सृष्टि वृक्ष} का) **तथा** (वैसा) **रूपं** (रूप) **इह** (इस {दुनिया} में) **न उपलभ्यते** (उपलब्ध नहीं होता) **च** (और) **न आदिः** (न आदि), **न सम्प्रतिष्ठा** (न मध्य) **च** (और) **न अंतः** (न अन्त) {ही दिखाई देता है}। **सुविरूढमूलं** (खूब पक्की {ब्राह्मण धर्म रूपी} जड़ों वाले) **एनं** (इस) **अश्वत्थं** (अश्वत्थ को) **असंगशस्त्रेण दृढेन** (अनासक्ति रूपी मजबूत शस्त्र से) **छित्त्वा** (काटकर),

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ 15/4

ततः पदम् तत् परिमार्गितव्यम् यस्मिन् गताः न निवर्तन्ति भूयः।
तम् एव च आद्यम् पुरुषम् प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।।

ततः {संगमयुगी ब्राह्मण धर्म के} (उस {लोक} से) **तत्** (उस) **पदं** (परम् पद {विष्णुलोक} को) **परिमार्गितव्यं** (खोजना चाहिए अर्थात् जानना चाहिए), **यस्मिन्** (जिसमें) **गताः** (गए हुए) **भूयः** (पुनः) **न निवर्तन्ति** {इस दुःखी संसार में} (नहीं लौटते) **च** (और) **तमेव** (उसी) **आद्यं** (आदि) **पुरुषं** (पुरुष {शिव} के) {साकार रूप–आदिदेव अर्धनारीश्वर महादेव की} **प्रपद्ये** (शरण लेना चाहिए), **यतः** (जिससे) {इस साकारी सृष्टि वृक्ष की} **पुराणी** (पुरानी) {आदि सनातन देवी–देवता धर्म की} **प्रवृत्तिः** (प्रक्रिया) **प्रसृता** (प्रसारित हुई है)।

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ 15/5

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैः विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः गच्छन्ति अमूढाः पदम् अव्ययम् तत्।।

निर्मानमोहाः (मान और मोह से रहित), **जितसंगदोषाः** (आसक्ति रूपी दोष को जीतने वाले), **अध्यात्मनित्याः** (सदा ईश्वरीय ज्ञान में लगे रहने वाले), **विनिवृत्तकामाः** ({सांसारिक} कामनाओं से विशेषतः निवृत्त हुए) {और} **सुखदुःखसंज्ञैः** (सुख–दुःख नामक) **द्वन्द्वैः** (द्वन्द्वों से) **विमुक्ताः** (मुक्त हुए) **अमूढाः** (मोहरहित ज्ञानी) **तत्** (उस) **अव्ययं** (अविनाशी) **पदं** (पद {स्वर्णिमयुगी विष्णुलोक} को) **गच्छन्ति** (पाते हैं)।

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ 15/6

न तत् भासयते सूर्यः न शशांकः न पावकः। यत् गत्वा न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम।।

तत् (उस {परमपद} को) **न सूर्यो** (न सूर्य), **न शशांको** (न चन्द्रमा) {और} **न पावकः** (न अग्नि) **भासयते** (प्रकाशित करती है)। **यत्** (जिस {धाम} को) **गत्वा** (जाकर) **न निवर्तन्ते** {दुःखी संसार में} (वापस नहीं लौटते), **तत्** (वह) **मम** (मेरा) **परमं धाम** (परमधाम है)।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ 15/7

मम एव अंशः जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानि इन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।

जीवलोके (सृष्टि में) **जीवभूतः** (प्राणियों द्वारा उत्पन्न हुआ) **ममैव** (मेरा ही) **सनातनः** (नित्य) **अंशः** {योगबल रूपी} (अंश) **प्रकृतिस्थानि** (प्रकृति में रहने वाली) **मनःषष्ठानि** (मन सहित छः) **इन्द्रियाणि** ({ज्ञान}इन्द्रियों को) **कर्षति** (खींचता है)।

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ 15/8

शरीरम् यत् अवाप्नोति यत् च अपि उत्क्रामति ईश्वरः।
गृहीत्वा एतानि संयाति वायुः गन्धान् इव आशयात्।।

यत् (जब) **ईश्वरः** (इन्द्रियादि समूह का मालिक–आत्मा) {एक शरीर से} **उत्क्रामति** (बाहर निकलता है) **च** (और) **यत्** (जब) **शरीरं** (दूसरे शरीर को) **अवाप्नोति** (धारण करता है) {तब}, **इव** (जैसे) **वायुः** (हवा) **आशयात्** (फूलों के स्थान से) **गन्धान्** (सुगन्धियों को) {ले जाती है, वैसे ही आत्मा} **एतानि** (इन {सूक्ष्म इन्द्रियों} को) **गृहीत्वा** (लेकर) **संयाति** (जाता है)।

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ 15/9

श्रोत्रम् चक्षुः स्पर्शनम् च रसनम् घ्राणम् एव च। अधिष्ठाय मनः च अयम् विषयान् उपसेवते।।

अयं (यह {आत्मा}) **श्रोत्रं** (कान), **चक्षुः** (आँख), **स्पर्शनं** (त्वचा), **रसनं** (जिह्वा) **च** (और) **घ्राणं** (नासिका) **च एव** (तथा) **मनः** (मन का) **अधिष्ठाय** (आधार लेकर) **विषयान्** (विषयों का) **उपसेवते** (सेवन करता है)। **{आत्मा अभोक्ता नहीं है।}**

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ 15/10

उत्क्रामन्तम् स्थितम् वा अपि भुंजानम् वा गुणान्वितम्।
विमूढा न अनुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।

उत्क्रामन्तं (शरीर छोड़ते हुए) **वा** (अथवा) **स्थितं** (उसमें रहते हुए) **वा** (अथवा) **भुंजानं** (उपभोग करते हुए) **गुणान्वितं** (जड़ प्रकृति के गुणों से युक्त होने वाले) {आत्मा को} **ज्ञानचक्षुषः** (ज्ञान नेत्र वाले ज्ञानीजन) **पश्यन्ति** (देखते हैं), **विमूढा** (मूढ़जन) **न अनुपश्यन्ति** (नहीं देख पाते)।
{आत्मा निर्लेप और अभोक्ता नहीं।}

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥ 15/11

यतन्तः योगिनः च एनम् पश्यन्ति आत्मनि अवस्थितम्।
यतन्तः अपि अकृतात्मानः न एनम् पश्यन्ति अचेतसः।।

यतंतो ({ज्योतिर्बिन्दु आत्मा की याद का} यत्न करते हुए) **योगिनः** (योगीजन) **एनं** (इस {आत्मा} को) **आत्मनि** (अपने में) **अवस्थितं** (स्थित हुआ) **पश्यन्ति** (देखते हैं); **च** (किंतु) **अकृतात्मानः** (अपने को वश में न करने वाले) **अचेतसः** (बुद्धू लोग) **यतन्तः** (यत्न करते हुए) **अपि** (भी) **एनं** (इस {आत्मा} को) **न पश्यन्ति** (नहीं देख पाते)।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ 15/12

यत् आदित्यगतम् तेजः जगत् भासयते अखिलम्।
यत् चन्द्रमसि यत् च अग्नौ तत् तेजः विद्धि मामकम्।।

यत् (जो) **आदित्यगतं** (सूर्य का) **तेजः** (तेज) **अखिलं** (सम्पूर्ण) **जगत्** (जगत् को) **भासयते** (प्रकाशित करता है) **च** (तथा) **चन्द्रमसि** (चन्द्रमा) {और} **अग्नौ** (अग्नि में) **यत्** (जो) {तेज है}, **तत्** (वह) **तेजः** ({योगबल रूपी} तेज) **मामकं विद्धि** (मेरा जान)। {परमात्मा का योगबल रूपी तेज सर्वव्यापी है, न कि परमात्मा!}

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ 15/13

गाम् आविश्य च भूतानि धारयामि अहम् ओजसा।
पुष्णामि च ओषधीः सर्वाः सोमः भूत्वा रसात्मकः।।

च (और) **अहं** (मैं) {कल्पान्तकाल में} **गां** (पृथ्वी पर) **आविश्य** (प्रवेश करके) **भूतानि** (प्राणियों को) **ओजसा** (योगबल द्वारा) **धारयामि** (पोषण करता हूँ) **च** (और) **रसात्मकः** (ज्ञानरस स्वरूप) **सोमः** (सोमरस) **भूत्वा** (होकर) **सर्वाः** (सब) **ओषधीः** (औषधियों को) **पुष्णामि** (पुष्ट करता हूँ)।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ 15/14

अहम् वैश्वानरः भूत्वा प्राणिनाम् देहम् आश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचामि अन्नम् चतुर्विधम्।।

अहं (मैं) {ही योगबल रूप में} **वैश्वानरः** (जठराग्नि) **भूत्वा** (होकर) **प्राणिनां** (प्राणियों की) **देहं** (देह के) **आश्रितः** (आश्रित हुआ) **चतुर्विधं** (चार प्रकार के–{चर्व्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य}) **अन्नं** (अन्न को) **प्राणापानसमायुक्तः** (अंदर आने और बाहर जाने वाले 'प्राण–अपान' नामक श्वास से मिलकर) **पचामि** (पचाता हूँ)।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ 15/15

सर्वस्य च अहम् हृदि संनिविष्टः मत्तः स्मृतिः ज्ञानम् अपोहनम् च।
वेदैः च सर्वैः अहम् एव वेद्यः वेदान्तकृत् वेदवित् एव च अहम्।।

{कल्पांतकाल में} **अहं** (मैं) **सर्वस्य** (सबके) **हृदि** (मन में) **सन्निविष्टः** (स्मृति रूप में निवास करता हूँ) **च** (और) **मत्तः** (मेरे से) **स्मृतिः** (ईश्वरीय स्मृति अर्थात् योग) **च** (और) **ज्ञानं** ({सच्चा} ज्ञान) **च** (तथा) **अपोहनं** (उनका लोप {भी} होता है)। {कल्पांत में} **अहं** (मैं) **एव** (ही) **सर्वैः** (सब) **वेदैः** (वेदों द्वारा) **वेद्यः** (जानने योग्य हूँ) **च** (और) **वेदान्तकृत्** (वेदों का अंत करने वाला) **च** (तथा) **वेदवित्** (वेदों का जानकार) **एव** (भी) **अहम्** (मैं हूँ)।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ 15/16

द्वौ इमौ पुरुषौ लोके क्षरः च अक्षरः एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थः अक्षरः उच्यते।।

लोके (लोक में) **इमौ** (ये) **द्वौ** (दो) **एव** (ही) **पुरुषौ** (पुरुष हैं)–**क्षरः** (नाशवान्) **च** (और) **अक्षर** (अविनाशी)। **सर्वाणि** (सब) **भूतानि** (प्राकृतिक भूत) **क्षरः** (नाशवान् है) **च** (और) **कूटस्थः** (परमधाम रूपी ऊँचे शिखर पर रहने वाली) **अक्षरः** (अविनाशी–{आत्मा}) **उच्यते** (कही जाती है);

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥ 15/17

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः।
यः लोकत्रयम् आविश्य बिभर्ति अव्ययः ईश्वरः।।

तु (किंतु) **अन्यः** (इन दोनों से भिन्न) **उत्तमः** (सर्वोत्तम) **पुरुषः** (आत्मा) **परमात्मा** ({हीरो पार्टधारी} परमात्मा) **इति** (इस प्रकार) **उदाहृतः** (कहा जाता है), **यः** (जो) **अव्ययः** (क्षयरहित) **ईश्वरः** (ईश्वर) {योगशक्ति द्वारा} **लोकत्रयं** (तीनों लोकों को) **आविश्य** (अधिकार में लेकर) **बिभर्ति** (धारण करता है); ❁ {मैं तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। तुम तो त्रिलोकीनाथ बनते हो। मु.....}

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ 15/18

यस्मात् क्षरम् अतीतः अहम् अक्षरात् अपि च उत्तमः।
अतः अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।

यस्मात् (जिस {परमपार्टधारी परमात्मा} से) **अहं** (मैं) **क्षरं** (विनाशी क्षर) **अतीतः** (परे हूँ) **च** (और) **अक्षरात्** (मानवीय सृष्टि के बीजरूप आदि अविनाशी आत्मा से) **अपि** (भी) **उत्तमः** (उत्तम हूँ)। **अतः** (इसलिए) {इस} **लोके** (संसार में) **च** (और) **वेदे** (वेद में) **पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में उत्तम) **प्रथितः** (कहा गया) **अस्मि** (हूँ)।

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥ 15/19

यः माम् एवम् असम्मूढः जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्ववित् भजति माम् सर्वभावेन भारत।।

भारत (हे भारत)! **यः** (जो) **असंमूढः** (ज्ञानी) **मां** (मुझको) **एवं** (इस प्रकार) **पुरुषोत्तमं** (सब आत्माओं में श्रेष्ठ) {ज्योतिलिंग शिव को} **जानाति** (समझता है), **सः** (वह) **सर्ववित्** (सब कुछ जानने वाला) **मां** (मुझे) **सर्वभावेन** (समग्र भाव से) {सर्व संबंधों से} **भजति** (याद करता है)।

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥ 15/20

इति गुह्यतमम् शास्त्रम् इदम् उक्तम् मया अनघ।
एतत् बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात् कृतकृत्यः च भारत।।

अनघ (हे निष्पाप)! **इति** (इस तरह) **इदं** (यह) **गुह्यतमम्** (रहस्यपूर्ण) **शास्त्रं** (आदेश अर्थात् श्रीमत) **मया** (मैंने) **उक्तम्** {तुम्हें} (बताई है)। **भारत** (हे भारत)! **एतत्** (इसे) **बुद्ध्वा** (जानकर) {मनुष्य} **बुद्धिमान्** (समझदार) **च** (और) **कृतकृत्यः** (सफलमनोरथ) **स्यात्** (बन जाता है)।

अध्याय–16

श्रीभगवानुवाचः– अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ 16/1

अभयम् सत्त्वसंशुद्धिः ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानम् दमः च यज्ञः च स्वाध्यायः तपः आर्जवम्।।

अभयं (निर्भयता), **सत्त्वसंशुद्धिः** (मन–बुद्धि की सफाई), **ज्ञानयोगव्यवस्थितिः** (ज्ञान–योग में निरन्तर स्थिर रहना) **च** (और) **दानं** (दान), **दमः** (इन्द्रियों का संयम), **यज्ञः** (ईश्वरीय सेवा में तन–मन–धन की आहुति), **स्वाध्यायः** (आत्मविषयक अध्ययन), **तप** (आत्म स्मृति में रहते हुए लोककल्याणार्थ शारीरिक आयास सहन करना) **च** (और) **आर्जवं** (सरलता),

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ 16/2

अहिंसा सत्यम् अक्रोधः त्यागः शांतिः अपैशुनम्। दया भूतेषु अलोलुप्त्वम् मार्दवम् ह्रीः अचापलम्।।

अहिंसा (किसी को दुःख न देना), **सत्यं** (सत्य), **अक्रोधः** (क्रोध न करना), **त्यागः** (अशुभ का त्याग), **शांतिः** (शांति), **अपैशुनं** (दूसरों के दोष न देखना), **भूतेषु दया** (प्राणियों पर दया), **अलोलुप्त्वं** (लोभहीनता), **मार्दवं** (मीठापन), **ह्रीः** (लज्जा), **अचापलं** (चंचलता न होना),

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ 16/3

तेजः क्षमा धृतिः शौचम् अद्रोहः नातिमानिता। भवन्ति सम्पदम् दैवीम् अभिजातस्य भारत।।

तेजः (तेजस्विता), **क्षमा** (क्षमा), **धृतिः** (धैर्य), **शौचं** (अन्दर–बाहर की शुद्धता), **अद्रोहः** (द्रोह न करना) {और} **नातिमानिता** (अधिक मान न करना), **भारत** (हे भरतवंशी अर्जुन)! {ये गुण} **दैवीं सम्पदं** (दैवी सम्पदा सहित) **अभिजातस्य** (जन्म लेने वालों के) **भवन्ति** (होते हैं)।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥ 16/4

दम्भः दर्पः अभिमानः च क्रोधः पारुष्यम् एव च।
अज्ञानम् च अभिजातस्य पार्थ सम्पदम् आसुरीम्।।

पार्थ (हे पृथ्वी के राजा)! **दंभः** (पाखंड), **दर्पः** ({धन–परिवार का} घमंड) च (और) **अभिमानः** (अभिमान) **च** (तथा) **क्रोधः** (क्रोध), **पारुष्यं** (कठोरता) **च एव** (और उसी तरह) **अज्ञानं** (बेसमझी)–{ये अवगुण} **आसुरीं संपदं** (राक्षसी सम्पत्ति के साथ) **अभिजातस्य** (जन्म लेने वालों के हैं)।

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ 16/5

दैवी सम्पत् विमोक्षाय निबन्धाय आसुरी मता।
मा शुचः सम्पदम् दैवीम् अभिजातः असि पाण्डव।।

दैवी संपत् (दैवी सम्पत्ति) **विमोक्षाय** (विशेष रूप से दुःखों से मुक्ति के लिए है) {और} **आसुरी** (राक्षसी सम्पत्ति) **निबन्धाय** (संपूर्णतया दुःखों में बंधने के लिए) **मता** (मानी गई है)। **पाण्डव** (हे पण्डा रूपी शिव पुत्र अर्जुन)! **मा शुचः** ({तू} दुःखी मत हो); {क्योंकि तूने} **दैवीं सम्पदं** (दैवी सम्पत्ति के साथ) **अभिजातः** (जन्म लिया) **असि** (है)।

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ 16/6

द्वौ भूतसर्गौ लोके अस्मिन् दैव आसुर एव च। दैवः विस्तरशः प्रोक्त आसुरम् पार्थ मे शृणु।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति)! **अस्मिन्** (इस) **लोके** (संसार में) **भूतसर्गौ** (प्राणियों की सृष्टि) **द्वौ** (दो प्रकार की) **एव** (ही है)–**दैवः** ({सत–त्रेतायुगी} देवताओं की) **च** (और) **आसुरः** ({द्वापर–कलियुगी} असुरों की), {उनमें} **दैवो** (दैवी गुणों वाली सृष्टि) **विस्तरशः** (विस्तारपूर्वक) **प्रोक्तः** (बताई जा चुकी है)। {अब} **आसुरं** (आसुरी गुणों वाली सृष्टि को) **मे** (मेरे से) **शृणु** (सुन)।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ 16/7

प्रवृत्तिम् च निवृत्तिम् च जना न विदुः आसुराः।
न शौचम् न अपि च आचारः न सत्यम् तेषु विद्यते।।

आसुराः (आसुरी गुणों वाले) **जनाः** (मनुष्य) **प्रवृत्तिं** (करने योग्य कर्म) **च निवृत्तिं** (और त्यागने योग्य कर्म को) **च** (भी) **न विदुः** (नहीं जानते)। **तेषु** (उनमें) **न शौचं** (न शुद्धता), **न आचारः** (न सदाचार) **च** (और) **सत्यं** (सत्य) **अपि** (भी) **न विद्यते** (नहीं होता)।

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ 16/8

असत्यम् अप्रतिष्ठम् ते जगत् आहुः अनीश्वरम्। अपरस्परसम्भूतम् किम् अन्यत् कामहैतुकम्।।

ते (वे) **जगत्** (जगत् को) **असत्यं** (मिथ्या), **अप्रतिष्ठिं** (आधारहीन), **अनीश्वरं** (ईश्वरहीन), **अपरस्परसम्भूतं** (एक–दूसरे के परस्पर संयोग से उत्पन्न हुआ) {और} **कामहैतुकं** (जिसमें काम वासना ही कारण रूप है), **अन्यत् किम्** (दूसरा क्या!)–{ऐसे} **आहुः** (कहते हैं)। {असुर लोग ही जगत मिथ्या बताते हैं।}

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ 16/9

एताम् दृष्टिम् अवष्टभ्य नष्टात्मानः अल्पबुद्धयः।
प्रभवन्ति उग्रकर्माणः क्षयाय जगतः अहिताः।।

एतां (ऐसे) **दृष्टिं** (दृष्टिकोण का) **अवष्टभ्य** (आश्रय लेकर) **नष्टात्मानः** (नष्ट हुए स्वभाव वाले), **अल्पबुद्धयः** (क्षुद्रबुद्धि) {और} **उग्रकर्माणः** (क्रूर कर्म करने वाले लोग) **जगतः** (जगत के) **अहिताः** (बैरी बनकर) **क्षयाय** (उसका महाविनाश करने के लिए) **प्रभवन्ति** (उत्पन्न होते हैं)। {जगत को मिथ्या बताने वाले जगत के बैरी हैं।}

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥ 16/10

कामम् आश्रित्य दुष्पूरम् दम्भमानमदान्विताः। मोहात् गृहीत्वा असद्ग्राहान् प्रवर्तन्ते अशुचिव्रताः।।

दुष्पूरं (कभी तृप्त न होने वाली) **काममाश्रित्य** (कामनाओं का आश्रय लेकर) **दंभमानमदान्विताः** (दंभ, मान और मद से भरे हुए) **मोहात्** (मूर्खता से) **असद्ग्राहान्** (असत्य सिद्धान्तों अथवा दुराग्रहों को) **गृहीत्वा** (पकड़कर) **अशुचिव्रताः** (अपवित्र कर्म) **प्रवर्तन्ते** (करते हैं)।

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ 16/11

चिन्ताम् अपरिमेयाम् च प्रलयान्ताम् उपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावत् इति निश्चिताः।।

{वे} **प्रलयान्तां** (महाविनाश के साथ अंत होने वाली) **अपरिमेयां** (अनगिनत) **चिन्तां** (चिन्ताओं में) **उपाश्रिताः** (पड़े हुए), **कामोपभोगपरमा** (कामवासना का उपभोग करना ही परम पुरुषार्थ है) **च** (और) **एतावत्** ('यही सब कुछ है'), **इति** (ऐसा) **निश्चिताः** (निश्चय करने वाले हैं)।

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥ 16/12

आशापाशशतैः बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थम् अन्यायेन अर्थसंचयान्।।

{वे} **आशापाशशतैर्बद्धाः** ({सांसारिक} आशाओं के सैकड़ों फंदों में जकड़े हुए) **कामक्रोधपरायणाः** (काम–क्रोध के वशीभूत होकर) **काममोगार्थं** (कामवासना को भोगने के लिए) **अन्यायेन** (अन्यायपूर्वक) **अर्थसंचयान्** (धनसंग्रह) **ईहन्ते** (करना चाहते हैं)।

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ 16/13

इदम् अद्य मया लब्धम् इमम् प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदम् अस्ति इदम् अपि मे भविष्यति पुनः धनम्।।

अद्य (आज) **मया** (मुझे) **इदं** (यह) **लब्धम्** (मिल गया)। {कल} **इमं** (इस) **मनोरथं** (मनोरथ को) **प्राप्स्ये** (पूरा कर लूँगा)। **इदं** (यह) {इतना धनादि मेरे पास} **अस्ति** (है); **पुनः** (फिर) **अपि** (भी) **मे** (मेरा) **इदं** (इतना) **धनं** (धन) **भविष्यति** (हो जावेगा)।

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥ 16/14

असौ मया हतः शत्रुः हनिष्ये च अपरान् अपि।
ईश्वरः अहम् अहम् भोगी सिद्धः अहम् बलवान् सुखी।।

मया (मैंने) **असौ** (इस) **शत्रुः** (दुश्मन को) **हतः** (मार लिया है) **च** (और) {भविष्य में} **अपरान्** (दूसरे शत्रुओं को) **अपि** (भी) **हनिष्ये** (मार लूँगा)। **अहं** (मैं) **ईश्वरः** (समर्थ अर्थात् ऐश्वर्यवान हूँ), **अहं** (मैं) **भोगी** (उपभोग करने वाला हूँ), **अहं** (मैं) **सिद्धः** (सफल हूँ), **बलवान्, सुखी** (बलवान और सुखी हूँ)

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ 16/15

आढ्यः अभिजनवान् अस्मि कः अन्यः अस्ति सदृशः मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इति अज्ञानविमोहिताः।।

आढ्यः ({मैं} धनवान) {और} **अभिजनवान्** (बड़े अथवा ऊँचे कुल वाला) **अस्मि** (हूँ)। **मया** (मेरे) **सदृशः** (समान) **अन्यः** (दूसरा) **कः** (कौन) **अस्ति** (है)? **यक्ष्ये** (यज्ञ करूँगा), **दास्यामि** (दान दूँगा), **मोदिष्ये** (आनन्द मनाऊँगा)–**इति** (इस प्रकार के) **अज्ञानविमोहिताः** (अज्ञान से मूर्ख बने हुए हैं)।

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ 16/16

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरके अशुचौ।।

अनेकचित्तविभ्रान्ताः (अनेक विचारों में भटके हुए), **मोहजालसमावृताः** (मोहजाल में पूरे ही घिरे हुए) {और} **काममोगेषु** (कामभोग में) **प्रसक्ताः** (आसक्त हुए लोग) **अशुचौ** (गन्दे) **नरके** (नरक में) **पतन्ति** (गिरते हैं)।

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥ 16/17

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः। यजन्ते नामयज्ञैः ते दम्भेन अविधिपूर्वकम्।।

ते (वे) **आत्मसंभाविताः** (अपनी प्रशंसा में फूले हुए) **स्तब्धा** (हठी), **धनमानमदान्विताः** (धन और मान–शान के नशे में चूर) **नामयज्ञैः** (नाममात्र के यज्ञों से) **दम्भेन** (दम्भ सहित) **अविधिपूर्वकं** (गीता विधान के प्रतिकूल) **यजन्ते** (यज्ञ करते हैं)।

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥ 16/18

अहंकारम् बलम् दर्पम् कामम् क्रोधम् च संश्रिताः। माम् आत्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तः अभ्यसूयकाः।।

{वे} **अहंकारं** (अहंकार), **बलं** (बल), **दर्पं** (घमण्ड), **कामं** (कामविकार) **च** (और) **क्रोधं** (क्रोध का) **संश्रिताः** (आश्रय लेकर) **आत्मपरदेहेषु** (अपने और दूसरे के शरीर में) {स्थित} **माम्** (मुझ {योग शक्तिरूप परमेश्वर} से) **प्रद्विषन्तः** (प्रकृष्ट रूप से द्वेष करने वाले) {और} **अभ्यसूयकाः** (घृणा करने वाले हैं)।

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥ 16/19

तान् अहम् द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्। क्षिपामि अजस्त्रम् अशुभान् आसुरीषु एव योनिषु।।

तान् (उन) **द्विषतः** (द्वेष करने वाले), **क्रूरान्** (क्रूर), **नराधमान्** (मनुष्यों में सबसे नीच) **अशुमान्** (पापियों को) **अहं** (मैं) **संसारेषु** (संसारचक्र में) **अजस्रं** (सदा) **आसुरीषु** ({कलियुगी} आसुरी गुणों वाली) **योनिषु** ({राक्षसी} योनियों में) **एव** (ही) **क्षिपामि** (फेंकता हूँ)।

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥ 16/20

आसुरीम् योनिम् आपन्नाः मूढा जन्मनि जन्मनि।
माम् अप्राप्य एव कौन्तेय ततः यान्ति अधमाम् गतिम्।।

कौन्तेय (हे कुन्ती पुत्र)! **जन्मनि–जन्मनि** (प्रत्येक जन्म में) **आसुरीं** ({कलियुगी} आसुरी गुणों वाली) **योनिं** ({मनुष्य} योनि को) **आपन्नाः** (प्राप्त हुए) **मूढा** (मूढ़जन) **मां** (मुझको) **अप्राप्य** (न पाकर), **ततः** (वहाँ से) **अधमां** (अधम) **गतिं** (गति को) **एव** (ही) **यान्ति** (पाते हैं)।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ 16/21

त्रिविधम् नरकस्य इदम् द्वारम् नाशनम् आत्मनः।
कामः क्रोधः तथा लोभः तस्मात् एतत् त्रयम् त्यजेत्।।

कामः क्रोधः (काम, क्रोध) **तथा लोभः** (तथा लोभ)–**इदं** (ये) **आत्मनः** (आत्मा का) **नाशनं** (नाश करने वाले) **नरकस्य** (नरक के) **त्रिविधं** (तीन प्रकार के) **द्वारं** (द्वार हैं); **तस्मात्** (इसलिए) **एतत्** (इन) **त्रयं** (तीनों को) **त्यजेत्** (त्याग देना चाहिए)।

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥ 16/22

एतैः विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैः त्रिभिः नरः। आचरति आत्मनः श्रेयः ततः याति पराम् गतिम्।।

कौन्तेय (हे कुन्तीपुत्र)! **एतैः** (इन) **त्रिभिः** (तीनों) **तमोद्वारैः** (अन्धकारमय नरक के द्वारों से) **विमुक्तः** (मुक्त हुआ) **नरः** (मनुष्य) **आत्मनः** (आत्मिक) **श्रेयः** (कल्याण का) **आचरति** (आचरण करता है), **ततः** (जिससे) {विष्णु रूप} **परां** (परम) **गतिं** (गति को) **याति** (पाता है)।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥ 16/23

यः शास्त्रविधिम् उत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिम् अवाप्नोति न सुखम् न पराम् गतिम्।।

यः (जो {पुरुष}) **शास्त्रविधिं** (श्रीमतभगवत् गीता विधान को) **उत्सृज्य** (छोड़कर) **कामकारतः** (अपनी मनमत के अनुसार) **वर्तते** (बरतता है), **सः** (वह) **न सिद्धिं** (न सफलता को), **न सुखं** (न सुख को) {और} **न परां गतिं** (न विष्णु रूप परम गति को) {ही} **अवाप्नोति** (पाता है)।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥ 16/24

तस्मात् शास्त्रम् प्रमाणम् ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तम् कर्म कर्तुम् इह अर्हसि।।

तस्मात् (इस कारण से) **ते** (तेरे लिए) **कार्याकार्यव्यवस्थितौ** (करने योग्य कर्म और विकर्म का फैसला करने में) **शास्त्रं** (श्रीमत्भगवद्गीता का आदेश) {ही} **प्रमाणं** (प्रमाण है)। {ऐसा} **ज्ञात्वा** (जानकर) **इह** (इस {संसार रूपी कुरुक्षेत्र अर्थात् कर्मक्षेत्र} में) **शास्त्रविधानोक्तं** (सर्वशास्त्रशिरोमणि गीता के संविधान में कहा गया) **कर्म** (कर्म) **कर्तुं** (करने के लिए) **अर्हसि** (तू योग्य है)।

अध्याय–17

अर्जुन उवाचः– ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥ 17/1

ये शास्त्रविधिम् उत्सृज्य यजन्ते श्रद्धया अन्विताः।
तेषाम् निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वम् आहो रजः तमः।।

कृष्ण (हे कामादिक शत्रुओं को आकर्षित करने वाले शिव)! **ये** (जो) **श्रद्धया** (श्रद्धा से) **अन्विताः** (भरकर) **शास्त्रविधिं** ({श्रीमती गीता माता}–शास्त्र के विधान को) **उत्सृज्य** (छोड़कर) **यजन्ते** (यज्ञ करते हैं), **तेषां** (उन {लोगों} की) **निष्ठा** (स्थिति) **तु** (फिर) **सत्त्वं** (सात्विक), **रजः** (राजसी) **आहो** (अथवा) **तमः** (तामसी)–**का** (कैसी होती है)?

श्रीभगवानुवाचः– त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ 17/2

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनाम् सा स्वभावजा।
सात्त्विकी राजसी च एव तामसी च इति ताम् शृणु।।

देहिनां (देहधारियों की) **स्वभावजा** (मौलिक स्वभाव से ही उत्पन्न हुई) **सा** (वह) **श्रद्धा** (श्रद्धा) **सात्त्विकी** (सत्वगुणी) **च** (और) **राजसी** (रजोगुणी) **च** (तथा) **तामसी** (तमोगुणी)–**इति** (इस तरह) **त्रिविधा** (3 प्रकार की) **एव** (ही) **भवति** (होती है), **तां** (उसे) **शृणु** (सुन)।

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥ 17/3

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत। श्रद्धामयः अयम् पुरुषः यः यच्छ्रद्धः स एव सः।।

भारत (हे भरतवंशी अर्जुन)! **सर्वस्य** (सबकी) **श्रद्धा** (श्रद्धा) **सत्त्वानुरूपा** {अनादिनिश्चित} (प्राणी स्वभाव के अनुकूल) **भवति** (होती है)। **अयम्** (यह) **पुरुषः** (आत्मा) **यः** (जो) **श्रद्धामयः** (श्रद्धा से युक्त होता है), **यत्** (जैसी)
श्रद्धः (श्रद्धा है), **सः** (वह) **सः** (वैसा) **एव** (ही है)।

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥ 17/4

यजन्ते सात्त्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः। प्रेतान् भूतगणान् च अन्ये यजन्ते तामसा जनाः।।

सात्त्विकाः (सत्वगुणी लोग) **देवान्** (देवताओं को), **राजसाः** (राजसी वृत्ति के लोग) **यक्षरक्षांसि** (यक्ष–राक्षसों को) {और} **अन्ये** (दूसरे) **तामसाः** (तामसी) **जनाः** (लोग) **प्रेतान्** (प्रेतों) **च** (और) **भूतगणान्** ({देहधारी} भूत समुदाय को) **यजन्ते** (पूजते अथवा याद करते हैं)।

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ।
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ 17/5
कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥ 17/6

अशास्त्रविहितम् घोरम् तप्यन्ते ये तपः जनाः। दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।।
कर्शयन्तः शरीरस्थम् भूतग्रामम् अचेतसः। माम् च एव अन्तःशरीरस्थम् तान् विद्धि आसुरनिश्चयान्।।

ये जनाः (जो लोग) **अशास्त्रविहितं** ({श्रीमती भगवद्गीता}–शास्त्र के विधान से रहित) **घोरं** (घोर) **तपः** {शारीरिक} (तप) **तप्यन्ते** (करते हैं), {वे} **दंभाहंकारसंयुक्ताः** (दंभ और अहंकार से भरकर) **कामरागबलान्विताः** (कामना, आसक्ति और शारीरिक बल से भरे हुए) **अचेतसः** (बेसमझ लोग) **शरीरस्थं** (शरीर में स्थित) **भूतग्रामं** (पंचभूतों के समुदाय को) **च** (और) **अन्तःशरीरस्थं** (अंतःवाहक सूक्ष्म शरीर में स्थित) **मां** (मुझ {योग शक्तिरूप आत्मा} को) **एव** (भी) **कर्शयन्तः** (कष्ट देते हैं)। {तू} **तान्** (उनको) **आसुरनिश्चयान्** (आसुरी निश्चयवाला) **विद्धि** (समझ)।

आह्वारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥ 17/7

आहारः तु अपि सर्वस्य त्रिविधः भवति प्रियः। यज्ञः तपः तथा दानम् तेषाम् भेदम् इमम् शृणु।।

सर्वस्य (सब {मनुष्यों} का) **प्रियः** (प्रिय) **आहारः** (भोजन) **अपि** (भी) **त्रिविधः** (तीन प्रकार का) **भवति** (होता है)। **यज्ञः, तपः** (यज्ञ, तप) **तथा दानं** (तथा दान) **तु** (और) **तेषां** (इनके) **इमं भेदं** (इस भेद को) **शृणु** (सुन)।

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिराः हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥ 17/8

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः। रस्याः स्निग्धाः स्थिराः हृद्याः आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः (आयु, बुद्धि, बल, स्वास्थ्य, सुख और प्रेमभाव को विशेषतः बढ़ाने वाले), **रस्याः** (रसीले), **स्निग्धाः** (चिकने), **स्थिरा** (स्थिर रहने वाले) **हृद्या** (रूचिकर) **आहाराः** (भोजन) **सात्त्विकप्रियाः** (सतोगुणी आत्माओं को प्रिय होते हैं)।

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आह्वरा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ 17/9

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः। आहारा राजसस्य इष्टाः दुःखशोकामयप्रदाः।।

कटु (कड़ुवे), **अम्ल** (खट्टे), **लवण** (नमकीन), **अति उष्ण** (बहुत गरम), **तीक्ष्ण** (तीखे), **रूक्ष** (रूखे) {और} **विदाहिनः** (जलन पैदा करने वाले) **आहाराः** (भोजन) **राजसस्य** (रजोगुणी आत्माओं को) **इष्टाः** (प्रिय हैं) {और वे} **दुःखशोकामयप्रदाः** (दुःख, शोक और रोग पैदा करते हैं)।

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ 17/10

यातयामम् गतरसम् पूति पर्युषितम् च यत्। उच्छिष्टम् अपि च अमेध्यम् भोजनम् तामसप्रियम्।।

यातयामं (जिसके खाने का समय न रहा हो), **गतरसं** (स्वादहीन), **पूति** (सड़ा हुआ), **पर्युषितं** (बासी), **उच्छिष्टं** (जूठा) **च** (और) **अमेध्यं** (अपवित्र) **भोजनं** (भोजन) **तामसप्रियम्** (तमोगुणी आत्माओं को प्रिय है)।

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ 17/11

अफलाकांक्षिभिः यज्ञः विधिदृष्टः य इज्यते। यष्टव्यम् एव इति मनः समाधाय स सात्त्विकः।।

अफलाकांक्षिभिः ({किसी लौकिक} फल की कामना न रखने वाले लोगों द्वारा) **विधिदृष्टः** (श्रीमत रूपी गीता विधान द्वारा भलीभाँति समझा हुआ) {और} **यष्टव्यं एव** (यज्ञ–सेवा करना ही कर्तव्य है) **इति** (इस प्रकार) **मनः** (मन का) **समाधाय** (समाधान करके अर्थात् निश्चयपूर्वक) **य यज्ञः इज्यते** (जो यज्ञ–सेवा कार्य किया जाता है), **स सात्त्विकः** (वह सात्विक है)।

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥ 17/12

अभिसन्धाय तु फलम् दम्भार्थम् अपि च एव यत्। इज्यते भरतश्रेष्ठ तम् यज्ञम् विद्धि राजसम्।।

तु भरतश्रेष्ठ (किन्तु, हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन)! **फलं** ({लौकिक} फल का) **अभिसंधाय** (लक्ष्य लेकर), **च एव** (उसी तरह) **दम्भार्थं** (दम्भ अर्थात् दिखावे के लिए) **अपि** (भी) **यत्** (जो) **इज्यते** ({यज्ञ–सेवा कार्य} किया जाता है), **तं यज्ञं** (उस यज्ञ–सेवा को) **राजसं** (रजोगुणी) **विद्धि** (जान)।

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥ 17/13

विधिहीनम् असृष्टान्नम् मन्त्रहीनम् अदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितम् यज्ञम् तामसम् परिचक्षते।।

विधिहीनं ({भगवान द्वारा बताए गए} विधिविधान से रहित) **असृष्टान्नं** (ब्रह्मा भोजन से रहित), **मन्त्रहीनं** ({मन्मनाभव रूपी} महामंत्र से रहित) **अदक्षिणं** (सम्मानहीन) {तथा} **श्रद्धाविरहितं** (श्रद्धाहीन) **यज्ञं** (यज्ञ–सेवा कार्य) **तामसं** (तमोगुणी) **परिचक्षते** (कहा जाता है)।

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ 17/14

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम् शौचम् आर्जवम्। ब्रह्मचर्यम् अहिंसा च शारीरम् तप उच्यते।।

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं (जो दिव्य स्वभाव का द्विजन्मा ब्राह्मण है, सबका गुरू है, सर्वोत्तम ज्ञानी है, उसका पूरा सम्मान करना), **शौचं** (शुद्धता), **आर्जवं** (सरलता), **ब्रह्मचर्यं** (वचन–कर्म से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन) **च** (और) **अहिंसा** (किसी को दुःख न देना) **शारीरं तपः** (शारीरिक तप) **उच्यते** (कहा जाता है)।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥ 17/15

अनुद्वेगकरम् वाक्यम् सत्यम् प्रियहितम् च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनम् च एव वाङ्मयम् तप उच्यते।।

अनुद्वेगकरं (औरों को कष्ट न पहुँचाने वाली) **सत्यं** (सत्य) **वाक्यं** (बात कहना), **यत्** (जो) **प्रियहितं च** (प्रिय और हितकारी हो)। **च एव** (उसी तरह) **स्वाध्यायाभ्यसनं** (आत्म–अध्ययन और नित्य अभ्यास) **वाङ्मयं तपः** (वाणी का तप) **उच्यते** (कहा जाता है)।

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥ 17/16

मनःप्रसादः सौम्यत्वम् मौनम् आत्मविनिग्रहः। भावसंशुद्धिः इति एतत् तपः मानसम् उच्यते।।

मनःप्रसादः (मन की प्रसन्नता), **सौम्यत्वं** (शांतभाव), **मौनं** (अन्तर्मुखी वृत्ति) **आत्मविनिग्रहः** (आत्मसंयम) {और} **भावसंशुद्धिः** (मनोभावों अर्थात् संकल्पों की शुद्धता)–**इति एतत्** (यह इतना) **मानसं** (मानसिक) **तपः** (तप) **उच्यते** (कहा जाता है)।

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ 17/17

श्रद्धया परया तप्तम् तपः तत् त्रिविधम् नरैः। अफलाकांक्षिभिः युक्तैः सात्त्विकम् परिचक्षते।।

अफलाकांक्षिभिः ({किसी भी लौकिक} फल की आकांक्षा न रखने वाले) **युक्तैः** (योगयुक्त) **नरैः** (मनुष्यों द्वारा) **परया श्रद्धया** (परम श्रद्धा पूर्वक) **तप्तं** (किया गया) **तत्** (वह) **त्रिविधं** ({मनसा, वाचा, कायिक}–तीन प्रकार का) **तपः** (तप) **सात्त्विकं** (सात्विक) **परिचक्षते** (कहलाता है)।

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥ 17/18

सत्कारमानपूजार्थम् तपः दम्भेन च एव यत्। क्रियते तत् इह प्रोक्तम् राजसम् चलम् अध्रुवम्।।

सत्कारमानपूजार्थं ({लौकिक} सत्कार, मान और पूजा के लिए) **च एव** (तथा) **दंभेन** (दम्भपूर्वक दिखावे के लिए) **यत्** (जो) **चलं** (अल्पकालीन) **अध्रुवं** (अस्थायी) {लौकिक फल वाला} **तपः** (तप) **क्रियते** (किया जाता है), **तदिह** (वह यहाँ) **राजसं** (राजसी) **प्रोक्तम्** (कहा गया है)।

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥ 17/19

मूढग्राहेण आत्मनः यत् पीडया क्रियते तपः। परस्य उत्सादनार्थम् वा तत् तामसम् उदाहृतम्।।

यत् (जो) **तपः** (तप) **मूढग्राहेण** (मूर्खतापूर्ण दुराग्रह के साथ) **आत्मनः** (अपने आप को) **पीडया** (पीड़ित करने के लिए किया जाता है) **वा** (अथवा) **परस्योत्सादनार्थं** (दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए) **क्रियते** (किया जाता है)–**तत्** (वह) **तामसं** (तामसी) **उदाहृतं** (कहा जाता है)।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ 17/20

दातव्यम् इति यत् दानम् दीयते अनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तत् दानम् सात्त्विकम् स्मृतम्।।

दातव्यं (देना हमारा कर्तव्य है) **इति** (यह {समझकर}) **यत्** (जो) **दानं** (दान) **अनुपकारिणे** (बदले में उपकार करने में असमर्थ) **देशे** (देश) **च** (तथा) **काले** (काल) **च** (और) **पात्रे** (सत्पात्र को) **दीयते** (दिया जाता है), **तत्** (वह) **दानं** (दान) **सात्त्विकं** (सात्विक) **स्मृतम्** (माना गया है);

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥ 17/21

यत् तु प्रत्युपकारार्थम् फलम् उद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टम् तत् दानम् राजसम् स्मृतम्।।

तु (किंतु) **प्रत्युपकारार्थं** (बदले में उपकार की भावना से) **वा** (अथवा) **पुनः** (फिर) **फलमुद्दिश्य** ({लौकिक} फल की आशा लेकर) **यत्** (जो) **दानं** (दान) **परिक्लिष्टं** (कष्ट पूर्वक) **दीयते** (दिया जाता है), **तत्** (वह) **राजसं** (राजसी) **स्मृतम्** (कहा गया है)।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ 17/22

अदेशकाले यत् दानम् अपात्रेभ्यः च दीयते। असत्कृतम् अवज्ञातम् तत् तामसम् उदाहृतम्।।

अदेशकाले (अयोग्य देश–काल में) **च** (और) **अपात्रेभ्यः** (अयोग्य पात्र को) **यत्** (जो) **दानं** (दान) **असत्कृतं** (असम्मानपूर्वक) {और} **अवज्ञातं** (अवज्ञापूर्वक) **दीयते** (दिया जाता है), **तत्** (वह) **तामसं** (तामसी) **उदाहृतम्** (कहा गया है)।

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥ 17/23

ॐ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणाः तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिताः पुरा।।

"ॐ" "तत्" "सत्"–इति (यह) **त्रिविधः** (तीन प्रकार का) **ब्रह्मणः** (ब्रह्मा का) **निर्देशः** (उपदेश) **स्मृतः** (स्मरण किया जाता है), **तेन** (उससे) **पुरा** (पूर्व कल्प में) {क्रमशः} **ब्राह्मणाः** (ब्रह्मा मुख से ''ॐ'' उच्चारणपूर्वक 'मैं आत्मा हूँ' ऐसे {ब्राह्मणों}) **च** (और) **वेदाः** ("तत्" निर्देशपूर्वक 'वह परमात्मा सम्बंधी ज्ञान' अर्थात् {वेदों}) **च** (तथा) **यज्ञाः** ("सत्" निर्देश पूर्वक यज्ञ रूपी सत कर्मों का) **विहिताः** (विधान किया गया)।

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ 17/24

तस्मात् ओम् इति उदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततम् ब्रह्मवादिनाम्।।

तस्मात् (इसलिए) {ही} **विधानोक्ताः** (गीता रूपी संविधान में बताई गई) **ब्रह्मवादिनां** (ब्रह्मा का उपदेश बोलने वालों की) **यज्ञदानतपःक्रियाः** (यज्ञ–दान और तप सम्बंधी सभी क्रियाएँ) **ओम्** ('ओम्' या 'ॐशांति') **इति** (ऐसा) **उदाहृत्य** (बोलकर) **सततम्** (सर्वदा) **प्रवर्तन्ते** (शुरू की जाती हैं)।

तदित्यनभिसन्धाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥ 17/25

तत् इति अनभिसंधाय फलम् यज्ञतपःक्रियाः। दानक्रियाः च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः।।

तत् ({उस रुद्र ज्ञान यज्ञ रूप परमात्मा के प्रति} 'तत्') **इति** (ऐसा {कहकर}) **फलं** ({किसी लौकिक} फल को) **अनभिसंधाय** (न चाहते हुए) **मोक्षकांक्षिभिः** (दुःखों से मुक्ति की आकांक्षा रखने वाले लोगों द्वारा) **विविधाः** (नाना प्रकार की) **यज्ञतपःक्रियाः** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ–सेवाएँ और {व्यक्तिगत} तप की क्रियाएँ) **च** (तथा) **दानक्रियाः** (दान के कार्य) **क्रियन्ते** (किए जाते हैं)।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥ 17/26

सद्भावे साधुभावे च सत् इति एतत् प्रयुज्यते। प्रशस्ते कर्मणि तथा सत् शब्दः पार्थ युज्यते।।

सद्भावे (वास्तविकता) **च** (और) **साधुभावे** (अच्छाई और कल्याण के अर्थ में) **सत्** ('सत्') **इति एतत्** (ऐसा यह) {शब्द} **प्रयुज्यते** (प्रयोग किया जाता है)। **तथा** (उसी तरह) **पार्थ** (हे पृथ्वी के राजा)! **प्रशस्ते** (प्रशंसनीय) **कर्मणि** ({यज्ञ–सेवा रूपी} कर्म में) {भी} **सत् शब्दः** ('सत्' शब्द) **युज्यते** (लगाया जाता है)।

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥ 17/27

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सत् इति च उच्यते।
कर्म च एव तदर्थीयम् सत् इति एव अभिधीयते।।

च (तथा) **यज्ञे** ({रुद्र ज्ञान} यज्ञ–सेवा में), **तपसि** ({व्यक्तिगत मन–वचन–काय की} तपस्या में) **च** (और) **दाने** ({ज्ञानादि के} दान में) **स्थितिः** (स्थित रहना) {भी} **सत् इति** ('सत्' ऐसे) **उच्यते** (कहा जाता है), **च एव** (इसी प्रकार) **तदर्थीयं** (उन यज्ञादि के लिए) **कर्म** {किया गया} (कर्म) **एव** (भी) **सत्** (सत्य)– **इति** (ऐसे) **अभिधीयते** (कहा जाता है)।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥ 17/28

अश्रद्धया हुतम् दत्तम् तपः तप्तम् कृतम् च यत्।
असत् इति उच्यते पार्थ न च तत् प्रेत्य नो इह।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति)! **अश्रद्धया** (अश्रद्धापूर्वक) **हुतं** (आहुति दिया गया यज्ञ), **दत्तं** (दान), **तप्तं तपः** {और} (किया गया मानसिक तप) **च** (अथवा) **यत् कृतं** (जो {कुछ} किया गया है), {वह} **असत्** ('असत्') **इति** (इस प्रकार) **उच्यते** (कहा जाता है); {क्योंकि} **तत्** (वह {कर्म}) **न प्रेत्य** (न मरकर परलोक में) **च नो इह** (और न इस {संसार} में) {फलीभूत होता है}।

अध्याय–18

अर्जुन उवाचः– सन्न्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् ।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ 18/1

सन्न्यासस्य महाबाहो तत्त्वम् इच्छामि वेदितुम्। त्यागस्य च हृषीकेश पृथक् केशिनिषूदन।।

महाबाहो (हे सहयोगियों रूपी दीर्घबाहु!) **हृषीकेश** (हे इन्द्रियों के स्वामी!) **केशिनिषूदन** (हे केशिहन्ता!) **सन्न्यासस्य** {लौकिक कर्मों के त्याग रूप} (सन्यास का) **च** (और) **त्यागस्य** {कर्मफल के} (त्याग का) **तत्त्वं** (तत्व) **पृथक्** (अलग–2) **वेदितुं** (जानना) **इच्छामि** (चाहता हूँ)।

श्रीभगवानुवाचः– काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ 18/2

काम्यानाम् कर्मणाम् न्यासम् संन्यासम् कवयः विदुः। सर्वकर्मफलत्यागम् प्राहुः त्यागम् विचक्षणाः।।

कवयः ({कुछ} बुद्धिमान) **काम्यानां** {सांसारिक} (कामना वाले) **कर्मणां** (कर्मों के) **न्यासं** (परित्याग को) **संन्यासं** (सन्यास) **विदुः** (समझते हैं), {जबकि अन्य} **विचक्षणाः** (विद्वान लोग) **सर्वकर्मफलत्यागं** (सभी {सांसारिक} कर्मों के फल–त्याग को) **त्यागं** (त्याग) **प्राहुः** (बताते हैं)।

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥ 18/3

त्याज्यम् दोषवत् इति एके कर्म प्राहुः मनीषिणः। यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यम् इति च अपरे।।

एके (कुछेक) **मनीषिणः** (बुद्धिमान) **कर्म** (प्रत्येक {सांसारिक} कर्म) **दोषवत्** (दोष अर्थात् पाप की तरह) **त्याज्यं** (त्याग करने योग्य है) **इति** (ऐसा) **प्राहुः** (कहते हैं) **च** (और) **अपरे** (दूसरों का) {मत है कि} **यज्ञदानतपःकर्म** (यज्ञ–सेवा, दान और तप रूपी {अलौकिक} कर्म) **न त्याज्यम्** (त्यागने योग्य नहीं हैं)।

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥ 18/4

निश्चयम् शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम। त्यागः हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः।।

भरतसत्तम (हे भरत कुल में उत्तम!) **तत्र त्यागे** (उस त्याग के विषय में) **मे** (मेरा) **निश्चयं** (निश्चय) **शृणु** (सुन)। **हि** (क्योंकि) **पुरुषव्याघ्र** (हे पुरुषों में सिंह स्वरूप!) **त्यागः** (त्याग) **त्रिविधः** (तीन प्रकार का) **सम्प्रकीर्तितः** (कहा गया है)।

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥ 18/5

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यम् कार्यम् एव तत्। यज्ञः दानम् तपः च एव पावनानि मनीषिणाम्।।

यज्ञदानतपःकर्म {रुद्र ज्ञान} (यज्ञ) {सेवा कार्य} दान और {मनसा} तपस्या रूपी आत्मस्मृति)–{ये तीन} **न त्याज्यम्** (त्यागने योग्य नहीं है), **तत्** (उसे) **कार्यं एव** (करना ही चाहिए); {क्योंकि} **यज्ञः दानं** {अलौकिक} (यज्ञ, दान) **तपश्चैव** (और {आत्मस्मृति रूपी} तपस्या ही) **मनीषिणां** (बुद्धिमानों को) **पावनानि** (पवित्र बनाते हैं)।

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥ 18/6

एतानि अपि तु कर्माणि संगम् त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानि इति मे पार्थ निश्चितम् मतम् उत्तमम्।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) **तु** (किंतु) **एतानि** (इन) **कर्माणि** {अलौकिक} (कर्मों को) **अपि** (भी) **संगं** {सांसारिक} (आसक्ति) **च** (और) **फलानि** (फलों को) **त्यक्त्वा** (त्याग कर) {ही} **कर्तव्यानि** (करना चाहिए), **इति** (ऐसा) **मे** (मेरा) **निश्चितं** (निश्चित) **उत्तमं मतम्** (उत्तम मत है)। {यदि यहीं फल भोग लिया, तो परलोक में क्या प्राप्ति होगी!} • सर्विस से यहाँ सुख लेंगे तो वहाँ का सुख कम हो जावेगा। (मु.16.1.67 पृ.3 आ.)

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ 18/7

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणः न उपपद्यते। मोहात् तस्य परित्यागः तामसः परिकीर्तितः।।

तु (परंतु) **नियतस्य** (पहले से नियत किए गए) {अनिवार्य} **कर्मणः** (कर्मों का) **संन्यासः** (परित्याग) **न उपपद्यते** (उचित नहीं है)। **मोहात्** (मूर्खता से) **तस्य परित्यागः** (उसे सर्वथा त्याग देना) **तामसः** (तामसी त्याग) **परिकीर्तितः** (कहलाता है)।

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥ 18/8

दुःखम् इति एव यत् कर्म कायक्लेशभयात् त्यजेत्।
स कृत्वा राजसम् त्यागम् न एव त्यागफलम् लभेत्।।

यत् कर्म (जो कर्म) **दुःखं** (दुःख रूप) **एव** (ही है) **इति** (यह {समझकर}) **कायक्लेशभयात्** (शारीरिक कष्ट के भय से) **त्यजेत्** (त्याग देता है), **सः** (वह) **राजसं त्यागम्** (राजसी त्याग) **कृत्वा** (करके) **त्यागफलं** (त्याग का फल) **एव** (ही) **न लभेत्** (नहीं पाता)।

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥ 18/9

कार्यम् इति एव यत् कर्म नियतम् क्रियते अर्जुन।
संगम् त्यक्त्वा फलम् च एव स त्यागः सात्त्विकः मतः।।

अर्जुन (हे अर्जुन!) **कार्यं एव** (करने ही योग्य है) **इति** (ऐसा {जानकर}) **यत् कर्म** (जो {अलौकिक} कर्म) **संगं** (आसक्ति) **च** (और) **फलं** (फल को) **त्यक्त्वा** (त्यागकर) **नियतं** (नियमपूर्वक–नित्य) **क्रियते** (किया जाता है), **सः एव** (वही) **सात्त्विकः** ({सतयुगी}–सात्विक) **त्यागः** (त्याग) **मतः** (माना जाता है)।

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते ।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ॥ 18/10

न द्वेष्टि अकुशलम् कर्म कुशले न अनुषज्जते। त्यागी सत्त्वसमाविष्टः मेधावी छिन्नसंशयः।।

त्यागी {लौकिक कर्मफल का} (त्याग करने वाला), **सत्त्वसमाविष्टः** (सतोगुणी स्वभाव वाला), **छिन्नसंशयः** (संशयहीन) {और} **मेधावी** (बुद्धिमान् व्यक्ति) **अकुशलं** (कुशलता रहित–अप्रिय) **कर्म** (कर्म से) **न द्वेष्टि** (घृणा नहीं करता) {और} **कुशले** (प्रिय कर्म में) **न अनुषज्जते** (लगाव नहीं रखता);

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥ 18/11

न हि देहभृता शक्यम् त्यक्तुम् कर्माणि अशेषतः।
यः तु कर्मफलत्यागी स त्यागी इति अभिधीयते।।

हि (क्योंकि) **देहभृता** (देहधारी) **कर्माणि** (कर्मों को) **अशेषतः** (सम्पूर्णतया) **त्यक्तुं** (त्यागने में) **शक्यं न** (समर्थ नहीं है); **तु** (किंतु) **यः** (जो) **कर्मफलत्यागी** {अलौकिक} (कर्म–फलों का त्याग करने वाला है), **सः** (वह) **त्यागी** (त्यागी है)– **इति** (यह) **अभिधीयते** (कहलाता है)।

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित् ॥ 18/12

अनिष्टम् इष्टम् मिश्रम् च त्रिविधम् कर्मणः फलम्।
भवति अत्यागिनाम् प्रेत्य न तु संन्यासिनाम् क्वचित्।।

अत्यागिनां (फल का त्याग न करने वालों को) **कर्मणः** (कर्म का) **अनिष्टं इष्टं** (अप्रिय–प्रिय) **च** (और) **मिश्रं** ({प्रिय–अप्रिय} मिश्रित) **त्रिविधं** (3 प्रकार का) **फलं** (फल) **प्रेत्य** (मर कर) {भी} **भवति** (प्राप्त होता है); **तु** (किन्तु) **संन्यासिनां** (कर्मों का सम्पूर्ण त्याग करने वालों को) **क्वचित् न** (कहीं भी {प्राप्त} नहीं होता)।

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥ 18/13

पंच एतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे। सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्।।

महाबाहो (हे दीर्घबाहु!) **सर्वकर्मणां** (सारे कर्मों की) **सिद्धये** (सफलता के लिए) **कृतान्ते** ({सांसारिक} कर्मों का अन्त करने वाले) **मे** (मेरे) **सांख्ये** (ज्ञान में) **एतानि** (इन) **पंच** (पाँच) **प्रोक्तानि** (कह गए) **कारणानि** (कारणों को) **निबोध** (समझ लो)।

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥ 18/14

अधिष्ठानम् तथा कर्ता करणम् च पृथग्विधम्।
विविधाः च पृथक् चेष्टाः दैवम् च एव अत्र पंचमम्।।

अत्र (इस {विषय} में) **अधिष्ठानं** (कर्म का आधारभूत शरीर), **तथा** (उसी तरह) **कर्ता** (कर्म करने वाली आत्मा) **च** (तथा) **पृथग्विधं** (विविध प्रकार की) **करणं** (इन्द्रियाँ) **च** (और) **विविधाः** (विविध प्रकार के) **पृथक्** (अलग–2) **चेष्टाः** (कर्म) **च** (और) **पंचमं** (पाँचवाँ) **दैवं** (अदृश्य भाग्य) **एव** (मुख्य) {कारण हैं}।

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥ 18/15

शरीरवांमनोभिः यत् कर्म प्रारभते नरः। न्याय्यम् वा विपरीतम् वा पंच एते तस्य हेतवः।।

शरीरवांमनोभिः (शरीर, वाणी और मन द्वारा) **न्याय्यं** (न्यायपूर्वक) **वा** (अथवा) **विपरीतं** (अन्यायपूर्वक) **यत् कर्म** (जो कर्म) **नरः** (मनुष्य) **प्रारभते** (करता है), **तस्य** (उसके) **एते** (ये) **पंच** (पाँचों) **हेतवः** (कारण हैं)।

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥ 18/16
तत्र एवम् सति कर्तारम् आत्मानम् केवलम् तु यः।
पश्यति अकृतबुद्धित्वात् न स पश्यति दुर्मतिः।।

तत्र (ऐसी {दशा} में) **एवं** (ऐसा) **सति** (होने पर) {भी} **यः** (जो) **अकृतबुद्धित्वात्** (कच्ची बुद्धि के कारण) **केवलं** (एकमात्र) **आत्मानं** (अपने आप को) **कर्तारं** (कर्ता) **पश्यति** (समझता है), **सः दुर्मतिः** (वह दुष्टबुद्धि वाला) **न पश्यति** (ठीक नहीं देखता)। {अहंकार–त्याग}

यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥ 18/17
यस्य न अहंकृतः भावः बुद्धिः यस्य न लिप्यते।
हत्वा अपि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते।।

यस्य (जिस {ज्ञानी} को) **अहंकृतः** ('मैंने किया है' {ऐसा}) **भावः** (भाव) **न** (नहीं है), **यस्य** (जिसकी) **बुद्धिः** (बुद्धि) **न लिप्यते** ({कर्म में} लिप्त नहीं होती), **सः** (वह) **इमान्** (इन) **लोकान्** (लोगों को) **हत्वा** (मारकर) **अपि** (भी) **न हन्ति** (नहीं मारता) {और} **न निबध्यते** (न बंधनयुक्त होता है)।
• बाप तो विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। (मु.11.5.90)

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः ॥ 18/18
ज्ञानम् ज्ञेयम् परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना। करणम् कर्म कर्ता इति त्रिविधः कर्मसंग्रहः।।

ज्ञानं (समझ), **ज्ञेयं** (समझने योग्य वस्तु) {और} **परिज्ञाता** (समझने वाला व्यक्ति)–{ये} **त्रिविधा** (तीन प्रकार की) **कर्मचोदना** (कर्मों की प्रेरणा है)। **करणं** (इन्द्रियादि साधन), **कर्म** (कार्य) {तथा} **कर्ता** (करने वाला व्यक्ति) **इति** (यह) **त्रिविधः** (तीन प्रकार का) **कर्मसंग्रहः** (कर्मों का संग्रह रूप आश्रय है)।

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥ 18/19
ज्ञानम् कर्म च कर्ता च त्रिधा एव गुणभेदतः। प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावत् शृणु तानि अपि।।

गुणसंख्याने (गुणों के ज्ञान में), **ज्ञानं** (ज्ञान) **च** (और) **कर्म** (कर्म) **च** (तथा) **कर्ता** (करने वाला) **गुणभेदतः** (गुणों के भेद से) **त्रिधा** (तीन प्रकार के) **एव** (ही) **प्रोच्यते** (कहे जाते हैं)। **तानि** (उन्हें) **अपि** (भी) **यथावत्** (यथार्थ रीति) **शृणु** (सुन)।

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥ 18/20
सर्वभूतेषु येन एकम् भावम् अव्ययम् ईक्षते। अविभक्तम् विभक्तेषु तत् ज्ञानम् विद्धि सात्त्विकम्।।

येन (जिस {ज्ञान} द्वारा) **विभक्तेषु** (अलग–2 हुए) **सर्वभूतेषु** (सब प्राणियों में) **अव्ययं** (अविनाशी) {और} **अविभक्तं** (अखण्ड) **एकं** (एक) {ही} **भावं** {आत्मा–2 भाई–2 के} (भाव को) **ईक्षते** (देखता है), **तत्** (उसे) **सात्त्विकं** ({सतयुगी} सात्विक) **ज्ञानं** (ज्ञान) **विद्धि** (जान);

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् ।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥ 18/21
पृथक्त्वेन तु यत् ज्ञानम् नानाभावान् पृथग्विधान्। वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तत् ज्ञानम् विद्धि राजसम्।।

तु (किंतु) **यत्** (जो) **ज्ञानं** (ज्ञान) **सर्वेषु** (सब) **भूतेषु** (प्राणियों में) {हिन्दू, मुस्लिम, सिक्खादि शारीरिक आकृति की} **पृथक्त्वेन** (भिन्नता द्वारा) **नानाभावान्** ({हिन्दुत्व आदि} नाना प्रकार के भावों को) **पृथग्विधान्** (अलग–2 रीति से) **वेत्ति** (जानता है), **तत्** (उस) **ज्ञानं** (ज्ञान को) **राजसं** ({द्वापरयुगी} रजोगुण वाला) **विद्धि** (जान);

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥ 18/22

यत् तु कृत्स्नवत् एकस्मिन् कार्ये सक्तम् अहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवत् अल्पम् च तत् तामसम् उदाहृतम्।।

तु (किंतु) **यत्** (जो) **एकस्मिन्** (एक ही) {सम्प्रदायिक} **कार्ये** (कार्य में) **अहैतुकं** (बिना किसी कारण के) **कृत्स्नवत्** ('सब कुछ यही है' की भाँति) **सक्तं** (आसक्त) **च** (और) **अतत्त्वार्थवत्** (तत्वहीन की तरह) **अल्पं** (संकुचित अर्थात् क्षुद्र है), **तत्** (वह {ज्ञान}) **तामसम्** ({कलियुगी} तमोगुण वाला) **उदाहृतम्** (कहा गया है), {जैसे कि आज आत्मा–आत्मा भाई–भाई के भ्रातृभाव को सर्वथा भूलकर, अपने–2 मठपंथ सम्प्रदाय को ही सम्पूर्ण मान बैठे हैं}।

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥ 18/23

नियतम् संगरहितम् अरागद्वेषतः कृतम्। अफलप्रेप्सुना कर्म यत् तत् सात्त्विकम् उच्यते।।

नियतं (नित्य–नियमपूर्वक), **संगरहितं** (आसक्तिहीन) **अरागद्वेषतः** (रागद्वेष के बिना) {और} **अफलप्रेप्सुना** (फलेच्छा से रहित व्यक्ति द्वारा) **यत् कर्म** (जो कर्म) **कृतं** (किया गया है), **तत्** (वह) **सात्त्विकं** ({सतयुगी}–सात्विक) **उच्यते** (कहा जाता है);

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ 18/24

यत् तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः। क्रियते बहुलायासम् तत् राजसम् उदाहृतम्।।

तु (किंतु) **कामेप्सुना** (फल की कामना रखने वाले व्यक्ति द्वारा) **साहंकारेण** (अहंकार पूर्वक) **वा** (अथवा) **बहुलायासं** (बड़े परिश्रमपूर्वक) **यत्** (जो) **कर्म** (कार्य) **पुनः** (बारंबार) **क्रियते** (किया जाता है), **तत्** (वह) **राजसम्** ({द्वापरयुगी} राजसी) **उदाहृतम्** (कहा गया है)।

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥ 18/25

अनुबंधम् क्षयम् हिंसाम् अनवेक्ष्य च पौरुषम्। मोहात् आरभ्यते कर्म यत् तत् तामसम् उच्यते।।

अनुबंधं (होने वाले परिणाम), **क्षयं** (हानि), **हिंसां** (हिंसा) **च** (और) **पौरुषं** (सामर्थ्य को) **अनवेक्ष्य** (न देखकर) **मोहात्** (मोहपूर्वक) **यत्** (जो {कर्म}) **आरम्यते** (प्रारम्भ किया जाता है), **तत्** (वह) **तामसं** ({कलियुगी} तामसी) **कर्म** (कर्म) **उच्यते** (कहा जाता है)।

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥ 18/26

मुक्तसंगः अनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः। सिद्ध्यसिद्ध्योः निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।।

मुक्तसंगः (आसक्तिहीन), **अनहंवादी** (निरहंकारी), **धृत्युत्साहसमन्वितः** (धैर्य और उत्साह से भरपूर) {और} **सिद्ध्यसिद्ध्योः** (सफलता–असफलता में) **निर्विकारः** (कामादिक विकृतियों से रहित) **सात्त्विकः** {सतयुगी} (सात्विक)
कर्ता (कर्म करने वाला) **उच्यते** (कहा जाता है)।

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥ 18/27

रागी कर्मफलप्रेप्सुः लुब्धः हिंसात्मकः अशुचिः। हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः।।

रागी (विषयों में आसक्त), **कर्मफलप्रेप्सुः** (कर्मफल की इच्छा रखने वाला),

लुब्धः (लोभी), **हिंसात्मकः** (दूसरों को दुःख देने के स्वभाव वाला), **अशुचिः** (अपवित्र) {और} **हर्षशोकान्वितः** (हर्ष–शोक से भरपूर) **राजसः** {द्वापरयुगी} (रजोगुणी) **कर्ता** (कर्ता) **परिकीर्तितः** (कहा जाता है)।

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥ 18/28

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठः नैष्कृतिकः अलसः। विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते।।

अयुक्तः (असावधान या चंचल बुद्धि वाला), **प्राकृतः** (असभ्य या गँवार), **स्तब्धः** (हठी), **शठः** (धोखेबाज), **नैष्कृतिकः** (नीच) **अलसः** (आलसी), **विषादी** (दुःखी स्वभाव वाला) **च** (और) **दीर्घसूत्री** (काम को टालने वाला या देर से करने वाला) **तामसः** {कलियुगी} (तमोगुणी) **कर्ता** (कर्ता) **उच्यते** (कहा जाता है)।

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु ।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय ॥ 18/29

बुद्धेः भेदम् धृतेः च एव गुणतः त्रिविधम् शृणु। प्रोच्यमानम् अशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय।।

धनंजय (हे ज्ञान धन जीतने वाले)! **गुणतः** (गुणों के अनुसार) **धृतेः** (धारणा शक्ति) **च** (और) **बुद्धेः** (बुद्धि के) **त्रिविधं** (तीन प्रकार के) **भेदं** (भेद को) **एव** (भी) **शृणु** (सुन)। {मैं उन्हें} **अशेषेण** (पूरी तरह) **पृथक्त्वेन** (अलग–2 रूप से) **प्रोच्यमानम्** (कह रहा हूँ)।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ 18/30

प्रवृत्तिम् च निवृत्तिम् च कार्याकार्ये भयाभये।
बंधम् मोक्षम् च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) **या** (जो) **बुद्धिः** (बुद्धि) **प्रवृत्तिं** (कर्मो में लगने) **च** (और) **निवृत्तिं** (उनसे उपराम होने की क्रिया को) **कार्याकार्ये** (करने योग्य और न करने योग्य को), **भयामये** (भय और निर्भयता को) **च** (तथा) **बंधं च मोक्षं** (दुःखों के बंधन और उनसे मुक्ति को) {भी} **वेत्ति** (जानती है)– **सा** (वह) **सात्त्विकी** (सत्वगुणी बुद्धि है)।

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ 18/31

यया धर्मम् अधर्मम् च कार्यम् च अकार्यम् एव च। अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) **यया** (जिस बुद्धि से) {मनुष्य} **धर्मं** {गुणों की धारणा रूप} (धर्म) **च** (और) **अधर्मं** {उससे विपरीत} (अधर्म को) **च** (और) **कार्यं** (करने योग्य कर्तव्य) **च** (या) **अकार्यं** (अकर्तव्य को) **एव** (भी) **अयथावत्** (गलत ढंग से) **प्रजानाति** (जान पाती है), **सा** (वह) **राजसी** {द्वापरयुगी} (राजसी) **बुद्धिः** (बुद्धि है)।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ 18/32

अधर्मम् धर्मम् इति या मन्यते तमसा आवृता। सर्वार्थान् विपरीतान् च बुद्धिः सा पार्थ तामसी।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति अर्जुन!) **तमसा** (तमोगुण से) **आवृता** (ढकी हुई) **या** (जो {बुद्धि}) **अधर्मं** (अधर्म को) **धर्मं** (धर्म) **च** (तथा) **सर्वार्थान्** (सब अर्थों को) **विपरीतान्** (उल्टा) {ही} **मन्यते** (मानती है), **सा** (वह) **तामसी** {कलियुगी} (तमोगुणी) **बुद्धिः** (बुद्धि है)।

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ 18/33

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः। योगेन अव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी।।

पार्थ (हे अर्जुन!) **योगेन** (ईश्वरीय याद के द्वारा) **यया** (जिस) **अव्यभिचारिण्या** (अव्यभिचारी) **धृत्या** (धारणा शक्ति से) **मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः** (मन, प्राण और इन्द्रियों की सारी क्रियाएँ या चेष्टाएँ) **धारयते** {श्रीमत के विरुद्ध जाने से} (रोक ली जाती है), **सा** (वह) **सात्त्विकी** (सात्विकी) **धृतिः** (धारणा शक्ति है);

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन ।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ 18/34

यया तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयते अर्जुन। प्रसंगेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी।।

तु (किंतु) **अर्जुन** (हे अर्जुन!) **यया** (जिस) **धृत्या** (धारणा शक्ति से) **धर्मकामार्थान्** (धर्म, धन और कामनाओं को) **प्रसंगेन** (अत्यन्त आसक्तिपूर्वक) **फलाकांक्षी** (फल की आकांक्षा करते हुए) **धारयते** (धारण किया जाता है), **पार्थ** (हे पृथ्वीपति!) **सा** (वह) **राजसी** (रजोगुणी) **धृतिः** (धारणाशक्ति है)।

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥ 18/35

यया स्वप्नम् भयम् शोकम् विषादम् मदम् एव च। न विमुंचति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।।

पार्थ (हे पार्थ!) **दुर्मेधाः** (दुष्ट बुद्धि वाला व्यक्ति) **यया** (जिस {धारण शक्ति} से) **स्वप्नं** (स्वप्न), **भयं** (भय), **शोकं** (शोक), **विषादं** (खिन्नता–उदासी) **च** (और) **मदं** (गर्व को) **एव** (भी) **न विमुंचति** (नहीं छोड़ता), **सा** (वह) **तामसी धृतिः** (तामसी धारणाशक्ति है);

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥ 18/36

सुखम् तु इदानीम् त्रिविधम् शृणु मे भरतर्षभ। अभ्यासात् रमते यत्र दुःखान्तम् च निगच्छति।।

तु (किंतु) **भरतर्षभ** (हे भरतश्रेष्ठ!) **इदानीं** (इस) **त्रिविधं** (तीन प्रकार के) **सुखं** (सुख को) **मे** (मेरे से) **शृणु** (सुन), **यत्र** (जिसमें) {मनुष्य} **अभ्यासात्** {योग} (अभ्यास करने से) **रमते** {आनन्दपूर्वक} (रमण करता है) **च** (और) **दुःखान्तं** (दुःखों के अंत को) **निगच्छति** (पा लेता है)।

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ 18/37

यत् तत् अग्रे विषम् इव परिणामे अमृतोपमम्। तत् सुखम् सात्त्विकम् प्रोक्तम् आत्मबुद्धिप्रसादजम्।।

यत् (जो) **तदग्रे** (उस {सुख} के आरम्भ में) **विषं इव** (विष की तरह) {और}
परिणामे (परिणाम में) **अमृतोपमं** (अमृत के समान है), **तत्** (वह) **आत्मबुद्धिप्रसादजं** (आत्म स्वरूप में स्थित बुद्धि की प्रसन्नता से उत्पन्न हुआ) **सुखं** (सुख) **सात्त्विकं** {सतयुगी} (सात्विक) **प्रोक्तं** (कहा गया है)।

विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥ 18/38

विषयेन्द्रियसंयोगात् यत् तत् अग्रे अमृतोपमम्।
परिणामे विषम् इव तत् सुखम् राजसम् स्मृतम्।।

यत् (जो {सुख}) **विषयेन्द्रियसंयोगात्** (विषयों और इन्द्रियों के संयोग से)
तदग्रे (उसकी शुरुआत में) **अमृतोपमं** (अमृत के समान); {किंतु} **परिणामे**
(परिणाम में) **विषं** (विष की) **इव** (भाँति) {हो}, **तत्** (उस) **सुखं** (सुख को) **राजसं** (राजसी) **स्मृतम्** (माना गया है)।

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ 18/39

यत् अग्रे च अनुबन्धे च सुखम् मोहनम् आत्मनः। निद्रालस्यप्रमादोत्थम् तत् तामसम् उदाहृतम्।।

यत् (जो {सुख}) **अग्रे** (आरम्भ में) **च** (और) **अनुबंधे** (अन्त में) **च** (भी) **आत्मनः** (मन–बुद्धि को) **मोहनं** (मोहित करने वाला) {तथा} **निद्रालस्यप्रमादोत्थं** (निद्रा, आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न हुआ है), **तत् सुखम्** (वह सुख) **तामसं** (तामसिक) **उदाहृतम्** (कहा गया है)।

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥ 18/40
न तत् अस्ति पृथिव्याम् वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वम् प्रकृतिजैः मुक्तम् यत् एभिः स्यात् त्रिभिः गुणैः।।

प्रकृतिजैः (स्वभाव से उत्पन्न हुए) **एभिः** (इन) **त्रिभिः** (तीनों) **गुणैः** (गुणों से) **मुक्तं** (मुक्त) **यत्** (जो) **स्यात्** {हो}, **तत्** (वह) **सत्त्वं** (प्राणी या पदार्थ) **पृथिव्यां** (पृथ्वी पर) **वा** (या) **दिवि** (आकाश में) **वा** (अथवा) **देवेषु** (देवताओं {के बीच स्वर्ग} में) {भी} **न अस्ति** (नहीं है)।

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ 18/41
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् शूद्राणाम् च परंतप। कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैः गुणैः।।

परंतप (हे कामादिक शत्रुओं को तपाने वाले!) **ब्राह्मणक्षत्रियविशां** (ब्राह्मण, {देव}, क्षत्रिय, वैश्य) **च** (और) **शूद्राणां** (शूद्रों के) **कर्माणि** (कर्म) {अनादिनिश्चित चतुर्युगी में} **स्वभावप्रभवैः** (आत्म–भाव से उत्पन्न हुए) **गुणैः** (गुणों द्वारा) **प्रविमक्तानि** (प्रकृष्ट रूप से बँटे हुए हैं)।

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥ 18/42
शमः दमः तपः शौचम् क्षान्तिः आर्जवम् एव च।
ज्ञानम् विज्ञानम् आस्तिक्यम् ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।

शमः (शांत भाव), **दमः** (इन्द्रियों का दमन), **तपः** (तप), **शौचं** (शुद्धता), **क्षान्तिः** (क्षमा), **आर्जवं** (सरलता), **ज्ञानं** (ईश्वरीय ज्ञान) **च** (और) **विज्ञानं** (योग, विशेष अनुभवयुक्त ज्ञान), **एव** (उसी तरह) **आस्तिक्यं** (आस्तिकता)–{ये अनादि निश्चित} **स्वभावजं** (आत्मभाव से उत्पन्न हुए) **ब्रह्मकर्म** (ब्राह्मण {धर्म की आत्माओं के सतयुगी स्वाभाविक गुण} कर्म हैं)।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥ 18/43
शौर्यम् तेजः धृतिः दाक्ष्यम् युद्धे च अपि अपलायनम्।
दानम् ईश्वरभावः च क्षात्रम् कर्म स्वभावजम्।।

शौर्यं (शूरवीरता), **तेजः** (तेज), **धृतिः** {महाआपत्ति में भी आत्मगुणों को} (धारण करने की शक्ति) **दाक्ष्यं** (दक्षता–कुशलता) **च** (तथा) {भयंकर मायावी} **युद्धे** (युद्ध में) **अपि** (भी) **अपलायनं** (न भागना), **दानं** (दान) **च** (और) **ईश्वरभावः** (प्रभुत्व–स्वामित्व)–{ये} **क्षात्रं** {त्रेतायुगी} (क्षत्रियों के) **स्वभावजं** {अनादि निश्चित} (स्वभाव से उत्पन्न हुए) **कर्म** (गुण–कर्म) {हैं}।

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ 18/44
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम् वैश्यकर्म स्वभावजम्। परिचर्यात्मकम् कर्म शूद्रस्य अपि स्वभावजम्।।

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं (खेती, पशुओं की रक्षा और व्यापार) {आदि–अनादि निश्चित} **स्वभावजं** (स्वभाव से उत्पन्न हुए) **वैश्यकर्म** {द्वापरयुगी} (वैश्यों के कर्म हैं) {और} **परिचर्यात्मकं** {इन सबकी} (नौकरी–चाकरी से

सम्बंधित) **शूद्रस्य** {कलियुगी} (शूद्र के) **अपि** (भी) **स्वभावजं** {अनादि निश्चित} (आत्म–भाव से उत्पन्न हुए) **कर्म** (कर्म हैं)। →भये वर्ण शंकर सबै (तुलसीदास)

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ 18/45

स्वे स्वे कर्मणि अभिरतः संसिद्धिम् लभते नरः। स्वकर्मनिरतः सिद्धिम् यथा विन्दति तत् शृणु।।

स्वे स्वे (अपने–2) **कर्मणि** (कर्मों में) **अभिरतः** (निरंतर लगा हुआ) **नरः** (मनुष्य) **संसिद्धिं** (सम्पूर्ण सिद्धि–मुक्ति–जीवनमुक्ति को) **लभते** (पा लेता है)। **स्वकर्मनिरतः** (अपने कर्म में अच्छी तरह लगा हुआ) {व्यक्ति} **यथा** (जिस प्रकार) **सिद्धिं** (दुःखों से मुक्ति रूप सिद्धि को) **विंदति** (पाता है), **तत्** (उसे) **शृणु** (सुन)।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥ 18/46

यतः प्रवृत्तिः भूतानाम् येन सर्वम् इदम् ततम्। स्वकर्मणा तम् अभ्यर्च्य सिद्धिम् विन्दति मानवः।।

{कल्पान्तकालीन चतुर्युगी के अंत में} **यतः** (जिस {रुद्र ज्ञान यज्ञ पिता} से) **भूतानां** (जड़–चेतन भूतसमुदाय की) **प्रवृत्तिः** (उत्पत्ति, चेष्टा आदि क्रिया) {होती हैं और} **येन** (जिस {यज्ञ पिता} से) **इदं** (यह) **सर्वं** (सारा {जगत् बीज से वृक्ष की तरह}) **ततं** (विस्तृत हुआ है), **तं** (उस {यज्ञ पिता} की) **स्वकर्मणा** (अपने स्वाभाविक कर्म से) **अभ्यर्च्य** (रूबरू अर्चना करके) **मानवः** (मनुष्य) **सिद्धिं** {दुःखों से मुक्ति रूप} (सिद्धि को) **विन्दति** (पाता है)।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ 18/47

श्रेयान् स्वधर्मः विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्। स्वभावनियतम् कर्म कुर्वन् न आप्नोति किल्बिषम्।।

परधर्मात् (जड़ प्रकृति के धर्म से) **विगुणः** (विरुद्ध गुण वाला) **स्वधर्मः** (आत्मा का धर्म) **सु+अनुष्ठितात्** (सुखपूर्वक पालन करने के कारण) **श्रेयान्** (अधिक श्रेष्ठ है)। {अनादिनिश्चित} **स्वभावनियतं** (आत्म–भाव द्वारा {पहले से} नियत किया हुआ) **कर्म** (कर्म) **कुर्वन्** (करता हुआ) {पुरुष} **किल्बिषं** (पाप का) **न आप्नोति** (भागी नहीं बनता)।

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ 18/48

सहजम् कर्म कौन्तेय सदोषम् अपि न त्यजेत्। सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेन अग्निः इव आवृताः।।

कौन्तेय (हे कुन्ती पुत्र!) **सहजं** (सहज) **कर्म** (कर्म) **सदोषं** (दोषयुक्त हो) **अपि** (तो भी) **न त्यजेत्** (नहीं त्यागना चहिए); **हि** (क्योंकि) **धूमेन** (धुएँ से) **अग्निः** (अग्नि की) **इव** (तरह) **सर्वारम्भाः** (सभी {सांसारिक} कर्म) **दोषेण** (दोष से) **आवृताः** (ढके हुए हैं)।

- सब धंधों में है नुकसान सिवाय एक ईश्वरीय धंधे के। (मु.ता.....)

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति ॥ 18/49

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः। नैष्कर्म्यसिद्धिम् परमाम् संन्यासेन अधिगच्छति।।

सर्वत्र (सबमें) **असक्तबुद्धिः** (आसक्ति रहित बुद्धि वाला), **जितात्मा** {मन-बुद्धि रूपी} (आत्मा को जीतने वाला) {और} **विगतस्पृहः** (तृष्णाहीन) {व्यक्ति} **संन्यासेन** {लौकिक कर्मों के} (समुचित त्याग द्वारा) **परमां** (परम श्रेष्ठ), **नैष्कर्म्यसिद्धिं** {जहाँ कोई कर्म करना शेष न रहे, ऐसी बैकुण्ठ रूप} (नैष्कर्म सिद्धि को) **अधिगच्छति** (प्राप्त करता है)।

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥ 18/50

सिद्धिम् प्राप्तः यथा ब्रह्म तथा आप्नोति निबोध मे।
समासेन एव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र!) **सिद्धिं प्राप्तः** {जीवनमुक्त रूप} (सफलता–प्राप्त व्यक्ति) **यथा** (जिस रीति) **ब्रह्म** (ब्रह्मलोक को) **आप्नोति** (प्राप्त करता है), **तथा** (उसी तरह) **ज्ञानस्य** (ज्ञान की) **या** (जो) **परा निष्ठा** (पराकाष्ठा–सर्वोच्च स्थिति है), {उसे} **मे** (मेरे से) **समासेन** (संक्षेप में) **एव** (ही) **निबोध** (सुन)।

बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ 18/51

बुद्ध्या विशुद्धया युक्तः धृत्या आत्मानम् नियम्य च।
शब्दादीन् विषयान् त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च।।

विशुद्धया {राजयोग से} (विशेष शुद्ध की हुई) {निर्विकारी} **बुद्ध्या** (बुद्धि से) **युक्तः** (ईश्वरीय स्मृति में लगा हुआ) {व्यक्ति} **धृत्या** (धैर्यपूर्वक) **आत्मानं** (अपने मन को) **नियम्य** (नियमित करके) **शब्दादीन्** (शब्द–रूप–रस आदि) **विषयान्** (विषयों को) **त्यक्त्वा** (त्याग कर) **च** (और) **रागद्वेषौ** (राग–द्वेष को) **व्युदस्य** (छोड़कर),

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ 18/52

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः। ध्यानयोगपरः नित्यम् वैराग्यम् समुपाश्रितः।।

विविक्तसेवी (एकान्तप्रिय), **लघ्वाशी** (अल्पाहारी), **यतवाक्कायमानसः** (मनसा–वाचा–कर्मणा को मर्यादित करके) **नित्यं** (नित्य) **ध्यानयोगपरः** (विचार–सागर–मंथन और योग परायण हुआ) **वैराग्यं** {पुरानी भस्म होने वाली कलियुगी दुनिया से} (वैराग्य भाव का) **समुपाश्रितः** (सम्पूर्ण आश्रय लेने वाला है) {और}

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ 18/53

अहंकारम् बलम् दर्पम् कामम् क्रोधम् परिग्रहम्। विमुच्य निर्ममः शान्तः ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

अहंकारं (अहंभाव), **बलं** {विकारी} (बल), **दर्पं** (घमंड), **कामं–क्रोधं** (काम–क्रोध) {और} **परिग्रहं** ('यह चाहिए–वह चाहिए' आदि संग्रह वृत्ति को) **विमुच्य** (विशेष रूप से छोड़कर) **निर्ममः** (ममताहीन), **शान्तः** (शांतचित्त हुआ) {व्यक्ति} **ब्रह्मभूयाय** (ब्रह्मलोक से सर्वप्रथम उत्पन्न होने के लिए) **कल्पते** (समर्थ है)।

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ 18/54

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिम् लभते पराम्।।

ब्रह्मभूतः (ब्रह्मलोक से उत्पन्न हुआ) **प्रसन्नात्मा** (प्रसन्न मन वाला) {ब्राह्मण}
न शोचति (न शोक करता है), **न कांक्षति** (न {सांसारिक} आकांक्षा करता है) {और} **सर्वेषु** (सब) **भूतेषु** (प्राणियों में) **समः** (समान) {दृष्टि वाला} **परां मद्भक्तिं** (मेरी परम भक्ति-भावना का) **लभते** (लाभ लेता है)।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥ 18/55

भक्त्या माम् अभिजानाति यावान् यः च अस्मि तत्त्वतः।
ततः माम् तत्त्वतः ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।।

ततः (तत्पश्चात्) {वह ब्राह्मण उस} **भक्त्या** (ईश्वरीय भक्ति–भावना द्वारा), {मैं} **यः** (जो) **च** (और) **यावान्** (जैसा) **अस्मि** (हूँ) {वैसा ही} **मां** (मुझको) **तत्त्वतः** (यथार्थ रीति से) **अभिजानाति** (भली–भाँति जान जाता है)

{और} **माम्** (मुझको) **तत्त्वतः** (यथार्थतः) **ज्ञात्वा** (समझकर) **तदनन्तरं** (बाद में) {अव्यक्तमूर्ति शिवलिंग में} **विशते** (प्रवेश करता है)।

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ 18/56

सर्वकर्माणि अपि सदा कुर्वाणः मद्व्यपाश्रयः। मत्प्रसादात् अवाप्नोति शाश्वतम् पदम् अव्ययम्।।

सदा (सदा) **मद्व्यपाश्रयः** (मेरा ही विशेष आश्रय लेने वाला) **सर्वकर्माणि** (सब कर्मों को) **कुर्वाणः** (करता हुआ) **अपि** (भी) **मत्प्रसादात्** (मेरी प्रसन्नता से) **शाश्वतं** (चिरकालीन) **अव्ययं** (अविनाशी) {विष्णु रूप परम्} **पदं** (पद को) **अवाप्नोति** (पाता है)।

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ 18/57

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः। बुद्धियोगम् उपाश्रित्य मच्चित्तः सततम् भव।।

चेतसा (मन–बुद्धि पूर्वक) **सर्वकर्माणि** (सब कर्मों को) **मयि** (मेरे में) **संन्यस्य** (अर्पण करके) **मत्परः** (मेरे परायण हुआ), **बुद्धियोगं** (बुद्धियोग का) **उपाश्रित्य** (आधार लेकर) **सततं** (निरन्तर) **मच्चित्तः** (मेरे में चित्त लगाने वाला) **भव** (हो)।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥ 18/58

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात् तरिष्यसि। अथ चेत् त्वम् अहंकारात् न श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि।।

मच्चित्तः (मेरे में मन–बुद्धि लगाने वाला) **मत्प्रसादात्** (मेरी प्रसन्नता से) **सर्वदुर्गाणि** (सब विघ्नों रूपी दुर्गों की दीवारों को) **तरिष्यसि** (पार कर जाएगा) **अथ** (और) **चेत्** (यदि) **त्वम्** (तू) **अहंकारात्** (अहंकार के कारण) {मेरी बात} **न श्रोष्यसि** (नहीं सुनेगा) {तो} **विनंक्ष्यसि** (सर्वथा नष्ट हो जाएगा)।

यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ॥ 18/59

यत् अहंकारम् आश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्या एषः व्यवसायः ते प्रकृतिः त्वाम् नियोक्ष्यति।।

यत् (जो) **अहंकारं** (अहंकार का) **आश्रित्य** (आसरा लेकर) **न योत्स्ये** ('युद्ध नहीं करूँगा')–**इति** (ऐसा) {ही} **मन्यसे** (मानेगा), {तो} **ते** (तेरा) **एषः** (यह) **व्यवसायः** (सोचना) **मिथ्या** (व्यर्थ है); {क्योंकि} **प्रकृतिः** {तेरा अनादि निश्चित} (स्वभाव–आत्मभाव) **त्वां** (तुझको) **नियोक्ष्यति** {युद्ध में} (लगा देगा)।

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥ 18/60

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुम् न इच्छसि यत् मोहात् करिष्यसि अवशः अपि तत्।।

कौन्तेय (हे कुन्ती माता के पुत्र!) **स्वभावजेन** {अनादि निश्चित} (स्वभाव से उत्पन्न हुए) **स्वेन** (अपने) **कर्मणा** (कर्म से) **निबद्धः** (बँधा हुआ) **यत्** (यदि) **मोहात्** (मूर्खतावश) **कर्तुं** (करने की) **न इच्छसि** (इच्छा नहीं करता है), **तत्** (तो) **अपि** (भी) **अवशः** (बरबस हुआ) **करिष्यसि** ({तू अवश्य} करेगा)।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ 18/61

ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

अर्जुन (हे सद्भाग्य का अर्जन करने वाले!) {आज} **सर्वभूतानां** (सब प्राणियों के) **हृद्देशे** (हृदय में) **ईश्वरः** (ईश्वर) **तिष्ठति** {नं०वार योगशक्ति स्वरूप से} (बैठा हुआ है) {और} **यंत्रारूढानि** {चाक रूपी सृष्टि–चक्र

अर्थात्} (यंत्र पर चढ़ाए हुए) {उन} **सर्वभूतानि** (सब प्राणियों को) **मायया** (माया द्वारा) **भ्रामयन्** (भ्रमित किया जा रहा है)।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥ 18/62
तम् एव शरणम् गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत् प्रसादात् पराम् शांतिम् स्थानम् प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।

भारत (हे भारत!) **सर्वभावेन** (समग्र भाव से) **तम्+एव** (उस {शिव ईश्वर की} ही) **शरणं** (शरण) **गच्छ** (ले)। **तत्प्रसादात्** (उसकी प्रसन्नता से) **परां** (परम) **शान्तिं** (शान्ति) {और} **शाश्वतं** (चिरकालीन) **स्थानं** (विष्णु रूप परम पद को) **प्राप्स्यसि** (प्राप्त करेगा)।

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथैच्छसि तथा कुरु ॥ 18/63
इति ते ज्ञानम् आख्यातम् गुह्यात् गुह्यतरम् मया।
विमृश्य एतत् अशेषेण यथा इच्छसि तथा कुरु।।

इति (इस प्रकार) **गुह्यात्** (गुप्त से) {भी} **गुह्यतरं** (अत्यन्त गुप्त) **ज्ञानं** {एडवांस} (ज्ञान) **मया** (मैंने) **ते** (तुझे) **आख्यातं** (कहा है)। **एतत्** (इस पर) **अशेषेण** (पूरी तरह) **विमृश्य** (विचार–सागर–मंथन करके) **यथा** (जैसा) **इच्छसि** (चाहे) **तथा** (वैसा) **कुरु** (कर)।

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥ 18/64
सर्वगुह्यतमम् भूयः शृणु मे परमम् वचः। इष्टः असि मे दृढम् इति ततः वक्ष्यामि ते हितम्।।

भूयः (फिर से) **मे** (मेरे) **सर्वगुह्यतमं** (सबसे अधिक रहस्यमय) {और} **परमं** (परमोत्कृष्ट) **वचः** (वचनों को) **शृणु** (सुन); {क्योंकि तू} **मे** (मेरा) **दृढं** (अत्यन्त) **इष्टः** (प्रिय) **असि** (है); **इति** (इसलिए) **ते** (तेरी) **हितं** (भलाई की बात) **वक्ष्यामि** (बताता हूँ)।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ 18/65
मन्मना भव मद्भक्तः मद्याजी माम् नमस्कुरु। माम् एव एष्यसि सत्यम् ते प्रतिजाने प्रियः असि मे।।

{हे अर्जुन तू} **मन्मनाः** (मेरे में मन लगाने वाला), **मद्भक्तः** (मुझे भजने वाला) {और} **मद्याजी** (मेरे प्रति कर्मों की यज्ञसेवा करने वाला) **भव** (बन जा)। **मां** (मेरे प्रति) **नमः** (नमस्कार) **कुरु** (कर), {इससे तू} **मां** (मुझे) **एव** (अवश्य) **एष्यसि** (पा लेगा)। {मैं} **ते** (तेरे से) **सत्यं** (सत्य) **प्रतिजाने** (प्रतिज्ञा करता हूँ) {कि तू} **मे** (मुझे) **प्रियः** (प्रिय) **असि** (है)।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ 18/66
सर्वधर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज। अहम् त्वा सर्वपापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सर्वधर्मान् {मठ–पंथ सम्प्रदायादि दैहिक दिखावे वाले} (सब {हिन्दू–मुस्लिमादि} धर्मों को) **परित्यज्य** (परित्याग करके) **एकम्** (एक) **मां** (मुझ {निराकार स्टेज वाले शिव–शंकर} की) **शरणं** (शरण में) **व्रज** (जा)। **अहं** (मैं) **त्वा** (तुझे) **सर्वपापेभ्यः** (सब पापों से) **मोक्षयिष्यामि** (मुक्त कर दूँगा)। {तू} **मा शुचः** (शोक मत कर)।

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥ 18/67
इदम् ते न अतपस्काय न अभक्ताय कदाचन।

न च अशुश्रूषवे वाच्यम् न च माम् यः अभ्यसूयति।।

अतपस्काय (जिसने कभी आत्मस्थिति रूप तप न किया हो), **अभक्ताय** (जो श्रद्धा–भक्ति भाव से रहित हो), **अशुश्रूषवे** (जिसमें यज्ञसेवा भाव न हो) **च** (और) **यः** (जो) **मां** (मेरी) **अभ्यसूयति** (निन्दा करता हो), {उसे} **इदं** (यह {ज्ञान}) **ते** (तू) **कदाचन** (कभी भी) **न वाच्यम्** (मत बताना)।

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ 18/68

य इमम् परमम् गुह्यम् मद्भक्तेषु अभिधास्यति।
भक्तिम् मयि पराम् कृत्वा माम् एव एष्यति असंशयः।।

यः (जो {मनुष्य}) **इमं** (इस) **परमं** (परम) **गुह्यं** (रहस्यमय ज्ञान को) **मद्भक्तेषु** (मेरे भक्तों के बीच) **अभिधास्यति** (सुनाएगा), {वह} **मयि** (मेरी) **परां** (सबसे श्रेष्ठ) **भक्तिं** (याद) **कृत्वा** (करके) **असंशयः** (बिना किसी संशय के) **मां** (मुझे) **एव** (ही) **एष्यति** (प्राप्त करेगा)।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ 18/69

न च तस्मात् मनुष्येषु कश्चित् मे प्रियकृत्तमः। भविता न च मे तस्मात् अन्यः प्रियतरः भुवि।।

मनुष्येषु (मनुष्यों में) **कश्चित्** (कोई {भी}) **मे** (मेरा) **तस्मात्** (उससे) **प्रियकृत्तमः** ({अधिक} प्रिय कर्म करने वाला) **न** (नहीं है) **च** (और) **भुवि** (पृथ्वी भर में) **मे** (मुझे) **तस्मादन्यः** (उसके अलावा कोई दूसरा {व्यक्ति}) **प्रियतरः** (अधिक प्रिय) **न भविता** (नहीं होगा)।

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ 18/70

अध्येष्यते च य इमम् धर्म्यम् संवादम् आवयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेन अहम् इष्टः स्याम् इति मे मतिः।।

यः (जो) {मनुष्य} **आवयोः** (हम दोनों {भक्त और भगवान} के) **इमं** (इस) **धर्म्यं** (धारण करने योग्य) **संवादं** (वार्तालाप का) **अध्येष्यते** (अध्ययन करेगा), **तेन** (उस) **ज्ञानयज्ञेन** (रुद्र ज्ञान यज्ञ के द्वारा) **अहं** (मैं) {उसका} **इष्टः** (प्रिय) **स्याम्** (बनूँगा), **इति** (ऐसी) **मे** (मेरी) **मतिः** (मान्यता है)।

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ 18/71

श्रद्धावान् अनसूयः च शृणुयात् अपि यः नरः।
सः अपि मुक्तः शुभान् लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्।।

यः (जो) **श्रद्धावान्** (श्रद्धावान) **च** (और) **अनसूयः** (ईर्ष्यारहित) **नरः** (मनुष्य) {इस ज्ञान को} **अपि** (केवल) **शृणुयात्** (सुन लेता है), **सः** (वह) **अपि** (भी) **मुक्तः** ({दुःखों से} मुक्त हुआ) **पुण्यकर्मणां** (पुण्यकर्मशाली {देवताओं} के) **शुभान्** (शुभ) **लोकान्**❤ (लोकों को) **प्राप्नुयात्** (पा लेता है)। ❤ मेरे मुख से दो शब्द भी सुनने वाला स्वर्ग में अवश्य आएगा।

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ॥ 18/72

कच्चित् एतत् श्रुतम् पार्थ त्वया एकाग्रेण चेतसा। कच्चित् अज्ञानसंमोहः प्रनष्टः ते धनंजय।।

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) **कच्चित्** (क्या) **त्वया** (तूने) **एकाग्रेण** (एकाग्र) **चेतसा** (चित्त से) **एतत्** (यह {ज्ञान}) **श्रुतम्** (सुना?) **धनंजय** (हे ज्ञानधन जीतने वाले!) **कच्चित्** (क्या) **ते अज्ञानसंमोहः** (बेसमझी से उत्पन्न हुआ तेरा मोह) **प्रनष्टः** (पूर्णतः दूर हो गया है?)

अर्जुन उवाचः– नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ 18/73

नष्टः मोहः स्मृतिः लब्धा त्वत्प्रसादात् मया अच्युत।
स्थितः अस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनम् तव।।

अच्युत {ऊँची स्टेज से कभी} (नीचे न गिरने वाले हे परमेश्वर शिव!) **त्वत्प्रसादात्** (आपकी प्रसन्नता से) {मेरा} **मोहः** (मोह) **नष्टः** (नष्ट हो गया है), **स्मृतिः** {अपनी आत्मा के विष्णु स्वरूप की} (स्मृति) **लब्धा** (प्राप्त हुई है) {और मैं} **गतसंदेहः** (निश्चयबुद्धि होकर) **स्थितः अस्मि** (स्थिर हो गया हूँ)। **तव** (आपकी) **वचनं** (आज्ञा का) **करिष्ये** (पालन करूँगा)।

सञ्जय उवाचः– इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ 18/74

इति अहम् वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः। संवादम् इमम् अश्रौषम् अद्भुतं रोमहर्षणम्।।

इति (इस प्रकार) **अहं** (मैंने) **वासुदेवस्य** (ज्ञान धनदाता वसुदेव परमपिता शिव के पुत्र वासुदेव शंकर का) **च** (और) **पार्थस्य** (पृथ्वीपति) **महात्मनः** (महान् आत्मा रूपी अर्जुन का) **अद्भुतं** (आश्चर्यजनक) **रोमहर्षणं** {और} (रोंगटे खड़े करने वाले) **इमं** (इस) **संवादं** (संवाद को) **अश्रौषम्** (सुना है)।

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ 18/75

व्यासप्रसादात् श्रुतवान् एतत् गुह्यं अहं परम्।
योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम्।।

व्यासप्रसादात् (व्यास अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा की प्रसन्नता से) **एतत्** (यह) **गुह्यं** (रहस्यमय) **परम्** (परमश्रेष्ठ) **योगं** (योग) **स्वयं** (स्वयं) **साक्षात्** (साक्षात्) **कृष्णात् योगेश्वरात्** {आत्मा रूपी गोपियों को और कामादिक शत्रुओं को} (आकृष्ट करने वाले योगेश्वर परमपिता शिव–शंकर द्वारा) **कथयतः** (कहते हुए) **अहं** (मैंने) **श्रुतवान्** (सुना है)।

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ 18/76

राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य संवादम् इमम् अद्भुतम्। केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः।।

राजन् (हे पूंजीवादी राजा धृतराष्ट्र!) **केशवार्जुनयोः** (परमेश्वर शिव और पुरुषार्थ का अर्जन करने वाले अर्जुन के) **इमं** (इस) **अद्भुतं** (आश्चर्यजनक) **च** (और) **पुण्यं** (पवित्र) **संवादं** (वार्तालाप को) **संस्मृत्य–संस्मृत्य** (बार–2 स्मरण करके) {मैं} **मुहुः मुहुः** (पुनः पुनः) **हृष्यामि** (हर्षित हो रहा हूँ)

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥ 18/77

तत् च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपम् अत्यद्भुतं हरेः। विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः।।

च राजन् (और हे राजन!) **हरेः** (शिवशंकर के) **तत्** (उस) **अत्यद्भुतं** (अत्यन्त आश्चर्यमय) **रूपं** {विराट} (रूप को) **संस्मृत्य–संस्मृत्य** (बार–2 याद करके) **मे** (मुझको) **महान्** (अत्यधिक) **विस्मयः** (विस्मय होता है) **च** (और) {मैं} **पुनः पुनः** (पुनः पुनः) **हृष्यामि** (हर्षित हो रहा हूँ)।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ 18/78

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीः विजयो भूतिः ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

यत्र (जहाँ) **योगेश्वरः** (योगियों के ईश्वर) **कृष्णः** (आत्माओं को आकृष्ट करने वाले परमपिता शिव) {हों और} **यत्र** (जहाँ) **धनुर्धरः पार्थो** (पुरुषार्थ रूपी धनुष धारणकर्ता विश्वनाथ शंकर) {हों}, **तत्र** (वहाँ) **श्रीः** {सरस्वती का

अपर रूप} (लक्ष्मी), **विजयः** (विजय), **मूतिः** (ऐश्वर्य) {और} **ध्रुवा** (अटल) **नीतिः** (नीति) {होती है, ऐसा} **मम मतिः** (मेरा निश्चय है)।

शब्दार्थ :–

आदित्य– (अदितेः अपत्यं–अदिति पुत्र अथार्त् सूर्य)। {जैसेः–10/21, 11/6}
अनन्तं– (नास्ति अंतःगुणानामस्य)–जिसके गुणों का अंत नहीं है अर्थात् विष्णु। {जैसेः11/37,11/47} **अर्यमन्**– (अर्य्यं–श्रेष्ठं मिमीते मा+कनिन–सूर्य)।{जैसेः10/29}
अश्वत्थं– (न श्वश्चिरं तिष्ठति) सृष्टिवृक्ष। {जैसेः–10/26, 15/1}
ब्रह्मं– (बृंहति वर्धते बृहं+मनिन्)–जो बड़े/वृद्ध रूप में माननीय है। {जैसेः–3/15}
देव– (दीव्यति आनंदेन क्रीडती वा अर्थात् आनंद से जो खेल खिलाता है वह)
–देवता। {जैसेः– 11/14, 11/15} **धेनु**– (धीयते पीयते वत्सैः धेट्+नु+इच्च)–बच्चों के द्वारा जिसका दूध पीया जाता है। {जैसेः-10/28}
गाण्डीव– (गाण्डि ग्रन्थिरस्यरस्ति)–वज्र की गांठ से बना हुआ पुरुषार्थ रूपी धनुष, जो
प्रजापिता ब्रह्मा के पास रहा था। जगत् का संहार करने के लिए इसका निर्माण
हुआ था और देवरक्षित था। {जैसेः–1/30}
हृषीकेश– इन्द्रियों रूपी घोड़ों के स्वामी। {जैसेः–1/15, 2/9}
ईश्वर– (ईश+वरच्)–महादेव, कामदेव, चैतन्यात्मा। {जैसेः–4/6, 15/8}
जनार्दन– (जनैः+अर्द्यते–याच्यते पुरुषार्था लाभाय)–परमेश्वर। {जैसेः–1/36}
जयद्रथ– (जयत्+रथः अर्थात् जिसका रथ जय पाता हो)। {जैसेः–11/34}
कौन्तेय– (कुन्त्याः अपत्यं अर्थात् कुंती पुत्र अर्जुन)। {जैसेः–1/27, 2/14}
केशव– (केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य)–जिसके ज्ञान के केश फैले हुए हैं अर्थात् परमेश्वर।
{जैसेः–1/31, 2/54} **कृष्ण**– कर्षत्यरीन्–कर्षति+अरीन महाप्रभाव शक्त्या अर्थात् जो शक्ति के महाप्रभाव से शत्रुओं को आकर्षित करती है। {जैसेः–1/28, 5/1}
कुन्ती– (**अदिति**–न दीयते खण्ड्यते ब्रह्त्वात् इत्यिदिति अर्थात् जो खंडित नहीं की
जाती। **'भारतमाता' तस्याः** पुत्री भारती–सरस्वती कुन्ती वा। {जैसेः-1/16}
मधुसूदन– (मधु नामक काम विकार रूपी दैत्य को मारने वाले कामनाथ शिव,
मधु–शराब, तमोगुण से पैदा हुआ दैत्य)। {जैसेः–1/35, 2/1}
मंत्र– (मन्त्र्यते, गुप्तं परिभाष्यते)–गुप्त बातचीत भाषणादि। {जैसेः–9/16}
नकुल– (नास्ति कुलं यस्य)–जो न पांडव कुल के हैं, न कुरू यादव कुल के, कभी इधर और कभी
उधर, (इन्होंने पश्चिम दिशा पर विजय पाई थी और अत्यन्त सुंदर थे) {जैसेः–1/16}
नारद– (नारं परमात्मविषयकं ज्ञान ददाति)–परमात्म विषयक ज्ञान देने वाला अर्थात्
नारद। {जैसेः–10/13, 10/26} **पंड**– (पंडयति संचयति)–इकट्ठा करता है।
पार्थ– पृथिव्याः ईश्वरः–पृथ्वी का शासनकर्ता। {जैसेः–1/25, 2/3}
सहदेव– (सह दीव्यति, क्रीड़ती वा)-जो परमात्मा के साथ ही खेलते हैं। {जैसे-1/16}
शाश्वतं– (सदाकाल रहने वाला)। {जैसेः–2/20, 18/62}
वार्ष्णेय– (वृष्णि वंश से उत्पन्न अर्थात् ज्ञानियों के कुल से उत्पन्न)–वृष्णि का अर्थ
है–वर्षा करने वाला मेघ। {जैसेः–1/41, 3/36}
वासुदेव– (धन सम्पत्ति दाता परमात्मा वसुदेव अर्थात् ज्ञानधन दाता का पुत्र)
प्रजापिता ब्रह्मा। {जैसेः–7/19, 10/37} **विभुं**– (वि=विशेष रूप से+भू भवनं वा)–विराट रूप में, विशेष रूप से प्रगट होता है। {जैसेः–10/12} **विभूति**– (विविधं भवति सृष्टिः+अनया)–जिससे विशेष प्रकार की सृष्टि उत्पन्न होती है। {जैसेः–10/7, 10/18}**व्यास{वि+आस्}**– जो वाणी चलाने के लिए विशेष रूप से बैठता है। {जैसे-18/75}
यातयामं– (गतः उपभोगेकालो यस्य तं)–जिसका उपभोग काल समाप्त हो चुका है।

{जैसेः–17/10} **युधिष्ठिर–** {(युधिः+स्थिर)–धर्मयुद्ध में स्थिर रहने वाले ब्रह्मा–जो पांडवों में सबसे प्रधान हैं और धर्मराज कहे जाते हैं}। {जैसेः–1/16}